श्रीवर्द्धमान स्वामिने नमो नमः

अथ

॥ अढीद्वीपनां नकशानो विचार प्रारंभः ॥

एक राज प्रमाण तिर्छो लोक छे तेमां असंख्याता द्वीप अने असंख्याता समुद्र छे,ते सर्वमां जंबूद्वीप आद्यमां छे अने स्वयंभु रमण समुद्र अंतमां छे. ए सर्व द्वीप मली संख्याये अढीसागरोपम अर्थात् पच्चीश कोडाकोडी उद्धार पल्योपमनां जेटलां समय थाय तेटलां छे, ते संस्थान थकी एकज आकारे छे अने विस्तार पणे अनेक प्रकारनां छे एटले प्रथम द्वीपथी प्रथम समुद्र द्विगुणो छे तेथी बीजो द्वीप बमणो छे तेथी बीजो समुद्र बमणो छे तेथी त्रीजो द्वीप बमणोछे एरीते सर्वे द्वीपसमुद्र विस्तारे एकेकथी बमणा बमणा पहोल पणे छे, सुप्रशस्त वस्तुनां जेवां जेवां नाम छे तेवां तेवां नामे ए द्वीप समुद्र छे ते वली एकेका नामे करी पण असंख्याता असंख्याता छे जेम आ मध्यनो जंबूद्वीप छे तेम एज जंबूने नामे बीजा पण असंख्याता द्वीप छे.

ते सर्व द्वीप अने समुद्रने अभ्यंतर एटले तिर्यक्लोकना मध्यवर्त्ति आ जंबूद्वीप छे. ते बधा द्वीप समुद्रनी अपेक्षाये सर्वथकी न्हानो छे एमां जंबू सुदर्शन नामे वृक्ष छे तेमाटे एनुं जंबू एवुं नाम छे. ए जगति सहीत प्रमाणांगुले करी एक लाख योजन लांबो पहोलो छे, थालीने आकारे, कमलना डोडाने आकारे, तेलना पुडला करीये ते जेवा गोल होय तेवा आकारे, पूरण चंद्रमाने आकारे, तथा रथना पइडाने आकारे गोल छे.

एनी त्रणलाख शोलहजार बशे सत्तावीश योजन, त्रणकोश,एकशो अठ्ठावीश धनुष्य, तेर अंगुल, पांच यव, एक जू,एक लीख, चार वाल, वली एक वालनां शाठ भाग करीये ते मांहेला सात भाग तथा वली ते शाठीया एक भागनां एकशठ भाग करीये ते मांहेला दशभाग उपर एटली परिधि छे शेष सर्व असंख्याता जंबूद्वीप चूडीने आकारे जाणवा अने असंख्याता कोडा कोडी योजननां लांबा पहोला छे, ए प्रथम जंबूद्वीप जे छे ते बीजा सर्वे असंख्याता द्वीप अने समुद्रे करी वींटेलो छे.

जेम जंबूद्वीप जगती सहीत एकलाख योजननो छे तेम एने फरतो लवण समुद्र छे ते जगती सहीत बे लाख योजननां विस्तार वालो छे तेमज लवण समुद्रने फरतो धातकी खंड छे ते जगती सहीत चार लाख योजन छे तथा धातकी खंडने फरतो कालोद समुद्रछे ते जगती सहीत आठ लाख योजन छे तथा कालोद समुद्रने फरतो पुष्करवर द्वीपछे ते पूरणतो शोल लाख योजन छे परंतु ते मांहेलुं आठलाख योजन प्र

माण अर्द्धद्वीप मानुष्योत्तर पर्वते करी वींटेलुं छे ते मांहे मनुष्यनी वस्तिछे अने बाहे रनो अर्द्धद्वीप मनुष्यनी वस्तिथी शून्य छे माटे पुष्करवर द्वीपनो अर्द्धभाग अढीद्वीपनी गणतिमां लीधोछे तेथी एनुं पुष्करार्द्धद्वीप नाम राख्युंछे.

एरीते एक लाख योजन जंबूद्वीपनां तथा बे लाख पूर्व अने बे लाख पश्चिमनां मली चार लाख योजन लवण समुद्रनां मेलवतां पांच लाख योजन थया तेनी साथे पूर्व धातकीनां चार अने पश्चिम धातकीनां चार मली आठ लाख योजन धातकीखंडनां मेलवतां तेर लाख योजन थया. तथा तेनी साथे पूर्व कालोद समुद्रनां आठलाख अने पश्चिम कालोद समुद्रनां आठ लाखमली शोल लाख योजन कालोद समुद्रनां मेलवीये तेवारे ओगणत्रीश लाख योजन थाय तेनी साथे पुष्करवरद्वीपार्द्धनां पूर्व पश्चिमनां आठ आठ लाख मली शोल लाख योजन मेलवीये तेवारे पीस्तालीश लाख योजन प्रमाण अढीद्वीप थाय छे तेमां मनुष्यनी वस्ती छे.

ए अढी द्वीप प्रमाण मनुष्यक्षेत्रनुं पूर्वोक्त रीते पूर्व पश्चिम विष्कंभ पीस्तालीश लाख योजन प्रमाण छे तेमज दक्षणोत्तर विष्कंभ पण पीस्तालीश लाख योजन प्रमाण छे तेमां जे जे शाश्वता पदार्थो रह्याछे तेना चित्र आ पुस्तकने विषे सामान्य प्रकारे देखाड्याछे. तिहां प्रथम पूर्व पश्चिमनां पीस्तालीश लाख योजन आवीरीते पूराणा छे.

पुष्करार्द्ध द्वीपनां पूर्व अने पश्चिम ए बे बाजुनां मानुष्योत्तर पर्वत पासे आवेला महोटा बे वन मुख छे ते प्रत्येक ११६८८ योजननां छे.	२३३७६
पुष्करार्द्धमां बे बाजुनां बेवडा बत्रीश विजयछे ते प्रत्येक विजयनुं विष्कंभ १९७९४। योजननुं छे तेने बत्रीश विजय साथे गणता सरवाले.	६३३४१६
पुष्करार्द्धमां शोल वक्षस्कारा पर्वत छे ते प्रत्येक पर्वत बे बे हजार योजननांछे	३२०००
पुष्करार्द्धनी बार अंतरनदी प्रत्येक पांचसो योजन प्रमाणे गणतां योजन.	६०००
पुष्करार्द्धनां बे मेरुनां बे वन प्रत्येके ४४०९१६ योजन प्रमाणे गणतां योजन.	८८१८३२
पुष्करार्द्धनां मांहेली बाजुनां समुद्र तरफनां बे बाजुनां बे वनमुख जगतीनां योजन बाद करतां प्रत्येक ११६७६ योजन प्रमाणे गणतां योजन.	२३३५२

अढीद्वीपमां एक जंबूद्वीपनी, बीजी लवण समुद्रनी, त्रीजी धातकी खंडनी अने चोथी कालोद समुद्रनी ए चार जगती पूर्वदिसीनी अने चार जगती पश्चिमदिसीनी एम बे बाजुनी मली जगती आठ छे अने पुष्करार्द्धद्वीपने फरतो मानुष्योत्तर पर्वतछे,तेनी जगती जिहां द्वीप पूरण थायछे तिहांछे मा

कालोद समुद्रनां एकेकी वाजुनां आठ लाख योजन प्रमाणे बे बाजुनां.	१६००००००
धातकी खंडनां वे वाजुनां चार वनमुखछे तेमांथी एकेका बाजुनां बे वे वन मुखें जगति वाद करतां ११६६४ योजन रुंध्या छे.	२३३२८
धातकी खंडनी वे वाजुनी बत्रीश विजयनां प्रत्येक विजयें (९६०३)योजन उपर एक योजननां आठ भाग करीये तेवा त्रण भाग रुंध्या छे.	३०७३०८
धातकी खंडनां वे वाजुनां शोल वक्षस्कार पर्वत प्रत्येक हजार योजननां छे.	१६०००
धातकी खंडनी बार अंतर नदीनां प्रत्येकें अढीसो अढीसो योजन गणतां.	३०००
धातकी खंडनां वे वाजुनां बे मेरुनीपासे भद्रशाल वननां एकेक बाजुनां २२५१५८ योजन प्रमाणे गणतां योजन.	४५०३१६
लवण समुद्र एकेकी वाजुनां वे बे लाख गणतां बे बाजुनां योजन.	४००००००
जंबूद्वीपनो वनमुख एकेक वाजुनी जगतीनां बार बार योजन बाद करतां वाकी २९१० योजन प्रमाणे गणतां बे वाजुनां योजन.	५८२०
जंबूद्वीपनां प्रत्येक एकेकी विजयनां २२१२ योजन अने एक योजननां आठ भाग करीये तेवा सात भाग उपर एवा शोल विजयछे. यद्यपि जंबूमां विजयतो वत्रीशछे पण पूर्व पश्चिम आश्रयी बे वे विजयनो एकेक भाग गणतां आ ठेकाणे शोल विजय हिसावमां गणवा एजरीत धा तकीखंडे तथा पूष्करार्द्धमां पण जाणवी.	३५४०६
जंपूद्वीपनां आठ वक्षस्कार पर्वत पांच पांचशो योजन प्रमाणे गणतां.	४०००
जंबूद्वीपनी छ अंतरनदी सवासो सवासो योजन प्रमाणे गणतां योजन....	७५०
जंबूद्वीपनो मेरु तथा भद्रशाल वननां योजन	५४०००
सरवाले अढीद्वीप संबंधी पूर्व पश्चिमनां योजन.	४५००००००

हवे दक्षणोत्तर विष्कंभ ४५०००००० लाख योजन आवी रीते पूराणा छे.

पुष्करार्द्धमां वे तरफनां वे इक्षुकार पर्वत प्रत्येक गति सूधां आठ लाखयो०	१६००००००
कालोदधीनां एकेक वाजुनां आठ आठ लाख योजन प्रमाणे गणतां.	१६००००००
धातकीखंडनां इक्षुकारपर्वत एकेकी वाजुनां चारलाख योजनजगती सूधांछे.	८००००००
लवण समुद्रनी एकेकी वाजुनां वेवे लाख योजन प्रमाणे गणतां-	४००००००
दक्षण भरतार्द्ध तथा दक्षण ऐरवत्तार्द्ध एकेकाना २२९ योजन अने एक योजनना ओगणीश भाग करीये ते मांहेला त्रण भाग उपर छे.	४५८ $\frac{6}{19}$
भरतक्षेत्र मांहेला वैताढ्यनां पचाश योजन.	५०
ऐरवतक्षेत्र मांहेला वैताढ्यनां पचाश योजन.	५०

दक्षण भरतार्द्धनी अयोध्यानगरी पोहोल पणे नव योजन छे....	९
उत्तर ऐरवतार्द्धनी अयोध्यानगरी पोहोल पणे नव योजन छे.	९
उत्तर बाजुनां भरतार्द्धनां योजन.	२३८) ३/१९
दक्षण बाजुये ऐरवतार्द्धनां योजन.	२३८) ३/१९
चुल्लहेमवंत पर्वत पोहोल पणे योजन.	१०५२) १२/१९
शिखरी पर्वतनां पोहोल पणे योजन.	१०५२) १२/१९
हेमवंत क्षेत्र युगलीयानुं पोहोल पणे योजन.	२१०५) ५/१९
एरन्यवंत क्षेत्र युगलीयानुं पोहोल पणे योजन.	२१०५) ५/१९
महाहिमवंत पर्वत दक्षणोत्तर पहोल पणे योजन.	४२१०) १०/१९
रूपी पर्वत दक्षणोत्तर पहोल पणे योजन.	४२१०) १०/१९
हरिवर्ष क्षेत्र युगलीयानुं दक्षणोत्तर पहोल पणे योजन.	८४२१) १/१९
रम्यक् क्षेत्र युगलीयानुं दक्षणोत्तर पहोल पणे योजन.	८४२१) १/१९
निषध पर्वत दक्षणोत्तर पोहोल पणे योजन.	१६८४२) २/१९
नीलवंत पर्वत दक्षणोत्तर पोहोल पणे योजन.	१६८४२) २/१९
देव कुरुक्षेत्र युगलीयानुं दक्षणोत्तर पोहोल पणे योजन	११८४२) २/१९
उत्तर कुरुक्षेत्र युगलीयानुं दक्षणोत्तर पोहोल पणे योजन.	११८४२) २/१९
मेरु पर्वतनी दक्षणोत्तर विष्कंभ.	१००००
सरवाले अढीद्वीपनां दक्षणोत्तर योजन संख्या.	४५०००००

॥ अथ एकतालीश बोलें अढीद्वीप व्याख्यान उपदेश ॥

॥ प्रथम इष्टदेवने नमस्काररूप मंगलाचरण ॥

॥ श्लोक ॥

श्रीवर्द्धमानाख्यविभुं यजामि, सुरासुरैःसेवितपादपद्मम् ॥
तस्योपदेशामृतपानपीना, नरा भवाब्धिं विषमं तरंति ॥ १ ॥

हवे अढीद्वीपनी व्याख्या करेछे. जंबूद्वीपथी मांडीने मानुष्योत्तर पर्वत लगे अढी द्वीप समयक्षेत्र कहेवायछे. एमां जे कांइ शाश्वता पदार्थ, नित्यपदार्थ, ध्रुवपदार्थ, अवस्थितभावे छे ते संक्षेपथी एकतालीश बोले करी कहीये छैये.

१ प्रथम बोले खांडुआनुं प्रमाण कहेछे. लाख योजननुं जंबूद्वीपछे तेना १९०) खांडुआ थाय; ते आवी रीते. प्रथम एक खांडुओ भरत क्षेत्रनो जाणवो, तेवाज बे खां

रुआ चुल्लहेमवंत पर्वतना, तथा चार खांरुआ हेमवंतनामे युगलीयानां क्षेत्रनां, तथा आठ खांडुआ महाहेमवंत पर्वतना, तथा शोल खांडुआ हरिवास युगलीयानां क्षेत्रनां तथा बत्रीश खांरुआ निषध पर्वतना. एरीते जरत क्षेत्रथी मांमीने निषध पर्वत लगे त्रेशठ खांडुआ थया. तेवाज त्रेशठ खांरुआ ऐरवत क्षेत्रथी मांमीने नीलवंत पर्वत लगे थाय अने चोशठ खंडुक प्रमाणे महाविदेह क्षेत्रछे एम सरवाले मली एकशो नवुं खांरुआनुं जंबूद्वीप छे. ते एकेको खांडुउं (५२६) योजन अने एक योजननां उंगणीश जाग करीये तेवा छ जाग उपर एटला प्रमाणनो जाणवो, तेने एकशो नेवुंये गुणतां बराबर एक लाख योजन दक्षणोत्तर जंबूद्वीपनां थाय, तेनी यंत्र स्थापना ॥

खंरुक.	क्षेत्रादिकोनां नाम.
१	जरतक्षेत्रनो खंडुक एक.
२	चुल्लहिमवंतपर्वतनां खंरुक बे.
४	हेमवंतयुगलीयानुंक्षेत्र खंडुक चार.
०	महाहेमवंतपर्वत खंरुक आठ.
१६	हरिवासयुगलक्षेत्रनां खंरुक शोल.
३२	निषधपर्वतना खंरुक बत्रीश.
६४	महाविदेहक्षेत्रनां खंडुक चोशठ.
३२	नीलवंतपर्वतनां खंडुक बत्रीश.
१६	रम्यक्क्षेत्रयुगलीयानुं खंरुक शोल.
०	रूपीपर्वतनां खंरुक आठ.
४	ऐरन्यवंतक्षेत्रयुगलीयानुंखंडुक चार.
२	शिखरीपर्वत खंरुक बे.
१	ऐरवतक्षेत्रनो खंरुक एक.

२ बीजा बोले योजन प्रमाण कहेछे. जंबूद्वीपनां दक्षण दरवाजाथी मांडीने चुल्ल हेमवंत पर्वतनां ऋषजकूट पर्यंत (५२६) योजन अने छ कला प्रमाणे जरतक्षेत्रछे. तथा १०५२) योजन ने बारकला प्रमाणे पहोलो हिमवंत पर्वतछे. तथा २१०५) योजन ने पांच कला प्रमाणे पहोलो हेमवंतयुगलक्षेत्र छे. तथा ४२१०) योजन ने दश कला प्रमाणे पहोलुं महाहिमवंत पर्वतछे. तथा ०४२१) योजन अने बे कला प्रमाणे पहोलुं हरिवास युगलीयानुं क्षेत्रछे. तथा १६०४२) योजन अने बे कला प्रमाणे पहोलो निषधपर्वतछे. एज प्रमाणे ऐरवतक्षेत्रथी मांमीने नीलवंतपर्वत लगे पण मर्यादा जाणवी अने निषधपर्वतथी मांमी नीलवंत पर्वत लगे ३३६०४) योजन अने चार कला उपर एटलुं महाविदेहक्षेत्र पोहोलुंछे सरवाले उत्तरदक्षिण जंबूद्वीपनां एक लाख योजन थया तेनुं यंत्र.

क्षेत्रादिकनां नाम.	पोहोलाइ यो०	कला.
जरतक्षेत्र.	५२६	६
चुल्लहेमवंतपर्वत	१०५२	१२
हेमवंतयुगलक्षेत्र.	२१०५	५
महाहिमवंतपर्वत.	४२१०	१०
नीलवंतपर्वत.	१६०४२	२
रम्यकक्षेत्र युगलीयानुं	०४२१	१
रूपी पर्वत.	४२१०	१०
ऐरन्य वंतयुगलक्षेत्र.	२१०५	५

हरिवर्षयुगलक्षेत्र	....	८४२१	....	१	शिखरीपर्वत	....	१०५२	....	१२
निषधपर्वत	....	१६८४२	....	२	ऐरवतक्षेत्र	....	५२६	....	६
महाविदेहक्षेत्र	....	३३६८४	....	४			३३१५७	----	१७

६६८४२----२ सरवाळे (१०००००)

३ त्रीजे बोले गणीत पद कहे छे. सातसें क्रोड, नेवुंक्रोड, छपन्नलाख, चोराणु हजार, उपर दोढसो योजन कांइक अधिकुं एटलुं जंबूद्वीपनुं गणीत पद छे.

४ चोथे बोलें परिधि कहे छे. त्रणलाख शोल हजार बसें सत्तावीश योजन, त्रण कोश, एकशो अठावीश धनुष्य अने तेर अंगुल जाजेरा एटली जंबूद्वीपनी परिधि जाणवी. तथा पंदरलाख एक्यासी हजार एकसो उंगणचालीश योजन किंचित उंणा लवण समुद्रनी परिधि जाणवी. तथा एकतालीश लाख दश हजार नवसें ने एकशठ योजन एटली धातकी खंडनी परिधि जाणवी. तथा एकाणु लाख सीतेर हजार छसें पांच योजन कांइक विशेषाधिक एटली कालोदधीनी परिधि जाणवी तथा एक क्रोड बेंतालीश लाख त्रीशहजार बसें उंगणपच्चास योजन एटली अभ्यंतर पुष्करार्द्धनी परिधि जाणवी.

५ पांचमें बोले पूर्वथी दक्षण, दक्षणथी पश्चिम, पश्चिमथी उत्तर द्वार द्वारनुं अंतर कहे छे. उंगणाएंसी हजार बावन योजन एक कोश पंदरसें बत्रीश धनुष्य अने त्रण अंगुल एटलो जंबूद्वीपना दरवाजा दरवाजानो अंतर जाणवो. तथा त्रणलाख, पंचाणुहजार बसें ऐंसी योजन ने एक कोश एटलो लवण समुद्रनां दरवाजा दरवाजानो अंतर जाणवो तथा दशलाख सत्तावीश हजार सातसें पांत्रीश योजन अने त्रण कोश एटलुं धातकी खंडना दरवाजा दरवाजानो अंतर जाणवो. तथा बावीश लाख बाणु हजार छसें छेतालीश योजन अने त्रण कोश एटलो कालोदधीनां दरवाजा दरवाजानो अंतर जाणवो. अने पुष्करार्द्धनां दरवाजा नथी पण आखो पुष्करद्वीप शोललाख योजननो तेना दरवाजा छे परंतु अर्द्धद्वीपनां दरवाजा नथी, प्रत्येक द्वीप समुद्रनी परिधिना योजननो चोथो भाग करी तेमांथी द्वारनां बारणानां साडाचार योजन उंछा करतां जेटला योजन बाकी रहे तेटलुं दरवाजा दरवाजानुं अंतर जाणवुं. तथा जंबूद्वीपनां चार दरवाजानां नाम आ प्रमाणेछे. एक पूर्वे विजय, बीजो दक्षिणे विजयवंत, त्रीजो पश्चिमे जयंत, चोथो उत्तरे अपराजित. ए चार दरवाजाने नामे ए दरवाजाना चार द्वारपालना पण एहीज नाम छे, जंबूनो कोट मूलमां पोहोलो बार योजन छे तथा मध्यभागे पोहोलो आठ योजनछे अने उपर पोहोलो चार योजनछे तथा सर्वे दरवाजा आठ योजन उंचा छे अने चार योजन पहोल पणे बारणा छे. एकेक कोरनी बे बाजु बारशा

ख छे. जंबूद्वीपना दरवाजाने साहामा चारे कोरे दोरी छंट सर्व असंख्याता द्वीप स मुद्रनां दरवाजा छे ते सर्वद्वीप समुद्रोना दरवाजानां नाम एना एहिज जाणवा.

६ छठे बोले वर्षधरक्षेत्र कहेछे. एक जरत, बीजो हेमवंत युगलक्षेत्र, त्रीजो हरिवास युगलक्षेत्र, चोथो ऐरवंतक्षेत्र, पांचमो ऐरण्यवंत युगलक्षेत्र, छठो रम्यकयुगलक्षेत्र, अने सातमो माहाविदेह क्षेत्र ए सात जंबूद्वीपमां तथा धातकीखंडमां एथी बमणा चौदवर्ष धर क्षेत्र छे अने पुष्करार्द्धमां पण धातकीनी पेरे चौद वर्षधर छे सर्व मली अढी द्वी पमां पांत्रीश वर्षधर क्षेत्र छे, एनी लंबाइ पोहोलाइनां प्रमाण आगल कहेशे.

७ सातमे बोले वर्षधर पर्वत कहे छे एक हेमवंत, बीजो महाहेमवंत,त्रीजो निषध, चोथो शिखरी, पांचमो रूपी. छठो नीलवंत, अने सातमो मेरु ए सात जंबूद्वीपमांछे अने धातकी खंडमां ए थकी बमणा चौद छे. ते सर्व जंबूद्वीपना वर्षधर प्रमाणे उंचा छे पण लंबाइमां चार चार लाख योजनछे हवे पोहोलपणो कहेछे. बे हेमवंत अने बे शि खरी ए चार पर्वत बे हजार एकसो पांच योजन अने ५ जाग. तथा बे महा हेमवंत अने बे रूपी ए चार पर्वत आठ हजार चारशो एकवीश योजन अने १ जागछे. तथा बे निषध अने बे नीलवंत ए चार पर्वत तेत्रीश हजार छसें चोराशी योजन उपर ४ जाग छे. हवे पुष्करार्द्धमां पण जंबूद्वीपथी बमणा वध्या तेवारे चौद पर्वत थया ते सर्वे लंबाइमां आठ लाख योजन प्रमाणेछे अने पोहोलाइमां जेटला छे ते कहेछे. बे हेम वंत तथा बे शिखरी ए चार पर्वत चार हजार बशें दश योजन अने १० जाग छे. त था बे महाहेमवंत अने बे रूपी ए चार पर्वत शोल हजार आठसें बेंतालीश योजन उपर २) जाग छे. तथा बे निषध अने बे नीलवंत मली चार पर्वत शरुशठ हजार त्रणसें अरुशठ योजन उपर ८ जाग छे.

हवे पांच मेरुनो उंचपणो तथा पहोल पणो कहेछे. प्रथम जंबूद्वीपनो मेरु एक हजार योजन धरतीमां उंडो छे अने नवाणुं हजार योजन उपर उंचो छे सरवाले लाख योजन उंचो छे मेरुना मूलना हेठला छेहेडाथी समजूतल पृथ्वी एक हजार योजन उंची छे. तथा समजूतलथी वली पांचशें योजन उंचुं नंदनवन छे. तथा नंदनवनथी शाडा बाशठ हजार योजन उंचुं सोमनस वनछे. तथा सोमनसवनथी छत्रीश हजार योजन उंचुं पंडुक वनछे. एरीते एक लाख योजन उचपणानां थया अने उपर चालीश योज न उंची चूलीका छे ते चोटली सरखी छे ए मेरुनो उंचपणो कह्यो. हवे पोहोलपणो कहेछे. मूल धरतीमां दशहजार ने नेवुं योजन उपर एक योजननां अगीयार जाग क रीये तेवा दस जाग एटलुं पोहोल पणेछे. पछी त्यांथी प्रदेशे प्रदेशे घटतां घटतां सम जूतल आगल बराबर दशहजार योजननो पहोल पणे थयो छे. तथा नंदनवन पासे

(९९५४) योजन अने एक योजनना अगीआर भाग करीये तेवा ८ भाग उपर एट लुं पोहोल पणे छे तथा सोमनसवन आगल (४२७२) योजन उपर अगीआरीआ आठ भाग एटलो मेरुनो विष्कंभ छे. तथा पंडूकवन पासें १००० योजन मेरुनो विष्कंभ छे. हवे धातकी खंडनां बे मेरु तथा पुष्करार्द्धनां बे मली चार मेरु प्रत्येके एक हजार योजन धरतीमां छे अने चोरासी हजार योजन उपर छे, ते मली पंच्यासी हजार योजन उंचपणे छे ए चारे मेरु उपर चूलिका नथी एम अढीद्वीपमां ३५ वर्षधर पर्वत छे.

८ आठमे बोले अढीद्वीप मांहेला शाश्वता पर्वतनी संख्या कहेछे. तिहां प्रथम जंबू द्वीपनां पर्वतो कहेछे. सात वर्षधर पर्वत पूर्वे कह्या ते जाणवा अने चोत्रीश वैताढ्य पर्वत छे. ते आवी रीते. एक भरतक्षेत्रनां मध्यनो, बीजो ऐरवत क्षेत्रना मध्यनो, तथा बत्रीश विजय महाविदेहना तेमां बत्रीश वैताढ्य छे. एवं चोत्रीश वैताढ्य थया, तथा चार युगलीयानां खेत्रनी वचमां चार गोल वृत्त वैताढ्य छे. तथा कुरु खेत्रना यमक, सम क, चित्र अने विचित्र ए चार तथा नीलवंतनां बे गजदंता अने निषधनां बे गजदंता मली चार गजदंत पर्वत तथा निषधने हेठल पांचकुंडनी बे पासे १०० कंचनगिरि छे अने नीलवंत हेठल पांच कुंडनी बे पासे १०० कंचनगिरि छे, मलीने बसो कंचनगिरि छे. तथा महाविदेहमां पूर्वपश्चिमनां मली शोल वक्षारा पर्वत छे. ए सर्वमली २६९ पर्वत जंबू द्वीपमां थया. एथकी बमणा ५३८ धातकी खंडमां छे. तेनी साथे बे इक्षुकार भेलीये तेवारे ५४० थाय. तथा धातकी खंड प्रमाणे पुष्करार्द्धनां पण ५४० पर्वत जाणवा. तथा लवणसमुद्रमां चारदिसिनां वेलंधर अनुवेलंधर देवोनां आठ पर्वत मांहे भेलीये ते वारे सरवाले १३५७ शाश्वता पर्वत अढीद्वीपमां छे.

९ नवमे बोले अढीद्वीपनां शाश्वता कूट कहेछेः—तिहां प्रथम जंबूद्वीपमां २६९, पर्वत छे, ते उपर जे कूट छे ते कहेछे. तेमां ३४ वैताढ्य उपर प्रत्येके नव नव कूट ग णतां ३०६ थया. तथा हिमवंते अगीआर, महाहेमवंते आठ, निषधे नव, शिखरीये अगी आर, रूपी पर्वते आठ कूट, नीलवंते नव कूट, तथा बे गजदंते नव नव, अने बे ग जदंते सात सात मली चार गजदंताना बत्रीश कूट, तथा शोल वक्षस्कार पर्वते प्रत्ये के चार चार कूट गणतां ६४ थाय तथा मेरु पर्वतनां नवकूट ए रीते सरवाले एकशठ पर्वतना ४६७ कूट थया अने यमकादि चार तथा वृत्तवैताढ्य चार एवं आठ पर्वत उपर कूट नथी तथा धातकी खंडमां एथकी बमणा ९३४ अने पुष्करार्द्धमां पण ९३४, मली २३३५, कूट अढीद्वीपमां छे.

१० दशमे बोले चक्रवर्त्ति जिहां पोतानुं नाम लखे तेने ऋषभकूट कहीये. ते जंबू द्वीपमां बत्रीश विजयनां नीलवंत पर्वत पासे शोल कूट छे, तथा निषध पर्वत पासे

शोल कूट छे मलीने बत्रीश थया. तथा जरतक्षेत्रना हिमवंत पासे एक कूटछे अने ऐरवत क्षेत्रना शिखरी पर्वत पासे एक कूटछे. एरीते सरवाले चोत्रीश रुषनकूट जंबूद्वीपमां छे अने ए थकी बमणा अरुशठकूट धातकी खंमर्मां छे तथा अरुशठ कूट पुष्करार्द्धमां छे सरवाले अढीद्वीपमां १७० रुषन कूटछे.

११ अगीआरमे बोले त्रण खंम साधीने वासुदेव जेने उपाडे तेने कोटी शिल्ला कहीये ते शिल्ला जंबूद्वीपमां चोत्रीशछे तथा धातकी खंमर्मां एथकी बमणी अरुशठ अने पुष्करार्द्धमां पण अडशठ मली अढीद्वीपमां १७० कोटी शिल्लाछे.

१२ बारमे बोले प्रत्येक वैताढ्य पर्वत दीठ तिमिश्रा अने खंम प्रपात एवी बे बे गुफाउछे ते जंबूद्वीपमां चोत्रीश वैताढ्यनी अडशठ गुफाछे, धातकीमां अडशठ वैताढ्यनी एकशो छत्रीश अने पुष्करार्द्धमां पण एकसो छत्रीश मली अढीद्वीपमां ३४० गुफाछे.

१३ तेरमे बोले बिल्लनी संख्या कहेछे;–प्रथम जंबूद्वीपमां जरतक्षेत्रनी गंगा अने सिंधु ए बे नदीनां बहोत्तेर बिल्ल तथा ऐरवत क्षेत्रनी रक्ता अने रक्तवतीनां बहोतेर बिल्ल तेमज बत्रीश विजयमां पण प्रत्येक विजयनी गंगा अने सिंधु ए बे नदीनां बहोतेर गणतां २३०४ बिल्ल महाविदेहमांछे सरवाले जंबूद्वीपमां २४४८ तथा धातकी खंमर्मां ४८ए६ अने पुष्कार्द्धमां पण ४८ए६ सरवाले अढीद्वीपमां १२२४० बिल्ल छे.

१४ चौदमे बोले मागधादि तीर्थनी संख्या कहेछेः–तिहां प्रथम जंबूद्वीपमां मागध, वरदाम अने प्रजास ए त्रण तीर्थ चक्रवर्त्ति साधेछे. तेमां जरतनां त्रण तीर्थ दक्षणदरवाजे समुद्रमांछे, अने ऐरवतनां त्रण तीर्थ उत्तर दरवाजे समुद्रमांछे, एवं छ थया तथा पूर्व महाविदेहनी शोल विजयछे तेमां साहामा साहामी आठ आठ विजय वच्चे सीता नदीमां साहामा साहामा त्रण त्रण तीर्थ गणतां शोल त्रिक अडतालीश तीर्थ सीता नदीमां अने पश्चिम महाविदेहनी शोलविजय तिहां साहामा साहामी आठ आठ विजय वच्चे सीतोदा नदीमां साहामा साहामी त्रण त्रण तीर्थ गणतां शोल त्रिक अडतालीश तीर्थ सीतोदा नदीमां छे मली छनुं तीर्थ महाविदेहमां थया तेनी साथे पूर्वोक्त जरत ऐरवतनां छ मेलवीये तेवारे १०२ तीर्थ जंबूद्वीपमांछे, तेथी बमणा २०४ धातकी खंडनां अने २०४ पुष्करार्द्धनां मली अढीद्वीपमां ५१० तीर्थ छे.

१५ पंदरमे बोले खंमनी संख्या कहेछेः–तिहां पांच जरत, पांच ऐरवत, अने पांच महाविदेहने बत्रीश विजये गणतां एकशोने शाठ थानक थाय तेनी साथे पूर्वोक्त पांच जरत अने पांच ऐरवतनां दश स्थानक मेलवतां १७० थानक अढीद्वीपमां थाय ते प्रत्येक थानकमां छ छ खंडछे तेवारे एकसो सीतेरने छए गुणतां १०२० खंम थया तेमां जंबूमां २०४ धातकीमा ४०८ अने पुष्करार्द्धमां ४०८ जाणवा.

१६ शोलमे बोले छ खंडमां बत्रीश हजार देश होयछे. माटे एकंदर देश संख्या कहेछेः—तिहां जंबूद्वीपमां एक भरत बीजो ऐरवत अने बत्रीश विजय मली चोत्रीश थानक छ छ खंड वाला छे ते प्रत्येक थानकमां ३२००० देश गणतां १०८८००० देश जंबूद्वीपमां छे तथा २१७६००० देश धातकी खंडमां छे तथा २१७६००० देश पुष्करार्द्धमां छे सरवाले अढीद्वीपमां ५४४०००० देश छे.

१७ सत्तरमे बोले छ खंडमां पांच अनार्य खंड अने एक आर्य खंड तिहां आर्य खंडमां अयोध्या नगरीछे, तेनी संख्या कहेछेः—जंबूमां चोत्रीश अयोध्या, धातकीमां अडशठ अयोध्या अने पुष्करार्द्धमां अडशठ मली एकसो सीतेर अयोध्या अढीद्वीपमांछे अने आर्यखंड पण एकशो सीतेरछे. ते आयोध्या नगरी बार योजन लांबी अने नव योजन पहोली होय सर्वेनी एज मर्यादा जाणवी. तिहां जे आर्यखंड होय तेमां धर्म होय तीर्थंकर, गणधर, चक्री, बलदेव, वासुदेव प्रमुख त्रेशठ शिलाका पुरुष आर्य खंडमां उपजे, मोक्ष गमन होय अने पांच अनार्यखंडमां धर्म न होय, सर्व म्लेछ होय.

१८ अढारमे बोले कया खंडमां केटला देश होय ते कहेछेः—तिहां छ खंडमां मली ३२००० देश होय तेमां पांच अनार्यखंडमां प्रत्येके ५३१८ देश होय अने छठा आर्य खंडमां ५३२० देश होय तेमां साढा पचीश देश आर्य अने बीजा अनार्य देश जाणवा. ए रीते अढीद्वीपना सर्वे खंडमां देशनी मर्यादा जाणवी. एमां ५३१८ देश पांच अनार्य खंडमां लखेलाछे. परंतु ५३३६ देश गणतां ३२००० देशनो हीसाब मलेछे. पण एक प्रतमां तथा एक पट्टमां उपर कहेली रीते लख्युं छे. ते प्रमाणे में पण अहीं लख्युं छे.

१९ उगणीशमे बोले विद्याधर तथा आभियोगीक देवनी श्रेणीयो वैताढ्य दीठ कहेछे—तिहां प्रत्येक वैताढ्य दीठ त्रण त्रण कांडछे तेमां भूमीथी दश योजन प्रथम कांडछे तेने दक्षण पासे पचाश नगर अने उत्तर पासे साठ नगर विद्याधरनां छे एवी बे बे श्रेणी वैताढ्यें लेवी तेवारे जंबूद्वीपमां चोत्रीश वैताढ्यनी अडशठ श्रेणी, तथा धातकीमां १३६ अने पुष्करार्द्धमां १३६ मली ३४० श्रेणी विद्याधरनीछे. हवे वैताढ्यनां प्रथम कांडथी वली दश योजन उंचो बीजो कांडछे तिहां दक्षण उत्तर बे पासे अभियोगिक देवोनी बे श्रेणीछे तेथी पूर्वोक्तरीते एनी पण ३४० श्रेणी अढीद्वीपमांछे ए बेहुनी श्रेणी एकठी करीये तेवारे ६८० श्रेणी अढीद्वीपमांछे.

२० वीशमे बोले द्रह संख्या कहेछेः—तिहां प्रथम जंबूद्वीपमां शोल द्रहछे ते देखाडेछे प्रथम हेमवंत पर्वते पद्मद्रहछे, बीजो महाहिमवंते महापद्मद्रहछे, त्रीजो निषधपर्वते तिगिछिद्रहछे, चोथो शिखरीपर्वते पुंडरिक द्रहछे, पांचमो रूपीपर्वते महापुंडरिक द्रह छे, छठो नीलवंत पर्वते केशरीद्रहछे, ए प्रकारे छ द्रह तो पर्वतोनी उपरेछे. हवे दश द्रह

बीजा देखाडेछे. तिहां निषधपर्वत उपरथी सीतोदा नदी पृथवी उपर पडेछे ते प्रथम द्रहथी बीजा, त्रीजा, चोथा अने पांचमां द्रहमां पडेछे तिहां पहेलो निषधद्रह,बीजो देवकुरुद्रह, त्रीजो सुरप्रज्ञद्रह, चोथो सुलसद्रह अने पांचमो विद्युत्प्रज्ञ द्रह ए पांच द्रह मूकी पछी आगल चालीछे माटे ए पांच द्रह जाणवां. तेमज नीलवंतपर्वत उपरथी सीतानदी धरती उपर पडेछे ते प्रथम द्रहथी बीजा, त्रीजा, चोथा, पांचमांमां पसीने आगल चाली ते पांच कुंडद्रहनां नाम कहेछे प्रथम नीलवंतद्रह, बीजो उत्तरकुरुद्रह, त्रीजो चंद्रद्रह, चोथो ऐरवत द्रह, पांचमो माल्यवंतद्रह एरीते ए दस द्रह धरती उपरछे ते पूर्वोक्त छ साथे मेलवतां शोल द्रह जंबूद्वीपमांछे अने तेथी बमणा बत्रीश द्रह धातकी खंडमां छे तथा बत्रीश द्रह पुष्करार्द्धनां मली अढीद्वीपमां ८०, द्रह छे.

२१ एकवीशमे बोले द्रहनी देवी देव कहेछेः—प्रथम हेमवंत पर्वते पद्मद्रह छे. एनां मध्यनां एक मुख्य महोटा कमल पाछल बीजा लघु कमलनां छ वलयछे, तनां १२०५०१२० एटला लघुकमल तेणे वींट्युं थकुं महोटुं कमलछे ते उपर श्री देवी रहेछे ए पद्मद्रह उंडो दस योजन, पहोलो पांचसें योजन अने लांबो एक हजार योजनछे उपर श्रीदेवी रहेछे ते भुवनपतिदेवोनी जातिछे. हवे बीजो महाहिमवंत पर्वते महा पद्मद्रहछे ते पचाश योजन उंडो, हजार योजन पहोलो अने बे हजार योजन लांबोछे, तेना मध्यना एक मुख्य महोटा कमल पाछल लघु कमलोना बार वलयछे. तेनां २४१००२४० एटला लघु कमलें वींट्युंछे ते उपर ह्रीदेवीनो निवासछे. त्रीजो निषध पर्वते तिगिछिद्रहछे तेनुं मध्यनुं मुख्य कमल चोवीश वलये वींट्युंछे तेमां ४८२००४८० एटला लघु कमलछे तिहां श्रीदेवीनो निवासछे एनुं एक पल्यायुंछे, ए द्रह दश योजन उंडो, बे हजार योजन पोहोलो अने चार हजार योजन लांबोछे. हवे ऐरवतक्षेत्रथी शिखरी पर्वत उपर पुंडरिक द्रहछे. ते हिमवंतना पद्मद्रहनी मर्यादायेछे एमां लक्ष्मीदेवीनो निवासछे एनुं एक पल्यायुछे. पांचमो रूपी पर्वते महापुंडरिक द्रहछे ते महाहिमवंत पर्वतना महापद्मद्रहनी मर्यादायेंछे एमां बुद्धिनामे देवीनो निवासछे एनुं एकपल्यायुछे. छठो नीलवंत पर्वते केशरीद्रहछे ते निषधपर्वतना तिगिछिद्रहनी मर्यादायेछे एमां कीर्त्तिदेवीनो निवासछे तेनुं एकपल्यायुछे ए छ द्रह पर्वतो उपरछे तेनी देवी छ कही. हवे पृथ्वी उपरनां दश कुंडद्रहछे तेमां देवताउनां निवासछे तथा जे रीते पर्वत उपरे लक्ष्मी देवीनी संकलना कही तेम देवकुरु उत्तरकुरुमां महोटुं जंबूवृक्षछे ते पण एटलेज लघु जंबूवृक्षे करी वींटेलुंछे ते आगल लखशुं. एरीते जंबूमां छ देवी तथा दश देवता, धातकीमां एथी बमणा बार देवी ने वीश देवता, पुष्करार्द्धमां पण बार देवीने वीश देवता मली अढीद्वीपमां द्रह निवासी त्रीसदेवी अने पचाश देवता जाणवा.

२२ बावीशमे बोले अढीद्वीपनी नदीउं कहेछेः–सर्व मली जंबूद्वीपमां १४५६००० नदीछे. तेमां मूलमां चौद महानदीछे. तिहां भरतक्षेत्रमां गंगा अने सिंधु, ऐरवतमां रक्ता अने रक्तवति ए चार महानदीनो चौद चौद हजार नदीनो परिवारछे. तथा हेमवंत युगलीयानां क्षेत्रमां रोहिता अने रोहितांसा तथा ऐरएयवत युगलीयानां खेत्रमां रूपकुला अने सुवर्णकुला ए चार महानदी अठावीश अठावीश हजार नदीने परिवारेछे. एवं आठ थइ तथा हरिवास युगलीयानां खेत्रमां हरिकंता अने हरिसलीला तथा रम्यक् युगलीयानां खेत्रमां नरकंता अने नारिकंता एवं चार महानदी छपन्न छपन्न हजार नदीने परिवारेछे एवं बार थइ. तथा पूर्व महाविदेहमां सीता अने पश्चिम महाविदेहमां सीतोदा ए बे महानदीओनो मली १०६४००० नदीनो परिवारछे. एवं चौद महानदी जंबूद्वीपमां थइ तेमां प्रथमनी बार नदीनो हीसाब तो प्रगटछे अने सीता सीतोदानी संख्या लखेछेः–नीलवंत पर्वतथी नीकलीने पूर्व महाविदेहमां सीतानदी गइ,तेणे बे बाजुये आठ आठ विजय कीधी तेवारे शोल विजयनी गंगा अने सिंधु ए बे बे गणता बत्रीश नदी थइ अने छ अंतरनदी छे. एरीते अडत्रीश महा नदी थइ ते प्रत्येकनो चौद चौद हजार नदीनो परिवार गणतां ५३२००० नदी पूर्व महाविदेहनी सीता महानदीमां पडे छे अने एज प्रमाणे निषध पर्वतथकी सीतोदानदी निकली ते पश्चिम महाविदेहमां गइ. तिहां पण अडत्रीश महानदीनो परिवार ५३२००० नदीनोछे सरवाले १०६४००० नदी थइ, तेनी साथे पूर्वोक्त बार महानदीनी परिवार भूत ३९२००० नदी मेलवीये तेवारे १४५६००० नदीओ जंबूद्वीपमां थाय अने एथकी बमणी धातकी खंडमां २९१२००० तथा पुष्करार्द्धमां पण २९१२००० सरवाले अढीद्वीपमां ७२८०००० नदीछे.

२३ त्रेवीशमे बोले नदीनी लंबाइ पोहोलाइ आदिक कहेछेः–भरतनी बे अने ऐरवतनी बे नदी एवं चार नदी मूले सवाछ योजन अने पछी वधती वधती समुद्र प्रवेसे साडाबाशठ योजन पोहोलीछे. तथा हेमवंत युगल क्षेत्रनी बे अने ऐरएयवत युगल क्षेत्रनी बे एवं चार नदी मूले साडा बार योजन अने समुद्र प्रवेसे सवासो योजन पोहोलीछे. तथा हरिवास युगल क्षेत्रनी बे अने रम्यक युगल क्षेत्रनी बे एवं चार नदी मूले पच्चीश योजन पहोली अने समुद्र प्रवेशे अढासो योजन पहोली छे तथा सीता अने सीतोदा ए बे नदी मूले पचास योजन पहोली अने समुद्र प्रवेसे छंडी विजयमां पडी तिहां पांचशो यो जन पहोली छे तथा धातकी खंडमां अने पुष्करार्द्धमां पण संख्याये जंबूद्वीप थकी बमणी बमणी नदी छे तेनी लंबाइ पहोलाइ पण एज रीते जाणवी.

२४ चोवीशमे बोले जंबूद्वीपमां देवकुरुक्षेत्रमां एक महोटा जंबूवृक्षनी पाछल लघु

जंबूवृक्षनां ठ वलयछे तेनी संख्या एक क्रोड, वीस लाख, पचाश हजार, एकशोने वीशछे तेणेकरी जंबूवृक्ष वींख्युंछे ते उपर अणाढीयो देव वसेछे. एम उत्तरकुरुमां साल्मली वृक्षछे तेनी पण एज रीते मर्यादाछे तेना उपर गरुल देवतानो निवाशछे. तथा धातकी खंडमां वे देवकुरुछे तेमां वे महोटा साल्मली वृक्षछे तेनी पाछल वार वलय लघु साल्म ली वृक्षनांछे तेनी संख्या २४१००२४० एटला साल्मली वृक्ष वींख्याछे तेना उपर पण गरुल देव रहेछे. तथा धातकी खंडना वे उतरकुरुमां वे महोटा महा धावडीना वृक्ष छे ते प्रत्येक लघु धावडी वृक्षनां वार वलये करी वींट्याछे तेनी संख्या २४१००२४० छे तेना उपर सुदर्शन अने प्रीयदर्शन देवनो निवास छे तथा पुष्करार्द्धनां महाविदे हनां वे देवकुरुमां वे महोटा साल्मली वृक्षछे ते लघु साल्मलीवृक्षनां चोवीश वलये करी वींट्याछे तेनी संख्या ४८२००४८० नी छे ते महोटा वृक्ष उपर गुरुड देवतानो निवास छे तथा पुष्करार्द्धनां उत्तर कुरुमां एक महोटो पद्मवृक्षछे तेपण चोवीश वलये वींट्योछे तेनां उपर पद्मदेवनो निवासछे, तथा पुष्करार्द्धना पश्चिम महाविदेहनां उत्तरकुरुमां मु ख्य महापद्म वृक्ष पण चोवीश वलये वींट्योछे तेनी संख्या पूर्वपरे जाणवी. तेनाउपर पुंड रिक देवनो निवासछे. ए मुख्यवृक्ष सर्वे वेदिका अने वनखंडे सहीतछे तेनो पीठ पां चशे योजन पोहोलो अने वार योजन उंचोछे ते वृक्षो उपर देव निवासनां स्थान त था श्री जिन भुवनछे ए सर्व वृक्ष रत्नमय पृथ्वीकायनां छे शाश्वताछे.

२५ पच्चीशमे वोले जंबूद्वीपमां एकेकी विजय वख्कारा पर्वत लगे पोहोली २२१३॥ योजनछे अने नीलवंत पर्वतथी सीतानदी लगे तथा निषध पर्वतथी सीतोदा नदी पर्यं त १५६९२ योजन अने उपर वे कला एटली लांवीछे तथा धातकी खंडमां एकेकी विजय ९६०३ योजन उपर एक योजननां शोल भाग करीये तेवा छ भाग एटली पोहोलीछे अने शोले विजय १५३६५४ योजन पोहोली छे तथा पुष्करार्द्धनी एकेकी विजय १९७९४। योजन पोहोली अने शोले विजय ३१६७०८ योजन पोहोली छे.

२६ छवीशमे वोले जंबूद्वीपमां महाविदेहनी वार अंतरनदी एकशो पच्चीश योजन पोहोलीछे तथा धातकी खंडमां अंतरनदी अढीसो योजन पोहोली छे अने पुष्करा र्द्धमां अंतरनदी पांचशे योजन पोहोली छे.

२७ सत्तावीशमे वोले जंबूद्वीपमां वक्षस्कारा पर्वत ५०० योजन उंचा अने पोहोला छे तथा धातकी खंडमां वक्षस्कारा हजार योजन उंचा अने पोहोला छे तथा पुष्करा र्द्धमां वक्षस्कारा वे हजार योजन उंचा अने वे हजार योजन पोहोलाछे.

२८ अठ्ठावीशमे वोले जंबूद्वीपमां दरवाजा आगल पूर्व पश्चिमनुं एकेकुं वनमुख ज

गति सूधां २९२२ योजननुं छे अने धातकी खंडमां एकेकुं वनमुख ११६७७ योजन त तथा पुष्कराद्धमां एकेकुं वनमुख ११६७७ योजन छे.

२९ उंगणत्रीशमे बोले जंबूद्वीपमां भद्रशालवन ५४००० योजन लांबुं छे तथा धातकी खंडमां एकेकुं भद्रशालवन मेरुपर्वतसहित २२५१५७ योजन लांबुं छे अने पुष्करार्द्धमां एकेकुं भद्रशालवन ४४०९१६ योजन लांबुं छे.

३० त्रीशमे बोले वीश गजदंतगिरिनुं विचार कहेछे. तिहां प्रथम जंबूद्वीपमां निषध पर्वतथी बे गजदंता पर्वत निकल्या ते मेरुपर्वत तरफ चाल्या तेमां प्रथम सोमनस गजदंतो धोलेवर्णे छे ते अग्निकूंणमां वल्यो बीजो विद्युत्प्रभ गजदंतो राते वर्णे छे ते नैऋत कूंणमां वल्यो तथा नीलवंतपर्वतथी बे गजदंता नीकल्या ते मेरुपर्वत तरफ चाल्या तेमां प्रथम गंधमादन गजदंतो पीले वर्णे छे ते वायव्य कूंणमां वल्यो. बीजो माल्यवंत गजदंतो नीले वर्णे छे ते ईशान कूंणमां वल्यो; एम चार गजदंता जाणवा. ए चारे गजदंता ३०२०९ योजन ने छ कला लांबा छे अने निषध तथा नीलवंतथी निकल्या तिहां धरतीथी चारसे योजन उंचा छे पछी वधता वधता मेरुपर्वतनी पासे पांचशे योजन उंचा थया छे तथा धांतकी खंडमां पूर्व पश्चिम मलीने बे मेरु पर्वतछे माटे तिहां आठ गजदंताछे तिहां प्रथम जंबूद्वीपनी परे बे बे मली चार गजदंता ३५६२२७ योजन लांबाछे अने बीजा बे बे मली चार गजदंता ५६९२५९ योजन लांबाछे तथा पुष्करार्द्ध द्वीपमां पण बे मेरुछे माटे तिहां आठ गजदंताछे तेमां पण आगली तरफनां धातकीनी परे बे बे मली चार गजदंता १६२६११६ योजन लांबाछे अने पाछली तरफना बीजा बे बे मली चार गजदंता २०४३२१९ योजन लांबाछे ए सर्वे गजदंता मेरु तरफ जतां प्रथम उंचाइमा चारसें चारसें योजन छे अने छेहडे मेरुनी पासे पांचसें योजन उंचाइमां छे.

३१ एकत्रीशमे बोले इक्षुकार पर्वतनो विचार कहेछे. तिहां प्रथम जंबूद्वीपमां इक्षुकार पर्वत बिलकुल नथी अने धातकी खंडमां बे इक्षुकारछे तेणे वचमां पडीने बे बे भरत अने बे बे ऐरवत कर्याछे ते लांबपणे चार चार लाख योजन छे अने उंचा पांचशे योजनछे तथा पोहोल पणे एक हजार योजनछे ते उपरे एकेको जिनप्रसाद छे तथा पुष्करार्द्ध द्वीपमां पण बे इक्षुकारछे तेणे पण वचमां पडी बे बे भरत अने बे बे ऐरवत कर्याछे. ए लांब पणे आठ आठ लाख योजनछे अने उंचपणे पांचशे योजन छे तथा पोहोला एकेक हजार योजन छे एना उपर पण एकेकुं श्रीजिनप्रासाद छे अढीद्वीपनां चित्रामणमां जगतीनां दरवाजा पर्यंत लाल रंग भरेछे पण तिहां दरवाजानी जगा राखवी जोइये. दरवाजाना अंतर पर्यंत छे. इहां (इक्षुके०) सेलडी तेनो सांठो जेवो लांबो थाय तेनां सरखा ए पर्वत पण लांबा छे, माटे एनुं इक्षुकार एवुं नाम छे.

३२ बत्रीशमे बोले जंबूद्वीपमां भरत क्षेत्र तरफ हिमवंत युगल क्षेत्रमां शब्दापाती वृत्तवैताढ्यछे अने हरिवास युगल क्षेत्रमां गंधावती वृत्तवैताढ्यछे तथा ऐरवत क्षेत्र भणी ऐरण्यवत युगल क्षेत्रे तेमां वकटापाती वृत्तवैताढ्यछे तथा रम्यक् युगल क्षेत्रमां मा ल्यवंत वृत्तवैताढ्यछे. ए चार जंबूद्वीपमां छे. तथा एथकी बमणा एज नामे धातकी खं डमां आठ वृत्तवैताढ्यछे तथा पुष्करार्द्धमां पण आठ वृत्तवैताढ्यछे. सरवाले अढीद्वी पमां वीश वृत्तवैताढ्यछे ते सर्वे पालाने आकारे गोलछे. मूल तथा उपरे एकेक हजार योजन पोहोला छे अने उंचा पण एकेक हजार योजन छे.

३३ तेत्रीशमे बोले जंबूद्वीपनां देवकुरुमां यमक अनेसमक ए बे अने उत्तरकुरुमां चित्र विचित्र ए बे मली चार पर्वतछे अने धातकी खंडमां ए थकी बमणा आठ छे तथा पुष्क रार्द्धमां पण आठ छे.सरवाले अढीद्वीपमां वीश पर्वतछे तेसर्वे एकेक हजारयोजन उंचाछे.

३४ चोत्रीशमे बोले जंबूद्वीपमां निषध पर्वतनी नीचे सीतोदा नदीने बे पासे थइने एकसो कंचनगिरिछे तथा निलवंत पर्वतने नीचे सीता नदीने बे पासे थइने एकशो कंचन गिरिछे एरीते बशो कंचनगिरि जंबूद्वीपमांछे तेथकी बमणा चारसो कंचनगिरि धातकी खंडमांछे तथा चारसो कंचनगिरि पुष्करार्द्धमांछे सरवाले अढीद्वीपमां एक हजार कंचन गिरि छे तेनां उपर तिर्यकजंभक देवताना निवासछे ए सर्व पर्वत शो शो योजन उंचाछे.

३५ पांत्रीशमे बोले जंबूद्वीपमां भरतनी दिसाये पहेलुं हेमवंत युगल क्षेत्रछे तथा ऐरव तनी दिसाये पहेलुं ऐरण्यवंत युगल क्षेत्रमां त्रीजो आरो वर्त्तेछे त्यांना मनुष्यनुं एक गाउ प्रमाण शरीर छे एक पल्योपम आयुछे अने चोथ भक्त एकांतरे आमला प्रमाणे आहार कल्पवृक्ष आपेछे एने पृष्ट करंडक चोशठछे, अपत्यपालना ७९ दिवस करे अने अपत्य एटले दीकरा दीकरी जेवारे ओगण्याएंसी दिवसनां थाय तेवारे मातापिता म रण पामीने देवलोकमां जाय. हवे भरत तरफ हरिवास क्षेत्र अने ऐरवत क्षेत्रनी तरफ रम्यक् क्षेत्र ए बे युगलक्षेत्र मध्ये बीजो आरो वर्त्तेछे. ए युगलीयानुं बे गाउ शरीर अने बे पल्यायुछे १२८ पृष्ट करंडीछे. छठभक्तछे, चोसठ दिवस अपत्य पालना करी माता पिता स्वर्गे जाये. इहां हरिवास क्षेत्रमां उपजेलो वनमाला नामे राजानो जीव युगलीयो हतो तेने वीराशालवीनो जीव किल्विषियो देव थयो तेणे क्रोध वसे ए युगलियाने नरकमां मो कलवा सारुं हरिवासथी उपाडीने चंपानगरीये मूक्यो अने बे पल्योपमनुं आयु तो डीने ते समयना आयु प्रमाणे आउखुं कर्युं तेने राज्ये वेसाडी मद्य मांस कुकर्म शीख वीने नरके मोकल्यो ए अछेरुं थयुं ए हरिवास क्षेत्रनां भाव कह्या. हवे आ तरफ निषध पर्वतनी नीचे देवकुरुक्षेत्र अने पेहेली तरफ नीलवंत पर्वतनी नीचे उत्तरकुरु क्षेत्र ए बे युगल क्षेत्रमां पहेलो आरो वर्त्तेछे. ए युगलीयानुं त्रण गाउ शरीर अने त्रणप ल्यायुछे

२५६ पृष्टकरंमीछे उंगण पच्चास दिवस अपत्य पालना करे, तूवर प्रमाणे कल्प वृक्षनो आहार, अठमभक्त एटले चोथे दिवसे आहार करे ए युगलीयानां पुण्य प्रभावे दस जातना कल्पवृक्ष आहारादिक सर्व वंछित पूरण करेछे. ए वृक्षमां एवो स्वभावजछे पण देवता पूरता नथी. ए सर्व युगल भद्रिक स्वभाव वाला छे एमां क्रोध नथी मात्र छींक वगासी उध्रस करतां एनुं मरण थाय. ए रीते जंबूद्वीपमां युगलीयाना छ क्षेत्रछे तेथी वमणा बार क्षेत्र धातकी खंडमांछे तथा बार पुष्करार्द्धमांछे, ते सर्वना सरखा भावछे सरखी रीत मर्यादछे सरवाले अढीद्वीपमां त्रीश युगलीयानां क्षेत्रछे.

३६ छत्रीशमे बोले छपन्न अंतरद्वीपनो विवरो कहेछेः—जंबूद्वीपमां आपणी तरफ हिमवंत पर्वत अने ऐरवतनी तरफ शिखरी पर्वत ए बे पर्वतें जंबूद्वीपनां कोट उपरथी पर्वत दीठ चार चार दाढा नीकलीछे ते विदिसी तरफ वलीछे लवण समुद्रनां पाणीथी ऊंची देखायछे अढी योजन ऊंची तथा आठ हजार चारसे योजन लांबी छे ए आठे दाढा अधर चाली गइछे ते एकेकी दाढा उपर सात सात अंतरद्वीपछे तेवारे आठ दाढानां छपन्न अंतर द्वीप थया. ए उपर युगलीया मनुष्य वसेछे तेनुं आठसें धनुष शरीर छे एक पल्योपमनो असंख्यातमो भाग आयुछे. ए युगलीया मरणपामीने भवनपत्यादिक देवोमां जइ उपजेछे. ए छपन्न अंतरद्वीपमां त्रीजा आराना छेडा सरखा भावछे एटले जेवो नाभिराजानो पिता छठो कुलकर हतो ते वखत जे भाव वर्तता हता ते प्रमाणेना भाव सर्वकाले तिहां वर्त्ते छे ते भाव फरे नही.

३७ शाडत्रीशमे बोले महाविदेह क्षेत्रमां चोथो आरो वर्त्तेछे. पांचसे धनुष शरीर मान, पूर्वकोटी वर्ष आयु, नित्य आहार तथा जंबूद्वीपना विदेहमां चार तीर्थंकरछे, तेमां पूर्वविदेहना वनमुख समीप आठमी पुष्कलावती विजयमां पुंडरिकिणी नयरी तिहां सीमंधरनामे विहरमान छे तथा पश्चिम विदेहना वन पासे पच्चीसमी वप्राविजय अने विजया नगरी तिहां श्रीयुगमंधर वीजा विहरमान छे, तथा पूर्वविदेहना वनमुख समीप नवमी वच्छविजय अने सूसीमा नयरी तिहां वाहुस्वामी त्रीजा विहरमान छे तथा पच्छिमविदेहना वनमुख समीप चोवीसमी नलीना वती विजय अने अयोध्यानगरी तिहां चोथा सुबाहु नामे विहेरमान तीर्थंकरछे, ए रीते जंबूद्वीपमां चार तीर्थंकरछे तथा धातकी खंडमां वे मेरु अने वे महाविदेहछे तेमां चार तीर्थंकर पूर्व महाविदेहमां अने चार तीर्थंकर पश्चिम महाविदेहमां एरीते आठ तीर्थंकर छे तथा पुष्करार्द्धमां पण वे मेरु अने वे महाविदेहछे माटे तिहां पण पूर्वविदेहमां चार तीर्थंकर अने पश्चिमविदेहमां चार तीर्थंकर मली आठ छे. सरवाले अढीद्वीपमां वीश विहरमान तीर्थंकर छे. जेवीरीते जंबूद्वीपमां आठमी, पच्चीशमी, नवमी अने चोवीशमी विज

ये अनुक्रमे चार तीर्थंकरछे तेवीरीते धातकीखंड अने पुष्करार्द्धमां पण विजय अने न गरी तेटलामीज कहेवी अने तेनां नाम पण तेना तेहीज जाणवा.

भरतक्षेत्रमां सत्तरमा श्रीकुंथुनाथ अने अढारमा श्रीअरनाथने अंतराले ए अढी द्वीप मांहेला वीशे तीर्थंकरनो जन्म एक समयेज थयलो छे अने श्रीमुनिसुव्रत तथा श्रीनमिनाथ भगवाननां अंतराले एक समयेज ए वीशे तीर्थंकरे दीक्षा लीधी हती ते एक हजार वर्ष पर्यंत छद्मस्थावस्थाये दीक्षा पालीने एक समये वीशे तीर्थंकर केवल ज्ञान पाम्या छे. हमणा ए वीशे जिन केवली छे ते आवती चोवीसीमां सातमा आठ मा तीर्थंकरनी वच्चे एक समयेज वीशे तीर्थंकर मोक्षपुरीये पधारशे. सर्वेने चोरासी चो रासी गणधरछे, चोरासी चोरासी लक्ष पूर्व आयुछे, पांचसे पांचसे धनुष प्रमाणे श रीर मान छे. एकेकाने दश दश लाख केवलीनी संख्याछे, शो शो कोडी साधु मुनिराज छे, सो सो कोडी साधवीछे. ए प्रकारे वीशे विहरमान जिननां बे क्रोड केवलीछे, बे हजार क्रोड साधु छे, अने बे हजार क्रोड साधवी छे. ए वीश विजयमां सदा एकेक तीर्थंक रने सहचारी बीजा चोरासी चोरासी तीर्थंकर होय, तेमां एक तो केवलज्ञाने सहीत होय अने बाकीनां त्र्यासीमां कोइ राजा, कोइ युवान, कोइ बालक, एरीते होय, ए सर्वे चोरासी लक्ष पूर्वने आउखे होय. अने जेवारे चोरासीमो तीर्थंकर मोक्ष सधावे तेवारे त्र्यासीमां तीर्थंकरने केवलज्ञान ऊपजे तेवारे ते चोरासीमो कहेवाय. ते वखते वली ए कनो जन्म थाय. एरीते चोरासीनी परंपरा सहचारीछे इहां कोइ कहेशे जे एक क्षेत्रमां एकथी बीजो तीर्थंकर, चक्रवर्त्ति, बलदेव, वासुदेव न होय तो एक क्षेत्रमां चोरासी तीर्थंकर केम संभवे? तेनो उत्तर वृद्ध परंपरा वडील एम कहेछे जे, ए वीश विजयनां शाश्वता भाव एमजछे पछी केवलीगम्य!! इहां जघन्य काले वीश तीर्थंकर होय ते ए केको तीर्थंकर एकेक लक्षपूर्वनो थाय तेवारे बीजा तीर्थंकरनो जन्म थाय तथा गर्भ मांहे होय. एम चोरासी लक्ष पूर्वना आयु मध्ये त्र्यासी तीर्थंकर बीजा थाय तेने वीश गुणा करतां १६६० थाय अने मूलना वीश विहरमान होय. सरवाले जघन्य काले १६८० तीर्थंकर होय अने जेवारे १७० तीर्थंकर उत्कृष्ट विचरता होय तेवारे पांच भ रत तथा पांच ऐरवतनां मली दश बाद करता बाकी १६० तीर्थंकर पांच विदेहनी वि जयना ते प्रत्येकने त्र्यासीये गुणतां १३२८० थाय तेनी साथे विहरमान १७० भेलीये तेवारे १३४५० एटला तीर्थंकर उत्कृष्ट काले होय. इति विदेहजिन संख्या विचार स मासः अहीं सुधी जंबूद्वीपनो विचार कह्यो.

३० आगणत्रीशमे बोले लवण समुद्रनो अधिकार कहेछेः—सर्व मली असंख्याता समु द्रछे. ते सर्वे धुरथी मांडीने छेहेडा पर्यंत हजार हजार योजन ऊंडाछे अने मात्र एक ल

वण समुद्र मात्राये मात्राये उंडो थतो थतो जेवारे जंबूद्वीपथी पंचाणु हजार योजन समुद्रमां जइये अने धातकी खंडथी पण पंचाणु हजार योजन समुद्रमां आवीये तिहां मध्यभागे हजार योजन उंडोछे, ए समुद्र गोतीर्थ कहीये, आ ठेकाणे हजार योजन उंडो, दश हजार योजन पहोल पणे अने शोल हजार योजन उंचो कोटनी परे दग मालो छे. शोल हजार योजन पाणी उंचो चडेलोछे ते उपर बे गाउनी वेल बे वार एक अहोरात्रमां उंची चढे छे ए पाणी शीरीते उछेले छे ते कहेछेः–

पूर्वे वडवामुख, दक्षणे केयूप, पश्चिमे यूप, अने उत्तरे ईश्वर ए चार महोटा पाताल कलशाछे ते लाख योजन उंचा लाख योजन पेटमां पोहोला अने दश हजार योजन मुख पोहोलुं, दश हजार योजननी पडगी, एक हजार योजन कलशनी ठीकरी जाडी छे. तथा ३३३३३ योजन कलशामां हेठल वायुछे अने ३३३३३ योजन मध्यभागे वायु पाणीछे तथा ३३३३३ योजन उपर पाणीछे, ते मध्यना वायुने योगे उछलेछे. ए त्रणसे तेत्रीश योजन त्रण ठेकाणे लख्याछे तेना उपर पण एक योजननो त्रीजो भाग अधिक लेवो.

हवे पूर्वनो महोटो कलश अने दक्षणना कलशने वच्चे तथा दक्षणनाने पश्चिमना कलश वच्चे तथा पश्चिमना ने उत्तरनां कलश वच्चे २१५–२१६–२१७–२१८–२१९–२२०–२२१–२२२–२२३–एवी संख्याये ए नव नव पंक्ति लघु पातल कलशनीछे तेवारे सर्व मली चारे पंक्तिना कलश ७८८४ छे. ए लघु कलश दश हजार योजन उंडा छे. तथा मध्यमां पोहोला पण तेटलाजछे अने एक हजार योजननुं मुखछे, एक हजार योजन पडगीछे सो सो योजननी ठींकरीछे, ३३३३ योजन हेठल वायुछे ३३३३ योजन मध्य भागे वायु अने पाणी छे, ३३३३ योजन उपर पाणी छे, ए लघु कलशनी मांहेथी पाणी उछले छे ते लवण समुद्रनी वच्चो वच्च पाणीनो गोल कोट बंधायछे.

ए चार महाकलशना अधिष्ठाता पूर्वे काल, दक्षणे महाकाल, पश्चिमे वेलंब अने उत्तरे प्रभंजन ए चार देवछे, शोल हजार योजनना दगमालनी उपर बे गाउनी वेल वधेछे तेने दाबवाने जंबूद्वीपनी दशा भणी बेतालीश हजार देवताछे.तथा वेल उपर शाठ हजार देवताछे तथा धातकीनी दिसाये वेल उपर बहोत्तेर हजार देवता छे. सरवाले वेलंधर अनुवेलंधर एटले दिसाना अने विदिसाना मलीने १७४००० देवता छे.

हवे ए देवतानां निवास कहेछेः–जंबूद्वीपना दरवाजाथी चार दिसाये तथा चार विदिसाये बेतालीश बेतालीश हजार योजन जइये तिहां वेलंधर अने अणुवेलंधर नागराजाना आठ पर्वतछे.तेना नाम कहेछे १ पूर्वे गोथुभपर्वत अने गोथुभ देव छे.दक्षणे दिगभास पर्वत अने शिव देवता.३ पश्चिमे संखनाभ पर्वत अने संख देवता.४ उत्तरे दगसीमी पर्वत, अने माणोसल देवता.५ इशानकोणे कर्कोटक पर्वत अने कर्कोटक देवता, ६ अ

ग्निकोणे विद्युत्प्रन्न पर्वत अने कर्दम देवता.७ नैरुतकोणे कैलाश पर्वत अने कैलाश देवता ८ वाव्यकोणे अरुणप्रन्न पर्वत अने अरुणप्रन्न देवता. ए आठे पर्वत १०२२)योजन नीचे पहोलाछे अने ४२४ योजन ऊफेरा उपर पहोलाछे तथा सर्वे १७२१ योजन उंचा छे तेमां पूर्वादि चार दिसाना अनुक्रमे १ कनकमय, २ अंकरत्नमय, ३ रूपामय,४ स्फाटि कमय जाणवा. तथा चार विदिसाना सर्व रत्नमयछे. जंबूद्वीपथी वेतालीश हजार योजन जइये ते स्थानके ३०९ योजन उपर पंचाणुआ पीस्तालीश नाग एटली जलवृद्धिछे. तथा ४४२ योजन उपर पंचाणुआ दश नाग एटला पर्वत उंचाछे तथा ९६९ योजन उपर पंचाणुआ चालीश नाग एटला जंबूद्वीपन्नणी उघाडा देखायछे. तथा ९६३ यो जन उपर पंचाणुआ सीत्तोतेर नाग एटला शिखा नणी उघाडा देखायछे.

तथा मेरुपर्वतथकी पश्चिम दरवाजाथी वार हजार योजन समुद्रमां जइये तिहां लव णना अधिष्टातानो गौतमद्वीप सुस्थितदेवनोछे.ते गौतमद्वीपने वे पासे जंबूद्वीपनां वे सूर्यनां वे द्वीपछे तथा लवणनी सीखानी आणी तरफनां वे सूर्य तेना वे द्वीपछे. एरी ते चार सूर्यनां चार द्वीप गौतमद्वीप पासेछे. ए गौतमद्वीप सूधां पांचे द्वीप वार वार हजार योजन लांवा अने पहोला छे.

तथा मेरुपर्वतथी पूर्वदिसिये जगतीनां दरवाजाथी वार हजार योजन लवणसमु द्रमां जइये तिहां जंबूद्वीपनां वे चंद्र तथा लवणनी सीखानी आणी तरफनां वे चंद्र एवं चार चंद्रमाना चार द्वीपछे.

एजरीते पश्चिमदिसे सिखानी पेलीतरफ लवणनां वे सूर्य अने धातकीना ८ सूर्य मली आठ सूर्यनां आठद्वीपछे तथा पूर्वदिसाये शिखानी पेलीतरफ लवणसमुद्रनां वेचंद्र अने धातकी नां ८ चंद्र एरीते आठ चंद्रनां आठ द्वीपछे.ए लवण समुद्रमां पांचसे योजननां मत्सछे तथा लवणनी सिखामां जे ज्योतिष चक्रचालेछे तेना विमान दगस्फाटिकरत्ननांछे.लवणाधिकारः

३९ उगणचालीशमे वोले कालोदधिनो विचार कहेछे. ते कालोदधी प्रथम दरवाजाथी साहामा दरवाजा लगे आठ लाख योजन पोहोलोछे अने एक हजार योजन उंडो छे, गोतीर्थ नथी, वेल नथी, दरवाजेथी पूर्वपश्चिमे वेतालीश हजार योजन जइये तिहां कालनामे देव, पश्चिमे महाकालदेव, ए वे समुद्र अधिष्टायक देवना द्वीपछे तथा पश्चिमे वार हजार योजन जइये तिहां कालोदधिनां एकवीश सूर्यना एकवीश द्वीपछे, तेमज पूर्वे वार हजार योजन जइये तिहां कालोदधिनां एकवीश चंद्रमाना एकवीश द्वीपछे ए समुद्रमां सातसे योजनना शरीर वाला मत्सछे. एना पाणीनो स्वाद पीवा सरखो छे तथा धातकी खंडना सूर्य चंद्रना द्वीप सर्वे पाणीथी वे कोश उघाडा छे.

४० चालीशमे वोले पुष्करार्द्धद्वीपनी वस्तु लखीयेछेये. पुष्करार्द्ध शोल लाख योजन

पहलो छे, तेना मध्यमां मानुष्योत्तर पर्वत पड्यो तेथी एना बे नाग थया छे. तेमां आगला नागना आठ लाख योजनमां मनुष्यनी वस्ती छे अने पहेली तरफनां आठ लाख योजनमां सून्यक्षेत्रछे.

४१ एकतालीशमे बोले मानुष्योत्तर पर्वत बेठा सिंहने आकारेछे, पुष्करद्वीपनां मध्य नागे वलयाकारे पड्यो छे, हेठल एक हजारने बावीश योजन पहोलोछे अने मध्यमां सातसे त्रेवीश योजन पहोलोछे तथा उपर चारसे चोवीश योजन पहोलो छे अने उंचो तो वेलंधर पर्वत जेटलो १७२१ योजनछे तथा नूमीमां चोथो नाग उंमोछे. एनी माहेली परिधि १४२३०२२४ योजन अने मानुष्योतरथी बाह्य परिधि १४२३३७१३ योजन छे. एटलीज परिधि सिद्ध सिलानी पण जाणवी. ए सिद्ध सिला अने अढीद्वीप बेहु बरोबरछे. ए अढीद्वीप रूप मनुष्य क्षेत्रमां नव वानां होय तेना नाम कहेछे. १ नदी, २ द्रह ३ मेघ, ४ गर्जारव, ५ अग्नी, ६ तीर्थंकर, ७ गणधर आदि मनुष्य तेना, ७ जन्म, ८ मरण ए रात्रि दिवस ए नव वानां होय ए प्रमाणे संक्षेपथी अढीद्वीपनां नाव जाणवा.

हवे एज अढीद्विप संबंधि कांइक विशेष विचार कहीये छैयें.

ए अढीद्वीपना मध्यमां प्रथम जंबूद्वीप आवेलोछे, माटे ते जंबूद्वीपनो वली जूदो पट्ट बनाव्योछे तेपण ए पुस्तकनी साथेछे ए सर्व द्वीप अने समुद्र ते जगतीये करी वींटेलाछे माटे प्रथम जगतीनो वर्णन करीये छैयें. प्रत्येक प्रत्येक द्वीप अने समुद्र पद्मवर वेंदिकाये करी सहीत छे अर्थात् सर्वद्वीप अने समुद्रने चोकफेर पद्मवर वेदिका छे अने सर्व पद्मवरवेदिकाउंने केडे तथा आगल बे बाजु वन खंड पण छे.

अथ जगती वर्णन.

तिहां प्रथम जंबूद्वीप महोटा नगरना गढने आकारे वज्रमय जगतीये करी चारे बाजु वींटेलोछे. ते कोट आठ योजन उंचोछे तथा बार योजन नीचे धरतीना मूलमां पहोलोछे. पछी जेम जेम उंचा चमीये तेम तेम अनुक्रमे पोहोलाइनुं विस्तार घटतां घटतां जेवारे एक योजन उंचा चमीये तेवारे अगीआर योजन पोहोलो थाय, बे योजन चमतां दश योजन पोहोलो थाय, त्रण योजन चमतां नव योजन पोहोलो थाय अने जेवारे चार योजन उंचा चमी कोटना मध्यनागने विषे आवीये तेवारे आठ योजन पोहोल पणे थाय. एम यावत् आठ योजन चडीने कोटनी उपर जइये तेवारे चार योजन पोहोल पणे थायछे. ए कोट उंचु करेलुं गायनुं पूंछडुं तेने आकारे छे. जेम गायनुं पूंछ मूलमां जाडुं होय अने पछी उतरतां उतरतां पातलुं होय तेम जगती पण धरतीनां मूलमां जाडी छे अने पछी उपर चडतां चमतां पातली थती गइ छे.

ते जगती सर्व प्रदेशे वज्ररत्नमयछे, मणिरत्ननी नींतछे, वैडूर्य रत्नमय थांनाछे, लोहीताक्ष रत्नमय खीला छे, छतमां सोना रूपाना पाटीया छे, आकाशनी पेरे आछी छे, सुकोमलछे, घसीछे, मांजी कोमल करेलीछे, रज रहीत छे, मल रहित छे, कर्दम रहीत छे, छाया आवर्ण रहित शोजा वाली छे, निरूपघात कांतीवाली छे, उद्योत सहित छे, जोवा योग्य छे, मनोहर आंखने देखवा योग्य जोवावालाने मनोज्ञ छे, प्रतिबिंब जेमां पडे एवी जगती छे. कलश, मंगल, तोरण, विजय, प्रसावणीया, वेदिका, सिंहासण, जरोखा, जाली ए सर्व रत्नमय रमणीक छे. ते जगती उपरे जंबूद्वीपनी पासे एक जालीये करी चोक फेर सर्व दिसे वींटाणी छे एटले हीयारखी छे. ते जाली अर्द्ध योजन उंच पणे छे, पांचसे धनुष्य पहोली जाडपणे छे, सर्व रत्नमय छे, निर्मल छे, सुकुमाल छे, यावत् देखवा योग्य छे, मनोहर छे, एनुं प्रथम आंकवालुं चित्र पहेला पृष्टमां छे.

ते जगती महोटा गवाक्षोना वलय तेणे करी सर्वदिशिये चारे बाजुये वींटेली छे. ते सर्वे गोख रत्नमय छे. एकेको गोख बे बे कोश उंच पणे छे अने पांचशे पांचशे धनुप पहोल पणे छे तथा अर्द्धो कोश लांब पणे छे. आछा निर्मल छे. यावत् प्रति रूप छे. ए गवाक्षनुं चित्र बीजा आंकवालुं आ पुस्तकना प्रथम पृष्ट मध्ये आपेलुं छे, तिहांथी जोवुं. एवा गवाक्ष सर्व लवण समुद्रनी पासे जगतीनां मध्यजागमां चोफेर जाणवा.

हवे ते जगतिनी उपरली जूमिनां मध्यजागने विषे चोफेर फरति एक महोटी पद्म वरवेदिका देवताउने क्रीडा करवानुं स्थानक छे. ते उंचपणे अर्द्ध योजन छे अने पांच शे धनुष्य पहोल पणे छे. जेटलो जगतिनां मध्यजागे परिधि छे ते प्रमाणे परिधि पणे छे, सर्व रत्नमय छे, जगती समान जगती सरखी फरती छे, तेनी वज्ररत्नमय जूमि छे. जूमिजागथी उंचा नीकल्या जे प्रदेश ते सर्व वज्ररत्नमय छे. अरिष्ट रत्नां मूल पग थालीया छे, वैडूर्य रत्नां थांजा छे, शोना अने रूपानां पगथालीयानां पाटीयां छे, वज्र रत्ननी संधीपूरी छे, एटले बे पाटीआनो संबंध जोडवो तेने संधी कहीये. वली पडखाने थानके पण संधि समजवी, पाटीआवच्चे जे खीलीउ छे ते लोहिताक्ष रत्ननी छे. तिहां नवनवा प्रकारनां मनुष्यनां युग्म शरीर छे. ते मनुष्यनां जोडलानुं रूप नवनवा प्रकारनां मणिरत्नमयछे. तेमज मनुष्यना एकाकी रूप पण छे. तथा ए रूपना युग्म छे. तेनां अंकरत्न मय देस छे. ज्योतिरसा रत्नमय वांस लावे अने जमणे बे पासे बांध्या छे अने वंसनी खीली विशेष रूपानी पाटली वंसनी उपर छे तेना उपरे शोनानी ढांकणी छे ते उपर वली वज्ररत्ननी निबिड ढांकणी छे ते उपरे सर्वस्वेतरूपामय आछादन छे एवी पद्मवरवेदिका छे.

ते पद्मवरवेदिकाये एक सुवर्णनी माला, एक घूघरनी माला, यावत् मोतीनी माला, एक कमलनी माला, ते पण सर्व रत्नमय पीळा सुवर्णमय दाम समूहे करी तेणे

करी सर्वेदिशे सहीत छे, ते मालाने रक्तसुवर्णना फूमकाछे, सोनाने प्रकरे सहीत छे, नव नवा प्रकारनां मोती अने रत्न तेना हार अने अर्द्धहार तेणेकरी शोभित थकी लगा रेक मांहोमांहे वेगली रही छे ते पूर्व, पश्चिम, दक्षण अने उत्तरनो मंदमंद वायरो तेणे कंपती थकी, लंबती थकी, जणजणाट प्रमुख शब्द करती थकी, कान अने मनने गम ता एवा शब्दने चोकफेर पूरती थकी शोभती थकी रहे छे. तथा जिहां जिहां एक युगल छे तेने स्थानके बीजा पण घणा घोमानां युगल, हाथीनां युगल, मनुष्यनां युगल, किन्न रनामा व्यंतरदेवोनां युगल, किंपुरुषनां युगल. महोरगनां युगल, गांधर्वनां युगल, वृ षभनां युगल इत्यादिक सर्व युगल रत्नमयछे, निर्मलछे, सुकुमालछे, यावत् प्रतिरूप छे, तेमज ते ते स्थानके घणा घोमानां रूपनी पंक्तिउं छे ते पण पूर्ववत् यावत् प्रतिरूप छे तेमज वली घोमानां मैथुननां रूप एटले स्त्री सहीत रूप पणछे तथा ते ते स्थानके घणी पद्मलता, नागवृक्षनी लता, अशोकवृक्षनी लता, चंपकवृक्षनी लता, आम्रवृक्षनी लता, जाय विशेष वृक्षनी लता, मचकुंदलता, श्यामलता प्रमुखछे. ते नित्ये फली फूली थकी मंजरे करी सहीतछे. ते सर्व रत्नमयछे. यावत् प्रतिरूपछे. तथा ठामे ठामे घणां रत्न मय अक्षतना स्वस्तिकछे इत्यादि एनो विशेष वर्णन सर्व जीवाभिगमादि सूत्रोथी जोवुं.

हवे एनुं पद्मवरवेदिका एवुं नाम छे तेनुं हेतु कहेछेः—ए वेदिकामां ठामे ठामे एटले वेदिकाने विषे, वेदिकानां पासाने विषे, वेदिकानां पाटियानां माथाने विषे, वेदिकानां पुटांतरने विषे, थांभाने विषे, थाभानां पासाने विषे, थांभाने माथे, थांभानां पुटांतरने विषे, खीलीने विषे, खीलीनां मूखने विषे, खीलीनां पाटीयाने विषे, खीलीनां पुटांतरने विषे, खीलीने पासे, खीलीना पासाने स्थानके, खीलीनां पक्षनां अंतने ठामे, एवा एवा स्थानके घणा उत्पल तथा सूर्य विकाशी कमल यावत् लाखपाखमीनां कमल ते सर्व रत्नमयछे महोटा वर्षाकालनां जल राखवानां स्थानक तथा छत्र सरिखा मोहोटा क मल प्रमुख ते सर्व पद्मवरवेदिकाने विषे रत्नमय छे ते सारुं पद्मवरदिका एवो नाम छे ए शास्वतीछे. ए पद्मवरवेदिकानुं चित्र त्रीजा आंकवालुं प्रथम पृष्टमां छे.

ते पद्मवरवेदिकानी पूर्व पश्चिम दिसाये बे वाजुये बे वनखंम छे ते देशे उणा बे यो जन अर्थात् अढीसे धनुषे उणा बे योजन चक्रवालपणे पोहोला छे. एटले जगतीनी उपर पांचशे धनुषनी वेदिका पोहोलीछे अने वेदिकानी बाहेरली समुद्रनी तरफनी वाजुनुं वन बे योजनमां अढीशो धनुष उणुं छे तथा वेदिकानी जंबूद्वीपनी तर फनी वाजुनुं वन पण बे योजनमां अढीशो धनुष उणुं छे. ए सरवाले जगती उप रनी भूमी चार योजन पोहोल पणे पूर्वे कहीछे तेटली थइ. हवे ते बे वाजुनां वन जगती समान परिधिपणे फरता छे. तेनी कृष्णवर्णे नीली शोभाछे ते वननी भूमी चा

मृदंगना पुडा सरखी सम छे. तथा आरीसानो तलो, हथेलीनोतलो, चंद्रमानुं मंडल, सूर्यनुं मंडल, घेटानुं चर्म, वृषजनुं चर्म, वराहनुं चर्म, सिंहनुं चर्म, वाघनुं चर्म, छागनुं चर्म, दीपडानुं चर्म, ते समान भूमीनो तलो छे. तथा ते वनमां नाना प्रकारनां काला, पीला, धोला, राता, नीला एवा मणिरत्ननां तृणछे तेनो मनोज्ञ शब्दछे, मनोज्ञ रूप छे, तिहां चार दिसानो वायरो लागे तेवारे ते तृण मांहोमांहे आफले छे तेना योगे करी तेमांथी छत्रीश राग रागणी आलाप्या जेवा शब्दनी ध्वनी उठेछे, जाणे बत्रीशबद्ध नाटक थतो होय, जाणे छत्रीश वाजां वाजतां होय, जाणे गंधर्व देवता राग करता होय, तेवा शब्द उठे छे. तथा ते वनने विषे ठामे ठामे घणी लघु वाव्य, गोलवाव्य ते पुष्करणी, तथा गुंजालिका ते ढांकेली वाव्य, लांबी वाव्य, तेमज एक उंचले होय तेने पंक्ति कहीये एवी सरनी पंक्ति, तथा एकनुं पाणी बीजामां आवतुं होय तेने सरसर पंक्ती कहीये तथा कूपनी पंक्ति ए सर्व सुकुमालछे, रत्नमय तेना कूलछे, रूपामय कूल कांठाछे, वज्रमय पाषाणेकरी तेनां पासा बांध्याछे, सुवर्णमय तेनां तलीयाछे, वैडूर्यरत्नमय अने स्फाटिकमय तेनां तटना समिपनां प्रदेशछे, सुवर्ण अने शुभ्ररजतमय तेनी वेलु छे, सुखे प्रवेश करवा योग्यछे, सुखे उतरवा योग्यछे, नवनवा प्रकारनां रत्ने करी तीर्थे भींत बांधीछे, चोखुणी छे, सरखो तटछे, अनुक्रमे नमतुं नमतुं जलनुं स्थानकछे, जिहां गंभीर शीतल जलछे, ते ठेकाणे बिसमृनाल नामे नीला कमल तेना पत्रेंकरी वली घणा उत्पल, कुमुद, नलिनि कमलजाति, आदिक अनेक जातिना कमल तेणे करी सहीतछे, ते कमलोने भमरा प्रमुख भोगवे छे, निर्मल पाणीये करी ते वाव्यो पूरण भरेलीउं छे, तेने विषे मत्स, काचबादिक अतिघणा भमेछे, तथा अनेक पक्षीओना युगल मैथुन क्रीडा करेछे तथा ते प्रत्येक वाव्य पद्मवरवेदिका अने वनखंडेकरी सहीत छे.

केटलीक वाव्य प्रमुखनां मदिराना सरखा पाणीछे, केटलीकनां वारूणीवर समुद्रनां सरखा पाणीछे, केटलीकनां गोदुग्ध सरखा पाणीछे, केटलीकनां घृतसरखा पाणीछे, केटलीकनां शेलडीनां रस सरखा पाणीछे, केटलीकनां अमृत सरखा पाणीछे, केटलीकनां स्वभाविक पाणी समान पाणीछे, ते वावी जोवा योग्यछे. इत्यादिक ए वावी कूपादिकनो वर्णन घणोछे ते जीवाभिगमादि सूत्रथी जाणवो. तथा फल, फूल, पत्र, आंबा, नीबू, दाडीम, जंभेरी प्रमुख सर्व पदार्थ ते वनने विषे रत्नमय जाणवा.

हवे ते वनने विषे ठाम ठाम घणा उत्पात पर्वतछे, जिहां व्यंतर प्रमुख देवता क्रिडा करवा निमित्तें आवी भवधारणीय वैक्रिय शरीरे करी क्रीडा करेछे. ते पर्वतने विषे स्फटिक रत्ननां मंडप, तथा मंचक, दगमाल प्रासाद विशेष, स्फटिकना प्रासाद, हींडोला खाट, पक्षीने बेसवाना ठाम इत्यादिक सर्व रत्नमयछे तथा हंस, क्रौंच, गरुड प्रमुखने आ

कारे जुदा जुदा जातनां अनेक सिंहासन प्रमुखछे, एरीते वावडीउं, तोरण, पुतलीयो, मेहेल ए सर्व रत्नमय छे. छ ए ऋतुमां सर्व स्थले देखवायोग्य रमणीक छे.

तथा ते वनखंडने विषे ठाम ठाम केलीनां घर, लतानां घर, अवस्थान घर, प्रछन्न स्नान करवाना घर, प्रसाधन घर इत्यादिक अनेक जातीनां घरछे, तेमज घणा जाय आदिक फूलोनां मंरूपछे. तथा उत्तम सय्या अने आशनने स्थानके पृथ्वी शिलाना पटछे, तिहां घणा व्यंतरिक देवो अने देवांगनाउं वसेछे, विश्राम करेछे,सूवेछे, बेसेछे, निषिद्या करेछे, पासुं पालटेछे, रमेछे, इछित सुख जोगवेछे, क्रीमा विनोद करेछे, मैथुन सेवा करेछे पूर्व जवना आचारेला सुकृतथी उपार्जन करेला कल्याणकारी शुजकर्म तेनां शुजविपाक फल जोगवतां थकां प्रत्येके विचरेछे. एमां एटलुं विशेष जे मांहेला पासानां वनखंम मां तृण नथी. तृणविनानो जाणवो. इत्यादिक वन संबंधि संक्षेप अधिकार कह्यो.

अथ धारवर्णनं

हवे ए जंबूद्वीपनां दरवाजानी संख्या कहेछे. एक पूर्वदिसे विजयनामे द्वार छे तेनो विजयदेव नामे पोलीउछे. बीजो दक्षणदिसे विजयंत नामे द्वार छे तेनो विजयंत नामे देवरक्षक छे. त्रीजो पश्चिमदिसे जयंतनामे द्वार छे तेनो जयंतनामे देव रक्षक छे. चोथो उत्तरदिसे अपराजित नामे द्वार छे तेनो अपराजित नामे देव रक्षक छे. एरीते विजयादि चार अनुत्तर विमानने नामे चार दरवाजानां पण नाम कह्या छे.

तिहां मेरूपर्वतने पूर्वदिसे पीस्तालीश हजार योजन जइये तेवारे जंबूद्वीपनी पूर्वदिसीने छेहेडे लवण समुद्रनी पूर्वदिसिनी पश्चिमदिसे सीतामहानदीनी उपरे विजयनामे दरवाजो छे, ते आठ योजन उंचोछे, चार योजन पहोलोछे, अने चार योजन लांबपणे प्रवेश पणेछे, तथा बे बाजुये एकेक कोशनी बारसांखनी जींत स्वेतवर्णेछे, तेनुं शिखर शोनानुं छे, तिहां हाथी, मृग, वृषज, अश्व, मनुष्य,मगरमछ, पंखी, सर्प्प, किन्नरनामा व्यंतरदेव, रुरुजीव, गेंमा, चमरीगाय, वनहस्ति, वनलता, पद्मलता प्रमुख चित्रामे करी युक्त छे. थंज उपर उत्तम वेदिका तेणेकरी सहीतछे, विद्याधरना युगलनां आकारे करी ते थंज युक्त छे, हजारोगमे सूर्यनां किरणो थकी पण अधिक प्रकाशवान छे, देदीप्यमानछे, चक्षुने जोवा योग्यछे, सुखकारी फरसछे, सश्रीक रूपछे.

वज्ररत्नमय तेनुं जूमी जागछे, अरिष्टरत्नमय पगथालीयानां मूलछे, वैडूर्यरत्नमय थंजछे, सुवर्णेकरी सहीत एवा उत्तम पंचवर्णा मणिरत्न तेणेकरी जूमितल बांध्युंछे, हंसगर्जरत्नो उंबरो बांध्योछे, गोमेद्यरत्नानां नीचला टोडलाछे, अने उलालोछे, लोहीताक्ष रत्नमय बार शाखछे, ज्योतिरसा रत्नमय बारणानां उपरला चांपणाछे, वैडुर्यरत्नमय

कमाडछे, वज्ररत्नमय पाटीयानी सांधि जमीछे, लोहीताक्ष रत्नमय बेपाटीया वच्चे खी लीछे, नवनवा मणीमय चणीयारा छे, वज्ररत्नमय भोगलछे, अने भोगलनो ठाम पण वज्ररत्नमय आवर्त्तन पीठिकाछे, जिहां उलालो वेशे ते ठाम जाणवो, अंकरत्नमय द्वारना बे पासाछे, एवा आंतरा रहीत निबरू अभंग कमाड छे.

ते द्वारने बेहुपासे बेसवाना चोवूणा ओटलाछे, तेनी पासे पण त्रण त्रणनी ठपन्न पंक्ति एवा १६७ लांवा ओटलाछे, तिहां नाना प्रकारनां मणिरत्नमय सर्पनां रूपछे, द्वारने बे पासे लीलाये करी सहीत एवी पुतलीछे, वज्ररत्नमय शिखरछे, रूपामय उपरलो पीठछे, सर्व सुवर्णमय चंडुवाछे, नाना प्रकारनां मणिरत्नमय जालपिंजर गवाक्षछे, मणिमय उपरलो वंशछे, लोहिताक्षरत्नमय उपरलो प्रतिवंशछे, रूपामय भोमछे, आदसरनां खागा अने बीजा पण जे खागाछे ते सर्व अंकरत्नमयछे, ज्योतिरसा रत्नमय वंशने वलाछे, ज्योतिरसा रत्नमय अनेक खापछे, ते उपरे रूपामय पीठछे, ते वच्चे सुवर्णमय पातली ठोतीछे, ते वच्चे सूक्ष्म तृण समान आछादन ढांकणी रूपछे, ते उपरे वली सर्व स्वेत रूपामय आछादनछे, अंकरत्नमय पक्षवाधाछे, सुवर्णमय शिखरछे, ते उपरे सुवर्णमय थूभिकाछे, ते द्वारनो उपरलो भाग सर्व स्वेतदक्षणावर्त्त संखनोछे जेम निर्मल दहीना दरूवां, गायनुं दूध, समुद्रनां फीण, रूपानापूंज, एना सरखो उज्वल पोलनो प्रकाशछे, तिलकरत्न तथा अर्द्धचंद्र तेणेकरी सहीत एवा अनेक चित्रामणछे,नाना प्रकारनी रत्नमय मालाये करीने ते द्वारनां मुख शोभितछे, बाहेर अने मांहे सुकुमालछे, पोल मध्ये सोनानी वेलु पाथरी छे, तेनुं शुभफरसछे, सश्रिकरूप छे, जोवा योग्य छे, यावत् प्रतिरूपछे.

हवे ते विजयनामा द्वारना बे पाशे बे ओटलाछे तेमां चंदने चर्चित बे बे कलशछे, ते कलश उत्तम कमल उपरे थाप्या छे. सुगंधित उत्तम पाणीये करी प्रतिपूरण भर्या छे. ते कलशने बावनां चंदननां छांटा कीधाछे. गलाने विषे राता सूत्रनां दोरा बांध्या छे, कमलनां ढांकणाछे, ए कलश प्रमुख सर्व रत्नमयछे.निर्मलछे. सुकुमालछे. यावत् प्रतिरूपछे. महोटा महोटा महेंद्र कुंभसमान ते कलश कह्या छे.

ते द्वारने बे पासे ओटले बेसवाने स्थानके बे बे नागदंता सरिखा खीलाछे, ते नागदंताने विषे घणी मोतीनी माला, लंबायमान हेमनी माला, गवाक्षने आकारे रत्ननी माला अने घुघर माल प्रमुख वलगाडीछे, तेणे करी सहीतछे, कांइक उंचाछे, सन्मुख निकल्या छे, त्रिछा भिन्न प्रदेशने विषे रूडीपरे रह्या छे.नीचें सर्पनां अर्द्ध आकार समानछे.सर्पाकृति संस्थाने संस्थितछे. सर्व रत्नमयछे, निर्मलछे, यावत् प्रतिरूपछे, एवा महोटा नागदंता हाथीनां दांत समानछे.ते नागदंताने विषे घणा कृष्णसूत्रें बांधी तेमज नीलसूत्रें,लालसूत्रें, पीलेसूत्रें, यावत् स्वेतसूत्रें बांधी एवी लंबायमान फूलनी मालानां समूह वलगाड्याछे, ते

मालाउने सोनानां फूमकाछे, सोनानी पानडीये मंमितछे, नाना मणिरत्न विविध प्रकारना हार अने अर्द्धहार तेणे करी सहीतछे, यावत शोजाये अत्यंत शोजता थका रहेछे.

ते नागदंता उपरे बीजा बे नागदंताछे ते मोतीनी मालाये करी शोजितछे तेनो वर्णन पूर्वपरे जाणवो, ते नागदंताने विषे घणा रत्नमय शीकाछे, ते शीकाने विषे घणी वैडुर्यरत्नमय धूपघटीछे, ते धूपघटी कृष्णागर, कुंदरुक तेने धूपेकरीने घम घमाय मान गंधने उत्कृष्ट पणे करी मनोहर छे, सुगंध गंधे करी गंधवंत छे, गंधनी वाती रूप उदार मनने गमती मनोहर नासिका अने मनने सुख उपजावे एवी गंधे करी ते प्रदेश प्रत्ये सर्व दिसे चोफेर पूरती थकी अत्यंत शोजती थकी यावत् रहेछे.

ते विजयनामे द्वारने बे पासे बे चोतराने विषे बेठकने विषे बे बे पूतली कही छे, पूतली ललितांग लीलावंत लीलाये सहित रूडे प्रकारे थापीछे, जले अलंकारे अलंकृतछे, ते पूतलीने नवनवा आकारनां वस्त्रछे, नवनवा प्रकारनी फूलनी माला कंठे पेहेरीछे, जेनो कटी प्रदेश मुष्टीये ग्राह्यछे, जेना शिखर सरिखा युगल वृत्ताकारे उंचा पुष्ट मांसे युक्त एवा पयोधरछे, नेत्रनां खूंणा राताछे, केश कालाछे, कोमल निर्मल जला लक्षण सहित प्रशस्त संवस्योछे छेमो जेनो एवा मस्तकनां केशछे, किंचित् अशोकवृक्षने आश्रितछे शरीर जेनो, मावे हाथे ग्रहीछे अशोकवृक्षनी शाखा जेणे, किंचित् अर्द्ध कटाक्ष तेनी चेष्टाये करी देवता प्रमुखने लूसती थकी, चक्षुने विलोकवे करी माहोमांहे जाणीये खिंसना करती थकी एवी ते पूतली पृथवीकायमयछे, शाश्वते जावे छे, तेनुं चंद्रमा समान मुखछे, चंद्रमा सरखो मनोहर विलासछे, अर्द्धचंद्रमा समान निल्लाडछे, चंद्रथकी अधिक सोम्यदर्शनछे, उल्कापातनी पेरे उद्योत करतीछे, मेघनी वीजली थकी सूर्य देदीप्यमान छे तेथी पण देदीप्यमान अधिकतर प्रकाश वालीछे. शोल श्रृंगारने आकार तेणे करी मनोहर वेष छे, जोवा योग्य छे, यावत् प्रतिरूप छे,ते पूतली तेजे करी अत्यंत अत्यंत शोजती थकी रहेछे.

ते विजयनामा द्वारने बे पासे बे उंटलाने विषे बे बे जालीना कटक समूहछे, ते जाल कटक सर्व रत्नमयछे, यावत् प्रतिरूपछे, तथा ते द्वारने बे पासेना बे उंटलाने विषे बे बे घंटा कहीछे ते जंबूनंद रत्नीछे, वज्र रत्नमय लालछे, नाना मणिमय घंटाना पासाछे, सुवर्णमय सांकलछे, रूपामय रासडीछे, ते घंटानो उघस्वरछे, मेघनां सरिखो स्वरछे, हंसनां सरिखो स्वरछे, कौंचनां सरिखो स्वरछे, तथा बार वाजानां समूहनो स्वर तेने नंदीस्वर कहीये तेना सरखो स्वरछे अने तेना सरखो घोषछे, सिंहना सरखो स्वरछे, सिंहनां सरखो घोषछे, मीठो स्वरछे, मीठो घोषछे, जलो स्वरछे, जला स्वरनो घोषछे, ते स्थानकनां प्रदेश उदारछे, मनोज्ञ स्वरछे, कान अने मन तेने सुखनो करनार एवे शब्दे यावत् रहेछे.

विजय द्वारने बे पासे बे ओटले बे बे वनमाला कहीछे. जेमां पत्र, पुष्प, फल, अंकूरा अने साखा एकठा गुंथ्यां होय तेने वनमाला कहीये ते वनमाला नाना प्रकारनां फूल, लता, टिसी, अंकूरा तेणे करी सहीतछे, भमरा प्रमुख जीवे भोगवती थकी सोभायमान मनोहरछे, जोवा योग्यछे, प्रतिरूपछे, ते प्रदेशे गंधे करी पूरती थकी यावत् रहेछे,

ते विजयद्वारने बे पासे ओटलाने विषे वली बे बे चोखूणा ओटलाछे ते चार योजन लांबा अने पोहोलाछे, बे योजन जाड पणेछे, सर्व वज्र रत्नमय निर्मलछे यावत् प्रतिरूप छे ते ओटला उपरे प्रत्येके प्रत्येके प्रासादावतंसक छे, ते चार योजन उंचपणेछे तथा बे योजन लांब पणे अने पहोल पणेछे, ते प्रासादावतंसक सन्मुख नीकली सर्व दिसे प्रसार पामेली एवी प्रभा तेणे करी जाणीये कांती खीलाती रहेती नथी? एवाछे, विविध विविध प्रकारनां मणिरत्न भांते करी विचित्रछे, विजय अने विजयंति ध्वजा वायरे करी कंपितछे, छत्र अने ते उपर छत्र तेणे करी सहीतछे, ते प्रासादनां शिखर अत्यंत उंचाछे, आकाश तलने उलंघे छे, ते भुवननी भींते जालीछे, तेनी शोभाने अर्थे रत्न जड्यांछे, करंडीयामां जडीत रत्न राख्या होय ते जेवा शोभे तेवा ते रत्न शोभेछे, मणी अने सुवर्णनां शिखरछे, विकश्वर शतपत्र तथा पोंडरीक कमल तथा तिलक वृक्ष प्रमुख रत्नमय तथा अर्द्धचंद्र इत्यादिकनां स्वरूप द्वारने विषे छे, नाना प्रकारनी मणिमय माला तेणे करी ते प्रासादनुं द्वार शोभितछे, ते प्रासाद मांहे अने बाहेर सुकमालछे, तेमां सुवर्णनी वेलु पाथरीछे, तेनो सुखकारी फरसछे, सश्रीक मनोहररूपछे, जोवा योग्य, यावत् प्रतिरूपछे.

ते प्रत्येके प्रत्येके प्रासादावतंसकने मध्ये घणुंक सम मनोहर भूमि भागछे, ते जेम मुरज नामा ढोलनो तलो ते समानछे, यावत् मणिये करी उपशोभितछे, मणिनो गंध वर्ण फरस पूर्वेली परे जाणवो, तेमध्ये चंद्रोदय अने पद्मलता प्रमुखछे, यावत् सामलिका नामे वनस्पति प्रमुखनां चित्रामणछे, ते सर्व सुवर्णमयछे, निर्मलछे, यावत् प्रतिरूपछे.

ते सम मनोहर भूमिभागनां मध्यदेश भागने विषे प्रत्येके प्रत्येके मणिमय पिठिका चोतरा रूपछे. ते एक योजन लांब पणे अने पोहोल पणेछे, अर्द्ध योजन जाड पणे, सर्व रत्नमयछे, यावत् प्रतिरूपछे.

ते मणिपीठिकानी उपर प्रत्येके प्रत्येके सिंहासन छे ते सिंहासननां पगथालियानां अधःप्रदेश सुवर्णमय, रुपामय सिंहासनछे, सुवर्णमय पगथालीयाछे, नवनवा रत्नमय पादपीठछे, जंबुनंद रत्नमय गात्रछे, वज्र रत्नमय संधि पूरितछे, नवनवा रत्नमय सिंहासननुं तलीउंछे, ते सिंहासन हस्ति, मृग, वृषभादिनां चित्रामणे युक्तछे, मणिरत्नमय पादपीठछे, तेनां उपर कोमल मसूरनुं नूतन सीतल स्पर्श सहीत सिंहनी केसरा समान ए,

वस्त्र ढांक्युंछे तथा जला ऊंडाऊ रूप राते वस्त्रें करी पाद पीठ ढांक्याछे, तेनो मृग-चर्म, रू, पर, माखण अने अर्क समान कोमल फरसछे.

तथा ते सिंहासन उपरे प्रत्येके प्रत्येके विजयदूष्य चंडुवाछे, ते चंडुवा संख, मच कुंद. पाणीनां फूसारा, अमृत, समुद्रना फेण सरखा स्वेतवर्णछे, ते सर्वे वस्त्र रत्नमयछे तथा ते विजयडुष्यने मध्यदेश जागे प्रत्येके प्रत्येके वज्र रत्नमय अंकूस रूपछे, ते अंकूसने विषे कुंज समान मोतीनी मालाछे, ते माला पासे वली तेथकी अर्द्ध स्वरूपे कुंज समान मोतीनी मालाये करी सर्व दिसे चोक फेर परिवरीछे, ते मालाने सोनानां फूमकाछे, सुव र्णने प्रकरे शोजितछे, ते प्रासादावतंसक उपरे घणा आठ आठ मंगलीकछे, तथा द्वारने बे पासे बे ऊंटले बे बे तोरणछे, ते तोरण आगल बे बे पुतलीछे, तथा बे बे नागदंता छे, ते नागदंताने मोतीनी माला लगाडीछे, तेम ते नागदंताने विषे घणीज कृष्णसूत्रें बंध फूलनी मालानां समूह यावत् रहेछे, तथा ते तोरणने आगल घोडाने आकारे बे बे युग्मछे, तथा वावीनी पंक्ति, मैथुन ते स्त्रीसहीतरूप, बे बे पद्मलता छे. तथा अक्षत स्वस्तिकछे, तथा उत्तम कमल उपर चंदने चर्चित कलश थाप्याछे, तथा बे बे भृंगार कमल उपर थाप्याछे, तेनां मत्तहाथीनां मुख समान आकार छे.

ते तोरणने आगले बे आरीसाछे, ते आरीसानो घर सुवर्णमयछे, वैडूर्य रत्नमय आ रीसा फालवानी मूंठीछे, वज्र रत्नमय हाथोछे, अनेक मणिमय श्रंखलाये वेष्टित शो जितछे, अंकरत्नमय खाप एटले रूप जोवानुं ठामछे, तेनी छायाये करी सर्व देखाय, अनुबंध सहीत छे, चंद्रमंडल सरखा छे, मोटा अर्द्धकाय समान छे.

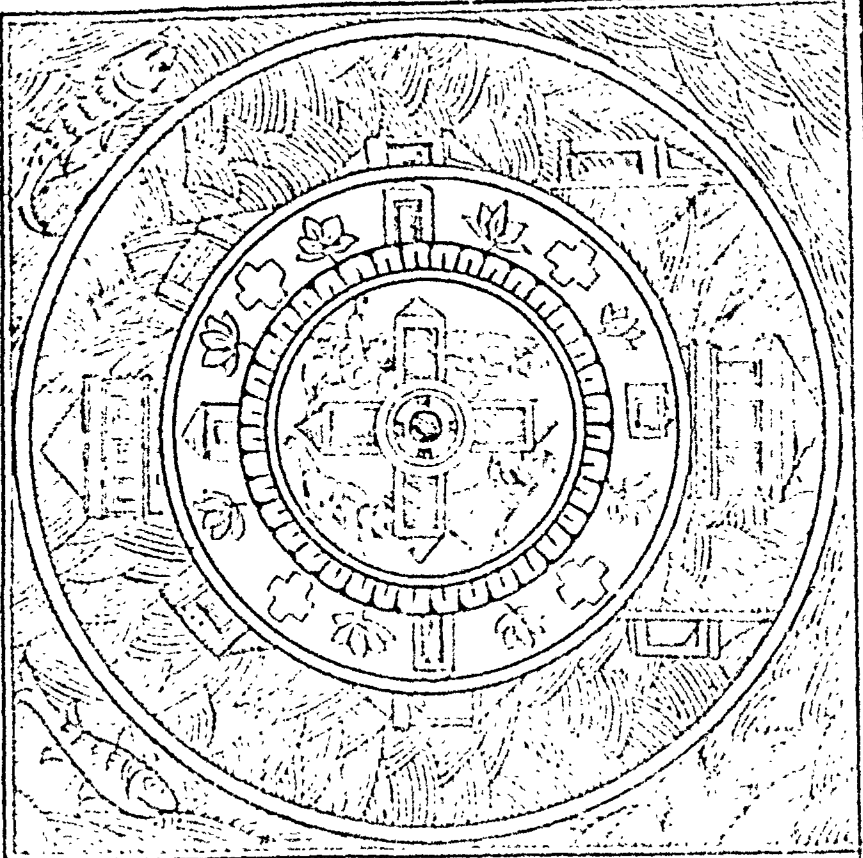
ते तोरणनी आगल वज्रनी नाजी समान थालछे, ते थाल स्फटिक समान त्रण्य वार छड्या शाली मध्यनां तंडुल मूसले करी खांड्या एवा तंडुले करी जर्या थका रहेछे, ते चोखा अने थाल सर्वे जंबूनंद रत्न मयछे. मोहोटा मोहोटा रथनां पइडा समान ते थाल छे. ते तोरणनी आगल बे बे पात्रीछे, ते निर्मल पाणीये करी प्रतिपूरणछे, अनेक प्रकारना पंचवर्ण फूलेकरी प्रतिपूर्ण समानछे, तथा बे बे सुप्रतिष्ठक जाजन विशेषछे. ते अनेक प्रकारनां पूजाना उपकरणे करी जर्याछे, सर्व ऊषधीये प्रतिपूर्णछे. तथा बे बे मनोगुलिका पीठिकाछे, तेने घणा सोनामय रूपामय पाटीयाछे, ते पाटीयाने विषे घ णा वज्रमय नागदंताछे, ते नागदंताने विषे घणा रूपामय शीकाछे. ते तोरणनी आगल बे बे आश्चर्यकारी रत्ननां करंडीयाछे, तथा बे बे हयकंठछे, यावत् बे बे वृषजने आकारे तोडला छे, इत्यादिक घणा पदार्थो छे. तेनुं विशेषे वर्णन जीवाजिगमथी जोइ लेवो.

विजय द्वारने विषे चक्र, मृग, गरुड, बगला, पीछ, छत्र, शकुनी पंखी, सिंह, बलद,

जगतीनी स्थापना तथा विजयादि चार

दरवाजानी स्थापना.

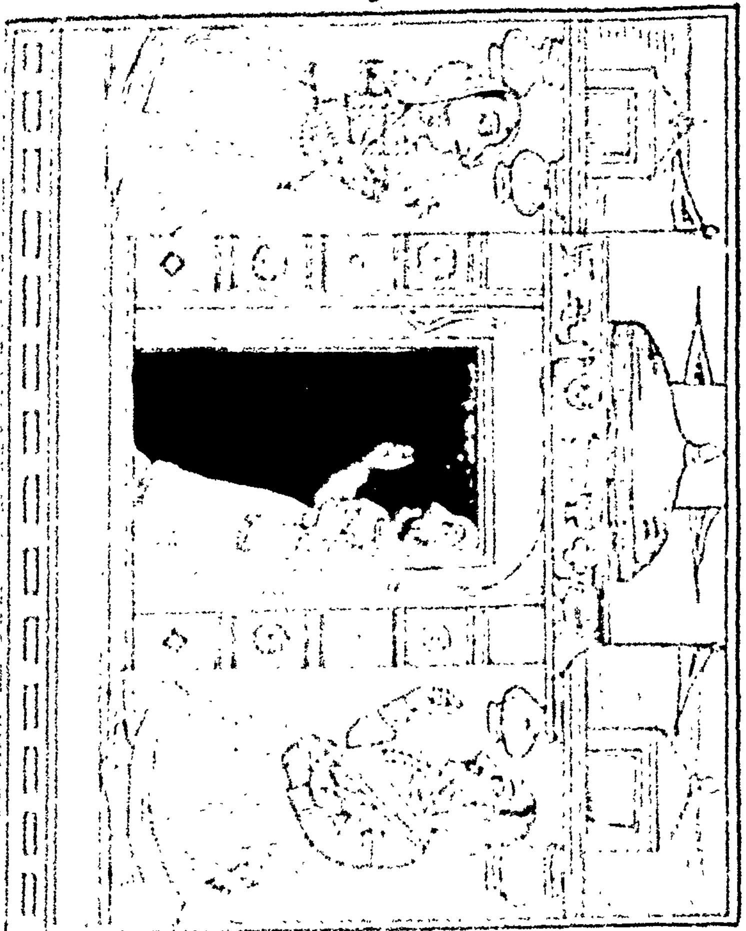
१



जंबूद्वीपना विजयद्वारनी पासेनी भूमिनी स्थापना

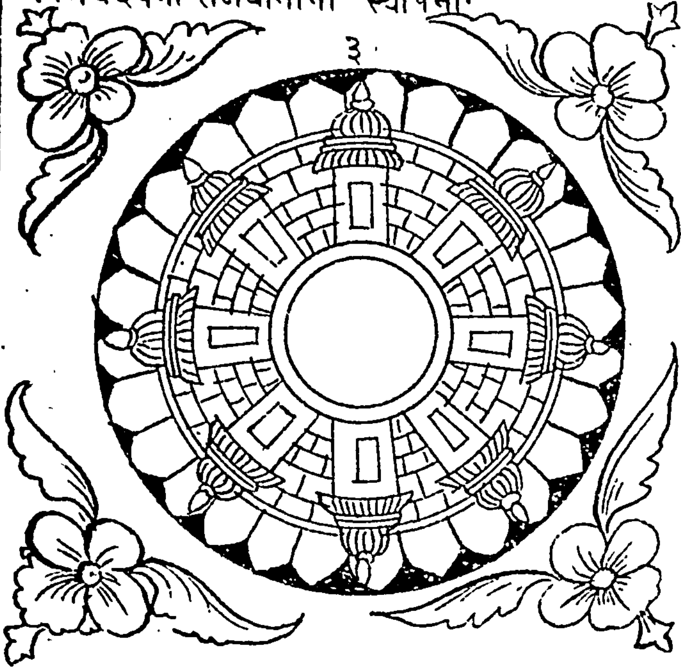
तथा देवोनी स्थापना.

२



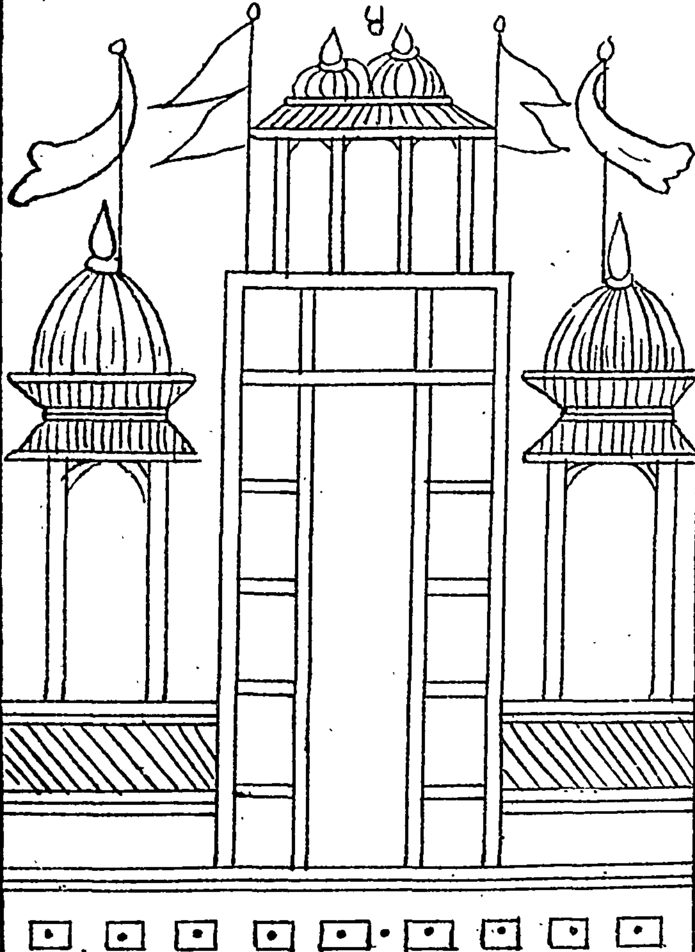
विजयदेवनी राजधानीनी स्थापना

३

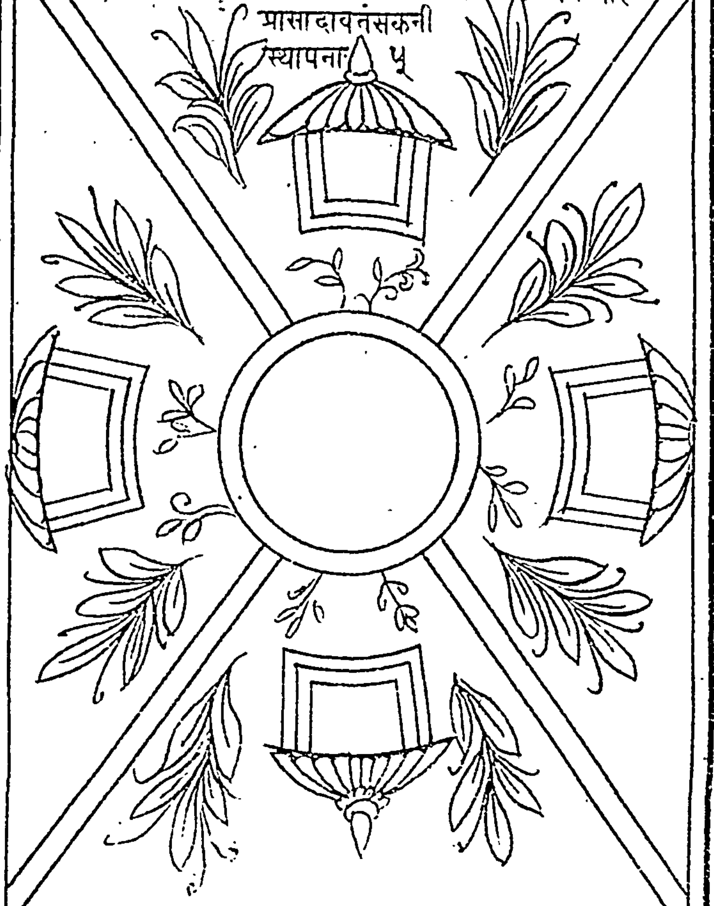


विजयराजधानीना द्वारनी स्थापना

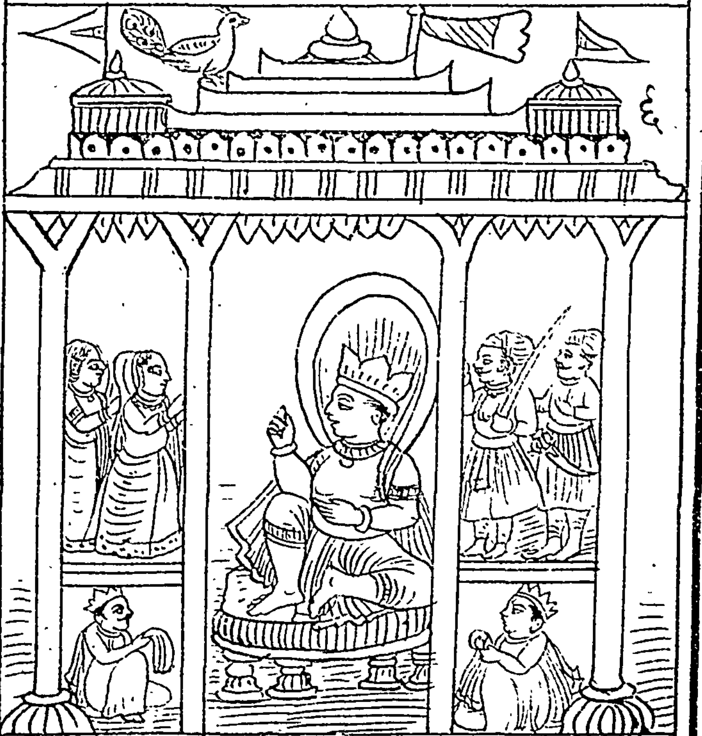
४



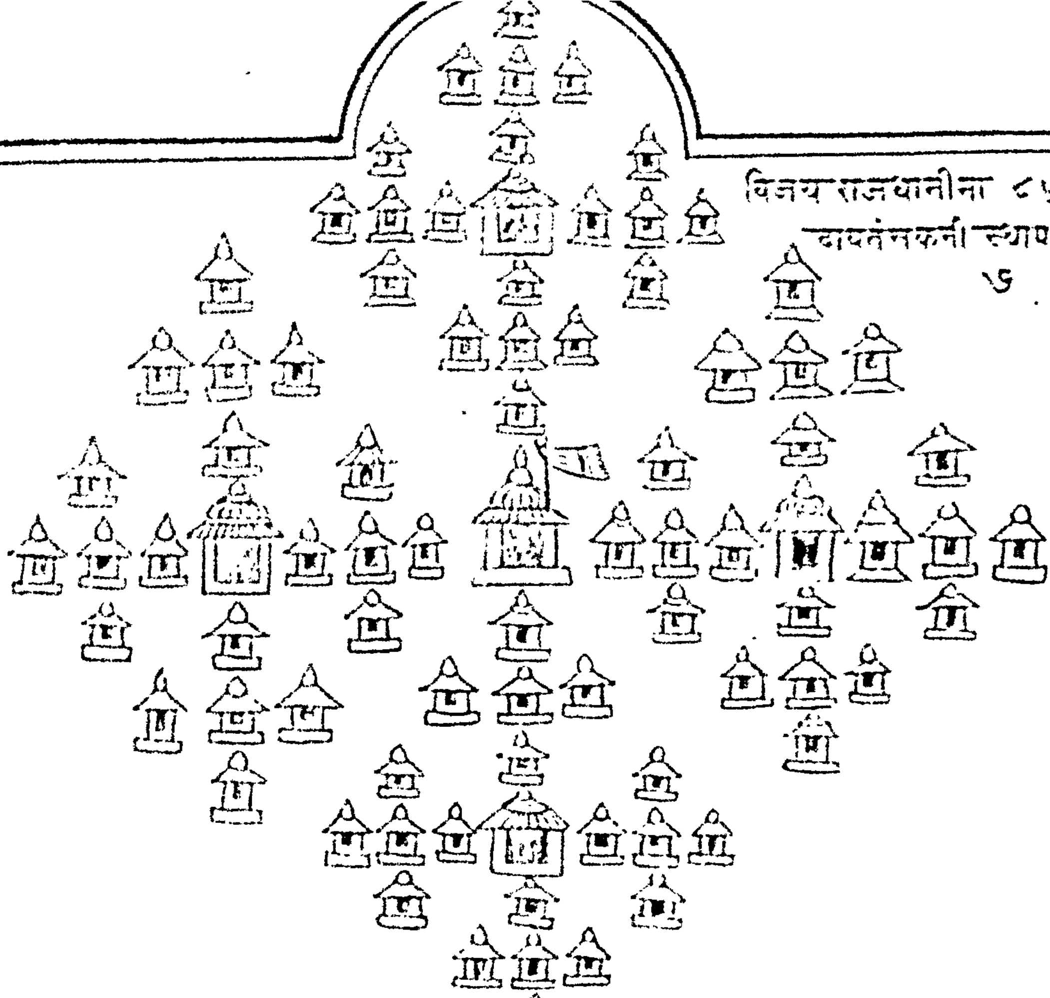
विजयराजधानीनी चारे दिशाना चार वनखंड अने चार प्रासादावतंसकनी स्थापना ५



६

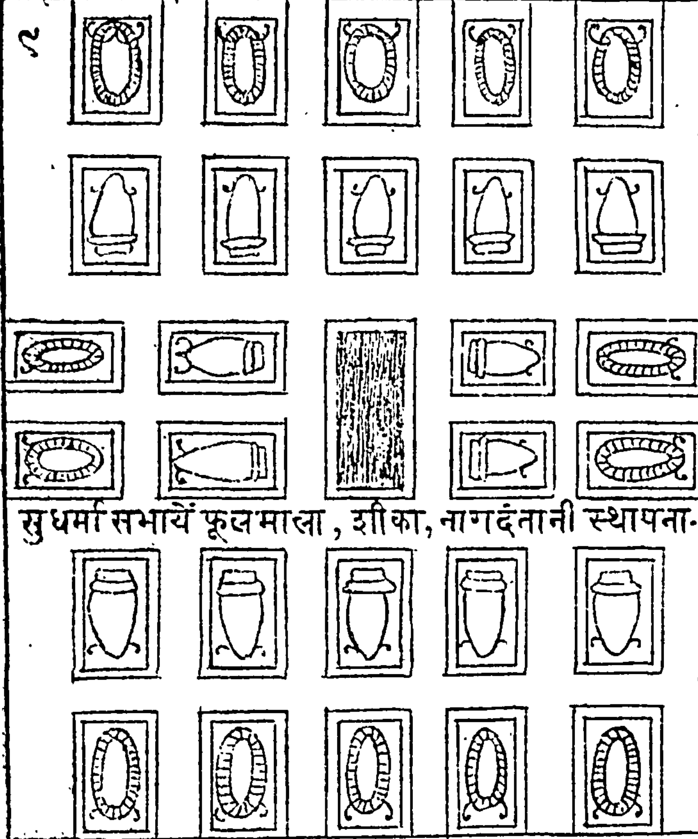


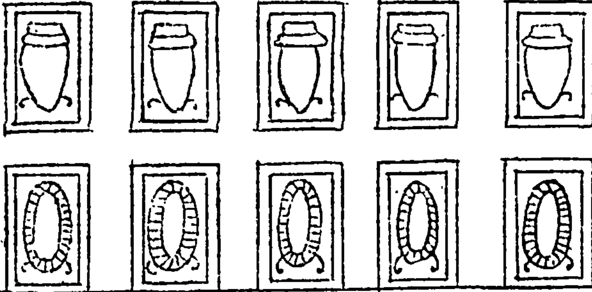
वनखंडना प्रासादावतंसकना मध्यभागने विषे अशोकादिवनखंड ने नामे वसनारा देवोना भद्रासन छे तेनी स्थापना


विजय राजधानीना ८५ प्रासादा-
वतंसकनी स्थापना.
७



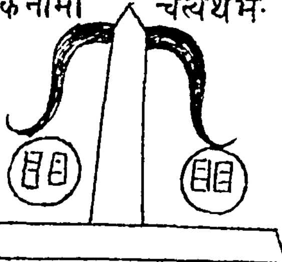

मूल प्रासादावतंसकनी ईशा-
नकोणे सुधर्मा सभा
ने विषे जिनदाढा
स्थापना.
८

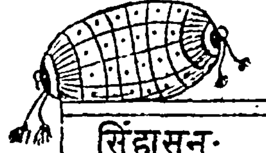


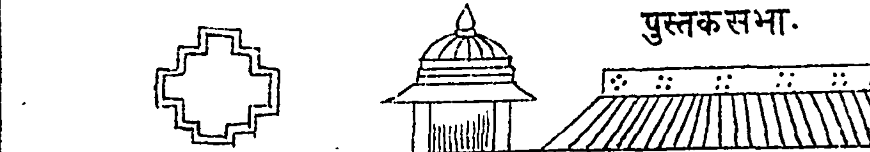


सुधर्मा सभायें फूलमाला, झीका, नागदंतानी स्थापना·

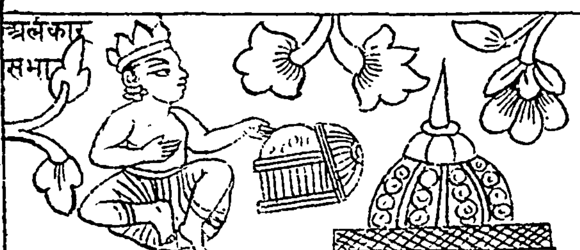




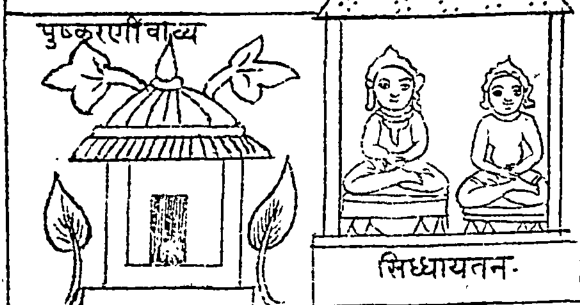


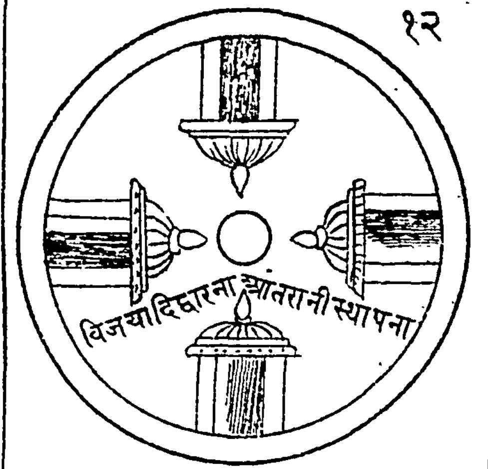


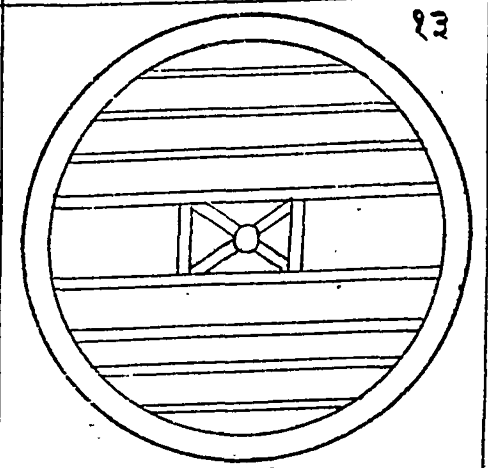


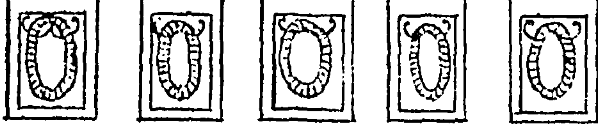
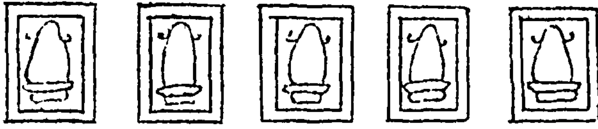
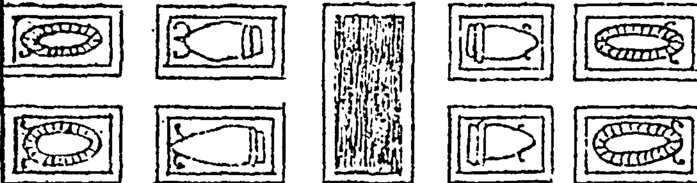
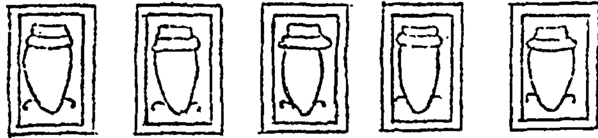
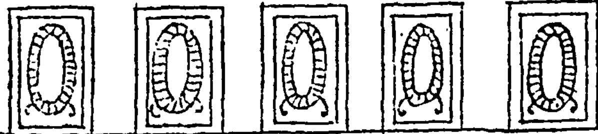




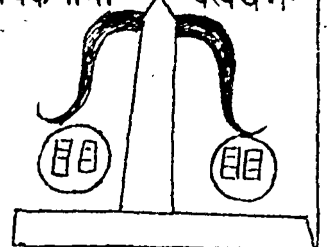


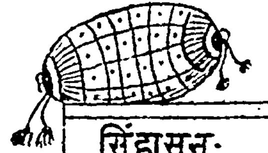


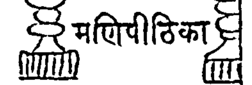
सामान्य जंबूद्वीपनी स्थापना·

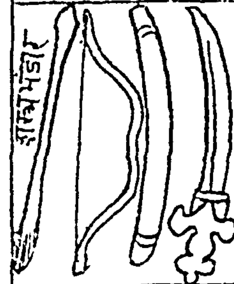





सुधर्मा सभायें फूलमाला, शीका, नागदंतानी स्थापना·



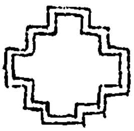
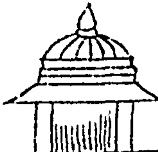






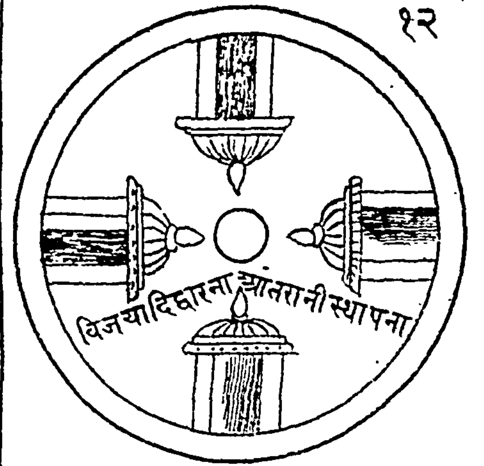


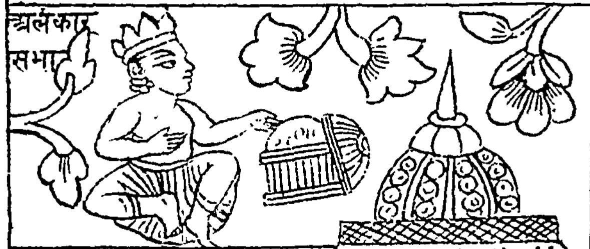
११



पुस्तकसभा·

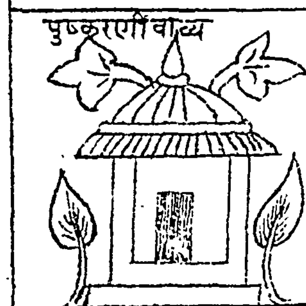






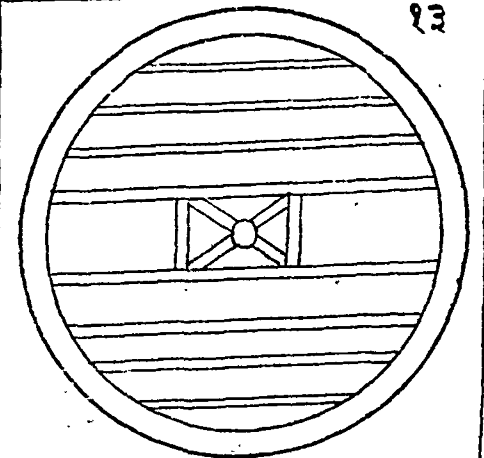







सिध्धायतन·





सामान्य जंबूद्वीपनी स्थापना·

स्वेत चउदंता हस्ति ए दस मोहेलां एकेकना चिन्हे करी युक्त एकशो ने आठ आठ ध्वजाउं छे. तेवारे ए दशेना चिन्हे युक्त सर्वमली १०८० ध्वजाउं विजयद्वारे छे.

विजय द्वारनी नव भूमिछे. ते मध्यमा पांचमी भूमिने विषे एक मोहोटुं सिंहासन छे, ते सिंहासननी वायव्यकूंणे अने उत्तरदिसे तथा इशानकूंणे विजय देवतानां चार हजार सामानिक देव तेना चार हजार भद्रासनछे, ते सिंहासननी पूर्वदिसे विजय देवतानी चार अग्रमहीषीना परिवार सहित चार भद्रासनछे, तथा अग्निकूंणे विजय देवतानी अभ्यंतर परखदानां आठ हजार देवता तेनां आठ हजार भद्राशनछे, तथा दक्षणदिसे विजयदेवतानी मध्य परखदानां दशहजार देवतानां दशहजार भद्रासनछे, तथा नैरुतकूंणे विजयदेवतानी बाहेरली परखदानां बारहजार देवतानां बारहजार भद्रासन छे, ते मूल सिंहासनथी पश्चिमदिसे विजयदेवतानां सात कटकनां धणीना सात भद्रासनछे, तथा सिंहासननी पूर्वादिक चार दिसाये प्रत्येके चार चार हजार भद्रासन छे. तेविजयदेवताना आत्मरक्षक देवो शोल हजारछे, तेना चारेदिसिये मली शोल हजार भद्राशनछे, अवशेष आठ भूमिने विषे प्रत्येके प्रत्येके भद्रासन कह्या छे ते सामानिकादिक देवो योग्य सिंहासन परिवार रहित कह्याछे.

तथा उपरला पोल उपरे शोल प्रकारनां रत्ने करी शोभितछे, तथा घणा आठ आठ मंगलीकछे, तथा उपरे घणा कृष्ण चामर ध्वजा छे, सर्व रत्नमयछे. तेमज घणा छत्रातिछत्र प्रमुख पूर्वपरे जाणवा. ए विजयनामे द्वारे विजयनामे देवता महर्द्धिक,महाकांतिनो धणी, महाअनुभावनो धणी, एक पल्योपमने आउखे वसेछे, तेना चार हजार सामानिक देवता, चार अग्रमहीषी परिवार सहीत, त्रणं परखदानां देवो, सात कटकनां धणी, शोल हजार आत्मरक्षक देवता प्रमुख बीजा पण घणा विजया राजधानीनां रहेनारा देवता अने देवांगना प्रमुख ठाकुर पणे देवता संबंधीया भोग भोगवता थका विचरे छे तेथी ए विजय द्वारनुं विजय एवुं शाश्वतुं नामछे.

हवे ए विजयनामा द्वारनां विजयनामे देवतानी विजया नामे राजध्यानी ते एज विजय द्वारने पूर्व दिशाये तिर्छा असंख्याता द्वीप अने समुद्र मूकी जइये तिहां बीजो जंबूद्वीपनामे द्वीप आवेछे तेमध्ये बार हजार योजन अवगाही जइये तिहां ए विजय देवतानी विजया नामे राजधानीछे.

ते विजयानामे राजधानी बार हजार योजन लांबपणे तथा पहोलपणेछे अने (३७९००) योजन कांइक विशेषाधिक एटली तेनी परिधि फरतीछे. ते राजधानी एक प्राकारे एटले गढे करी सर्व दिसे चोक फेर वींटीछे, ते गढ साडा साडत्रीश योजन उंचोछे, मूलमां शाडावार योजन पाइये पहोलोछे, मध्यमां सवा छ योजन पहोलपणे छे तथा

उपर त्रण योजन अने अर्द्धगाउ पोहोल पणेछे एटले मूलमां विस्तार पणेछे, मध्ये सांकडोछे, उपर पातलोछे, बाहेरे गोलछे, मध्ये चोखूणोछे, गायना पूंछने संस्थाने संस्थितछे, सर्व सुवर्णमयछे, निर्मलछे, यावत् प्रतिरूपछे, ते गढ नाना प्रकारनां पंचवर्णा कोसीसाये करी शोभितछे, ते कोसीसा अर्द्धगाउ लांबपणे छे, पांचसे धनुष पहोलपणे छे, देसोन अर्द्धकोश उंचपणे छे.

विजया राजधानीने एकेकी दिसिये सवासो सवासो बारणाछे, एम चारे दिसिनां मली पांचसे दरवाजाछे. ते प्रत्येक दरवाजो साडीबासठ योजन उंच पणेछे, सवाएकत्रीश योजन पहोलपणेछे, सवाएकत्रीश योजन प्रवेशछे, स्वेतछे, उत्तम सुवर्णमय शिखर थूभिकाछे, तिहां हाथी मृग इत्यादि चित्रामणनो अधिकार सर्व विजय द्वारनीपरे जाणवो.
तथा एकेक द्वारे सत्तर भूमिछे ते चंडुआ तथा पद्मलता प्रमुख चित्रामणे करी युक्तछे, तथा तेने विषे सिंहासन कह्याछे इत्यादिक तथा बे पासेना बे उंटला तथा बे बे चोखूणा उंटला तथा प्रासादावतंसक इत्यादिक वातो सर्व जीवाभिगम सूत्रथी जोवी.

विजया राजधानीने पूर्वादि चार दिसाये चार वनखंडछे ते आवी रीतेः—पूर्व दिशाये आशोपालव अशोकवनछे, दक्षिणदिसे सडसडो सप्तवर्ण वनछे, पश्चिमदिसे चंपक वनछे, अने उत्तरदिसे आम्रवनछे, ते वनखंड कांइएक जाझेरा बार हजार योजन लांब पणे छे, पांचसे योजन पोहोल पणेछे, प्रत्येके प्रत्येके गढे करी सहीतछे, एनी कृष्णशोभाछे एम यावत् तिहां घणा व्यंतरिक देव देवांगनाउ विसामो करेछे इत्यादि सर्व पूर्वपरे कहेवुं तथा चार वनमां चार प्रासादावतंसक छे तेमां तेवेज नामे चार देवता परिवार सहीत रहेछे तेमज माहेली भूमीनो वर्णन इत्यादि अधिकार सर्व जीवाभिगमसूत्रथी जाणवुं.

विजया राजधानीनां मध्य देशभागने विषे एक पडथार रूप चोतरोछे. ते बारसो योजन लांबपणे अने पहोल पणेछे, ३७९५ योजन कांइक विशेषाधिक फरतोछे, अर्द्धकोश जाडपणेछे, सर्व जंबूनद रत्नमयछे, ते चोतरो एक पद्मवरवेदिका अने वनखंड तेणेकरी सर्व दिसे चोकफेर वींटांणोछे, पद्मवरवेदिकानो वर्णन अने वनखंडनो वर्णन पूर्वपरे जाणवो. ते वनखंड देसोन बे योजन फरतुं परिधिये पहोलुंछे. चोतरा समान फरतुंछे. ते चोतराने चारदिसे चार पगथालीयाछे, पगथालीयाने आगले प्रत्येके प्रत्येके तोरण छे, छत्रातिछत्र छे.

ते चोतराना मध्यभागने विषे एक मूल प्रासादावतंसकछे, ते साडाबासठ योजन उंचोछे, अने सवाएकत्रीश योजन लांबो तथा पहोलोछे, तेना मध्यभागने विषे वली एक मणिमय पीठिका चोतरोछे, ते मणिपीठिका एक योजन लांवी पहोलीछे, अर्द्ध योजन जाड पणेछे, तेनी उपर एक महोटुं सिंहासनछे, ते सिंहासननो वर्णन सर्व परि

वार सहीत जाणवो. ते मूल प्रासादावतंसक वली बीजा चार प्रासादावतंसके सर्वे दिसे चोफेर व्यापछे. ते चार प्रासाद सवा एकत्रीश योजन उंचपणे छे, तथा साडा पंदर योजन अने अर्द्धगाउ लांबा अने पहोला छे, ते एकेको प्रासादावतंसक वली बीजा चार चार प्रासादावतंसके सर्वे दिसें चोकफेर व्यापछे. ते प्रासाद साडापंदर योजन अने अर्द्धगाउ उंचपणेछे, तथा पोणा आठ योजन अने पा गाउ लांबा पहोलाछे. वली ते प्रत्येक प्रासादावतंसक वली बीजा चार चार प्रासादावतंसके सर्वे दिसे व्यापछे. ते प्रासाद पोणा आठ योजन उपर पा गाउ उंचाछे, अने साडासातसे धनुषे उंणा चार योजन लांबा अने पहोला छे, ए सर्वे मली ८५ प्रासाद थाय ते आवी रीते. एकतो मध्य प्रासाद, तेने चार दिसाये चार प्रासाद ते एकेकानी पछवाडे वली चार चार प्रासाद अने वली ते एकेकानी पाछल चार चार प्रासाद एवं ८५ थाय;एनुं पांचमा आंकनुं चित्र आ पुस्तकनां त्रीजा पृष्ठमांछे ते जोवुं.

हवे ते मूल प्रासादावतंसक थकी ईशान कोणे विजय देवतानी सुधर्मा नामे सभा छे, ते साडा बार योजन लांबी, सवा छ योजन पहोली, अने नव योजन उंचपणेछे, अनेक थांभाना शतकमा तेणे करी सहीतछे, उंचा थंभ उपरे वज्र रत्नमय उपरली कुंभी छे. तिहां प्रधान रचित तोरण अने पुतलीछे, मनोज्ञ संस्थाने संस्थितछे, वैडूर्य रत्नमय थंभछे, नव नवा प्रकारनां रत्न सुवर्ण मणि प्रमुखे सहीत निर्मल विस्तार पणे अत्यंत समनिविड आश्चर्यकारी मनोहर धरती तलछे, हाथी, मृग, वृषभ, अश्व, मनुष्य, मगरमत्स, पंखी, सर्प, किन्नरदेव, गेंडो, चमरिगाय, वनहस्ति, वनलता, विद्याधरना युगल, पद्मलता प्रमुखनां चित्रामणछे, सूर्यना सहस्र किरणथी पण अधिक तेजछे, पंचवर्णा घंट अने ध्वजाये करी शोभितछे, चंदुआ तथा तोरणे करी सहीतछे, बावनां चंदन रस सहीत नीलुं रक्तवर्णे तेना ठामे ठामे हांथा दीधाछे, स्थानके स्थानके बावना चंदनना कलश मूक्याछे, फूलनी मालानां समुदाय, पंचवर्णा रस सहीत सुगंधि फूल तेना ठाम ठामने विषे पूंजछे. कृष्णागर कुंदरुक प्रमुखनो धूप तेने मघ मघाटे करी मनोहर गंधछे, अपसराना समुदाये करी ते सभा संकीर्णछे, देवतानां वाजित्र जे मृदंगादिक तेना स्वरे सहीतछे, तेना त्रण दिसिये त्रण द्वारछे, ते द्वार प्रत्येके बे बे योजन उंच पणे छे अने एक योजन पहोल पणे छे, तेटलोज प्रवेश छे एटले भींतनुं जाडपणुं जाणवुं. ते प्रासादनी उपर स्वेत उत्तम सुवर्णनां शिखरछे, यावत् वनमाला पर्यंत द्वारनुं वर्णन पूर्वपरे जाणवुं.

ते द्वारने आगल प्रत्येके प्रत्येके मुखमंडपछे, ते साडाबार योजन लांब पणे अने सवा छ योजन पहोल पणेछे, कांइक जाजेरा बे योजन उंचपणेछे, ते मंडप अनेक थंभे

केरी सहीतछे, तिहां चंद्रोदय अने नूमिन्नागनो वर्णन पूर्वपरे जाणवुं, ते प्रत्येक मुख मंरूप उपर आठ आठ मांगलिक छे.

ते मुखमंडप आगले प्रत्येके प्रत्येके प्रेक्षाघर मांडवाछे, ते पण तेटलाज लांबा पहोलाछे. ते प्रेक्षाघरना मध्यन्नागने विषे प्रत्येके चोखूणा वज्र रत्नमय चोतराछे, ते चोतराना मध्यन्नागे मणिपीठिकाछे, ते एक योजन लांबी पोहोली अने अर्द्ध योजन जाडीछे ते प्रत्येक मणिपीठिका उपरे एकेक सिंहासन छे.

तथा ते प्रेक्षाघर मंडप आगले त्रण दिसे त्रण मणिपठिका कहीछे, ते बे योजन लांबी पोहोली अने एक योजन जारूपणे छे, ते प्रत्येक मणिपीठिका उपरे चैत्यथून्नछे ते चैत्यथून्नने आगले त्रण दिसिये प्रत्येके मणिपीठिका छे, ते प्रत्येक मणिपीठिका उपर चैत्यवृक्ष छे, हवे ते चैत्यवृक्षने आगले जे त्रण दिसे त्रण मणिपीठिकाछे ते प्रत्येकना उपरे महेंद्रध्वजछे, ते हजारो गमे न्हानी ध्वजाउंए करी सहीतछे, तेना उपरे आठ आठ मंगलीकछे, एनुं चित्र छहा आंकनुं त्रीजा पृष्टमां जोवुं.

ते महेंद्रध्वजने आगले त्रण दिसायें त्रण नंदापुष्करणी छे, ते साडाबार योजन लांबी अने सवा छ योजन पहोलीछे, दस योजन उंमीछे, ते पुष्करणी प्रत्येके प्रत्येके पद्मवर वेदिकायेकरी तथा वनखंडे करी सहीतछे,ते प्रत्येक पुष्करणीने त्रण दिसेत्रण पगथालीयाछे.

सुधर्मासन्नाये छ हजार मनोहर चोखूणा उंटला छे, तेमां पूर्वदिसे बे हजार पश्चिमदिसे बे हजार, दक्षिणदिसे एक हजार अने उत्तरदिसे एक हजार छे, ते उंटलाने विषे घणा सुवर्णमय अने रूपामय पाटीयां छे, ते पाटीयांने विषे घणावज्रमय नागदंताछे, ते नागदंताने विषे घणा कृष्णादि पांच जातना सूत्रे बद्ध एवी फूलनी मालाना समुदाय छे, ते मालाना सुवर्णना फूमका छे.

सुधर्मासन्नाये छ हजार गोमानशीका सय्यारूप स्थानक लांबा उंटलाछे, तेमां पूर्वदिसे बे हजार, पश्चिमदिसे बे हजार, दजिणदिशे एक हजार, अने उत्तरदिसे एक हजार. ते गोमानसीकाने विषे घणा सुवर्ण अने रूपामय पाटीया छे. यावत् वज्र रत्नमय नागदंताने विषे घणा रजतमय शीकाछे, ते शीकाने विषे घणी वैडूर्यरत्नमय धूप घटीछे, ते कृष्णागरु, कुंदरुक, लोबान प्रमुखे करी सहीत छे.

ते सुधर्मासन्नाना मध्यने विषे एक महोटी मणिपीठिका छे. ते वे योजन लांबी अने पहोलीछे, तथा एक योजन जाड पणेछे तेनी उपर मानवक नामे चैत्यथंन्नछे, ते साडासात योजन उंचो अने अर्द्धकोश नूमिमां उंमोछे, अर्द्धकोश विष्कंन्न पणेछे, छ हांसछे, छ संधीछे, छ स्थानके शोन्नितछे, ते माणवकथंन्न उपरे दोढ योजन जइये अने हेठे दोढ योजन मूकीये तिहां मध्ये साडाचार योजनमां घणा सुवर्ण अने रूपामय

पाटीयांछे, तिहां घणा वज्र रत्नमय नागदंताछे, ते नागदंताने विषे रूपामय शीकाछे, ते शीकाने विषे वज्रमय गोल वृत्ताकारे दावडाछे ते दावडाने विषे घणा तीर्थंकरनी दाढाछे तेणेकरी सहीत थका रहेछे, ते दाढा विजयदेवताने अने बीजा पण घणा व्यंतरिक देव अने देवांगनाने अर्चवा योग्यछे, वांदवा योग्यछे, चंदनादिके पूजवा योग्यछे, वस्त्रादिके सत्कार करवा योग्यछे, सन्मान एटले बहुमान करवा योग्यछे, कल्याण कारी, मंगलकारी देव संबंधी चैत्यनी परे सेवा करवा योग्यछे, देवता ते दाढानी सेवा केवल मुक्तिना निमित्तें करे छे.

ते माणवक नामा चैत्यथंभनी पूर्वदिसे एक महोटी मणिपीठिकाछे, ते बे योजन लांबी अने पोहोलीछे, एक योजन जाड पणे छे, तेनी उपर एक महोटुं सिंहासन छे.

माणवक चैत्यथंभनी पश्चिम दिसे एक महोटी मणिपीठिकाछे, ते एक योजन लांबी अने पोहोलीछे, अर्द्धयोजन जाड पणेछे, तेनी उपर एक महोटी देव शय्याछे, ते देव शय्याने ईशानकूंणे एक महोटी मणिपीठिका छे, ते एक योजन लांबी पोहोली छे, अने अर्द्ध योजन जाड पणेछे, तेउपर एक पूर्वला महेंद्रध्वजनी अपेक्षाये नाहानो एवो महेंद्रध्वजछे, ते साडासातयोजन उंचोछे अने अर्द्धकोश पोहोल पणेछे, ते लघु महेंद्रध्वजने पश्चिमदिसे विजयदेवतानो चोप्याल नामे हथीयारनो भंडार छे.

ते सुधर्मा सभा थकी इशान कूंणे एक महोटुं सिद्धायतनछे ते सिद्धनुं देहरुं साडा बार योजन लांब पणेछे, अने सवाछ योजन पोहोल पणेछे, नव योजन उंच पणेछे, तेना मध्यभागे एक महोटी मणिपीठिकाछे, ते बे योजन लांबी पोहोलीछे अने एक योजन जाड पणेछे, ते पीठिका उपरे एक महोटो देवछंदो एटले गंभारोछे, ते बे योजन लांबो पोहोलो अने एक योजन उंच पणे छे, ते गंभाराने विषे तीर्थंकरनी एक शोने आठ प्रतिमाछे, ते उंचपणे तीर्थंकरनी काया प्रमाणेछे एटले लघु सात हाथ प्रमाण अने उत्कृष्ट पांचशे धनुष प्रमाणे शरीर वाली एवी प्रतिमा थापी रहेछे ते भगवंतनी प्रतिमाने पूंठे प्रत्येके प्रत्येके छत्र धारकनी प्रतिमा कहीछे ते लीला सहीत छत्र धरती थकी रहेछे तथा ते जिनप्रतिमाने बे पासे प्रत्येके प्रत्येके बे चामर धारकनी प्रतिमाछे ते चामरने लीला सहीत वींजती थकी रहेछे तथा ते प्रत्येक प्रतिमाने आगले बे बे नागदेवतानी प्रतिमा, बे बे यक्षदेवतानी प्रतिमा, बे बे भूत देवतानी प्रतिमा, बे बे कूंडधार देवविशेषनी प्रतिमा एवी आठ प्रतिमा ते विनये करी नमती पगे लागती थकी हाथ जोडती थकी एवीथकी रहेछे ते प्रतिमा सर्वे रत्नमयछे ते जिनप्रतिमाने आगले १०८ घंटछे, १०८ चंदने चर्चित कलशछे, १०८ भृंगार, १०८ आरीसा, १०८ थाल. १०८ पात्री, १०८ सुप्रतिष्टक भाजन विशेष, १०८ मनोगुलिका पीठ विशे

ष, १०० वात करंडक भृंगार विशेष, १०० मनोहर रत्न करंडक, १०० हयकंठके भाजन, यावत् १०० वृषभ कंठक भाजन विशेष, १०० फूलनी चंगेरी, यावत् १०० पूंजणीनी चंगेरी, १०० यावत् फूलना समूह, १०० सुगंधि तेलना डाबडा, १०० धूपकडुछा इत्यादिक पूजानां उपकरण थाप्या थका रहेछे, ते सिद्धायतन उपर घणा आठ आठ मंगलीक छे, छत्रातिछत्र छे, ते सिद्धायतननां शिखर शोल प्रकारनां रत्ने करी शोभित छे.

ते सिद्धायतनने इशानकूंणे एक महोटी उपपात सभा कहीछे ते विजय देवताने उपजवानुं स्थानकछे, ते जेवी सौधर्मा सभा कही तेवीज ए सभा पण जाणवी.

ते उपपात सभाने इशानकूंणे एक महोटो द्रहछे ते साडाबार योजन लांबपणे छे, सवाछ योजन पोहोल पणे छे, दश योजन उंडो छे ते द्रह पद्मवरवेदिका तथा वनखंडे सहीत छे, ते जेवो नंदा पुष्करणीनो वर्णन सूत्रोमां कह्योछे तेवोज शोभा आश्चर्यी एनुं पण वर्णन जाणवुं ते द्रहने इशानकूंणे एक महोटी अभिषेक सभा कही छे, ते जेवी सौधर्मा सभा कही तेवी जाणवी तेना मध्यभागे एक महोटी मणिपीठिका छे, ते एक योजन लांबी पोहोली अने अर्द्ध योजन जाडपणेछे, ते मणिपीठिका उपरे एक मोहोटो सिंहासनछे, तेने विषे विजय देवताना अभिषेक करवानां भांड थाप्या थका रहेछे.

ते अभिषेक सभाने इशानकूंणे एक महोटी अलंकार सभा कहीछे ते अभिषेक सभा सरखी जाणवी. तिहां विजय देवता आभुषण पहेरे छे जिहां विजय देवतानां घणा उत्तम आभुषणनां ठाम आभुषणे भर्या थकां तिहां थाप्यां थकां रहेछे.

ते अलंकार सभाने इशानकूंणे एक महोटी व्यवसाय सभाछे, जिहां विजय देवता पुस्तकरत्न वांचेछे ते व्यवसाय सभा अलंकार सभा सरखी जाणवी. तिहां विजय देवतानुं पुस्तकरत्न थाप्युं थकुं रहेछे, ते पुस्तकरत्ननां अरिष्टरत्नमय पाठां छे, रूपामय पानाछे, अरिष्टरत्नमय अक्षरछे, राता सुवर्णमय दोरा छे जेणे करी पुस्तक परोइये. तथा नवनवी मणिमय गांठिछे, गांठे पानुं नीकले नही, वैडूर्यरत्नमय स्याहीनो खडीउंछे ते खडीयाने राता सुवर्णनी शांकलछे, ते खडीयानुं अरिष्टमय ढांकणुछे, ते खडीया मध्ये अरिष्टरत्नमय स्याही छे, वज्ररत्नमय लखवानी लेखणछे, अरिष्टरत्नमय अक्षरछे, ते पुस्तकमां केवल धर्मशास्त्र छे, ए सर्व पांचे सभानुं चित्र एकसाथेज आलेख्युं छे.

ते व्यवसाय सभाने इशानकूंणे एक महोटी नंदापुष्करणी कही छे तेनुं वर्णन द्रहनी पेरे जाणवुं ते नंदापुष्करणीने इशानकूंणे एक महोटो बलिपीठ छे जिहां बलिपिंड मूके ते बलिपीठ उंटलारूप जाणवुं ते बे योजन लांबो अने पोहोलो छे तथा एक योजन जाडपणे छे, आंही सुधी विजय राजधानीनो अधिकार संक्षेपथी पूरण थयो.

हवे ए विजय देवता जेवारे उपजेछे तेवारे श्रीजिनप्रतिमानी पूजा प्रमुख केवा के

वा प्रकारनी शुभ करणीउं करेछे तेनो अधिकार श्रीजीवाभिगम सूत्रमां सविस्तर ल खेलोछे तिहांथी जाणी लेवो ए जंबूद्वीपनां प्रथम द्वारनो अधिकार संक्षेपथी कह्यो.

हवे विजयंत नामा बीजा द्वारनो अधिकार कहेछेः—मेरु पर्वतने दक्षणदिसे पीस्ता लीश हजार योजन वेगलूं जंबूद्वीपनी दक्षण दिसिने अंते विजयंत नामे बीजुं द्वारछे तेनो अधिकार सर्वे विजयद्वारनी परे जाणवो, परंतु एटलुं विशेष जे एनो अधिकारी विजयंत नामे देवताछे तेनी राजधानी दक्षण दिसे विजया राज्यधानी जेवी छे.

हवे जयंत नामा त्रीजा द्वारनो अधिकार कहेछेः—मेरू पर्वतनी पश्चिमदिसे पीस्त लीश हजार योजन वेगलुं जंबूद्वीपने पश्चिमदिसिने अंते सीतोदा महानदीनी उपरे जयंत नामे त्रीजुं द्वारछे तेनो अधिकार पण विजयद्वार सरखो जाणवो. इहां जयंतनामे देवता छे तेनी राजधानी पश्चिमदिसे विजयराजधानीनां सरखी जाणवी.

हवे चोथुं अपराजित नामे द्वार कहेछेः—मेरू पर्वतने उत्तरदिसे पीस्तालीश हजार योजन वेगलुं जंबूद्वीपनी उत्तरदिसीने अंते अपराजितनामे चोथुं द्वार कह्युंछे ते वि जयद्वार सरखुं जाणवुं इहां अपराजित देवताछे तेनी राजधानी पूर्वोक्त द्वीपनी उत्तर दिसे विजयराजधानी सरखी जाणवी. ए चारे दरवाजानां चारे देवतानी राजधानी अहींथी असंख्यातमे जंबूद्वीपे चार दिसाये जाणवी. ए चारे दरवाजानां स्वामी तथा सामानिक देवता तेनुं आयु एक पल्योपमनुं जाणवुं. इति द्वार वर्णन समाप्त.

॥ अथ भरतक्षेत्र वर्णन प्रारंभ ॥

हवे ए जंबूद्वीपमां भरतक्षेत्र नामे वर्ष (वास) कथा स्थानकेछे ते कहेछे चुल्लहेम वंत नामे वर्षधर पर्वत तेथकी दक्षिणदिसे अने दक्षणदिसे जे लवण समुद्र तेथकी उ त्तरदिसे तथा पूर्वदिसे जे लवण समुद्र तेथकी पश्चिमदिसे अने पश्चिमदिसे जे लवण समुद्र तेनी पूर्वदिसे ए अवकासनने वच्चे जंबूद्वीपने विषे भरतनामे क्षेत्रछे जेने विषे शूका वृक्षना तृठा घणाछे तथा बोरभी बाबल प्रमुखनां कांटा घणाछे तथा उंची नीची विष म भूमि घणी छे तथा दुर्गमस्थानक घणाछे, पर्वत घणाछे, भैरवजाप घणाछे, पाणीना प्रपात घणाछे, पाणीना निझरणा घणाछे, खाभ घणीछे, गुफा, नदी, द्रह, रूंख, गुछा, गुल्म, नवमालिका प्रमुख पद्मलतादि वेलभी, कोहली, अटवी, उजाभ, स्वापद हिंसक जीव व्याघ्रादिक, चोर, तस्कर, स्वदेशथी उपना उपद्रव, परकटकनां करेलां उपद्रव, दुर्भिक्ष, भिक्षाचरने भिक्षादुर्लभ मले, दुकाल, पाखंभी जिनमार्गना उत्थापक, कृपण, लोभी, सातइति, इत्यादिक सर्व वाना जाणवां तथा राजा पण लोकने बहु दुःखना देनार, रोग घणा, संक्लेप घणा, वारंवार संक्षोभ, दंभ, आकराकर प्रमुख घणाछे.

ए पूर्वदिसे अने पश्चिमदिसे लांबुछे, उत्तर अने दक्षिणे पहोलुंछे, उत्तरदिसे पल्यंकने शंस्थाने संस्थितछे, दक्षिणदिसे धनुषना पुठला भागने संस्थाने संस्थितछे तथा त्रिधा पूर्व दक्षिण अने पश्चिमे लवण समुद्रने फरश्योछे तथा जे गंगा अने सिंधु ए बे महोटी नदीये करी तथा वैताढ्य पर्वते करी छभागे वेहेचाणो छे एटले एना छ खंड थया छे.

जंबूद्वीपनो विष्कंभ एक लाख योजननो छे तेने एकसोने नेवुंमे भागे एटले (५२६) योजन अने एक योजनना ओगणीश भाग करीये एवा छ भाग उपर एटलुं विष्कंभ पणे भरत क्षेत्र छे एनां मध्य भागने विषे वैताढ्य पर्वतछे ते भरत क्षेत्रने एक दक्षिणार्द्धभरत अने बीजो उत्तरार्द्ध भरत. एवा बे भागे वेचतो थको रह्यो छे.

तिहां वैताढ्य पर्वतने दक्षिणदिसे जे लवण समुद्र तेने उत्तरदिसे, अने पूर्वदिसे जे लवण समुद्र तेने पश्चिमदिसे अने पश्चिमदिसे जे लवण समुद्र तेने पूर्वदिसे दक्षिणार्द्ध भरतछे ते पूर्वदिसे पश्चिमदिसे लांबो अने उत्तर दक्षिणदिसे पहोलो अर्द्ध चंद्रने आकारे छे, पूर्व, दक्षिण अने पश्चिम ए त्रण दिसे लवण समुद्रने फरश्योछे, गंगा अने सिंधू ए बे महोटी नदी तेणे त्रण भागे वेहेच्योछे, ते बशे आडत्रीश योजन अने एक योजननां उगणीश भाग करीये तेवा त्रण भाग उपर, एटलो पहोलपणे दक्षिणार्द्ध भरतछे, दक्षिणार्द्ध भरतने अंते उत्तरदिसे धनुषना पणछनी परे जीवाछे. ते पूर्वपश्चिम लांबी बे छेहेडे लवण समुद्रने फरसी रहीछे ते जीवा पूर्वपश्चिमे लांबपणे ९७४८ योजन अने उपर उगणीसीया बार भाग छे ते जीवानुं धनुपृष्ट दक्षिणदिसि ९७६६ योजन उपर उगणीसीयो एक भाग कांइक जाजेरो परिधिपणे कह्युं छे ए भरतार्द्धनुं चित्र जोवुं

हवे दक्षिण भरत मांहे अयोध्यानगरीनुं प्रमाण कहेछे.

दक्षिणार्द्ध भरतनां मध्यखंडनी वच्चमां बार योजन लांबी अने नव योजन पोहोली एवी अयोध्या (विनिता) नगरीछे ते लवण समुद्रथी अने वैताढ्य पर्वतथी एकशो चौद योजन अने उपर एक योजननां उगणीश भाग करीये तेवा अगीआर भाग एटले आंतरेछे केमके दक्षिणार्द्ध भरतनां मध्य खंडनो विस्तार बशे अडत्रीश योजन अने त्रण कलाछे तेमांथी अयोध्यानो विस्तार नव योजन काहाडीये तेवारे बशे उगणत्रीश योजन अने त्रण कला रहे तेनुं अर्द्ध करीये तेवारे ११४ योजन उपर अगीआर कला थाय तेटली लवणसमुद्र अने वैताढ्य पर्वतथी वेगली अयोध्या नगरी जाणवी.

हवे मागधादि त्रण तीर्थ कया स्थानके छे ते कहे छे.

चक्रवर्त्तिने वसवर्त्ति भरत, ऐरवत अने बत्रीश विजय मली चोत्रीश क्षेत्र चक्रवर्त्तिनां छे तेनी जे गंगा, सिंधू तथा रक्ता अने रक्तवती ए चार भरत ऐरवतनी नदीउ तेने समुद्रमां प्रवेश करतां तथा विजयनी नदीउने सीतोदा तथा सीतानदी मांहे प्रवेश क

रतां एटले जे स्थानके भरत तथा ऐरवतनी नदीउं समुद्रमां प्रवेस करे तथा जे स्थानके बत्रीश विजयनी नदीउं सीतानदी अने सीतोदानदी मांहे प्रवेश करे ते स्थानक विशेष नदी सागर संगम उत्तम स्थानक कहीये तिहां दक्षणार्द्ध भरतमां एक पूर्वदिसिये मागध तीर्थछे बीजुं पश्चिमदिसिये प्रभास तीर्थछे तथा ए बे तीर्थनां बचमां एक वरदाम तीर्थछे. एरीते भरत क्षेत्रमां त्रण तीर्थ छे तेमज ऐरवतमां तथा बत्रीश विजयमां पण प्रत्येके त्रण त्रण त्रीर्थ गणतां सरवाले जंबुद्वीपमां एकशोने बे तीर्थ छे.

॥ अथ वैताढ्यपर्वत वर्णन ॥

हवे भरतक्षेत्रमां पूर्व पश्चिमे लांबो अने उत्तर दक्षणे पोहोलो वैताढ्यनामे पर्वतछे ते पच्चीश योजन उंचो छे अने पच्चीश योजननो चोथो भाग सवाछ योजन भूमी मांहे छे ए अढीद्वीपमां एक मेरुवीना बीजा सर्वपर्वत जेटला उंचपणे होय तेनो चोथो भाग धरतीमां होय तथा पच्चाश योजन पोहोल पणेछे तेनी बाह पूर्व पश्चिमदिसे ४७७ योजन अने उपर एक योजननां ओगणीसीया शोल भाग लांबपणे छे, तेनी जीवा पणछ उत्तरदिसे १०७२० योजन उपर उंगणीसीया बारभाग लांबपणे छे तथा तेनुं धनुपृष्ट दक्षणदिसे १०७४३ योजन उपर उंगणीसीया पंदरभाग परिधिपणे रुचकनामे जे ग्रीवानुं आभरण तेवा संस्थाने छे ए पर्वत सर्व रजतमय रूप्पमयछे अने स्फाटिकनी परे सुकोमल छे यावत् जोतां थकां प्रतिबिंब देखाय माटे प्रतिरूप छे.

ते दक्षण अने उत्तर ए बे पासे बे पद्मवर वेदिकाये करी अने बे वनखंडे करी सर्वदिसे चोकफेर वींट्यो छे, ते पद्मवरवेदिका अर्द्ध योजन उंचपणे अने पांचशे धनुष्य पोहोल पणे छे. तथा पर्वत जेटली लांब पणे छे अने वनखंड कांइक उणा बे योजन पोहोल पणे छे. तथा पद्मवरवेदिका जेटला लांबा छे, तेनी काला वर्णे काली कांति छे.

वैताढ्यने पूर्व पश्चिमदिसे बे गुफाछे ते उत्तर दक्षणे पच्चाश योजन लांबीछे, अने पूर्वपश्चिमे मांहेली कोरे पोहोली बार योजन छे, आठ योजन उंच पणे छे, तथा आठ योजन उंचा अने चार योजन पोहोला तथा चार योजन प्रवेश एवा दक्षण अने उत्तरने सन्मुख वज्ररत्नमय निबड एवां बे बारणा तेना कपाटे करी ढांकी छे तथा निरंतर अंधकार अने तिमिश्र तेणेकरी सहीतछे. चंद्र सूर्यादिकनी ज्योति रहीत मार्गछे एवी पश्चिमदिसे तिमिश्रागुफा अने पूर्वदिसे खंडप्रपाता नामे बे गुफाछे तेना विषे कृतमाल अने नृत्यमाल एवे नामे बे देवता एक पल्योपमना आयुवाला वसेछे तथा ते गुफाने विषे उमगा अने निमगा एवी बे नदीछे ते त्रण त्रण योजन विस्तारेछे ते नदीउं पर्वत मांहेला जे महोटा पाषाण ते मांहेथी निकलीने महोटी नदी जे गंगा सिंधु प्रमुख छे ते मांहे गमन

करेछे ते बे नदी वचे वैताढ्य पच्चाश योजन मांहेला पच्चीशमुं अने छवीशमुं ए बे योजननुं आंतरुं छे. ते गुफानी बेहु बाजुनी नींतने विषे चक्रवर्त्ति जे थाय ते बे बे साहामा सूर्यमंडल सरखा कांकिणि रत्नां उंगणपच्चाश मांमला अजुआलुं करवा माटे लखे छे ते प्रत्येक मंमल उत्सेधांगुले करी पांचशे धनुष्यनुं छे. तथा वली ए गुफा प्रमाणांगुले करी बार योजन पोहोली छे तथा एकेका मांडलाने वच्चमां एकेक योजननुं आंतरुंछे. तथा मांडलाने नीचे अने उपर सर्व थइने आठ योजन गुफा उंचीछे. तेमाटे पोहोलपणे बार योजन प्रकाश करेछे अने मंडलने आंतरे एकेक योजन प्रकाश करेछे. तथा उंच पणे आठ योजन प्रकाश करेछे. ए मांडला बन्ने पासे एकेक योजनने आंतरे गोमुत्रिकाने आकारे करतां एक नींते चोवीश मंडल थाय अने बीजी नींते पच्चीश मंडल थाय तेमां सिंधुनदी पासे तिमिश्रा नामे गुफाछे ते गुफामांहेथी चक्रवर्त्ति दक्षण मध्य खंमथी उत्तर मध्य खंममां प्रवेश करेछे अने उत्तर मध्य खंडने साधी त्यांथी पाछो वलतां रुषनकूटने विषे पोतानुं नाम लखीने गंगानदी पासे जे बीजी खंडप्रपाता नामे गुफाछे तेमांथी थइने दक्षण नरत मांहे पाछो वले तथा चक्रवर्त्ति जिहां सुधी जीवतो होय तिहां सुधी ते गुफाउनां कमाम उघाडा रहेछे.

हवे पूर्वोक्त वनखंडने बे पासे दश दश योजन उंचा जइये तिहां बे विद्याधरनी श्रेणीछे ते दश दश योजन पहोल पणे छे अने पर्वत जेटली लांब पणे छे ते बे पासे बे पद्मवरवेदिका अने बे वनखंडे करी चोकफेर वींटीछे एनुं लंबाइ तथा पहोलाइ आदिकनुं वर्णन पूर्वली परे जाणवुं तिहां दक्षणदिसीनी जे विद्याधरनी श्रेणी छे तेने विषे विद्याधरोना गगनवल्लन प्रमुख पच्चास महोटा नगर राजधानी रूपछे. अने उत्तर दिसीनी जे विद्याधरनी श्रेणीछे. तेने विषे विद्याधरोनां रथनुपुर चक्रवाल प्रमुख साठ महोटा नगरावास राजधानी रूपछे एरीते बे श्रेणीनां मली एकसोने दश नगर थाय ते नगरने विषे देशनी राजधानी सहित विद्या धरनां राजा महोटा बलवंत वशे छे.

वली ते विद्याधरनी श्रेणीना नूमिनाग थकी वैताढ्य पर्वतने बे पासे दश दश योजन उंचा जइये तेवारे आनियोगिक देवतानी बे श्रेणी आवे ते पण दश दश योजन पहोली अने पर्वत सरखी लांब पणे छे ते बेहु श्रेणी बने पासे बे पद्मवरवेदिका अने बे वनखंडेकरी वींटीछे. तेनुं वर्णन पूर्वपरे जाणवुं ते नूमिमां घणा व्यंतरिक देवता अने देवांगना यावत् विचरेछे. ते श्रेणीने विषे सौधर्मेंद्रनां चार लोकपाल तेना आनियोगिक एटले आज्ञाकारी किंकर देवोना घणा नवन छे. ते सर्व नवन बाहेर गोलाकारे छे, मांहे समचतुरस्त्र छे, यावत् अपत्सराना समूहे करी संकीर्ण छे. तेमां जे देवता वसे छे, तेनुं एक पल्योपमायु छे.

वली ते आभियोगिक देवोनी श्रेणी थकी पांच पांच योजन उंचा जइये तिहां वैताढ्य पर्वतनुं शिखरतलुं छे ते दश योजन पोहोल पणे अने पर्वत जेटलुं लांब पणेछे ते शिखर तल एक पद्मवरवेदिकाये करी अने एक वनखंडे करी सर्व दिसिये चोक फेर वींटे लुं छे ते शिखर तलने विषे घणा व्यंतरिक देवता देवांगनाओ भोगभोगवता थका विचरेछे.

वैताढ्य पर्वतने विषे नव कूट एटले शिखरछे तेना नाम कहेछेः—१ सिद्धायतनकूट, २ दक्षणार्द्धभरत नामा कूट, ३ खंडप्रपात गुफा कूट, ४ मणिभद्रकूट, ५ वैताढ्य कूट, ६ पूरणभद्रकूट, ७ तिमिश्रागुफा कूट, ८ उत्तरार्द्धभरत कूट, ९ वैश्रमणकूट, ए नव कूटछे.

तेमां प्रथम सिद्धायतनकूट सवाछ योजन उंचपणे छे. अने मूलमां सवाछ योजन पोहोल पणे वचमां कांइक उंणा पांच योजन पोहोलपणेछे, उपर कांइक जाजेरा त्रण योजन पोहोल पणे छे मूलमां पोहोलो वचमां सांकडो अने उपर पातलो गायना पूंछने संस्थाने छे सर्व रत्नमय छे ते कूट पद्मवरवेदिका अने वनखंडे करी चोफेर वींट्युंछे तेना मध्यभागने विषे शाश्वती अरिहंतनी प्रतिमानुं आयतन एटले देहेरुंछे, ते एक कोश लांब पणे, अर्द्धकोश पोहोल पणे अने चौदशे ने चालीश धनुष उंच पणेछे तेने विषे ऋषभ, चंद्रानन, वारिषेण अने वर्द्धमान ए चार नामे तीर्थंकरनी एकशोने आठ प्रतिमाछे.

ए प्रथमना सिद्धायतना कूटनी पश्चिमदिसे बीजो दक्षणार्द्धभरत नामे कूट छे तेपण सिद्धायतन कूट जेटलो उंचो पोहोलोछे ते प्रासादना मध्यभागमां एक प्रसादावतंसकछे ते एक कोश उंचो अने अर्द्धकोश पोहोल पणेछे तेना मध्यभागमां एक पीठिका (चोतरोछे) ते पांचसे धनुष लांबो पोहोलो अने अढीसे धनुष जाड पणेछे तेनां उपर एक बेसवानुं सिंहासन छे ते हजारो गमे भद्रासनादिके परवर्युं छे ए कूटने विषे दक्षणार्द्ध भरतनामे देवता महाऋद्धिवंत एक पल्योपमायुनी स्थितिये वसेछे तेने चार हजार सामानिक देव, चार अग्रमहिषी परिवार सहीत, त्रण परषदा, सात कटक, सात कटकनां स्वामी, चारे दिसीये चार चार हजार उभारहे एवा शोल हजार आत्मारक्षक देवता, दक्षणार्द्ध भरतक्षेत्रनुं दक्षणार्द्ध राजधानीनुं तथा अनेरा पण घणा देवता देवांगनानुं आधिपत्यपणुं पालतो थको यावत् विचरेछे ए नवे कूट सवाछ योजन उंचा जाणवा.

चोथुं माणिभद्रकूट, पांचमुं वैताढ्य कूट अने छठुं पूरणभद्रकूट ए त्रण सुवर्णमय छे शेष छ कूट रत्नमय छे तेमां तिमिश्रागुफा कूटमां कृतमाल देवता वसेछे तथा खंडप्रपातगुफा कूटमां नृतमाल देवता वसेछे एरीते बे कूटनां देवतानां नाम कूटने नामे नथी अने शेष छ कूटनां देवतानां नाम कूटने नामे छे जे कूटनो नाम तेजनाम तेमांवसनार देवतानो पण होय ए सर्व देव एक पल्यायु वाला जाणवा ए सर्व मेरु पर्वतने दक्षण दिसे तिर्छा असंख्याता द्वीप समुद्र व्यतिक्रमी जइये तिहां बीजो जंबूद्वीप छे तेने चार

हजार योजन अवगाहीये तिहां ए सर्व देवोनी राजधानी विजया राजधानी सरखी जाणवी
तथा वैताढ्य गिरिकुमार नामे देवता महर्द्धिक एक पल्योपमायु वालो इहां वसे छे. तेथी ए पर्वतनुं पण वैताढ्य एवुं नाम शाश्वतुं छे.

हवे उत्तरार्द्ध भरतनामे वास क्षेत्र पूर्व पश्चिमे लांबुं उत्तर दक्षिण पोहोलुं पल्यंकने संस्थाने संस्थितछे ते गंगा अने सिंधु ए बे महोटी नदी तेणे करी त्रण भागे वेहेचाणुछे २३८ योजन उपर ओगणीसीया त्रण भाग एटलुं पोहोल पणेछे, एनी बाह पूर्व पश्चिमदिसे १८९२ योजन उपर ओगणीसीया साडासात भाग एटली लांब पणे छे एनी जीवा पणछनी परे उत्तरदिसे १४४७१ योजन उपर ओगणीसीया छ भाग कांइक ओणा एटली लांब पणे छे ते जीवानुं धनुपृष्ट दक्षिणदिसे १४५२८ योजन उपर ओगणीसीया अगीआर भाग एटलुं परधि पणेछे.

हवे ए उत्तरार्द्धभरतमां ऋषभकूटनामे पर्वतछे ते कहेछेः—गंगाप्रपातकूंडनी पश्चिम दिसे अने सिंधुकुंडनी पूर्वदिसे चुल्लहिमवंत पर्वतना दक्षिण पासानां नितंब पासे ऋषभ कूटछे ते आठ योजन धरतीमां ओंड पणे, मूलमा आठ योजन पोहोल पणे, वच्चमां छ योजन पोहोल पणे अने उपर चार योजन पोहोल पणे तथा पाठांतरे मूलमां बार योजन पोहोल पणे मध्यमां आठ योजन पोहोलो अने उपरे चार योजन पोहोलो छे गायना पूंछने संस्थाने सर्व जंबूनंद रत्नमय श्यामवर्णछे. एमां पूर्वली परे भवन प्रमूख जे छे तेशास्त्रांतरथी जाणवा इहां ऋषभनामे महर्द्धिक देवता वसेछे तेनो परिवार तथा एनुं अनेरे जंबूद्वीपे राजधानीनो स्थानक यावत् पूर्वपरे सर्व कहेवुं.

ए भरतक्षेत्रने विषे भरत नामे देवता महा ऋद्धिवंत सामानीकादिक देवोये सहीत एक पल्योपमने आउखे वसेछे तेथी एनुं भरत वर्ष एवुं शाश्वतुं नामछे.

हवे चुल्ल हेमवंत नामे वर्षधर पर्वत कहेछेः—

भरत क्षेत्रने उत्तर दिसे भरतक्षेत्रनी सीमा रूप ए चुल्ल हेमवंत पर्वत छे ते एकशो योजन ऊंच पणे छे अने पच्चीश योजन धरती मांहेछे. तथा १०५२ योजन उपर ओगणीसीआ बार भाग एटलो पोहोल पणे छे, तेनी बाहा पूर्व पश्चिमे प्रत्येके ५३५० योजन उपर ओगणीसीया साडा पंदर भाग छे, तेनी जीवा पणछ उत्तर तरफ पूर्व पश्चिमे लांबी २४९३२ योजन ओगणीसीये अर्द्धभागे कांइक उणो एटली लांब पणे छे तेनुं धनुपृष्ट दक्षिणे २५३० योजन उपर ओगणीसीया चार भाग परिधि पणेछे ए रुचक नामा वस्तुने संस्थाने रह्यो छे, सर्व सुवर्ण मयछे, बे पासे बे पद्मवरवेदिका अने बे वनखंडे करी वींट्योछे ए पर्वत उपर घणा व्यंतरिकदेव देवांगनाओ विचरे छे, इत्यादि कहेवुं.

ए पर्वतना मध्यज्ञागे एक महोटो पद्मद्रह नामे द्रहछे ते पूर्वपश्चिम लांबपणे एक हजार योजनछे अने उत्तर दक्षण पोहोलो पांचशो योजन छे, दश योजन उंमोछे, ए द्रहनुं रूपामयतटछे,ते द्रह एक पद्मवरवेदिका अने एक वनखंडे करी चोकफेर वींट्यो छे.

ते द्रहना मध्यज्ञागे एक महोटुं कमलछे ते एक योजन लांबुं अने पोहोलुं छे तथा अर्द्ध योजन जाडुं छे एटले बे कोश पाणी थकी उंचुं छे, अने दश योजन उंडुं पाणी मांहे छे एम पाणीमां तथा उपर मली साडा दश योजन उंचुं छे ते कमल एक जगतीये करी चोकफेर वींटेलुं छे ते जगती पाणी उपरे जंबूद्वीपनी जगती प्रमाणे छे गवाक्ष गोख पण तेज रीते जाणवा ए कमलनुं वज्ररत्नमय मूलछे, अरिष्टरत्नमय कंद छे, वैडूर्यरत्न मय नालछे, वैडूर्यरत्नमय बाहेरना पत्रछे, कांइक राता सुवर्णमय मांहेली पांखमी छे, रातासुवर्णमय केशराछे, विविध प्रकारनां मणिमय कमलनां बीज ज्ञागछे, कनकमय कर्णिका मोडोछे, ते कर्णिका अर्द्धयोजन लांबी तथा पोहोलीछे, एक कोश उंची छे.

ते कर्णिकानी उपरली ज्ञूमिना मध्यज्ञागे एक महोटो ज्ञवनछे, ते एक कोश लांबो, अर्द्धकोश पोहोलो, चौदशेचालीश धनुष्य उंचो, अनेक सइकडा गमे थांज्ने करी सहीतछे, ते ज्ञवनने त्रणदिसाये त्रण बारणाछे ते प्रत्येक पांचशे धनुष उंचाछे, अढीशे धनुष पोहोला छे, स्वेत प्रधान कनकमय थूज्ञिका चोतरो तेणे करी सहीतछे, यावत् वनमाला पर्यंत इहां कहेवुं. ते ज्ञवनना मध्य ज्ञागे एक मणिमय पीठिका छे, ते पांचशे धनुष लांबी पोहोली अने अढीशे धनुष जाडीछे, तेना उपर श्रीदेवीनी सय्या छे.

ते कमलनी प्रथम परिधिये बीजा एकशोने आठ कमलछे, ते सर्व उंच पणे तथा लांब पणे पूर्वोक्त मूल कमलथी अर्द्ध ज्ञागेछे एटले एक कोश पाणीथी बाहेर छे अने दश योजन पाणीमांहे छे, मली सवादश योजन उंचाछे, अर्द्ध योजन लांबा पोहोला छे, तेनी पण कर्णिका प्रमुख तथा ज्ञुवनादिक सर्व ते मूल कमलनी पेरे अर्द्ध प्रमाण बाला जाणवा. ए एकशोने आठ कमलने विषे श्रीदेवीना ज्ञूषणादिक वस्तु रहेछे.

हवे बीजी परिधिना कमलछे ते मुल कमलथी वाव्यकूणे, उत्तर दिसिये अने इशान कूणे ए त्रण दिसाये श्रीदेवीनी चार हजार सामानिक देवीना चार हजार कमलछे तथा पूर्वदिसे श्रीदेवीनी चार महत्तरिका गुरु स्थानीय देवीना चार कमलछे, तथा अग्निकूणे मांहेली परखदानां आठ हजार देवतानां आठ हजार कमलछे, तथा दक्षणदिसिये वचली मध्य परखदानां दश हजार देवतानां दश हजार कमलछे तथा नैरुतकूणे बाहेरली परखदानां बार हजार देवतानां बार हजार कमलछे, तथा पश्चिमदिसे, सात कटकना स्वामीनां सात कमलछे, एरीते ए बीजा वलयमां सरवाले ३४०११ कमल छे.

हवे त्रीजी परिधिनां कमल कहेछेः—त्रीजा वलयनी प्रत्येक दिसाये चार चार हजार कमल गणतां चार दिसाये शोल हजार कमल श्रीदेवीना आत्मरक्षक देवोनां छे.

वली ते मूल कमलने चोफेर त्रण बीजा परिक्षेप छे, एटले मांहेली, विचली अने बाहिरली एवी त्रण परिधि अर्थात् चोथी, पांचमी अने छठी ए त्रण परिधिनां कमलोमां श्रीदेवीनां आभियोगिक किंकर देवो रहेछे, तेनी संख्या कहेछे, चोथी मांहेली परिधिमां बत्रीश लाख कमलछे, विचली पांचमी परिधिमां चालीश लाख कमलछे अने बाहेरली छठी परिधिमां अरूतालीश लाख कमलछे, ए त्रण परिधिना एक करोरूने वीश लाख कमल थया तेनी साथे आगली त्रण परिधिनां तथा मुखकमलमलीने ५०१२० कमल मेलवीये तेवारे सरवाले १२०५०१२० कमल थाय. सर्व कमल जंबूवृक्षनी पेठे शाश्वता पृथवीकाय रूपछे, परंतु कमलना आकारे छे, माटे कमल कहीने वखाण्या छे, अने पहेली परिधिना कमलथी बीजी परिधिना कमल अर्द्ध प्रमाणवाला छे, एम आगल पण सर्व परिधिये अर्द्ध अर्द्ध प्रमाण वाला कहेवा तथा ए पद्मद्रहने विषे जेम कमलोनो परिवार वखाण्यो तेम बीजा पर्वतोनां द्रह संबंधी पण एमज परिवार जाणवो. पद्मद्रहने विषे घणा कमल पद्मद्रहने आकारे पद्मद्रह सरिखाछे, माटे एनुं पद्मद्रह एवुं शाश्वतुं नाम छे, इहां श्रीनामेदेवी महाऋद्धिवंत यावत् एक पल्योपमना आउखावाली वसेछे, ए कमलनुं चित्र जोवुं.

हवे ए द्रहना बारणां प्रमुख वखाणतो छतो बीजा पर्वतोनां द्रह संबंधी वक्तव्यता पण साथेज कहेछे.

हिमवंत तथा शिखरी ए बे पर्वतो उपर पद्म तथा पुंडरीक ए बे द्रहने विषे एक पूर्वदिशि, बीजो पश्चिमदिशि, त्रीजो मेरुपर्वतने सन्मुख ए त्रण द्वारछे, ते बारणा पण स्वस्वदिशि द्रहना मानथी, एंशीमे भाग प्रमाणेछे. ते केम ? तोके—द्रहनो जे विस्तार पांचसे योजन पूर्व अने पश्चिमदिशिए छे, ते एंसीमे भागे वहेंचीए तेवारे सवाछ योजन आवे; तेमाटे पूर्व अने पश्चिमनां बारणां द्रहने विषे सवाछ योजन पहोलां छे. अने मेरुसन्मुख हजार योजन द्रहछे, ते एंसीभागे वहेंचीए तेवारे साडाबार योजन भागे आवे तेमाटे मेरुसन्मुख द्रहनां बारणा साडाबार योजन पहोलां छे, एम जाणवुं. ते द्वार तोरणसहित तथा तेमांथी नदीउं नीकली छे, तेणे करी सहित छे. शेष बीजा चार द्रहने विषे दक्षिण अने उत्तर दिशाए बे बे बारणां छे तेमना मध्ये जे मेरु सामा बारणाछे ते बारणा स्वदिशि द्रहना एंसीमे भागेछे. जेम महापद्म तथा महा पुंडरीक ए बे द्रह मेरुदिशि सन्मुख बे सहस्र योजन छे, तेमना लांब पणाने एंसीभागे वेहेंचतां पचीश योजन आवे, तो जे मेरु सन्मुख बारणुंछे ते पचीश योजननुं छे. अने

बाहेरनां दक्षिण तथा उत्तर सन्मुख जे बारणा छे, ते मांहेला मेरु सन्मुख बारणाथी अर्द्धमाने एटले साडाबार योजन प्रमाणे छे. वली एरीते तिगिछि तथा केशरी द्रह मेरु दिशि लांबा चार हजार योजन छे. ते एंसी भागे वहेंचतां पचाश योजन प्रमाणे मेरु सन्मुखनु बारणुं छे, अने दक्षिण तथा उत्तरनां जे बारणां छे, ते मांहेला बारणा थी अर्द्ध एटले पचीश योजन प्रमाणना छे. ए सर्व द्रहना बारणां जे छे ते तोरण तथा नदीए सहित छे एम जाणवुं.

ए पद्मद्रहनां पूर्वदिसीने तोरणेथी गंगा नामे महोटी नदी नीकली ते पूर्वदिसि सन्मुख पांचशे योजन पर्वत उपर जइने गंगावर्त्तन नामे कूट फरीने पांचशे त्रेवीश योजन उपर ओगणीसीया साडात्रण भाग एटली दक्षणदिसी साहामी पर्वत उपर जइने जेम मोहोटा घडानां मुख मांहेथी पाणीनो समूह नीकलतो होय ते सरखो मुक्तावलीनां हारने संस्थाने कांइक जाजेरा शो योजनने प्रपाते पाणीने पडवे करीने हेठी पडेछे, ए गंगानदी जिहां पडेछे, तिहां एक महोटी जीभी प्रणालीछे, ते जीभी अर्द्ध योजन लांबी अने सवाछ योजन पोहोली, अर्द्धकोश जाडी, मगरमत्सनुं पसार्युं मुख ते संस्थाने संस्थितछे, ए गंगानदी जिहां पडेछे, तिहां एक गंगा प्रपात एवे नामे कुंडछे, ते शाठ योजन लांबो अने पोहोलो छे तथा १९० योजन कांइक जाझेरो परिधिछे, दश योजन ऊंडो छे, गोलाकारे छे. अनेक जातना तिहां कमलछे, ते कुंड एक पद्मवरवेदिका अने एक वनखंड तेणेकरी चोकफेर वींटेलुं छे, ते कुंडने चारेदिसे पगथालीया छे.

ते कुंडना मध्यभागे एक महोटो गंगा नामे द्वीपछे, ते आठ योजन लांबो अने पोहोलो वृत्ताकारेछे, कांइक झाझेरा पच्चीश योजन तेनी परिधिछे, बे कोश पाणी थकी ऊंचो सर्व वज्ररत्नमय छे ते द्वीप एक पद्मवरवेदिका अने वनखंडेकरी चोफेर वींटेलोछे, तेना उपरे गंगा नामक देवीने वसवानो भुवनछे घरछे ते एककोश लांबो, अर्द्धकोश पोहोलो अने १४४० धनुष उंचोछे तेमां गंगादेवीनी सय्याछे, माटे एनुं गंगाप्रपात नामछे.

ते गंगाप्रपातकुंडने दक्षणदिसिने तोरणे थइने गंगा महानदी नीकली थकी उत्तरार्द्ध भरतक्षेत्र मांहे आवती आवती सात हजार नदीये पूराती थकी खंडप्रपाता गुफाने हेठे वैताढ्य पर्वतने भेदीने दक्षणार्द्ध भरत मांहे आवती थकी दक्षणार्द्ध भरतनां मध्य भागे जइने पूर्वदिसि साहामी वलती थकी चौदहजार नदीये पुराती थकी नीचे जंबूद्वीपनी जगतीने भेदीने पूर्वदिसे लवण समुद्रमांहे भले छे.

ए गंगानदी जिहांथी वहेछे तिहांथी मूले सवा छ योजन पोहोली छे अने अर्द्धकोश ऊंडीछे पछी बे पासे मात्राये मात्राये वधती थकी समुद्रमां भलतां शाढीबाशठ योजन पोहोल पणे थइ अने सवा योजन ऊंड पणे थइ एटले सर्व नदीओने मूल थकी मुखे

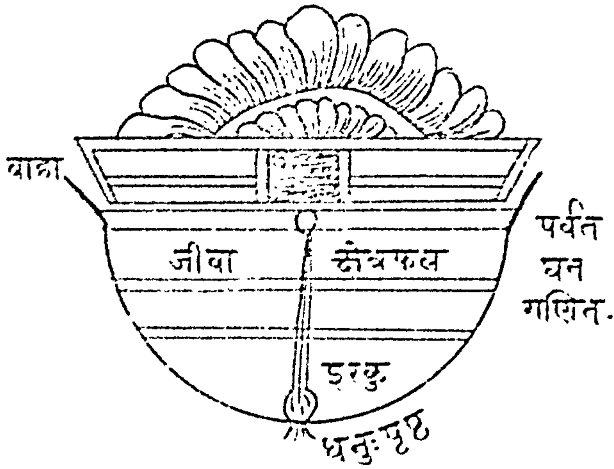
समुद्रमां नलतां दश गुणो प्रवाह होय तथा पोहोल पणाथी पच्चाशमो नाग ऊंड पणे होय गंगानदी बे पासे बे पद्मवर वेदिका अने बे वनखंडे करी वींटीछे.

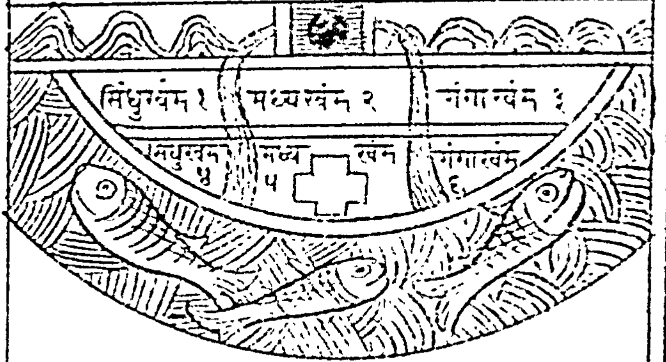
ए गंगानदीनी पेरेज सिंधुनदीनुं स्वरूप पण जाणी लेवुं मात्र ते पद्मद्रहने पश्चिम दिसिने तोरणे नीकली थकी सिंधुआवर्त्तन नामा कूटने फरीने दक्षिणदिसा तरफ चाली थकी सिंधुप्रपातकुंडमां पमी तिहां सिंधुदेवीनो सिंधु नामे द्वीप जाणवो यावत तिमिश्रा गुफा नीचे वैताढ्य पर्वत नेदीने पश्चिमदिसी साहामी वली थकी चौदहजार नदीये पुराती लवण समुद्रमां नली तेनो शेष अधिकार गंगानी परे जाणवो

हवे ते पद्मद्रहने उत्तरदिसिने तोरणे रोहितांसा महानदी नकली ते २७६ योजन अने ऊंगणीसीया छ नाग उत्तर दिसि साहामी पर्वत उपर जइने कांइक जाफेरा शो योजनने प्रपाते रोहीतांशा प्रपात कुंडमां जइ पडेछे, ते कुंड एकशोने वीश योजन लांबो अने पोहोलोछे, कांइक ऊणा त्रणसो एंसी योजन परिधि पणे छे, दश योजन ऊंडो छे, तेना मध्यनागे रोहितांशा नामे द्वीपछे, ते शोल योजन लांबो अने पोहोलो छे, बे कोश पाणी थकी ऊंचोछे, तिहां रोहितांशा देवीनुं नवन जाणवुं इत्यादिकएनो बीजो सर्व अधिकार पूर्वला कुंरूनी परे कहेवो.

ते रोहितंसा प्रपातकुंडने उत्तरदिसिने तोरणे रोहितंसा नदी नीकली थकी हेमवंत युगलीयानां खेत्र मांहे जाती जाती, चौद हजार नदीये पुराती पुराती, शब्दापाती नामे वृत्तवैताढ्य पर्वतने अर्द्ध योजने पण पोहोती थकी, पश्चिम दिसि साहामी वली थकी, हेमवंतखेत्रने बे नागे वेचती थकी, अठ्ठावीश हजार नदीये पुराती नराती नीचेथी जगतीने नेदीने लवण समुद्र मांहे नले छे. ए नदीनो मूले प्रवाह साडाबार योजन पोहोलपणे अने एक कोश ऊंड पणे छे, पछी मात्राये मात्राये बे पासे वधती समुद्रमांहे पेशतां १२५ योजन पोहोल पणे प्रवाह छे, अने अढी योजन ऊंड पणे छे, ए बे पासे बे पद्मवरवेदिका अने बे वन खंडे करी वींटी छे.

हवे चुल्लहेमवंत पर्वत उपर अगीआर कूटछे, तेनां नाम कहेछेः—१ सिद्धायतनकूट एना उपर सिद्धनुं देहेरुं छे, २ चूल्ल हेमवंत गिरिकुमार देवकूट, एना उपर ए पर्वतना ए कूटने नामे देवतानो निवास नुवनछे, ३ नरतदेवकूट एना उपर नरतक्षेत्रना नरतदेवतानो निवासछे, ४ इलादेवीकूट,५ गंगादेवीकूट, ६ श्रीदेवीकूट, ७ रोहितंसादेवीकूट,८सिंधुदेवीकूट,९सुरादेवीकूट, १० हेमवंतदेवकूट, ११ वैश्रमण लोकपाल देवकूट, पूर्वदिसिना लवण समुद्रने पश्चिमदिसे अने चुल्लहेमवंत नामा कूटने पूर्वदिसे प्रथम सिद्धायतन कूटछे ते पांचशे योजन ऊंचोछे, मूलमां पांचशो योजन पोहोल पणे, वच्चे ३७५ योजन पोहोल पणे, उपर अढीसे योजन पोहोल पणे, गोपुछने संस्थानेछे, ते कूट पद्मवरवेदिका



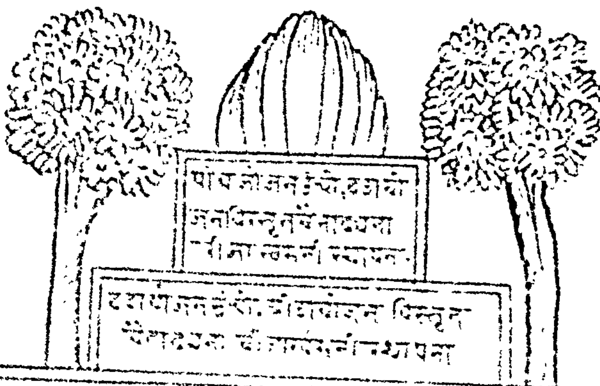


१६

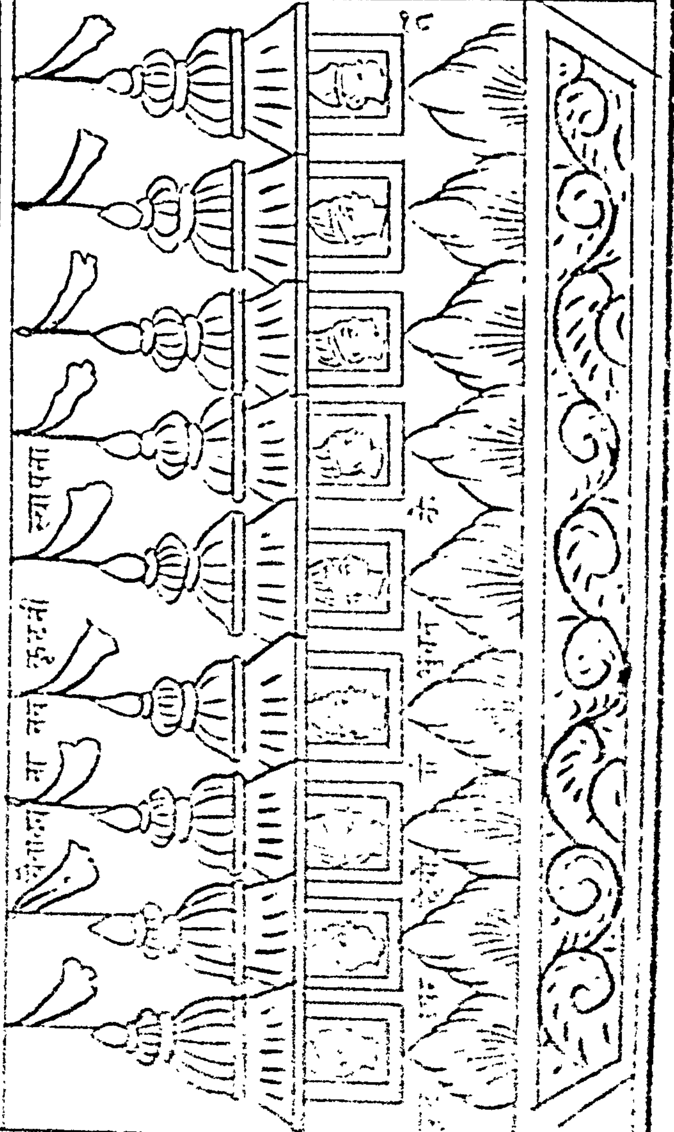


वैताढ्य दक्षिणोत्तर श्रेणी स्थापना.

१७

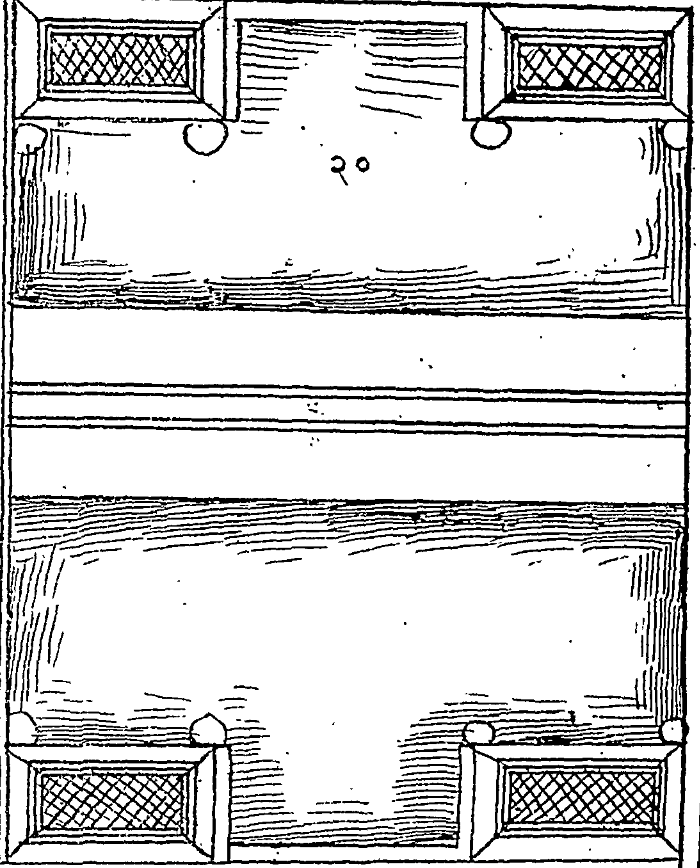


ऊर्ध्वाकार वैताढ्य स्थापना.







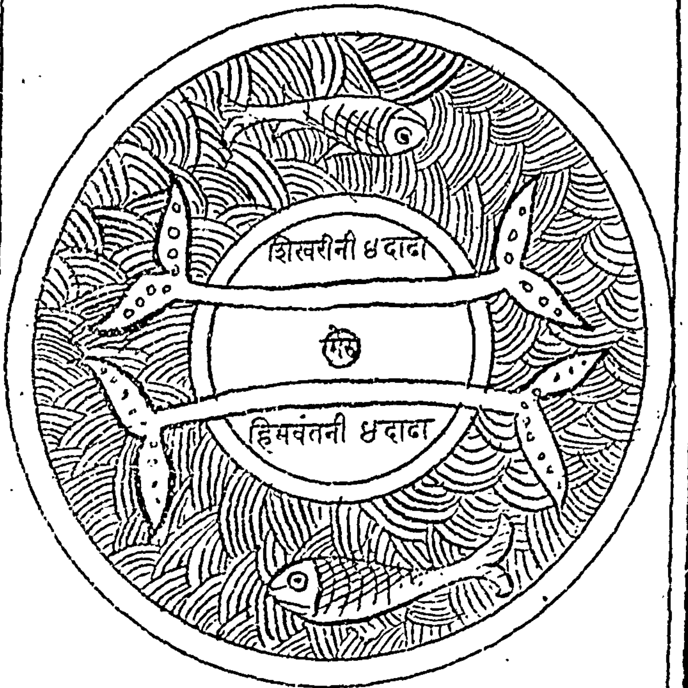


चक्रवर्त्ति वैताढ्यनी गुफाना कपाटउघाडेछे तेनी स्थापना·



चुल्लहिमवंत पर्वत उपर गंगावर्त्तादि कूटनी स्थापना·

२१



ए आठे दाढानेविषे प्रत्येके सातसात अंतर द्वीपछे·

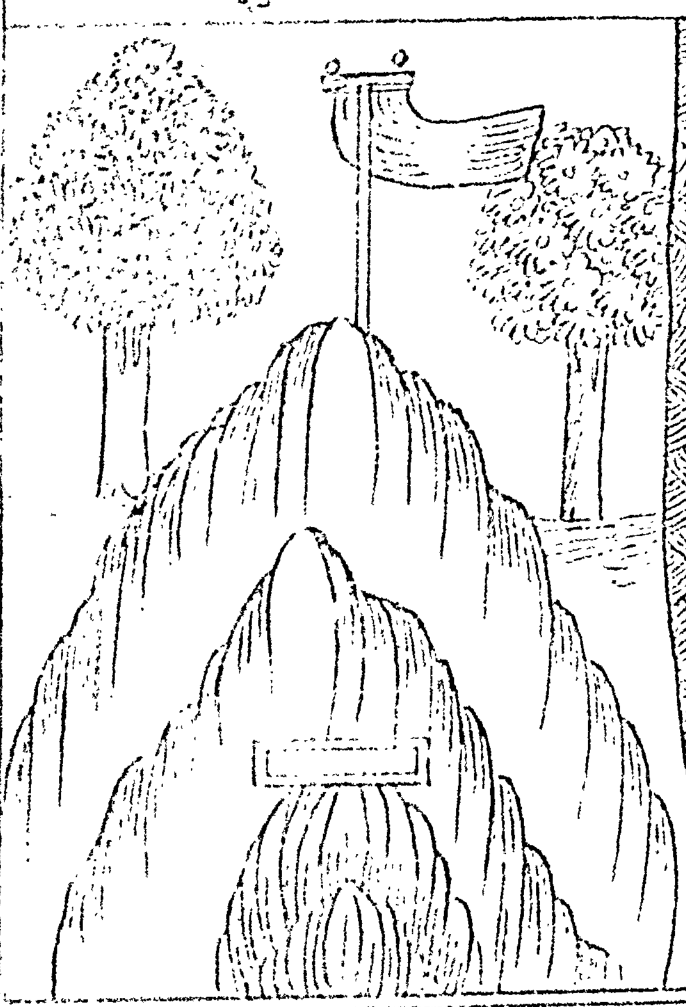
भरतक्षेत्र, वैताढ्य पर्वत अने चुल्ल हिमवंत पर्वतनी स्थापना.

२२

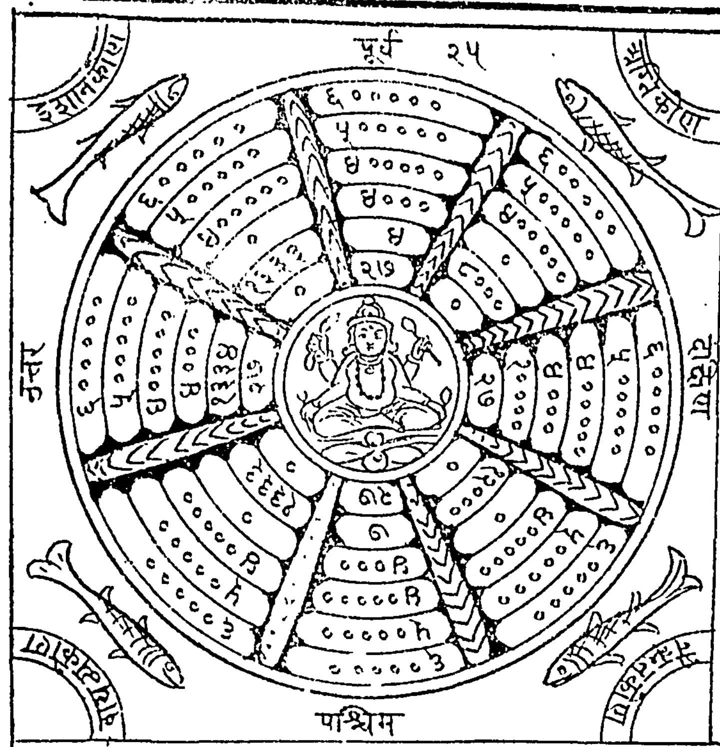


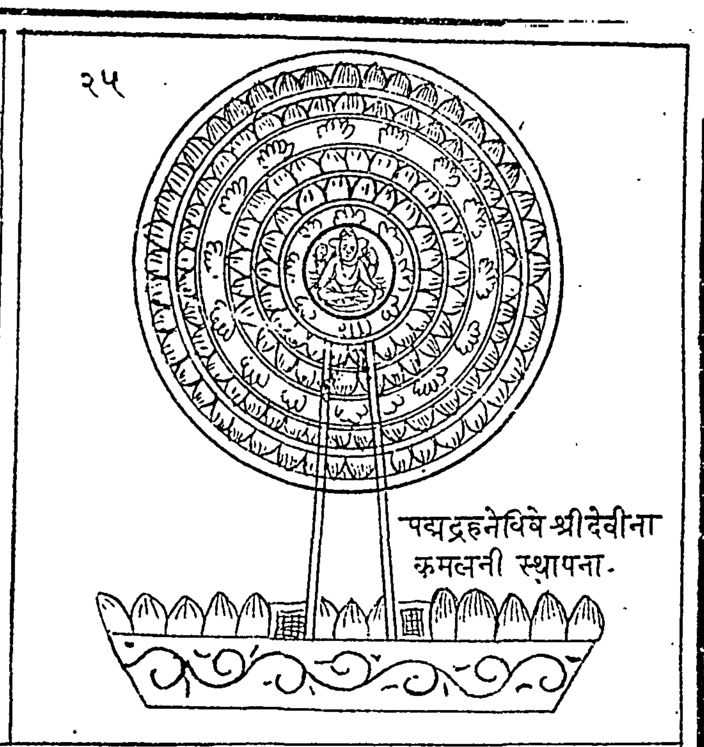
चुल्लहिमवंत पर्वतनी पासे ऋषभकूट छे तेना उपर चक्रवर्ति पोतानुं नाम लखे छे तेनी स्थापना.

२३



श्री देवीना मुख्यकमलने फिरता लघुकमलना ६ वलयनी स्थापना.





पद्मद्रहनेविषे श्रीदेवीना कमलनी स्थापना.

२६

हिमवंत युगल क्षेत्र स्थापना.

अने वन खंडे करी चोफेर वींट्योछे, तेना उपर सिद्धनुं देहेरुंछे; तेनुं वर्णन जीवाभि गम सूत्रथी जाणवुं बीजा दश कूट पण एटलाज लांबा पोहोला अने उंचा जाणवा.

एमज चूल्लहेमवंतकूटने विषे चूल्लहेमवंतगिरिकुमार देवनो प्रासादावतंसक प्रमुख तथा तेनी चुल्लहेमवंत नामे राजधानी असंख्यातमे जंबूद्वीपे जाणवी शेष थाकता सर्व कूटोनी वक्तव्यतामां पण देवताना प्रासाद सिंहासन, परिवार प्रमुख ते सर्व कहेवा.

इहां चुल्लहेमवंतकूट, भरतकूट, हेमवंतकूट वैश्रमणकूट ए चार कूटने विषे देवता जाणवा शेष ७ कूटने विषे देवांगना जाणवी ए पर्वत महाहेमवंत पर्वत आश्रयी लं बाइ आदिकमां लगारेक न्हानोछे, वली चुल्लहेमवंतनामे देवता एक पल्योपमायुवे इ हांवशेछे. तेथी (चूल्ल के०) लघुहेमवंत पर्वत एवुं एनुं शाश्वतुं नाम छे इति ॥

हवे हेमवंत युगलीयाना क्षेत्रनुं वर्णन कहेछे. चुल्लहेमवंत वर्षधर पर्वतने उत्तरदिसे ए हेमवंत क्षेत्रछे, ते २१०५ योजन उपर ओगणीसीया पांच भाग एटलुं पोहोल पणेछे, एनी बाहु ६७५५ योजन उपर ओगणीसीया त्रण भागछे, तेनी जीवा पण ३७६७४ यो जन उपर ओगणीसीआ पंदर भागछे. एनुं धनुपृष्ट ३८७४० योजन उपर ओगणीसीआ दश भाग एटलुं परिधि पणेछे, एमां त्रीजा सुखमदुखमा आरा सरखो सरूप जाणवो.

इहां रोहिता नदीनी पश्चिम दिसे अने रोहितांशा नदीनी पूर्व दिसे हेमवंत क्षेत्रने मध्यभागे शब्दापाती नामे वृत्त वैताढ्य पर्वत छे, ते एक हजार योजन उंचोछे, अढीशो योजन धरतीमां उंडोछे, तथा नीचे अने उपर लांबो पोहोलो सर्वत्र सरखो धान भ रवाना पालाने संस्थानेछे, एक हजार योजन लांबो पोहोलो छे अने ३१६२ योजन कांइक झाझेरी एटली परिधिछे, वेदिका अने वनखंडे करी चारे बाजु वींटेलोछे तेनी उपर या वत् सिंहासन प्रमुख परिवार सहित जाणवा तथा ए पर्वतनी न्हानी महोटी वाव्यने विषे यावत् बिल्लने विषे शब्दापाती जेवा वर्णवाला एना सरखा अनेक जातीना कम ल छे तेणेकरी तथा इहां स्वाती नामे देवता एक पल्योपमनां आउखावंत, चारहजार सामानीक देवो आदिक सहित थको वसेछे, यावत् विजय देवनी पेरे राजधानी वा लो छे. तेथी ए पर्वतनुं शब्दापाती वृत्तवैताढ्य एवुं शाश्वतुं नाम छे.

तथा चुल्ल हेमवंत अने महा हेमवंत ए बे वर्षधर पर्वते बे पासे दक्षण उत्तर दिसे ए क्षेत्रने गोपव्युंछे. मर्यादा कीधीछे. नित्ये सदैव हेम सुवर्ण प्रकाशेछे. तथा इहां हेमवंत नामे देवता एक पल्योपमने आउखे वशेछे तेथी हेमवंत क्षेत्र एवुं एनुं शाश्वतुं नामछे.

हवे महा हेमवंत नामे वर्षधर पर्वत कहेछेः—हेमवंत क्षेत्रने उत्तरदिसे अने हरिवर्ष क्षेत्रने दक्षणदिसे महाहेमवंत नामे वर्षधर पर्वतछे, ते बसो योजन उंचपणे अने पचास

योजन धरतीमां ऊंमोछे, तथा ४२१० योजन उपर ऊंगणीसीया दश भाग एटलो पोहोल पणेछे एनी बाह पूर्व पश्चिम दिसे ए२७६ योजन उपर ऊंगणीसीया साडानव भागछे, तथा एनी जीवा पणछ उत्तरदिसि तरफ पूर्व पश्चिमे लांबी बे छेहडे लवण समुद्रने फरसी छे, ते ५३ए३१ योजन उपर उगणीसीया छ भाग कांइक ऊाऊेरीछे, तेनुं धनुपृष्ट दक्षण दिसी तरफ ५७२ए३ योजन उपर ओगणीसीया दश भाग परिधि पणेछे, ए पर्वत रुचकने संस्थाने संस्थितछे, सर्व रत्नमयछे, बे बाजुये बे पद्मवर वेदिकाये करी तथा बे वन खंडे करी वींट्योछे घणु सम रमणीक भूमि भागछे, यावत् देवता बेसेछे रहेछे इत्यादि.

ते महाहेमवंत पर्वतनां मध्यभागे वच्चोवच्चे महापद्मनामे द्रह छे, ते बे हजार योजन लांबपणे अने एक हजार योजन पोहोलपणे छे, तथा दश योजन ऊंडो छे, तेनुं रूपामय तट छे, जे रीते पूर्वे पद्मद्रहनी वक्तव्यता कही तेहिज वक्तव्यता इहां पण जाणवी इहां कमलनुं प्रमाण बे योजननुं छे, यावत् ते कमल महापद्मद्रह सरखा छे इहां ह्रीं नामे देवी एक पल्योपमने आउखे वशे छे तेणे करी एनुं महापद्मद्रह एवुं शाश्वतुं नामछे.

ए द्रहने दक्षणदिसिने तोरणे रोहिता महानदी निकली ते १६०५ योजन उपर ऊंगणीसीआ पांच भाग एटली दक्षणदिसि साहमी पर्वत उपरे जइने महोटा घडाना मुख सरिखे मुक्तावली हारने संस्थाने कांइ एक जाजेरा बशे योजने प्रपात कुंडमां पडे छे, ते जिहांथी पडेछे, तिहां महोटी जीभी प्रणाली छे, ते जीभी एक योजन लांब पणे अने शाढाबार योजन पोहोल पणे तथा एक कोश जाड पणे छे, महोटा मगरमत्सनुं मुख विस्तिरण कर्‍यो होय ते संस्थाने संस्थित छे, सर्व वज्ररत्नमय छे ते जिहां पडेछे तिहां रोहित प्रपात नामे कुंडछे, ते एकसो वीश योजन लांबो पोहोलो छे, अने त्रणसे एंसी योजन कांइक ऊंणा परिधि पणे छे, तथा दश योजन ऊंडो छे, तेना मध्यभागे एक रोहिता नामे द्वीपछे, ते शोल योजन लांबो पोहोलो अने कांइक जाजेरा पचाश योजन परिधि पणेछे, पाणी थकी बे कोश ऊंचोछे, वज्ररत्नमय छे, ते द्वीप पद्मवरवेदिका अने वनखंडे करी वींट्योछे, ते द्वीपने वच्चे एक भवनछे, ते एक कोश लांब पणे छे, इत्यादि.

ते रोहीत प्रपात कुंडने दक्षणदिसीने तोरणे रोहिता महानदी नीकली थकी हेमवंत खेत्रमांहे जाती जाती शब्दापाती वृत्तवैताढ्य पर्वतने अर्द्ध योजने अण पोहोती थकी पूर्वदिसि सन्मुख वलीने हेमवंत क्षेत्र प्रत्ये बे भागे वेहेचती थकी अठावीश हजार नदीये पूराती थकी नीचे जगतीने भेदी पूर्वदिसे लवण समुद्रमांहे भली छे.

तथा ए द्रहना उत्तरदिसिने तोरणे हरिकांता महानदी नीकली थकी १६०५ योजन उपर ऊंगणीसीया पांच भाग उत्तर दिसिने सामी पर्वत उपरे जइने कांइक जाजेरा बशे योजनने प्रपाते हेठी पडेछे, जिहांथी पडेछे, तिहां जीभी बे योजन लांब पणे, प

त्रीश योजन पोहोल पणे अने अर्द्ध योजन जाड पणेछे, ते हरिकांत प्रपात नामे कुंडमां पडेछे ते कुंड २४० योजन लांबो पोहोलो अने ७५९ योजन परिधि पणेछे. तेना मध्यभागे हरिकांता नामे द्वीपछे, ते बत्रीश योजन लांबो पोहोलो अने एकशो एक योजन परिधि पणे छे. तथा बे कोश पाणीथकी उंचो छे. ते पद्मवर वेदिका अने वनखंडे करी वींट्योछे. एना मध्यमां भुवनछे तथा ते हरिकांता प्रपात कुंडनां उत्तर दिसिने तोरणे हरिकांता महानदी नीकली थकी हरिवर्षक्षेत्रमां जाती थकी विकटापाती वृत्त वैताढ्य पर्वत प्रत्ये अर्द्ध योजन अण पोहोती थकी पश्चिमदिसि साहमी वली थकी हरिवर्ष क्षेत्रने बे भागे वेचती थकी छपन्न हजार नदीये पूराती थकी नीचे जगती भेदीने पश्चिमदिसिये लवणसमुद्र मांहे भलेछे ए. हरिकांता महानदी द्रहथकी निकलता प्रवाहे पच्चीश योजन पोहोल पणे अर्द्ध योजन उंडपणे पछी मात्राये मात्राये अनुक्रमे योजने योजने एकेक पासे वीश वीश धनुष करतां बे पासे चालीश धनुष वधती वधती समुद्र प्रवेशे अढीशे योजन पोहोलपणे अने पांच योजन उंड पणे थइछे, बे पासे पद्मवरवेदिका तथा वनखंडे वींटीछे.

महा हेमवंत पर्वत उपर आठ कूट कहेछेः—एक सिद्धायतन कूट, बीजो महाहेमवंत कूट, त्रीजो हेमवंत कूट, चोथो रोहितादेवी कूट, पांचमो ह्रींदेवी कूट, छठो हरिकांता कूट, सातमो हरिवर्ष कूट, आठमो वैडूर्य कूट, पूर्वे जेम चुल्लहेमवंत पर्वतना कूटोनी वक्तव्यता कही तेम इहां पण देवी देवो प्रमुखना निवाश प्रमुख जाणवा ए. महा हेमवंत पर्वत जे छे, ते चुल्लहेमवंत पर्वत आश्रयी लांब पणे, पहोल पणे, उंचपणे, उंड पणे, परिधि पणे अतिशय महोटो छे, तथा इहां महाहिमवंतनामे देवता यावत् एक पल्योपमायुनी स्थितिये वसेछे. माटे एनुं महाहिमवंत पर्वत एवुं शाश्वतुं नामछे.

हवे हरिवर्ष युगलीयानां क्षेत्रनी वक्तव्यता कहेछे.

निषध पर्वतने दक्षण दिसे अने महाहेमवंत पर्वतने उत्तरदिसे हरिवर्ष नामे युगलक्षेत्रछे ते ८४२१ योजन उपर ओगणीसीआ एक भाग एटलुं पहोल पणेछे. तथा १३३६१ योजन उपर साडा छ भाग एटली पूर्व पश्चिमदिसे बाहाछे. तथा एनी जीवा पण उत्तर दिसीये पूर्वपश्चिमे लांबी ७३९०१ योजनउपर साडासत्तर भाग छे. तेनुं धनुपृष्ट दक्षण दिसीये ८४०१६ योजन उपर चार भाग एटलुं परिधिपणे छे, एनुं बहुज सम रमणिय भूमि भाग छे. यावत् मणितृणादिके करी शोभावंतछे. इत्यादिक सर्व वात इहां पण कहेवी इहां सुखमा नामे बीजा आरानुं अनुभाव सदा सर्वदा वर्ते छे.

इहां हरिसलिला महानदीने पश्चिमदिसे अने हरिकांता महा नदिने पूर्वदिसिये तथा हरिवर्ष क्षेत्रने मध्यभागे विकटापाती नामे वृत्तवैताढ्य पर्वत छे. तेनुं पोहोल पणु. उंच

योजन धरतीमां ऊंमोछे, तथा ४२१० योजन उपर ओगणीसीया दश भाग एटलो पोहोल पणेछे एनी बाह पूर्व पश्चिम दिसे ए२७६ योजन उपर ओगणीसीया साडानव भागछे, तथा एनी जीवा पणछ उत्तरदिसि तरफ पूर्व पश्चिमे लांबी बे छेहडे लवण समुद्रने फरसी छे, ते ५३ए३१ योजन उपर ओगणीसीया छ भाग कांइक ऊाझेरीछे, तेनुं धनुपृष्ट दक्षिण दिसी तरफ ५७२ए३ योजन उपर ओगणीसीया दश भाग परिधि पणेछे, ए पर्वत रुचकने संस्थाने संस्थितछे, सर्व रत्नमयछे, बे बाजुये बे पद्मवर वेदिकाये करी तथा बे वनखंडे करी वींट्योछे घणु सम रमणीक भूमि भागछे, यावत् देवता बेसेछे रहेछे इत्यादि.

ते महाहेमवंत पर्वतनां मध्यभागे वच्चोवच्च महापद्मनामे द्रह छे, ते बे हजार योजन लांबपणे अने एक हजार योजन पोहोलपणे छे, तथा दश योजन ऊंडो छे, तेनुं रूपामय तट छे, जे रीते पूर्वे पद्मद्रहनी वक्तव्यता कही तेहिज वक्तव्यता इहां पण जाणवी इहां कमलनुं प्रमाण बे योजननुं छे, यावत् ते कमल महापद्मद्रह सरखा छे इहां ह्रीं नामे देवी एक पल्योपमने आउखे वशे छे तेणे करी एनुं महापद्मद्रह एवुं शाश्वतुं नामछे.

ए द्रहने दक्षिणदिसिने तोरणे रोहिता महानदी निकली ते १६०५ योजन उपर ओगणीसीआ पांच भाग एटली दक्षिणदिसि साहमी पर्वत उपरे जइने महोटा घडाना मुख सरिखे मुक्तावली हारने संस्थाने कांइ एक जाजेरा बशे योजने प्रपात कुंडमां पडे छे, ते जिहांथी पडेछे, तिहां महोटी जीभी प्रणाली छे, ते जीभी एक योजन लांब पणे अने शाढाबार योजन पोहोल पणे तथा एक कोश जाड पणे छे, महोटा मगरमत्सनुं मुख विस्तिरण कर्यो होय ते संस्थाने संस्थित छे, सर्व वज्ररत्नमय छे ते जिहां पडेछे तिहां रोहित प्रपात नामे कुंडछे, ते एकसो वीश योजन लांबो पोहोलो छे, अने त्रणसे एंसी योजन कांइक ऊणा परिधि पणे छे, तथा दश योजन ऊंडो छे, तेना मध्यभागे एक रोहिता नामे द्वीपछे, ते शोल योजन लांबो पोहोलो अने कांइक जाजेरा पचाश योजन परिधि पणेछे, पाणी थकी बे कोश ऊंचोछे, वज्ररत्नमय छे, ते द्वीप पद्मवरवेदिका अने वनखंडे करी वींट्योछे, ते द्वीपने वच्चे एक भवनछे, ते एक कोश लांब पणे छे, इत्यादि.

ते रोहीत प्रपात कुंडने दक्षिणदिसीने तोरणे रोहिता महानदी नीकली थकी हेमवंत खेत्रमांहे जाती जाती शब्दापाती वृत्तवैताढ्य पर्वतने अर्द्ध योजने अण पोहोती थकी पूर्वदिसि सन्मुख वलीने हेमवंत क्षेत्र प्रत्ये बे भागे वेहेचती थकी अठावीश हजार नदीये पूराती थकी नीचे जगतीने भेदी पूर्वदिसे लवण समुद्रमांहे भली छे.

तथा ए द्रहना उत्तरदिसिने तोरणे हरिकांता महानदी नीकली थकी १६०५ योजन उपर ओगणीसीया पांच भाग उत्तर दिसिने सामी पर्वत उपरे जइने कांइक जाजेरा बशे योजनने प्रपाते हेठी पडेछे, जिहांथी पडेछे, तिहां जीभी बे योजन लांब पणे, प

च्चीश योजन पोहोल पणे अने अर्द्ध योजन जाड पणेछे, ते हरिकांत प्रपात नामे कुंडमां पडेछे ते कुंड २४० योजन लांबो पोहोलो अने ७५९ योजन परिधि पणेछे, तेना मध्यभागे हरिकांता नामे द्वीपछे, ते बत्रीश योजन लांबो पोहोलो अने एकशो एक योजन परिधि पणे छे, तथा बे कोश पाणीथकी उंचो छे, ते पद्मवर वेदिका अने वनखंडे करी वींट्योछे. एना मध्यमां भुवनछे तथा ते हरिकांता प्रपात कुंडनां उत्तर दिसिने तोरणे हरिकांता महानदी नीकली थकी हरिवर्षक्षेत्रमां जाती थकी विकटापाती वृत्त वैताढ्य पर्वत प्रत्ये अर्द्ध योजन अण पोहोती थकी पश्चिमदिसि साहमी वली थकी हरिवर्ष क्षेत्रने बे भागे वेचती थकी छपन्न हजार नदीये पूराती थकी नीचे जगती भेदीने पश्चिमदिसिये लवणसमुद्र मांहे भलेछे ए हरिकांता महानदी द्रहथकी निकलता प्रवाहे पच्चीश योजन पोहोल पणे अर्द्ध योजन उंडपणे पछी मात्राये मात्राये अनुक्रमे योजने योजने एकेक पासे वीश वीश धनुष करतां बे पासे चालीश धनुष वधती वधती समुद्र प्रवेशे अढीशे योजन पोहोलपणे अने पांच योजन उंड पणे थइछे, बे पासे पद्मवरवेदिका तथा वनखंडे वींटीछे.

महा हेमवंत पर्वत उपर आठ कूट कहेछेः—एक सिद्धायतन कूट, बीजो महाहेमवंत कूट, त्रीजो हेमवंत कूट, चोथो रोहितादेवी कूट, पांचमो ह्रीँदेवी कूट, छठो हरिकांता कूट, सातमो हरिवर्ष कूट, आठमो वैडूर्य कूट, पूर्वे जेम चूल्लहेमवंत पर्वतना कूटोनी वक्तव्यता कही तेम इहां पण देवी देवो प्रमुखना निवाश प्रमुख जाणवा ए महा हेमवंत पर्वत जे छे, ते चूल्लहेमवंत पर्वत आश्रयी लांब पणे, पहोल पणे, उंचपणे, उंड पणे, परिधि पणे अतिशय महोटो छे, तथा इहां महाहिमवंतनामे देवता यावत् एक पल्योपमायुनी स्थितिये वशेछे, माटे एनुं महाहिमवंत पर्वत एवुं शाश्वतुं नामछे.

हवे हरिवर्ष युगलीयानां क्षेत्रनी वक्तव्यता कहेछे.

निषध पर्वतने दक्षण दिसे अने महाहेमवंत पर्वतने उत्तरदिसे हरिवर्ष नामे युगल क्षेत्रछे ते ८४२१ योजन उपर उंगणीसीओ एक भाग एटलुं पहोल पणेछे. तथा १३३६१ योजन उपर शाडा छ भाग एटली पूर्व पश्चिम दिसे वाहाछे, तथा एनी जीवा पणछ उत्तर दिसीये पूर्वपश्चिमे लांबी ७३९०१ योजनउपर साडासत्तर भाग छे, तेनुं धनुपृष्ट दक्षण दिसीये ८४०१६ योजन उपर चार भाग एटलुं परिधिपणे छे, एनुं घणुज सम रमणिक भूमि भाग छे, यावत् मणितृणादिके करी शोभावंतछे, इत्यादिक सर्व वात इहां पण कहेवी इहां सुखमा नामे बीजा आरानुं अनुभाव सदा सर्वदा वर्त्ते छे.

इहां हरिसलिला महानदीने पश्चिमदिसे अने हरिकांता महा नदिने पूर्वदिसिये तथा हरिवर्ष क्षेत्रने मध्यभागे विकटापाती नामे वृत्तवैताढ्य पर्वत छे, तेनुं पोहोल पणु, उंच

पणु अने उंचपणु तथा परिधि प्रमुख सर्वं पूर्वे कहेला शब्दपाती वृत्तवैताढ्यनी पेरे इहां पण कहेवा परंतु एटलुं विशेष जे ए पर्वतनो अरुणनामे देवता अधिपतिछे. तथा इहां विकटापाती सरखा वर्णे करी कमल छे, तेथी एनुं विकटापाती एवुं शाश्वतुं नामछे.

ए हरिवर्षक्षेत्रने विषे (हरिके०) सूर्य अने चंद्रमा कहीये तेथी केटलाएक मनुष्य उगता सूर्य जेवा राते वर्णे रातिकांतिने प्रकाश करेछे, तथा केटलां एक तिहांना मनुष्य चंद्रमा तथा शंखना सरिखां धोले वर्णे छे, तेमाटे तथा इहां हरिवर्षनामे महर्द्धिक देवता एक पल्योपमायुये वशेछे, तेथी एनुं हरिवर्ष एवुं नाम शाश्वतुं छे.

हवे निषध नामा वर्षधर पर्वत कहेछे.

महाविदेह क्षेत्रने दक्षणदिसे अने हरिववर्षक्षेत्रने उत्तरदिसे निषध नामे पर्वतछे ,ते चारसे योजन उंचपणे, शा योजन नीचो धरतीमां छे, तथा १६८४२ योजन उपर बे कला पहोलो छे, तेनी पूर्वपश्चिमदिसे बाहा २०१६५ योजन उपर अढी भागछे, तथा लांबपणे तेनी जीवा पणछ उत्तरदिसे ९४१५६ योजन उपर बे भागछे. तथा तेनुं धनु पृष्ट दक्षणदिसे १२४३४६ योजन उपर नव भाग परिधिपणे छे, सर्व तपनीय राता सुवर्णमय छे, बे पासे पद्मवरवेदिका अने वनखंडे करी सहित छे.

तेना मध्यभागे एक तिगिछि नामे द्रह छे, तिगिछि एटले कमलनो परागद्रह ते तिगिछि द्रह. ए चार हजार योजन लांब पणे अने बे हजार योजन पोहोल पणे तथा दश योजन उंडो छे, एनुं रूपामय तट छे, चारदिसिये चार त्रिसोपान पगथालियाछे, एम जे रीते महापद्मद्रहनी वक्तव्यता पूर्वे कही तेज रीते इहां पण कहेवी, इहां कमलनुं प्रमाण तेहिज जाणवुं यावत् तिहां तिगिछि सरखा घणा कमल छे, तथा इहां धृतिनामे देवी एक पल्योपमने आउखे वशे छे, तेथी एनुं तिगिछिद्रह एवुं नाम छे.

ते तिगिछिद्रहने दक्षण दिसिने तोरणे हरिसलिला महानदी नीकली थकी ७४२१ योजन उपर एक भाग एटली दक्षणदिसि सामी पर्वत उपरे जइने कांइक जाजेरा चारसे योजनने प्रपाते करी हेठी हरिसलीला कुंडमां पडेछे, ते कुंडनुं अने द्वीपनुं तथा द्वीपना भवन प्रमुखनुं प्रमाण तेनी वक्तव्यता सर्व हरिकांता नदीनी पेरे जाणवी यावत् हरिवर्ष क्षेत्रने बे भागे वेंचती छपन्न हजार नदीये सहीत थकी नीचे जगती भेदीने पूर्व दिसिनां लवण समुद्रमांहे भलेछे एनुं प्रवाह, मुख, मूले, पहोलपणुं, उंडपणुं, ए सर्व हरिकांता नदी प्रमाणेज जाणवुं यावत् वेदिका अने वनखंड तेणे करी सहीत छे.

हवे ते तिगिछिद्रहने उत्तरदिसिने तोरणे सीतोदा महानदी निकली थकी ७४२१ योजन उपर एक भाग एटलुं उत्तर साहमी पर्वत उपरे जइने कांइक जाजेरा चारसे योजन

नने प्रपाते हेठी पडेछे ए सीतोदा महानदी जिहां थकी पडेछे तिहां एक महोटी जीभी प्रणाली रूपछे ते चार योजन लांब पणे, पच्चाश योजन पोहोल पणे अने एक योजन जाडु पणे महोटा मगर मत्सना मुखने संस्थाने संस्थित छे. सर्व वज्र रत्नमय छे ते जिहां नीची पडेछे तिहां महोटो सितोदा प्रपात कुंडछे ते चारसे एंसी योजन लांब पणे पोहोल पणे अने १५१८ योजन कांइ एक उंणा परिधि पणे छे, यावत् तोरण पर्यंत वक्तव्यता जाणवी ते सीतोदा प्रपात कुंडने मध्य भागे सीतोदा नामे द्वीपछे, ते चोशठ योजन लांबो पोहोलो अने बशे बे योजन परिधि पणे छे, बे कोश पाणी थकी उंचो छे, सर्व वज्र रत्नमय छे, तेमज वेदिका, वनखंड भूमिभाग, भवनघर, शयनीय ए सर्व पूर्वपरे जाणवा.

ते कुंडने उत्तरदिसिनेतोरणे ए सीतोदा महानदी नीकली थकी, देवकुरु क्षेत्र प्रत्ये आवती थकी, बेहु पर्वत प्रत्ये तथा १ निषध २ देवकुरु ३ सूरेंद्र ४ सुलस ५ विद्युत्प्रभ ए पांचद्रहने बे भागे वहेचती थकी ते द्रहमांहे वेहेती थकी, देव कुरु मांहेली चोरासी हजार नदीये पूराती थकी, भद्रशाल वन मांहे आवती थकी, मेरु पर्वत पासे बे योजन अण पोहोती थकी, तिहांथी पश्चिमदिसि साहमी वली थकी, नीचे विद्युत्प्रभ नामा गजदंता पर्वतने भेदीने मेरुपर्वतने पश्चिमदिसे, पश्चिम महाविदेह क्षेत्रने बे भागे वेहेंचती थकी, एकेकी चक्रवर्त्तिनी विजय थकी अठावीश अठावीश हजार नदीये पूराती पूराती थकी केमके ए नदीने दक्षण तटे आठ विजयछे तिहां एकेकी विजये गंगा अने सिंधु ए बे बे नदी चौद चौद हजारने परिवारेछे तेवारे अठावीश हजारनुं परिवारथयुं तथा उत्तरतटे पण एजरीते एकेकी विजये अठावीश अठावीश हजार नदीने परिवारे एरीते शोल वीजयनी बत्रीश नदी ते प्रत्येकने शौद हजारनो परिवार गणता ४४८००० नदी थइ तेनी साथे ८४००० नदी देवकुरुनी मेलवतां ५३२००० नदी सहीत पूराती थकी, जयंतनामा पश्चिमदिसि संबंधी जंबूद्वीपनां द्वारने नीचे जगतीने भेदीने लवण समुद्र मांहे भलेछे ए नदी द्रहमांथी नीकलतां मूलप्रवाहे पच्चाश योजन पोहोल पणे तथा एक योजन उंड पणे छे, पछी मात्राये मात्राये अनुक्रमे योजने योजने एकेक बाजुये चालीश चालीश धनुष एरीते बे पासे एंसी धनुषनी वृद्धि वधती वधती मुख मूले समुद्र प्रवेशे पांचशे योजन पोहोल पणे अने दश योजन उंड पणे थइछे. बे पासे पद्मवरवेदिका अने वनखंडे करी सहीत छे.

निषध पर्वत उपर नव कूटछे तेनां नाम कहेछेः—एक सिद्धायतन कूट, वीजो निषध कूट, त्रीजो हरिवर्ष कूट, चोथो पूर्वविदेह कूट, पांचमो हरिसलिला कूट, छठो धृतिकूट, सातमो सीतोदा कूट. आठमो अपरविदेह कूट, नवमो रुचक कूट. जेरीते चूल्लहिमवंतना कूटनुं उंचपणु, पोहोलपणु, परिधिपणु, राजधानी सहीत पूर्वे वर्णव्युं तेरीते इहां जाणवुं. निषध पर्वतने विषे घणा कूट निषधने संस्थाने छे, निषधने अत्यंत सहन करे, पूठे स्कंधे

ार सहे ते निषध वृषज पर्यायांतरे वृषज बलदने संस्थाने संस्थित छे तथा इहां निषध ामे देवता यावत् पल्योपमने आउखे वशेछे, तेथी एनुं निषध पर्वत एवुं शाश्वतुं नामछे.

इहां नदी द्रह अने कुंम आदिकनो कांइक विशेष कहे छे.

जरत क्षेत्रनेविषे गंगा अने सिंधूनदी छे; तथा ऐरवत क्षेत्रनेविषे रक्ता अने रक्तावती ादी छे. ए बाहेर छेमे रहेलीउ जे चार नदीउ छे, ते बाहेरनां जे पद्मद्रह तथा पुंम ीकनामे द्रहछे, तेनां पूर्व पश्चिमनां द्वारनो जे विस्तारछे, ते प्रमाणे सवा छ योजन होल पणे हिमवंत तथा शिखरी पर्वतना शिखरथी नदी वहे छे. एटले उतरे छे.

पूर्वोक्त जे चार नदीछे, ते द्रहना बारणाथी पांचसें योजन सुधी पर्वतना शिखर उपर बारणां सन्मुख पूर्व पश्चिमदिशिए जइने पछी पोतपोताना वर्त्तन कूटथी बाहेर ना जरत अने ऐरवत क्षेत्रने सन्मुख वले. ते आवीरीते जे गंगानदी द्रहना बारणा ाी पांचसे योजन सुधी पर्वत उपरे बारणासामी जाय त्यां गंगावर्त्तन ए नामे पर्वतनुं जे कूट ते थकी बाहेरनुं जे जरत क्षेत्र छे तेने सन्मुख वले. एरीते सिंधूनदी पण सिंधू आ वर्त्तन कूटथी जरतदिशि वले, तथा रक्तानदी पांचसे योजन बारणा सन्मुख जइने पछी ्क्तावर्त्तन कूटथी ऐरवतदिशिये वले. एम रक्तवती नदी रक्तवत्यावर्त्तन कूटथी ऐरवत दिशि वले, तो ए नदी जरत तथा ऐरवत सामी वले, ते वारे पर्वतना मध्य जागथी बाहेर आवतां पर्वत उपर केटला योजन चाले? ते कहेछेः—सवाछ योजन नदीनुं मुख छे ते, पर्वतनो जे विस्तार एक सहस्र बावन योजन,अने बार कला—तेमांहेथी काढीए, तेवारे एक सहस्र छेतालीश योजन उपर सवा सात कला रहे. तेनुं अर्द्ध पांचसे त्रेवीश योजन अने शाढी त्रण कला जाजेरी लाजे त्यांहांलगी पर्वतना शिखर उपर नदीवहे.

शिखरना छेमाथी मगरमत्सना मुखने आकारे, तथा वज्ररत्नमय एवी जे जीजी एनो जीजी सरखो आकारछे, जीजी एटले परनाल ते मध्ये थइने वज्रमयछे तलुं जे हने विषे, एहवो जे नदीना पोतपोताने नामे निपात कुंम, तेने विषे मोतीनी तूटेली सेर तेने सदृश प्रवाहे अवछिन्न धाराएं करी पमे छे.एटले गंगानदी गंगानिपात कुंममां पमेछे, अने सिंधूनदी सिंधूनिपात कुंममां पमेछे. एम नदिने नामे कुंड जाणवा.

द्रहनां बारणानो विस्तार सवाछ योजन छे; तेम नदीप्रवाहमांहे जीजीनो विस्ता पण सवा छ योजन छे. तेमाटे सरखो विस्तार छे. अने द्रहनां बारणानो जे पहोल पणे विस्तार ते विस्तारनां पचाशमे जागे जीजी जामी छे. अने ते जाड पणाथी चोगु णी सर्व जीजीउ लांबी छे. एम सर्व द्रहोनी जीजीनुं प्रमाण जाणवुं, एटले बाहेरनां बे पर्वतने विषे सवा छ योजन जीजी पहोली छे, अने मध्यना बे पर्वतनी मांहेली दि

शिनी जीनी पचीस योजन पहोली छे. अने बाहेरनी दिशिनी जीनी साडाबार योजन प्रमाणे छे. तथा महाविदेह क्षेत्रमां मांहेली जीनी पचास योजन प्रमाणे छे. अने बाहेरनी जे जीनीछे ते पचीश योजन प्रमाण पोहोली छे. तथा ए सर्व जीनीउंनुं जारूपणुछे ते पोतपोताना विस्तारने पचाशमे नागे छे. अने जारूपणाथी चोगणु लांबपणुंछे.

हवे ते कुंम वच्चे जे द्वीपछे, तेनुं प्रमाण कहेछे. आठ योजन पोहोलो पाणीमांछे. अने ते पाणी उपर बे कोस उंचो, अने वेदिकाए सहित, एवो नदीनी देवीने वसवानो द्वीपछे; तेमांहे द्रहनी जे श्री, लक्ष्मी प्रमुख देवी तेहना नवन सरखां नवन ते द्वीपने विषे छे. ते कुंड साठ योजन पहोला छे. अने सवा छ योजन पहोलां वेदिकानां त्रण बारणाछे तथा दशयोजन उंचाछे. ए प्रकारे बीजापण जे कुंम छे तेहनुं जे विशेष छे ते कहेछे.

कुंमनुं पहोलपणुं अने द्वीपनुं पोहोपणुं तथा वेदिकानुं पहोलपणुं ए त्रण विस्तार ते महाविदेह क्षेत्रमांहे बत्रीश विजयनी बत्रीश नदीछे ते नदीना जे चोशठ कुंमछे, तेनुं तथा तेमांहे जे द्वीपछे तेनुं तथा तेनी वेदिका, तेहनां बारणानो विस्तार, ते नरत अने ऐरवतना कुंम सरखोछे. एटले विदेहना विजयमांहे जे चोसठ कुंडछे, ते साठ योजन पहोलाछे. तेमध्ये आठ योजन द्वीपछे. तिहां वेदिकानां बारणानो विस्तार सवाछ योजन जाणवो. अने हिमवंत क्षेत्रनी बे नदी, हिरण्यवंत क्षेत्रनी बे नदी, वली बत्रीश विजयनी बार अंतर नदी ए सोल नदीमां जे सोल कुंडछे, तेनो तथा तेहनां द्वीपनो तथा तेहनां वेदिकानां द्वारनो विस्तार पहेलानाथी बमणो जाणवो. एटले ए सोल नदीना कुंम एकसो वीस योजन पोहोला छे अने ए कुंमनां द्वीप सोल योजन पहोला छे. तथा ए सोल कुंमना वेदिकाना बारणानो विस्तार साडाबार योजन छे. वली हरिवर्ष क्षेत्रनी बे नदी, अने रम्यक्नी बे नदी–ए चार नदीना चार कुंम, तेहना त्रण विस्तार आश्रीने चोगुणो जाणवो. एटले बशेने चालीश योजन एनां कुंमनो विस्तारछे. अने बत्रीश योजन द्वीपनो विस्तारछे. तथा पचीश योजन वेदिकानां द्वारनो विस्तारछे. तथा महाविदेहनी बे नदीना बे कुंड, तेहना त्रण विस्तार आश्रीने आठगुणो जाणवो. ते कहेछे. चारसे एंसी योजन कुंमनो विस्तार छे. अने द्वीपनो विस्तार चोसठ योजननो छे. तथा विदेहनां कुंमनी वेदिकानांबारणा पचाश योजन पहोलांछे, एम सर्व एकठा गणीए तो आ जंबूद्वीपमांहे नेवुं कुंम थाय.

बाहेरनी जे चार नदीछे, तेमनी गति कहेछे. चार नदी जे गंगा, सिंधू, रक्ता अने रक्तवती ते पोतपोताना निपात कुंमथी बाहेरना नरत अने ऐरवतने सन्मुख बारणे नीकले. ते केम? तोके–गंगा अने सिंधु ए बे दक्षिणने बारणे नरत सामी नीकलेछे. अने रक्ता तथा रक्तवती ए बे उत्तरने बारणे उत्तरना ऐरवत दिशि नीकलेछे, पण ते जेवारे वैताढ्य लगी आवे, तेवारे ते प्रत्येक नदीने सात सहस्र नदीउं बीजी मले छे तेना परि

वारे परिवरीथकी वैताढ्यनी वच्चे थइने नीकलेछे. ते वैताढ्य पर्वत ञेदीने नीकल्या पछी बाहेरना ञरत तथा ऐरवत खेत्रना अर्द्धञागना वचमांथी पूर्वे अने पश्चिमदिशि समुद्र सन्मुख वले एटले ञरत क्षेत्र मांहे गंगानदी पूर्वदिशए जाय, अने सिंधुनदी पश्चिमदिशिए जाय तथा ऐरवत मांहे रक्तानदी पूर्वदिशिए जाय अने रक्तवती नदी पश्चिम दिशिए जाय, पण ते चार नदीउं वैताढ्य पर्वतने ञेदीने नीकल्या पछी वली बीजी सात सहस्त्र नदीउंए करी सहित थाय सर्व मली चौदसहस्त्र नदीने परिवारे परवरी थकी, जेम पूर्वे वैताढ्यने ञेदी नीकली छे तेनीपरे जगतीने पण ञेदीने समुद्रमांहे जाय छे.

नदीनो विस्तार तथा उंडपणुं कहेछे. सर्व नदीउं ने पहेला नीकलतां कुंडना द्वार सरखो विस्तार होय अने अंतने विषे प्रथमनां विस्तारथी दशगुणो विस्तारपणे होय ते आवीरीते के—ञरत तथा ऐरवतनी चार नदीउंछे, तेनो प्रथम सवा छ योजन विस्तार छे. अने छेडे समुद्रमांहे ञले तेवारे साडी बासठ योजन थाय. तथा बत्रीश विजयनी चोसठ नदीउं छे. तेहनो पण एज आदिअंतनो विस्तार छे, तेहना जे चोसठ कुंरू छे, ते बाहेरना कुंड सरखा छे, ते माटे सरखो विस्तार कह्यो. वली हेमवंत तथा हिरण्यवंतनी चार नदी, अने विजयनी बार अंतरनदी, एवं सोल नदीउंनो आदिविस्तार साडाबार योजन छे. तो छेरू एकसो पचीश योजननो विस्तार जाणवो. वली हरिवर्ष तथा रम्यक्क्षेत्रमांहे जे चार नदीउं छे तेहनो विस्तार पचीश योजन धुरेछे. तो अंतनेविषे बसें पचास योजन विस्तार थाय छे. अने विदेह क्षेत्रे जे सीता अने सीतोदा बे नदी छे तेहनो प्रथम विस्तार पच्चाश योजननो छे, तो छेरू पांचसें योजन विस्तारछे. तथा ए सर्वजे मोटी नदी छे, ते विस्तारथी पचासमे ञागे उंडी छे, जेम गंगानदी आदि विस्तार सवा छ योजन छे, तेने पच्चाशे ञाग देतां योजननो आठमोञाग आवे, तो प्रथम नीकलतां योजनने आठमे ञागे उंडी छे, अने छेरू साडी बासठ योजन विस्तार छे, तेने पचाशे ञाग देतां सवा योजन आवे, तेमाटे छेडे सवा योजन उंडी जाणवी, एम समस्त नदीनो विस्तार जाणवो.

हवे पांच क्षेत्रनी नदीनी गति कहेछे. पांच क्षेत्रनी जे महानदीउंछे ते पोत पोताना बारणानी दिशिये द्रहनो जे विस्तारछे, ते काढतां जे पर्वतना विस्तारनुं अर्द्ध थाय तेटला योजन नदी पर्वतना शिखर उपर वहे. ते केम ? तो के—हेमवंत अने शिखरीनो विस्तार १०५२ योजन अने बार कला छे. तेमांहेथी द्रहनो विस्तार पांचसे योजन काढीए तेवारे ५५२ योजन अने बार कला रहे. तेनुं अर्द्ध २७६ योजन अने छ कला थाय. तो पोताना द्रहद्वारनां मुखथी पर्वतनां शिखर उपर २७६ योजन अने छ कला वहेछे. अने महाहिमवंत तथा रुक्मी पर्वतने विषे चार नदी १६०५ योजन अने पांच कला पर्वतना शिखर उपर चाले, तथा निषध अने नीलवंत संबंधी

चार नदीउं ७४२१ योजन अने एक कला पर्वतनां शिखर उपर चाले ए रीते ऽहनो विस्तार पर्वतनां विस्तार मांहेथी काढी अर्द्ध करीए तेवारे एवुं पूर्वोक्त मान लाभे तेवार पछी पर्वतना विस्तारने छेडे जइने पोतानी जीभी उपर थइने पोतपोताना निपात कुंडने विषे ते नदीउं पडेछे, तथा पोतपोतानी जीभीना पहोलपणाने पचीशमे भागे वृतवैताढ्य तथा मेरु तेने मूकीने जे नदीनुं मुख दक्षण सामुं छे, ते नदी पूर्व समुद्रदिशि तरफ वले अने जे नदीनुं मुख उत्तर सामुं छे, ते पश्चिम समुद्रदिशि वले; एटले हेमवंत तथा हिरण्यवंतनी बे नदी वृतवैताढ्यने बे कोस वेगलो मूकी पूर्व तथा पश्चिमदिशिए वले तथा हरिवर्ष अने रम्यकूनी बे नदी चार कोश वृत वैताढ्यने वेगलो मूकीने पूर्व पश्चिम दिशिए वले. तथा महा विदेहनी बे नदी आठ कोस मेरु पर्वतने वेगलो मूकी पूर्व पश्चिम दिशिए वले.

हेमवंत क्षेत्रमांहे रोहितांशा तथा रोहिता एवे नामे बे नदीछे, ते प्रत्येकनो गंगानदी करतां बमणो परिवारछे. एटले अठावीश हजार नदीउंना परिवारे परिवरि छे तेमज हिरण्यवंत क्षेत्रमांहे सुवर्णकुला अने रुप्पकुला एवे नामे बे नदी छे, ते पण रोहितांसा नदीनी परे अठावीश हजार नदीउंए परिवरीछे, तथा हरिवर्ष क्षेत्रनेविषे हरिकंता अने हरिसलिला नामे बे नदीछे ते गंगानदीथी चोगणा परिवार वाली छे. एटले छप्पन हजार नदीउंए परिवरीछे. तथा ए पूर्वोक्त नदी सदृश रम्यक् क्षेत्रने विषे नरकंता अने नारीकंता ए नामे बे नदीउंछे ते पण एटलीज छप्पन हजार नदीए परिवरी छे. तथा सीतोदा अने सीता ए बे नदी महाविदेह क्षेत्रमां छे ते एकेकी नदीमांहे पांच लाख बत्रीस हजारने आमत्रीश नदीउं संबंधी पाणी पडे छे. कुरुक्षेत्रनेविषे चोराशी हजार नदीउंछे. वली छ अंतर नदीछे तथा एकेकी विजये गंगा, अने सिंधु ए बे वे महानदीउं छे, तो सोल विजयमांहे बत्रीश महोटी नदीउं थइ ते प्रत्येक नदीनो परिवार चौद हजारनो गणतां ४३७००० हजार थाय, तेनी साथे पाछली कुरूक्षेत्रादिकनी ७४०३७ नदीउं मेलवीए तेवारे ५३२०३७ नदीउंनुं पांणी सीतोदा नदीमांहे भले छे. तथा सीता मांहे पण एटली नदीउंनुं पाणी भले छे. ते माटे बमणी करीए तेवारे १०६४०७६ एटली नदीउं महा विदेह क्षेत्रमांहे जाणवी.

हवे जंबूद्वीपनी सर्व नदीउंनी संख्या कहेछे बत्रीश विजयनी चोसठ नदी, तथा सीतोदा अने सीता ए वे नदी तथा भरतादिकनी गंगा प्रमुख बार नदी ए सर्व एकठी करतां अठोतेर महोटी नदीउं जाणवी. अने बत्रीश विजयनी बार अंत्तर नदीउं ९ नेवुं मूलगी नदी छे. बाकी बीजी परिवारनी नदीउं चौद लाखने छप्पन हजार छे

हवे महाविदेह क्षेत्रनी वक्तव्यता कहे छे.

नीलवंत नामा वर्षधर पर्वतने दक्षिणदिसे तथा निषध नामा वर्षधर पर्वतने उत्तर दिसे महाविदेह नामा क्षेत्र छे ते पल्यंकने संस्थाने संस्थित छे, ३३६८४ योजन उपर चार भाग एटलुं पोहोल पणे छे एनी बाह पूर्व पश्चिमे ३३७६७ योजन उपर सात भाग लांब पणेछे तेनी जीवा पणछ महाविदेहना मध्य भागने विषे पूर्व पश्चिमदिसे लांबी एक लाख योजन छे एनुं धनुपृष्ठ १५८११३ योजन उपर शोल भाग कांइक जाजेरा एटलुं परिधि पणे एकेकी दिसिये छे, एटले जंबूद्वीपनो ३१६२२७ योजन प्रमुख जे पूर्वे परिधि कह्योछे, तेनुं अर्द्ध करीये तेवारे महाविदेहनी एकदिसितुं धनुपृष्ठ थाय अने बे दिसिनां धनुपृष्ठ एकठा करीये तेवारे जंबूद्वीपनी पूर्ण परिधि थाय एम जाणवुं.

महाविदेह क्षेत्र चार प्रकारेछे एक मेरु थकी पूर्वे पूर्व महाविदेह, बीजो मेरु थकी पश्चिमे अपरविदेह, त्रीजो मेरु थकी दक्षिणे देवकुरु क्षेत्र चोथो मेरुथकी उत्तरे उत्तर कुरु क्षेत्र छे. भरत ऐरवत, हेमवंत, हिरण्यवंत, हरिवर्ष, अने रम्यक् ए छए क्षेत्र थकी लांब पणे, पहोल पणे, परिधि पणे करीने घणु विस्तिरण छे एटले घणु महंत महोटुं छे, अथवा बत्रीश विजयने विषे पांचशे धनुषनी कायानां महोटा शरीर वाला मनुष्यछे, तथा देवकुरु अने उत्तरकुरुने विषे त्रणगाउनां शरीर वाला मनुष्य वसे छे एरीते शरीर आश्रयी मनुष्य पण महोटा छे, तथा महाविदेह नामे देवता महाऋद्धिवंत यावत् एक पल्योपमने आउखे इहां वसे छे, तेथी एनुं महाविदेह एवुं शाश्वतुं नाम छे.

हवे ए महाविदेहमां चार गजदंतगिरिछे तेनी वक्तव्यता कहे छेः—

१ नीलवंत पर्वतने दक्षिणदिसिये अने मेरुने उत्तर पश्चिमदिसि वच्चे वायुकूणे तथा गंधिलावती विजयने पूर्वदिसे, उत्तरकुरुने पश्चिम दिसे, इहां गंधमादन नामे गजदंत पर्वत पीले वर्णे छे ३०२०९ योजन उपर छ भाग लांबपणे छे तथा नीलवंत पर्वतनी पासे चारसो योजन उंच पणे छे, शो योजन उंडू पणे धरतीमां छे, पांचशे योजन पोहोल पणे छे. पछी मात्राये मात्राये अनुक्रमे उंच पणे तथा उंड पणे वधतो वधतो थको अने पोहोल पणानी हाणीये घटतो घटतो थको मेरु पर्वतनी समीपे पांचशे योजन उंच पणे तथा सवासो योजन उंडू पणे धरतीमां अने अंगुलनो असंख्यातमो भाग पोहोल पणे हाथीनां दांतने संस्थाने संस्थित छे, सर्व रत्नमय छे, बे पासे बे पद्मवरवेदिका अने बे वनखंडे करी सहीत छे, यावत् उपरे घणा देवता बेशे छे, इत्यादि सर्व पूर्वपरे कहेवुं.

ए गंध मादन पर्वत उपर सात कूटछे तेना नाम कहे छेः—एक मेरु दिसिये सिद्धायतन कूट, तेवार पछी अनुक्रमे नीलवंत सन्मुख बीजो गंधमादनकूट, त्रीजो गंधिलावती कूट, चोथो उत्तरकुरु कूट, पांचमो स्फाटिक कूट, छठो लोहिताक्षकूट, सातमो अ

नंद कूट, तिहां सिद्धायतन कूटने विषे सिद्धनुं देहेरुं छे तथा स्फाटिक कूट अने लोहीताक्ष कूट ए बे कूटने विषे भोगंकरा अने भोगवती ए बे दिक्कुमारिका देवीनो निवास छे शेष चार कूटने विषे कूटने नामे देवता रहे छे. ए सर्वे कूट पांचशे योजन उंच पणे छे.

ए पर्वतनो गंध ते कोष्ट सुगंधना पुडाने पीसतां, चूर्ण करतां, उकेरतां थकां, जूजूआ विखेरतां थकां, भोगवतां, गंधलेता थकां, जेम उत्तम उदार मनोहर गंध नीकले, तेथी पण इष्टतर अति उत्तम गंधछे ते गंधे करी मद छे, तथा इहां गंधमादन नामे देवता महाऋद्धिवंत वसे छे, तेथी एनुं गंधमादन एवुं शाश्वतुं नाम छे.

२ मेरु पर्वतने इशानकूणे, नीलवंत पर्वतने दक्षण दिसे, उत्तरकुरुने पूर्वदिसे, कच्छ नामा विजयने पश्चिमदिसे, माल्यवंत नामे गजदंत पर्वत वैडूर्य रत्नमय नीले वर्णे छे, ते गंधमादन गजदंता प्रमाणे लांबुं पोहोलुं छे, शेष अधिकार तेमज जाणवुं.

माल्यवंत गजदंतगिरिना नवकूटनां नाम कहेछे. एक मेरुदिसिये सिद्धायतनकूट,तेवार पछी अनुक्रमे नीलवंत पर्वतने सन्मुख बीजो माल्यवंतकूट, त्रीजो उत्तर कुरुकूट, चोथो कच्छकूट, पांचमो सागरकूट, छठो रजतकूट, सातमो सीताकूट, आठमो पूरणभद्र कूट, नवमो हरिस्सह कूट, ए सर्वे कूट पांचशे योजन उंचपणे छे तिहां सागरकूट अने रजत कूट ए बे कूटने विषे सुभोगा अने भोगमालिनी नामे देवी वसेछे शेष कूटने नामे तिहां वसनारा देवोना पण तेहीज नाम जाणवा. एमां हरिस्सह कूट उपर हरिस्सह राजधानीनो हरिस्सह नामे देव वशे छे, ए कूट हजार योजन पोहोलुं अने हजार योजन उंचुं यमक पर्वतने प्रमाणे छे अने माल्यवंत गजदंत पांचशे योजन पोहोलुं छे माटे बे पासे अढीशे अढीशे योजन पर्वतथी बाहेर अधर रह्युं छे, ए हरिस्सह देवनी राजधानी अन्य जंबूद्वीपे चोरासी हजार योजननी लांब पणे पोहोल पणे छे.

ए माल्यवंत गजदंताने विषे घणा सरिकानामे वनस्पतिना गुल्म, नवमालतीना गुल्म, यावत् मगदंतिका वनस्पतिनां गुल्म छे ते गुल्म सर्वदा पंचवर्णना फूले फूले छे तथा भूमिने विषे वायरे कंपित एवा अग्रशालाने विषे फूलनां पूंज तेने उपचारे करी सहीत करे छे तथा इहां माल्यवंत देव एक पल्यायुये वशे छे, माटे एनुं माल्यवंत नाम छे.

३ निषध पर्वतने उत्तर दिसे, मेरु पर्वतने दक्षण पूर्वने वच्चें अग्निकूणे, मंगलावती विजयने पश्चिम दिसे अने देवकुरुने पूर्वदिसे, सोमनस नामे गजदंत पर्वत स्वेतवर्णेछे ते लांबो पोहोलो माल्यवंतनी पेरे जाणवुं ए रूप्पमय छे इहां घणा देवता देवांगना कुचेष्टा रहित सौम्य पणे सुमन एटले शोकादि रहीत विचरे छे, तथा सोमनस नामे महर्द्धिक देव इहां वशे छे तेथी एनुं सोमनस नाम छे. एनां उपर सात कूट छे तेनां नाम कहेछेः— एक मेरुनी दिसिथी सिद्धायतन कूट, तेवार पछी अनुक्रमें निषध पर्वतनी सन्मुख

बीजो सोमनस कूट, त्रीजो मंगवलाती कूट, चोथो देवकुरु कूट, पांचमो विमल कूट, छठो कांचन कूट, सातमो वशिष्ट कूट, ए सर्वे कूट पांचशे योजन उंच पणे पहोल पणे छे तिहां विमल अने कांचन ए बे कूटने विषे सुवत्सा अने वत्समित्रा ए बे दिक्कुमारिका देविनो निवास छे तथा शेष कूटने विषे कूटने नामे देवना निवास जाणवा.

४ तथा निषध पर्वतने उत्तर दिसे अने मेरुने दक्षण पश्चिम वच्चें नैरुतकूणे, पद्मविजयने पूर्वदिसे विद्युत्प्रन्न नामे गजदंत पर्वत सर्व तपनीय राता सुवर्ण मय छे यावत् उपर देवता वसे छे इत्यादि सर्व पूर्व परे कहेवुं. एनां नव कूटनां नाम कहे छेः—प्रथम मेरु दिसिये सिद्धायतन, तेवार पछी अनुक्रमे निषध पर्वतनी सन्मुख बीजो विद्युत्प्रन्न, त्रीजो देव कुरु, चोथो पद्म, पांचमो कनक, छठो सौवस्तिक, सातमो सीतोदा, आठमो शतजवल, नवमो हरि कूट. तेमां हरि कूट ते पूर्वोक्त हरिस्सह कूटनी पेरे हजार योजन पोहोलो, उंचोछे, अने शेष आठ कूट पांचशे योजन उंचा जाणवा तथा कनक कूट अने सौवस्तिक ए बे कूटने विषे वारिषेणा अने बलाहिका नामांतरे पुष्पमाला अने अनंदिता दिग्कुमारिका देवी वशेछे, शेष कूटने विषे कूटने नामे देवता जाणवा. तथा ए पर्वत वीजलीनी पेरे रक्तसुवर्णमयपणा माटे चोफेर अवन्नासे छे, उद्योत करे छे, कांति करे छे तथा इहां विद्युत्प्रन्न नामे देवता एक पल्योपमायुये वशे छे तेथी एनुं विद्युत्प्रन्न एवुं शाश्वतुं नाम छे. ए चार गजदंत उपर प्रत्येके दिक्मारि देवीनां बे बे कूट कह्या ते अधलोकने विषे वसनारी दिक्मारी जाणवी एनां रेवानां न्नवन गजदंत गिरिने नीचेछे.

कुरुक्षेत्रनी जे सीतोदा तथा सीतानदी तेहनुं पऋवा नीकलवानुं स्थानक जे जीन्नी तिहांथी २६४७५ योजन बेपासे मेरुपर्वत साहामां ए चार गजदंत गिरीछे, ए निषध तथा नीलवंत पर्वतमांहेथी नीकल्याछे, हाथीनां दांतने आकारे देखायछे, माटे एने गजदंत गिरी कहिए. अग्नि कूणे सोमनस नामे गजदंतगिरि छे, तिहांथी धुरमांडीने प्रदक्षणावर्त्त गणतां चार दिशीनेविषे अनुक्रमे चार गजदंत गिरीछे.

हवे ए महाविदेहने विषे उत्तरकुरु नामे युगलीयानुं क्षेत्र वखाणे छे.

मेरु पर्वतने उत्तरदिसे अने नीलवंतनी दक्षणदिसे तथा गंधमादन पर्वतनी पूर्वदिसे अने माल्यवंतनी पश्चिमदिसे इहां उत्तर कुरुनामे क्षेत्र छे ते पूर्वपश्चिमे लांबो अने उत्तर दक्षणे पोहोलो अर्द्ध चंद्रमाने संस्थाने संस्थित छे, ११८४२ योजन उपर बे न्नाग एटलो पोहोल पणे छे, एनी जीवा पण छ उत्तरदिसे पूर्वपश्चिमे लांबी, बे दिसाये गजदंता पर्वतने फरसी छे, ते ५३००० योजन लांब पणे छे, एनुं धनुपृष्ट ६०४१८ योजन उपर बार न्नाग परिधि पणे छे. ते आवीरीतेः—३०२०९ योजन उपर छ कला एटलुं

एकेको गजदंत गिरि लांबो छे, तेवा गजदंत गिरिनी वच्चमां ए क्षेत्र अर्द्ध चंद्राकारे छे, माटे वे गजदंतना लांब पणानां योजन जेवारे एकठा करिये तेवारे ६०४१८ योजन उ पर वार कला एटलुं कुरुक्षेत्रनो धनुपृष्ट थाय एटले धनुषनो बाहेरलो पुंठनो भाग अ र्द्धचंद्राकारनुं थाय. ए क्षेत्रमां युगलिया मनुष वसे छे, तिहां सर्वदा पहेला आरा सरखो भाव वर्त्तेछे, तथा ए उत्तरकुरु क्षेत्रमां महाऋद्धिवंत उत्तरकुरुनामे देवता एक पल्यायुये वशेछे, माटे एनुं उत्तरकुरु एवुं शाश्वतुं नाम छे.

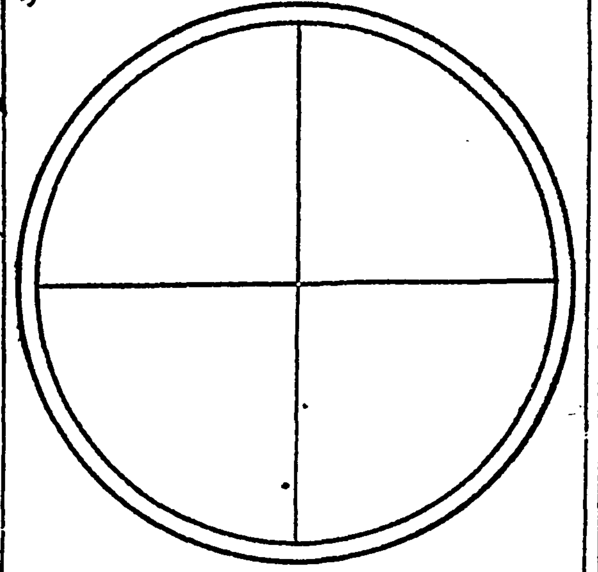
उत्तर कुरुने विषे नीलवंत पर्वतना दक्षण दिसिनां चरमांत छेहेडाथी ८३४ योजन उपर सातीआ चार भाग एटली अबाधाये सीता महानदीने एक पूर्वतटे अने बीजो पश्चिम तटे ए बे तटे बे यमक नामे पर्वत छे, ते एक हजार योजन उंच पणे तथा अ ढीशे योजन उंडा पणे धरतीमां तथा मूलमां हजार योजन लांब पणे पोहोल पणे छे, व च्चमां ७५० योजन लांब पणे पोहोल पणे छे, अने उपर पांचशे योजन लांब पणे पोहोल पणे छे, तथा मूलमां ३१६२ योजन कांइक अधिक परिधि पणे छे, मध्यमां २३७२ योजन कांइक जाजेरा परिधि पणे छे, तथा उपर १५८१ योजन कांइक जाजेरा परिधि पणे छे, ए रीते मूलमां विस्तिरण छे, वच्चमां सांकडा छे, अने उपर पातला छे, यमक एटले जोडले जण्या भाइ तेने संस्थाने संस्थित छे. एटले बेहु सरखे संस्था ने छे, सर्व कनक सुवर्णमय छे, प्रत्येके पद्मवरवेदिका अने वनखंडे करी वींट्या छे, ते वेदिका वन खंडनुं वर्णन पूर्वली परे जाणवुं तेना उपर बे प्रासादावतंसक छे, ते साडा बाशठ योजन उंचा तथा सवाएकत्रीश योजन लांबा अने पोहोला छे, तेनो वर्णन विजय देवतानां प्रासादनी परे जाणवो ए पर्वते न्हानी वावी तथा महोटी वावीने विषे यावत् बिल्ल पंक्तिने विषे घणा कमल यमक पर्वत सरिखे वर्णे छे, तथा इहां बे यमक नामे देवता महा ऋद्धिवंत यावत् देव संबंधि भोग भोगवता थका विचरे छे, माटे एनुं यमक पर्वत एवुं शाश्वतुं नाम छे, ए बे देवोनी अनेरे जंबूद्वीपे जूदी जूदी यमका नामे राजधानीछे, तेनो वर्णन सर्व विजय देवनी परे जाणवो.

हवे उत्तर कुरुक्षेत्रनां द्रह कहेछे.

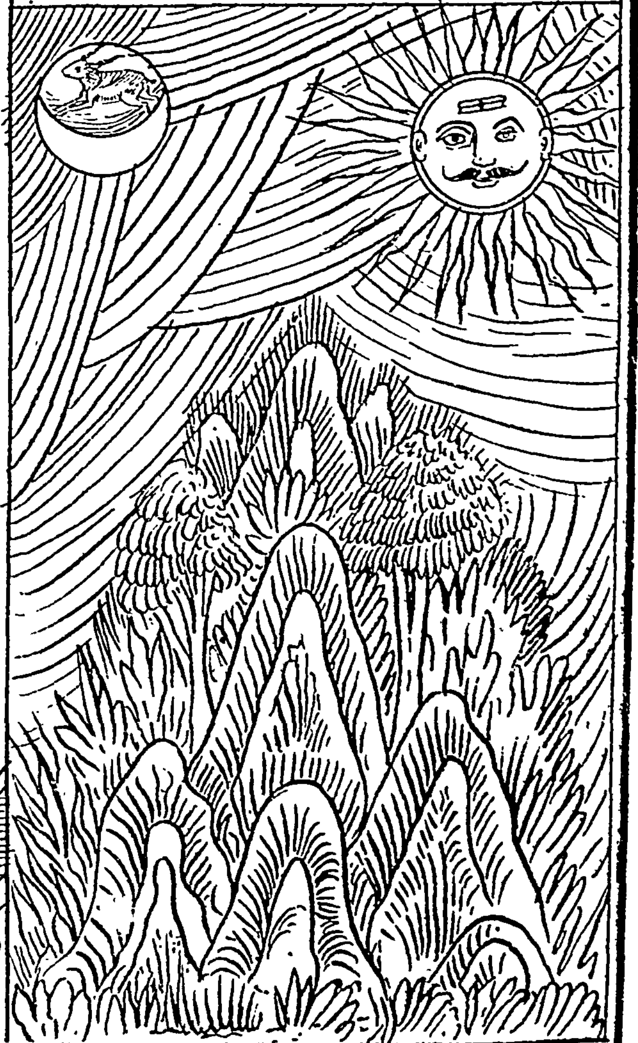
नीलवंत पर्वत थकी ८३४ योजन अने उपर सातीया चार भाग कांइक जाजेरा ए टली अबाधाये सीता महानदीनी वच्चमां प्रथम नीलवंतनामे द्रहछे, ते जेम पद्मद्रह नो वर्णन कह्यो तेमज एनो वर्णन पण जाणवो ए वे वाजुये पद्मवरवेदिका अने वे व नखंडे सहीतछे, तिहां नीलवंत नामे नागकुमार देव वसेछे.

ते नीलवंत द्रहनी पूर्व अने पश्चिमदिसिये वेहु पासे दश दश योजनने आंतरे म ली वीश कांचन पर्वत छे ते प्रत्येक एकशो योजन उंच पणे अने मूलमां एकशो योजन

महाविदेह क्षेत्रनी स्थापना



निषध पर्वतना कूटपासे चंद्र सूर्यनो उदय थाय छे तेनी स्थापना- ६१



९२

बत्रीश विजयमांहेला वैताढ्य पर्वत स्थापना.

९३

नीलवंत पर्वत

शीत विजयमांहेली एक विजयनी स्थापना.

रक्तवतीनदी

ऋषभ कूट

रक्तानदी

सिंधुनदी

गंगानदी

देवकुरु

शीत विजयमांहेली एक विजयनी स्थापना.

सिंधुनदी

ऋषभ कूट

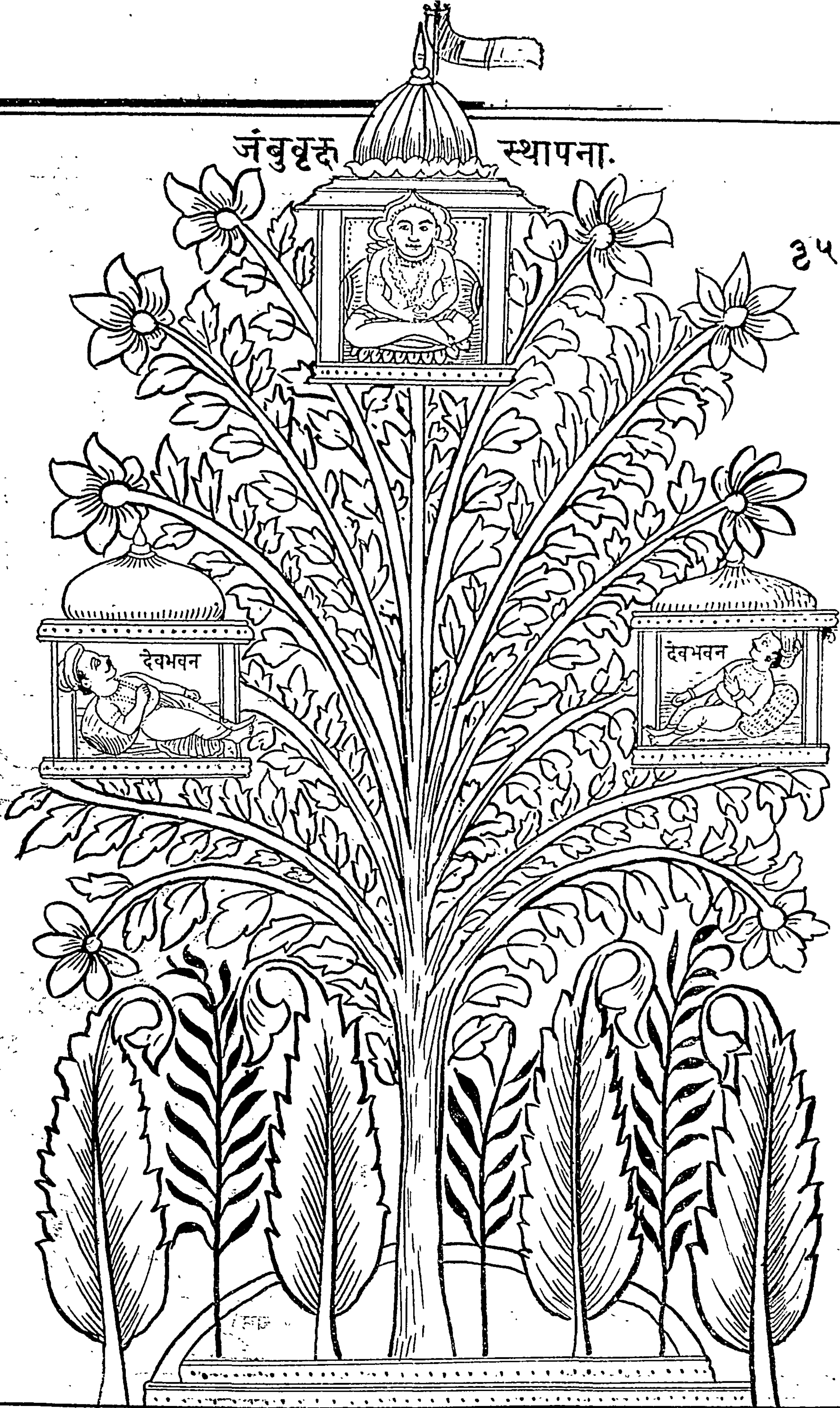
गंगानदी

९४

उत्तरकुरुस्थापना.

जंबुवृक्ष

युगलिक मनुष्य


जंबुवृक्ष स्थापना.
३५
देवभवन
देवभवन

अवाधाये प्रथम निषध नामे द्रहछे, तेमज तेथकी तेटली अवाधाये वीजो देव कुरु द्रह, त्रीजो सूरप्रन्नद्रह चोथो सुलसद्रह अने पांचमो विद्युत्प्रन्न ए पांचे द्रह देवकुरु क्षेत्रमांहे सीतोदा नदीनां जाणवा ए सर्वद्रह पद्मद्रह सरखा एक हजार योजन लांवा अने पांचशें योजन पोहोला अने दश योजन ऊंमा जाणवा तथा प्रत्येक द्रहना एक दक्षण अने वीजो उत्तर ए वे दिसिनेविषे वे वारणा जाणवा. अने ए द्रहना जे अधिष्टायक देव छे, ते सर्व पोताना द्रहने नामे जाणवा. ए द्रहथकी पूर्व अने पश्चिमदिशे दस योजन वेगलाइए एकेक द्रहना एकेक पासाने विषे दस दस कंचनगिरि छे. ते कंचनगिरि वैताढ्यनां कूट सवा छ योजन छे, तेथी सोलगुणा मोटाछे. एहवा कंचनगिरि जंबूद्वीपने विषे सर्वे वसे जाणवां ते केम? देवकुरु तथा उत्तरकुरुना दश द्रहछे, ते एकेक द्रहने वे पासे दश दश गुणतां वीश थाए ते वीशने दशवार गुणतां वसे पूरा थाय.

हवे कुलगिरि, यमकपर्वत, पांचद्रह अने मेरु एनां सात आंतरा कहेछे.

आठसे चोत्रीस योजन उपर एक कलाना सात न्नाग करीए एहवे एक न्नागे सहित अगीआर कला एटलुं कुलगिरि, जमकपर्वत, पांच द्रह तथा मेरुनो प्रत्येके अंतर जाणवुं ते केम? देवकुरुनुं विस्तार अगीआर सहस्र आठसे वेतालीश योजन अने वे कलाछे, ते मांहेथी यमकपर्वत अने पांच द्रह तेणे रुंधेला जे छ सहस्र योजन छे, ते काढिए ते वारे अठावनसे वेतालीस योजन अने वे कला वधे तेने सात न्नागे वेचतां आठसे चोत्रीश योजन आवे शेष चार उगरे तेने ओगणीस साथे गणीए तेवारे छहुत्तेर कला थाय तेनीसाथे मूलगी वे कला एकठी करता अठोत्तर कला थाय ते वली सात न्नागे वेचतां ओगणीसी अगीआर कला आवे. वली एक कला उगरे तेहना सात न्नाग करिए तेवारे एक न्नाग आवे एटलुं कुलगिरि, जमकपर्वत, पांच द्रह तथा मेरुनु अंतर जाणवुं.

तथा ए देवकुरुना पश्चिमार्द्धना मध्यन्नागे रूपानी पीठउपर शाल्मलीवृक्षछे, तेना उपर गुरुरू देवतानो निवासछे, तेनो वर्णन सर्व जंबूवृक्षनी पेरे कहेवो. पण एनां वार नाम न कहेवा तथा इहां देवकुरुनामे देव वशेछे, तेथी एनुं देवकुरु एवुं शाश्वतुं नाम छे.

हवे जंबूद्वीपना मध्यने विषे मेरुपर्वत छे, तेनुं स्वरूप कहेछेः—

मेरुपर्वत कनकमय वाटलुं गोलाकारेछे. नवाणु हजार योजन ऊंच पणे अने एक हजार योजन नीचे धरतीमां ऊंम पणे, सरवाले एक लाख योजन ऊंचो छे, तथा मूले धरतीमां कंदे १००९० योजन उपर अगीआरीआ दश न्नाग एटलो पोहोल पणेछे, अने धरती तले दश हजार योजन पोहोल पणेछे,पछी ऊंचा जातां मात्राये मात्राये घटतो गयो छे, एटले एक योजन ऊंचो जतां एक योजननो इग्यारमो न्नाग, इग्यार योजने एक योजन, शो

योजने नव योजन अने उपर अगीआरीउं एक भाग, हजार योजने नेवुं योजन अ ने अगीआरीआ दश भाग उपर एरीते पोहोल पणामां घटतो घटतो थको उपरे शि खरने तले एक हजार योजन पोहोल पणे थयो छे.

एनी परिधि मूलमां ३१९१० योजन उपर अगीआरीआ त्रण भाग तथा धरती तले समभूतला पाशे ३१६२३ योजन अने उपरे शिखरने तले ३१६२ योजन कांइक जाजे रा छे, ए पर्वत उंधो करेलो गोपुछने संस्थाने संस्थित छे, सर्व रत्नमय छे, एक पद्मवरवे दिका अने एक वनखंड तेणे करी चोफेर वींट्यो छे, एनां त्रण कांमछे, तिहां प्रथम धरतीमां हजार योजननो कांम ते माटी, पाषाण, वज्ररत्न तथा काकरा ए चार पदार्थ नो छे, तथा पृथ्वी थकी सोमनसनामा वन सुधी वीजो कांम त्रेशठ हजार योजन प्र माण छे, ते स्फाटिकरत्न, अंकरत्न रूप तथा कांचननो छे, तथा त्यांथी उपर छत्रीश हजार योजननो त्रीजो कांम ते रक्तवर्ण कनकनो छे, ए मेरुनां त्रण भाग कह्या.

ए मेरु पर्वतने विषे चार वन छे, तेनां नाम कहेछे, एक भद्रशालवन, वीजुं नंदनव न, त्रीजुं सोमनस वन, चोथुं पंमक वन. तिहां प्रथम संभूतलाने स्थाने भद्रशाल वन छे, तेना चारगजदंत गिरिये तथा सीता अने सीतोदा महानदीये करी आठ भागे वेहेंच्युं थकुं आठ खंम थया छे,ते भद्रशाल वन मेरु पर्वतने पूर्व पश्चिम दिसे बावीश बावीश हजार योजन लांब पणे छे, अने उत्तर दक्षणे अढीशे अढीशे योजन पोहोल पणे छे, देवकुरु ने उत्तर कुरु मांहे पेठुंछे, ते वन पद्मवर वेदिका अने वन खंडेकरी चोफेरे वींट्युंछे.

तथा मेरु पर्वतनी पूर्वादि चारे दिसे भद्रशाल वनमां पचाश पचाश योजन अवगा ही जाइये तिहां प्रत्येक दिसिये सिद्धायतन एटले श्री तीर्थंकर भगवाननुं देहेरुं छे, ते पचाश योजन लांब पणे, पचीश योजन पोहोल पणे अने छत्रीश योजन उंच पणे छे, ए वा चारेदिसे मली चार सिद्धायतन छे, तथा चार विदिसिने विषे पचाश योजन अवगा ही जाइये तिहां प्रत्येक विदिसिये चार चार नंदा पुष्करणी शाश्वती वाव्य छे, तिहां प्र थम इशान कूणनी चार वाव्यनां नाम कहेछे, एक पद्मा, बीजी पद्मप्रभा, त्रीजी कुमुदा, चो थी कुमुदप्रभा ते पुष्करणी पचाश योजन लांब पणे, पचीश योजन पोहोल पणे अने दश योजन उंम पणे छे, वेदिका वन खंडे सहीत छे, ते चार पुष्करणीनी वच्चें इशानेंद्र नो प्रासादावतंसक छे, ते पांचशे योजन उंच पणे अने अढीशे योजन पोहोल पणे छे.

तेमज अग्निकूंणे उत्पलगुल्मा, नलिना, उत्पला अने उत्पलोज्वला ए चार वाव्य पू र्वोक्त प्रमाण वाली तेनी वच्चे सौधर्मेंद्रनो परिवार सहीत प्रासादावतंसक जाणवो तेम ज नैरुतकूंणे भृंगा, भृंगनिभा, अंजना अने अंजनप्रभा ए चार वाव्य वच्चे पण सौ धर्मेंद्रनो परिवार सहीत प्रासादावतंसक जाणवो तथा वायूकूंणे श्रीकांता, श्रीचंदा,

श्रीमहिता अने श्रीनिलया ए चार पुष्करणी वच्चे इशानेंद्रनो प्रासादावतंसक जाणवो

तेमज ए ज्रद्रशाल वनमां पूर्वोक्त जे जिन ज्रवन अने प्रसाद कह्या तेना आठ आंतराने विषे आठ करिकूट हाथीने आकारे ठे, ते प्रत्येक कूट पांचशे योजन उंच पणे ठे, अने सवासो योजन धरतीमां ठे, ते आठे कूटने नामे आठे कूटना देवता प्रमुखनी राजधानी प्रमुख सर्व कहेवी. ते आठ कूंटनां नाम कहे ठे, एक पद्मोत्तर दिग्गज हस्ति कूट वीजो नीलवंत दिग् हस्ति कूट, त्रीजो सुहस्तिदिग्हस्ति कूट, चोथो अंजनगिरि दिग्हस्ति कूट, पांचमो कुमुददिग् हस्ति कूट, ठहो पलासदिग्हस्ति कूट, सातमो अवतंसहस्ति कूट, आठमो रोचना गिरिदिग् हस्ति कूट. ए आठ दिग्गज कूट कह्या. ए ज्रद्रशालवनने विषे मेरुनी चारदिशि ते सीतोदा तथा सीतानां प्रवाहे रुंधी ठे, ते माटे पूर्वोक्त जिन ज्रवन जे ठे ते नदीनां तट उपरे ठे, अने प्रासाद जे ठे ते गजदंतगिरिनी पाशे ठे, अने जिनज्रवन तथा प्रासादनी वच्चें ए आठ करी कूट ठे.

ते ज्रद्रशाल वन थकी पांचशे योजन उंचा जइये तिहां वीजो नंदनवन ठे, ते पांचशे योजन चक्रवाल पणे फरतुं पोहोल पणे वलयाकारे मेरु पर्वतने चोफेर वींटीने रह्युं ठे, तिहां ए९५४ योजन उपर अगीआरीआ ठ ज्राग एटलुं नंदन वन थकी वाहेर मेरु पर्वतनुं पोहोल पणु ठे, तथा ३१४७९ योजन कांइक जाजेरा एटली परिधि ठे, तथा ७९५४ योजन उपर इग्यारीआ ठ ज्राग एटलो नंदन वन मांहे मेरु पर्वत पोहोल पणे ठे, तथा २७३१६ योजन उपर आठ ज्राग एटली नंदनवननी मांहे मेरुनी परिधि ठे, ते नंदनवन पद्मवरवेदिका अने वन खंडे करी वींट्युं ठे, एनी पण चार दिसाये चार सिद्धायतन ज्रद्रशाल वननी पेरे जाणवा अने चार विदिसिने विषे शोल पुष्करणी जाणवी तेनां नाम कहेठेः–इशान कूणे नंदा. नंदोत्तरा, सुनंदा अने नंदीवर्द्धनी. तथा अग्नि कूणे नंदिषेणा, अमोघा, गोस्तूपा अने सुदर्शना. तथा नैरुतकूंणे ज्रद्रा, विशाला, कुमुदा अने पुंमरिकिणि तथा वायू कूंणे विजया, विजयंति, जयंति अने अपराजिता. इहां पण चारचार वाव्यनी वच्चे ज्रद्रशाल वननी पेरेज सौधर्म तथा इशानेंद्रना प्रासादावंतसक जाणवा.

तथा नंदनवनमां जिन ज्रवन अने प्रासादनां आठ आंतराने विषे दिक्कुमारिकानां आठ कूट ठे, ते कहे ठे, नंदन वन कूट, मेरु कूट, निषध कूट, हिमवंत कूट, रजत कूट, रुचक कूट, सागरचित्र कूट, वज्र कूट, ए आठ कूट ठे. तेमां दिग्कुमारिका वसे ठे, ते संज्रूतलथी एक सहस्त्र योजन उंची ठे, केमके पांचशे योजन नंदन वन तेना उपर वली पांचशे योजन उंचा कूट ठे, एरीते हजार योजन उपर ज्रवन मांहे वसे ठे, माटे एने उर्द्धलोक वासिनी कहीये. तेनां नाम कहे ठे. मेघंकरी, मेघवती, सुमेघा हेममालिनी, सुवत्सा, वत्समित्रा, वज्रसेना अने वलाहिका ए आठ कुमारिका जाणवी

अने नवमो बलकूटछे, ते हजार योजन उंचो छे, माटे ते सहस्रांककूट मध्ये गण्युं छे, ते कूट इशान दिसिना प्रासादथी पण इशान कूणे नंदन वनने छेडेछे, ते माल्यवंत गजदंत. ना हरिस्सह कूटने प्रमाणे छे, इहां पांचशे योजननुं पोहोळुं नंदन वन अने पांचशे योजननां कूट मेरुथी पचाश योजन वेगळां छे, ते माटे शाढा चारशे योजन नंदनवन माथे छे अने पचाश योजन अधर रह्या छे, तेम नवमुं बलकूट तो नंदनवन माथे थोडुं रह्युंछे, अने आकाशे अधर घणुं रह्युंछे,ए बलकूट उपर बलनामा देवतानी राजधानी कही छे.

हवे नंदनवन थकी शाढा बाशठ हजार योजन उंचा जइये तिहां त्रीजुं सोमनस वन छे, ते पांचशे योजन चक्रवाल पणे पहोळुं मेरुने चोफेर वलयाकारे वींटीने रह्युंछे, ४२७२ योजन उपर अगीआरीआ आठ भाग एटलो मेरु पर्वत बाहेर पोहोल पणेछे तथा १३५११ योजन उपर इग्यारीआ छ भाग एटलो बाहेर परिधि पणे छे, ३२७२ योजन उपर अगीआरीआ आठ भाग एटलो सोमनस वननी मांहेली कोरे मेरु पोहोल पणे छे, तथा १०३४९ योजन उपर अगीआरीआ त्रण भाग एटलो मांहे परिधि पणे छे, ए सोमनसवन एक पद्मवरवेदिका अने वनखंडे करी चोफेर वींट्युंछे, इहां कूट नथी माटे कूट वर्जीने शेष सिद्धायतन तथा पुष्करणी अने प्रासादावतंसक सर्वनी वक्तव्यता तेमज नंदनवननी पेरे कहेवी. इहांनी शोल पुष्करणीनां नाम कहेछेः—इशानकूंणे सुमना, सोमनसा, सौमनस्या अने मनोरमा. तथा अग्निकूंणे उत्तरकुरु, देवकुरु, वारिषेणा अने सरस्वति. तथा नैरुतकूंणे विशाला, माघभद्रा, अभयशेना अने रोहिणी. तथा वायुकूंणे भद्रा, भद्रोत्तरा, सुभद्रा अने भद्रावति ए नाम जाणवा. इहां कूट नथी.

सोमनस वनथकी छत्रीश हजार योजन उंचा जइये तिहां मेरुपर्वतना शिखरतले पंडक नामे वनछे, ते ४९४ योजन चक्रवाल पणे वलयाकारे मेरुनी चूलीकाने चोफेर वींटीने रह्युं छे, तिहां ३१६२ योजन जाजेरा मेरुनी बाहिर परिधि छे.

पंडकवनना मध्यभागे वच्चें इहां मेरुपर्वतनी चूलिका चोटली रूप छे, ते चालीश योजन उंच पणे छे, मूलमां बार योजन पोहोल पणे छे, वच्चमां आठ योजन पोहोल पणे छे, मूलमां शाडत्रीश योजन जाजेरा परिधि पणे अने उपर बार योजन जाजेरा परिधि पणे छे, एक योजन मूल थकी उंचा जइये तेवारे पोहोल पणे योजननो पांचमो भाग घटे, एम पांच योजने एक योजन घटे, एगोपूछने संस्थाने संस्थितछे, सर्व वैडूर्य मय नीलीछे, ते चूलीका एक पद्मवरवेदिका अने एक वनखंडे करी चोफेर वींटेली छे, तेना उपरे मध्यभागे एक सिद्धभगवानुं आयतन एटले घर छे, अर्थात् देहरुं छे, ते एक कोश लांब पणे, अर्द्धकोश पहोल पणे अने १४४० धनुष उंच पणे छे.

ते पंडक वनने विषे पूर्वादि चारदिसाये चार सिद्धायतन तथा चार विदिसिनी शोल

पुष्करणीनो तथा चार प्रासादावतंसकनो वर्णन पूर्वेला वननी परे यावत् सौधर्म इशानें द्रना प्रासाद पर्यंत इहां पण जाणवो इहांनी शोल पुष्करणीनां नाम कहेछे. इशान कूंणे पुंड्रा, पुंड्रप्रभा, सुरक्ता अने रक्तवति. तथा अग्निकूंणे क्षीररसा, इक्षुरसा, अमृतरसा अने वारुणी. तथा नैरुत्यकूंणे शंखोतरा, शंखा, शंखावत्तरा अने वलाहिका तथा वायु कूंणे पुष्पोत्तरा, पुष्पवती, सुपुष्पा अने पुष्प मालिनी ए शोल वाव्यनां नाम कह्या.

हवे पंडकवननेविषे श्रीतीर्थंकरने जन्माभिषेक करवानी शिला केटली छे, ते कहे छे. तिहां पूर्वदिसिने छेहडे पांडुसिला छे, ते उत्तर दक्षण लांबी पांचसे योजन अने पूर्व पश्चिम अढीसे योजन पोहोल पणे छे, चार योजन जाड पणेछे सर्व अर्जुन सुव र्णमय छे, अर्द्धचंद्राकारे छे, सिलानी वक्रता चूलिका साहामीछे, वेदिका अने वनखं डे करी चोफेर वींटीछे, तेना चारेदिसे चार सोपान पगथालीयाछे, यावत् तोरण पर्यंत तथा देवता वेसे छे इत्यादि वर्णन जाणवो. तेना मध्य भागे एक उत्तरदिसि अने बी जो दक्षणदिसि ए वे सिंहासनछे, ते शिल्लाना लंबाइ पोहोलोइ तथा उंचाइने आठ हजारमे भागे छे, एटले पांचशे धनुष लांब पणे अढीशो धनुष पोहोलपणे अने चार धनुष उंचपणेछे, तिहां उत्तरदिसिना सिंहासन उपर ते दिसितरफना कछादिक आठ विजयना तीर्थंकरनो जन्माभिषेक थाय तथा जे दक्षण दिसिनुं सिंहासन छे, ते उ परे ते दिसिना वछादिक आठ विजयना तीर्थंकरनो जन्माभिषेक थाय.

तथा दक्षणदिसिने छेहडे पांडुकंवल नामे शिलाछे, ते पण अर्जुन सुवर्णमयछे, ते शिला पांडुशिला प्रमाणे लांबी पोहोली छे, तेना उपर एकज सिंहासन छे, तिहां द क्षिणदिशि तरफनां भरतक्षेत्रमां उत्पन्न थयला तीर्थंकरनो जन्माभिषेक थाय छे, के मके भरतक्षेत्रमां एक समये एकज तीर्थंकर उपजे छे, माटे एकज सिंहासन छे.

तथा पश्चिमदिसिने छेहडे रक्तशिला नामे शिला छे, ते अर्जुन सुवर्ण मयछे, एनी लं बाइ पोहोलाइ पूर्वली परे जाणवी. तेना उपर बे सिंहासन छे, तिहां पश्चिम महावि देहमां उत्पन्न थयेला तीर्थंकरोनो जन्माभिषेक थाय छे, ते आवी रीते के दक्षणदि सिना सिंहासन उपर, पद्मादिक आठ विजयना तीर्थंकरोनो जन्माभिषेक थाय अने उत्तरदिसिना सिंहासने, वप्रादिक आठ विजयना तीर्थंकरोनो जन्माभिषेक थाय.

तथा चूलिकाने उत्तरदिसे पंडकवनना उत्तरदिसिने छेहडे रक्तकंवल नामे शिला छे, तेपण अर्जुन सुवर्णमय छे. तेनो वर्णन पूर्वली परे जाणवो तेना मध्यभागे एक सिंहासन छे. तिहां ते दिसिमां आवेला ऐरवत क्षेत्रना तीर्थंकरनो जन्माभिषेक थायछे, कारण के ऐरवतमां पण एक समये एकज तीर्थंकरनो जन्म थाय छे, तेथी एकज सिंहासन

उत्तर तरफनी शिला उपर छे, अने महाविदेहना पूर्व पश्चिमे प्रत्येके एक समये एके की बाजुये बे बे तीर्थंकरनो जन्म थायछे, सरवाले चार तीर्थंकर एक समये जन्मेछे, माटे पूर्व पश्चिमनी शिला उपर जन्माभिषेक करवाना वे बे सिंहासन छे, सरवाले मेरुनी चार शिला उपर छ सिंहासनछे, हवे मेरुने विषे सर्व सिद्धायतनादिकनी संख्या कहेछे.

१ भद्रशालवने.	२ नंदनवने.	३ सोमनसवने.	४ पांडुकवने.
४ सिद्धायतन ४.	४ सिद्धायतन ४	४ सिद्धायतन ४. ४	४ सिद्धायतन ४.
४ प्रासादावतंसक४	४ प्रासादावतंसक ४	४प्रासादावतंसक. ४	४ प्रासादावतंसक.
१६पुष्करणीवाव्य१६	१६ पुष्करणीवाव्य १६	१६ पुष्करणीवाव्य १६	१६ पुष्करणी. १६
८ दिसिहस्तिकूट८	ए कूट.	१ चूलिकायेसिद्धायतन	४ अभिषेकशिला.

मेरु पर्वतनां शोल नाम हेतु सहीत कहेछे १ मंदरनामे देवता अधिपतिछे माटे मंदरपर्वत २ मेरु ३ मनने रमे ते माटे मनोरम ४ भलुंछे दर्शन जेनुं तेमाटे सुदर्शन ५ पोतेज रत्नादिके करी प्रकाश छे माटे स्वयंप्रभ ६ सर्व पर्वत थकी उंचो तथा श्रीतीर्थंकरना जन्माभिषेक थाय छे, माटे गिरिराज ७ अनेक प्रकारना रत्नो समूह एने विषेछे माटे रत्नोच्चय ८ पांडुशिलादिक शिलानो समूह छे, माटे शिलोच्चय ए मेरु थकी चारे दिसे लोक सरखो समभागे छे माटे लोकनुं मध्य १० लोकना मध्यपणा माटे लोकनाभि ११ अत्यंत निर्मल पणा माटे आछो १२ सूर्य चंद्रादिके आवर्त्त प्रदक्षणा करेछे, माटे सूर्यावर्त्त १३ सूर्यादिक ग्रह, नक्षत्र अने तारा एनी पूंठे फरेछे माटे सूर्यावर्त्त १४ सर्व पर्वतथकी उत्तम माटे उत्तम १५ मेरुना मध्यवर्त्ति अष्टप्रदेशिक रुचक थकी दिसि विदिसि नीकली छे, माटे दिशादि १६ सर्व गिरिमांहे उंच पणे करी मुकुट सरखो माटे अवतंस. इहां मंदर नामे देवता एक पल्योपमायुये वशेछे, तेथी एनुं मंदर एवुं शाश्वतुं नाम छे.

हवे महाविदेह मांहे बत्रीश विजय छे, ते वखाणे छे.

मेरु पर्वतना भद्रशाल वन थकी पूर्वदिसि अने पश्चिमदिसिने विषे प्रथम बे विजय पछी बे वक्षस्कारा पर्वत वली बे विजय तेवार पछी बे अंतरनदी वली बे विजय एम अनुक्रमे एकेकि दिसाये शोल विजय तथा आठ वक्षस्कारा पर्वत अने छ अंतरनदी थाय तेवारे बे पासाना बत्रीश विशय तथा शोल वक्षस्कार पर्वत अने बार अंतरनदी थाय.

हवे बत्रीस विजयनुं पोहोलपणानुं प्रमाण कहेछे.

तिहां बावीससे बार योजन तथा एक योजनना आठ भाग करिए तेहवा सात भाग उपर एटलुं एकेका विजयनुं पोहोलपणुं जाणवं. तथा वक्षस्कार पर्वत शोल छे, ते एकेको पांचसे योजन पोहोलो छे. तथा बार अंतरनदी छे, ते एकेकी एकसोने पचीस योजन पोहो

लीछे. हवे ए विजयादिनुं पोहोलपणुं जाणवानो उपाय लखेछे. चउपन्न सहस्र योजन भूमि, मेरु अने भद्रशालवने रुंधीछे. तथा चार सहस्र योजन भूमी, वक्षस्कारा पर्वतोए रुंधीछे, तथा सातसेने पचास योजन भूमिना अंतरनदीए रुंध्याछे, तथा पांच सहस्र आठसे चुमालीस योजन भूमी, बे वनमुखे रुंधीछे ए सर्व योजन एकठा करिए तेवारे चोसठ सहस्र अने पांचसे चोराणु योजन थाय. तेने एक लक्ष योजन प्रमाण जे जंबूद्वीप छे, ते मांहेथी काहाडीए. तेवारे पांत्रीश सहस्र चारसे ने छ योजन उगरे. तेने सोल विजय छे, माटे सोल भागे वेहेंचीए तेवारे बावीससे अने बार योशन लाभे अने उपर चउद योजन उगरे तेना प्रत्येक योजनना आठ भाग करिए तेवारे एकसोने बार भाग थाय. ते सोल भागे वेंचतां आठीआ सात भाग लाभे एटले एकेक विजयनुं परिमाण बावीससे ने बार योजन उपर आठीआ सात भाग एटलुं जाणवुं.

हवे ए विजयादिकनुं लांबपणुं कहेछे.

सोल हजार पांचसेने बाणु योजन उपर बे कला एटलुं ए सर्व विजय तथा वक्षस्कार तथा अंतर नदी ए सर्वनुं प्रत्येक लांबपणुं जाणवुं. वली शीतोदा तथा शीताने अंते पूर्व तथा पश्चिम दिशे जे चार वनमुख छे, तेहनुं पण एटलुंज लांबपणुं जाणवुं.

हवे वक्षस्कार पर्वतनुं उंचपणुं कहे छे.

वक्षस्कार पर्वत गजदंत गिरिनी पेरे उंचाछे, जेम गजदंतगिरि कुलगिरिने समीपे चारसे योजन उंचाछे, छेहेडे मेरुपर्वतनी पाशे पांचसे योजत उंचाछे, तेम ए वक्षस्कार पण कुलगिरिने समीपे चारसे योजन उंचाछे,अने छेहेडे शीतोदा तथा शीताने समीपे पांचसे योजन उंचाछे. हवे सोल वक्षस्कार पर्वतनां तथा बार अंतरनदिनां अने बत्रीश विजयनां नाम कहेछे. ए सर्व माल्यवंत नामे जे गजदंतगिरिछे, ते थकी प्रदक्षिणावर्त्ते छे.

तिहां प्रथम सोल वक्षस्कारनां नाम कहेछे.

एक चित्रकूट, बीजुं ब्रह्मकूट, त्रीजुं नलिनीकूट, चोथुं एकशेलकूट, पांचमुं त्रिकूट, छठुं वेश्रमणकूट, सातमुं अंजन, आठमुं मातंजन, नवमुं अंकापाती, दशमुं पद्मापाती, अगीआरमुं आशीविष, बारमुं सुखावह, तेरमुं चंद्र, चौदमुं सूर, पंदरमुं नाग अने सोलमुं देव. ए सोल वक्षस्कार गिरिनां नाम जाणवां. ए एकेका वृक्षस्कार उपर चार चार कूटछे तेमां एक तो सिद्धायतनकूट बीजुं ते पर्वतने नामेकूट, त्रीजुं पाछला विजयने नामेकूट, अने चोथुं आगला विजयने नामेकूट ए चारकूट सर्व वृक्षस्कारने विषेछे. तिहां सिद्धायतनकूट उपर श्रीसिद्धनुं देहेरुं होय अने शेषकूटने विषे तेने नामे देवताउना प्रासादावतंसक छे. ए सर्व पर्वतना अधिपति देवो पण एज नामे जाणवा अने सर्व पर्वत पद्मवरवेदिका तथा वनखंडे करी वींटेला छे, यावत् देवता वसेछे, इत्यादि सर्व कहेवुं.

हवे बार अंतर नदीनां नाम कहेछे.

ग्राहावती, द्रहावती, पंकावती, तप्तजला, मत्तजला, उन्मत्ता, खीरोदा, शीतश्रोता, अंतर्वाहिनी, उर्म्मिमालिनी, गंभीरमालिनी, फेनमालिनी, ए नामे बार अंतर नदी जाणवी. ते धुरे तथा छेहेडे सर्व नदिउ दशयोजन प्रमाण उंडा एवा जे नीलवंतने नीचे छ कुंड छे, तथा निषधने नीचे पण छ कुंड छे, ते थकी नीकली एवी ए बार अंतर नदी ते कुंडने नामेज जाणवी. जेम ग्राहावत कुंड थकी ग्राहावती नदी नीकली एरीते सर्व नदीने नामे कूंडनां नाम पण जाणवा, अहिंआं नदीनी देवीनुं द्वीप प्रमुख जे विशेष प्रकारनी वक्तव्यता छे, ते सर्व रोहितांशा नदीने परिमाणे जाणवी. ए सर्व अंतरनदीउ पद्मवर वेदिका अने वनखंडे करी वींटेली छे.

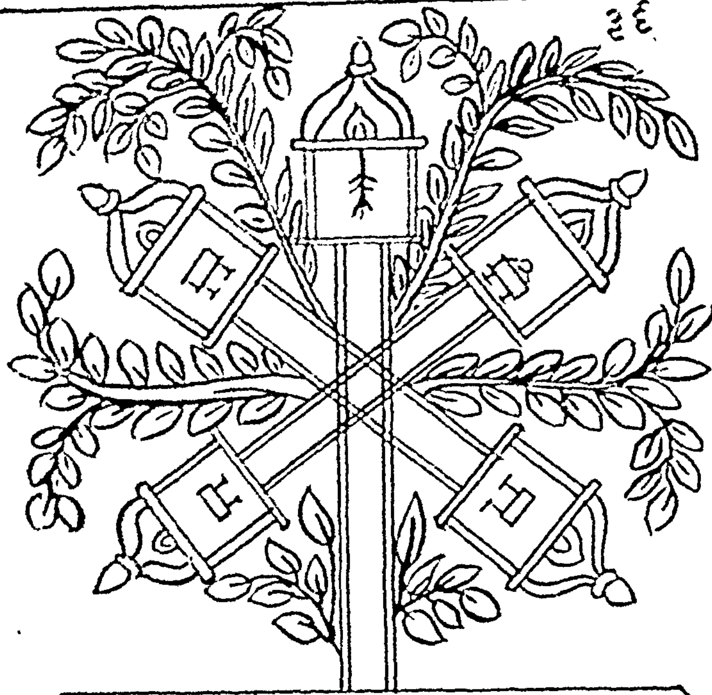
हवे बत्रीश विजयनां नाम कहेछे.

एक कच्छ, बीजो सुकच्छ, त्रीजो महाकच्छ, चोथो कच्छावती, पांचमो आवर्त्त, छठो मंगलावर्त्त, सातमो पुष्कलावर्त्त, आठमो पुष्कलावती, नवमो वत्स, दशमो सुवत्स, अगीआरमो महावत्स, बारमो वत्सावती, तेरमो रम्य, चउदमो, रम्यक, पंदरमो रमणिक, सोलमो मंगलावती, सत्तरमो पद्म, अढारमो सुपद्म, उंगणीशमो महापद्म, वीशमो पद्मावती, एकवीशमो शंख, बावीशमो कुमुद, त्रेवीशमो नलिन, चोवीशमो नलिनावती, पच्चीशमो वप्र, छव्वीशमो सुवप्र, सत्तावीशमो महावप्र, अठावीशमो वप्रावती, उंगणत्रीशमो वल्गु, त्रीशमो सुवल्गु, एकत्रीशमो गंधिल अने बत्रीशमो गंधिलावती.

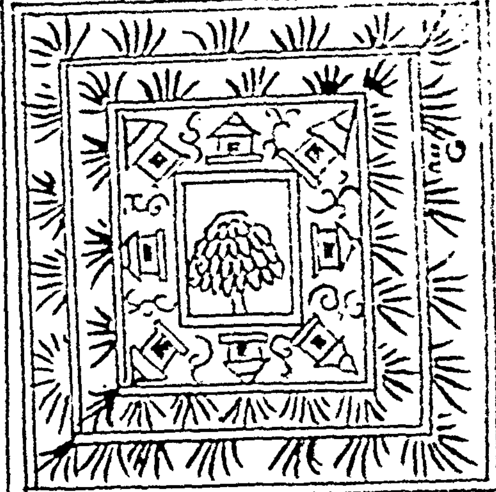
ए कच्छादिक बत्रीश विजय जेछे तेमां पूर्व अने पश्चिम दिशि गत जे लांबा वैताढ्य पर्वतछे, तेणे भरत तथा ऐरवतनी पेरे विजयना अर्द्ध कीधां छे, एटले एकेकी विजयना बे बे खंड कीधां छे, वली एकेका विजयने विषे बे बे नदी छे, तेणे करी छ खंड कीधां छे, तथा ए प्रत्येक विजयमां नदीनी दिशिये दक्षिणार्द्ध विजयने विषे दक्षिण भरतनी अयोध्या नगरी सरखी बत्रीश विजयने विषे बत्रीश नगरीउ छे.

ए बत्रीश नगरीउनां नाम अनुक्रमे कहेछे.

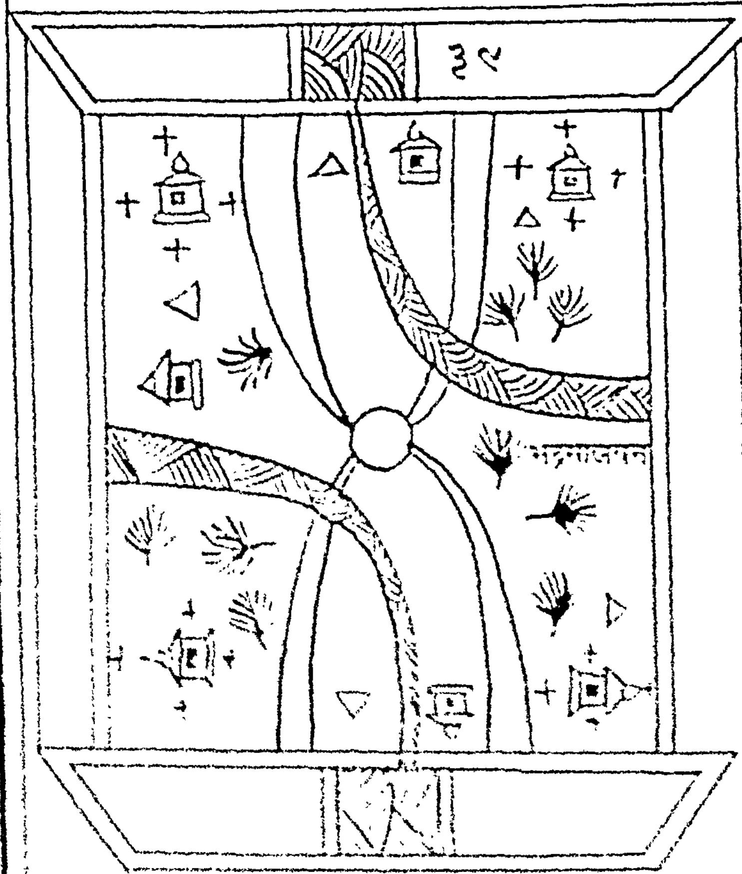
क्षेमा, क्षेमपुरा, अरिष्टा, अरिष्टपुरा, खड्गी, मंजूषा, ऋषभपुरी, पुंडरिगिणी, सुसीमा, कुंडला, अपरावती, प्रभंकरा, अंकावती, पद्मावती, शुभा, रत्नसंचया, अश्वपुरा, सिंहपुरा, महापुरा, विजयपुरा, अपराजिता, अपरा, अशोका, वीतशोका, विजया, वैजयंती, जयंती, अपराजिता, चक्रपुरा, खड्गपुरा, अवध्या अने बत्रीसमी अयोध्या नगरी जाणवी. ए बत्रीस नगरी ते नदिनी दिशिए जे विजयनुं अर्द्धछे तेमांहे जाणवी. ए प्रत्येक राजधानिमां ते ते विजयने नामे चक्रवर्त्ति थाय जेम कच्छविजयनी क्षेमा नामे राजधानीमां कच्छ चक्रवर्त्ति थाय तेम सर्व विजयोने विषे जाणी लेवुं तथा कच्छविजयमां

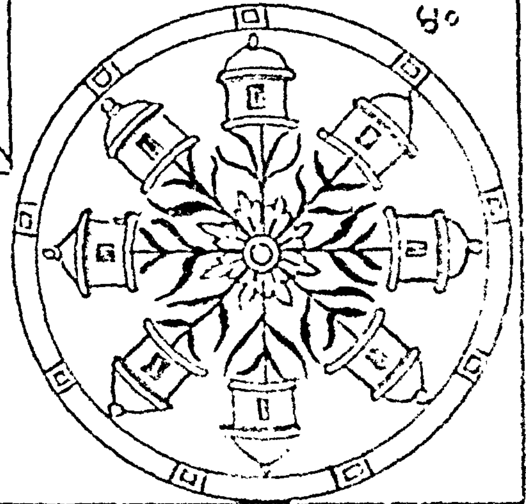


उत्तर कुरु क्षेत्रना पूर्व भागमां जंबु वृक्ष पीठिका स्थापना.

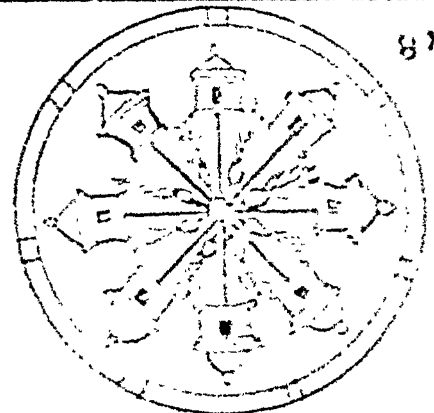


जंबुवृक्षनी पीठिकाने फरती पद्मवर वेदिका तथा वनखंड अने मालादीनी स्थापना.





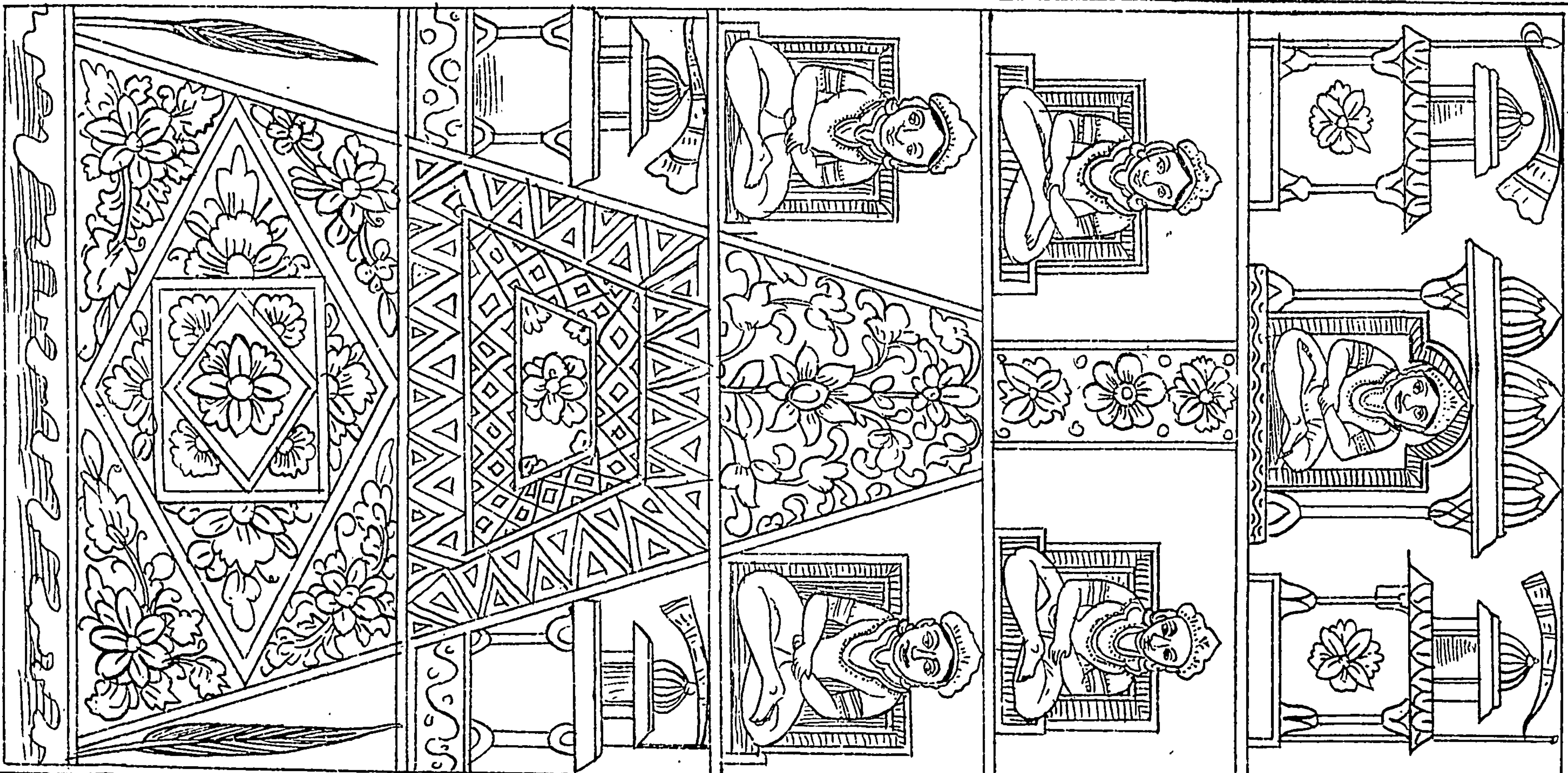
मेरुपर्वत उपरना नंदनवननी स्थापना.



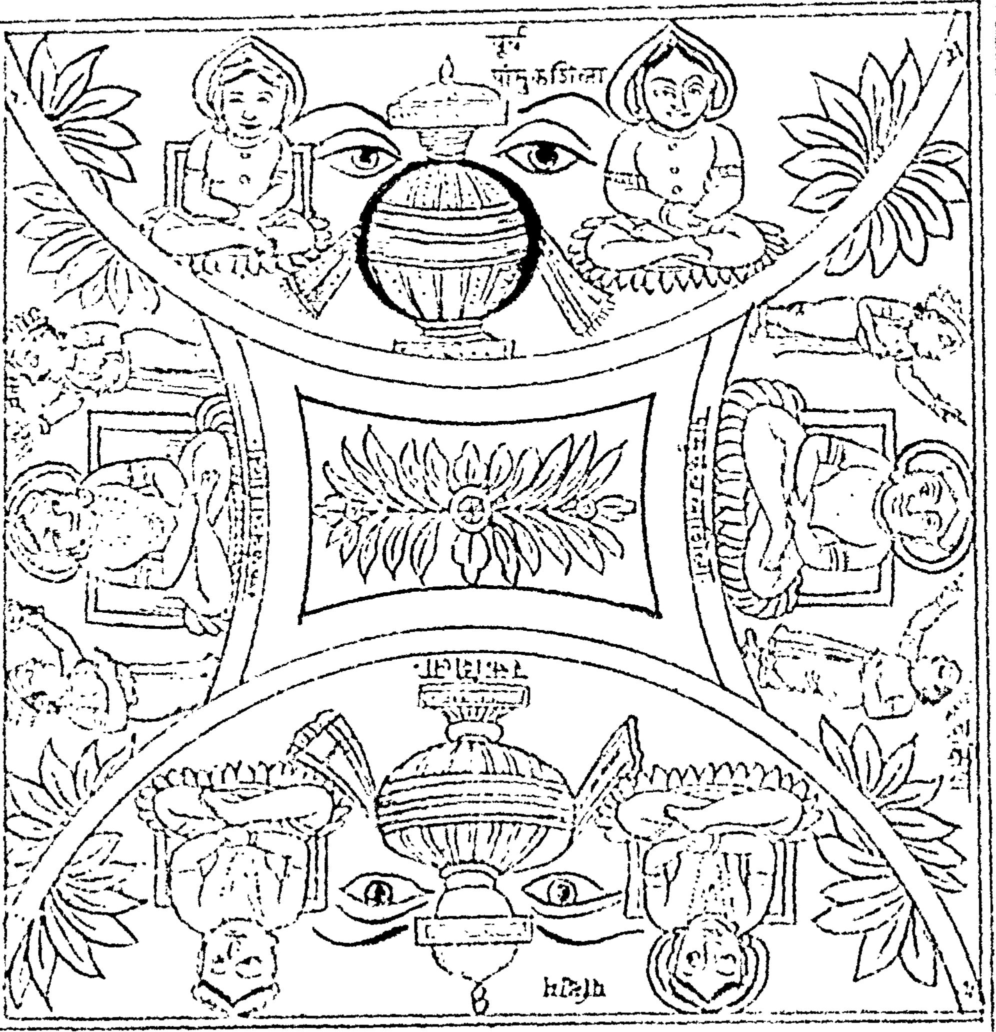
मेरुना सोमनसवननी स्थापना.

मेरुपर्वत स्थापना.

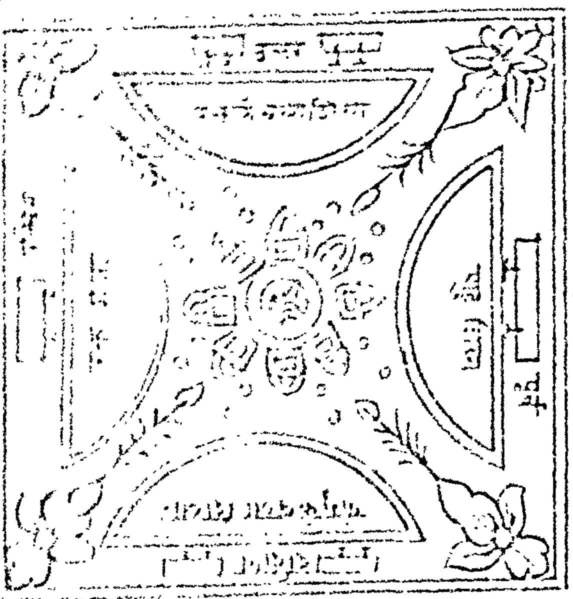
६८



पांमुकवनने विषे श्री तीर्थंकरने जन्माभिषेक करवानी शिला तथा सिंहासननी स्थापना. ४४

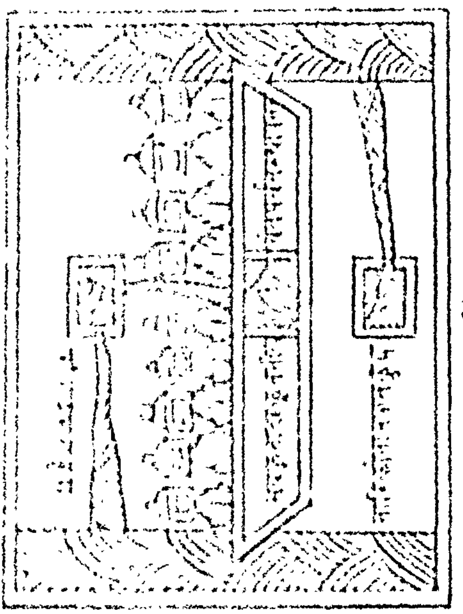


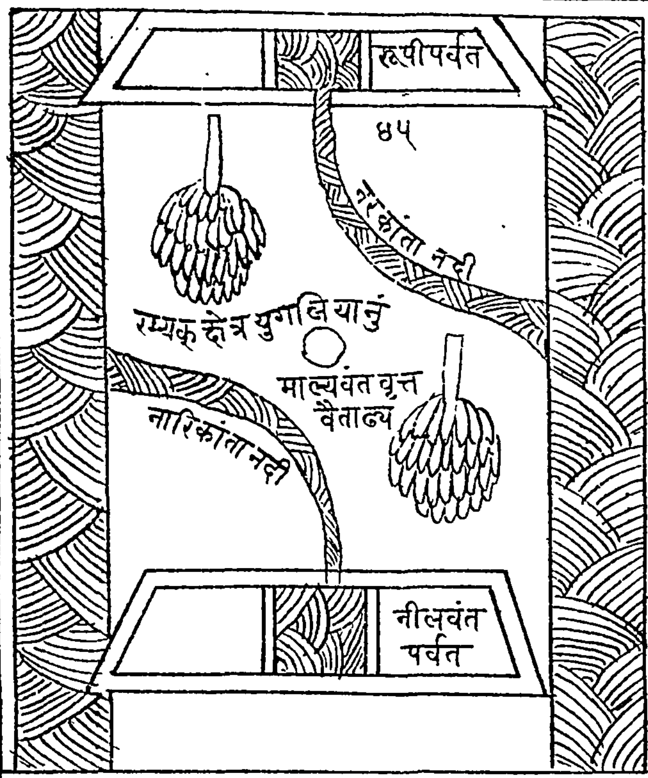
४३

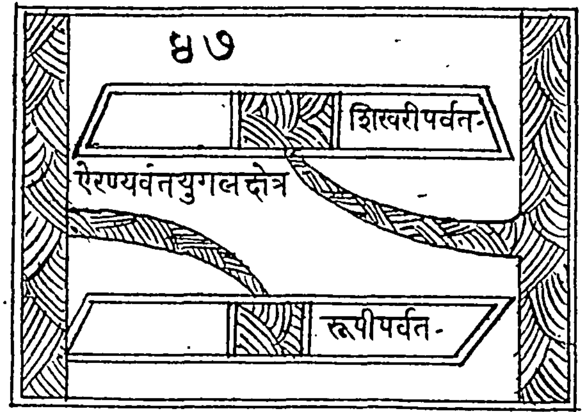


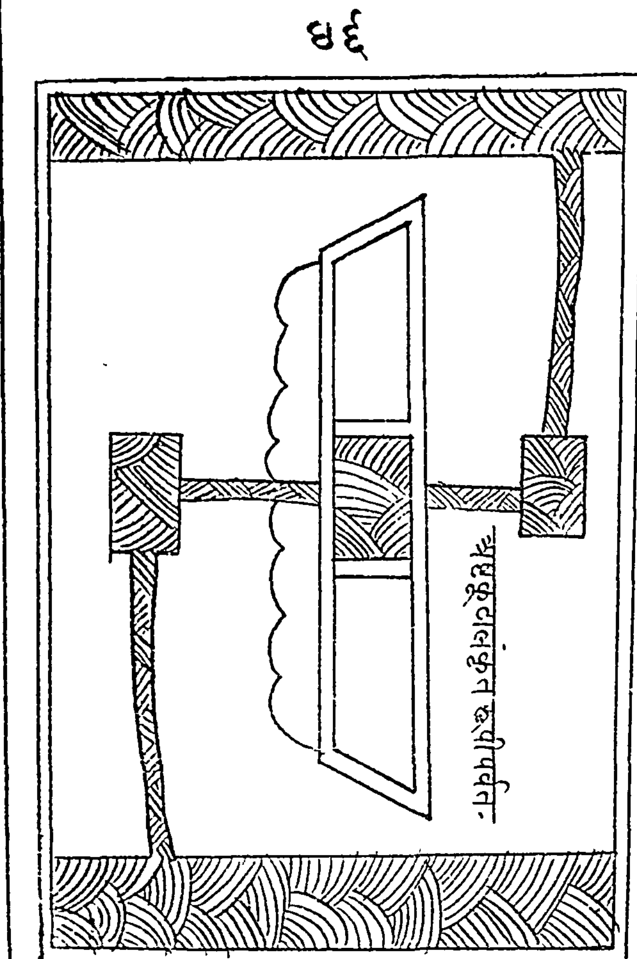
मेरुपर्वतउपर पांडुकवन स्थापना.

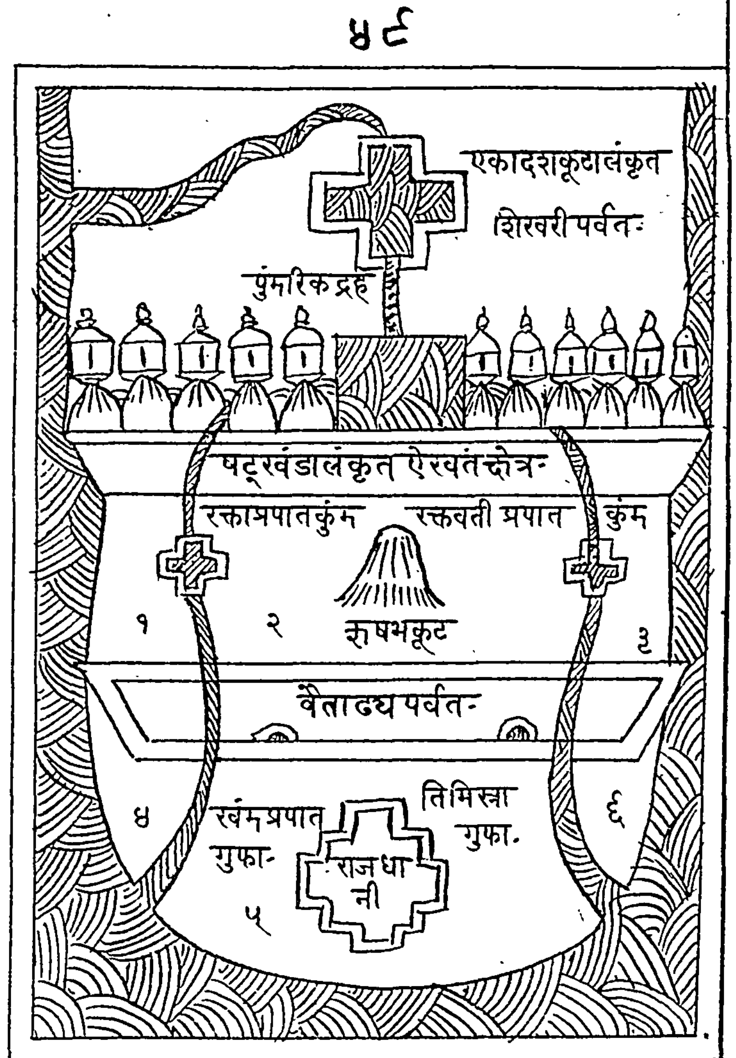
४५




रूपीपर्वत
४५
नरकांता नदी
रम्यक क्षेत्र युगलियानुं
माल्यवंत वृत्त
वैताढ्य
नारिकांता नदी
नीलवंत
पर्वत


४७
शिखरीपर्वत-
ऐरण्यवंतयुगलक्षेत्र
रूपीपर्वत-


४६
अष्टकूटालंकृत रुक्मीपर्वत-


४८
एकादशकूटालंकृत
शिखरी पर्वत-
पुंडरिक द्रह
षट्खंडालंकृत ऐरवतक्षेत्र-
रक्ताप्रपातकुंड
रक्तवती प्रपात कुंड
१
२
ऋषभकूट
३
वैताढ्य पर्वत-
४
खंडप्रपात
गुफा-
तिमिस्रा
गुफा-
६
राजधानी
५

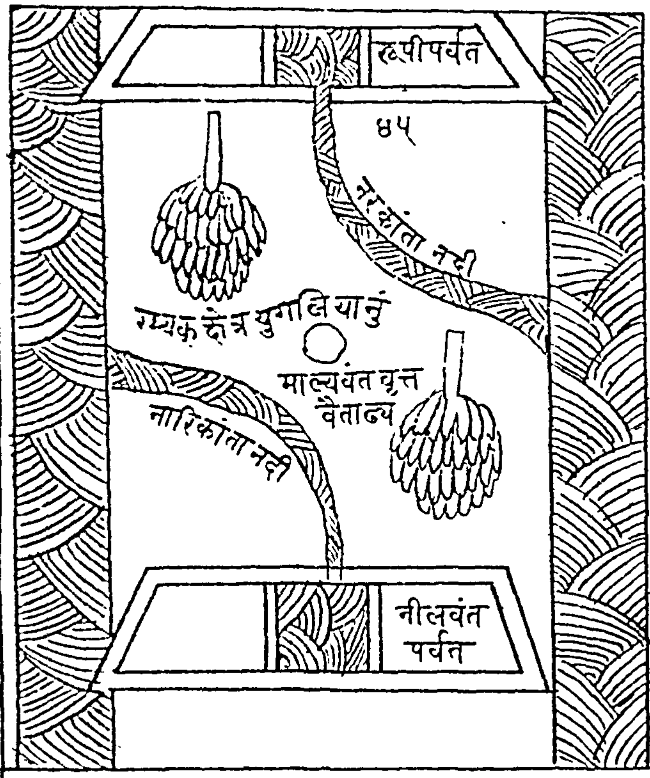
कछ नामे देवता एक पल्योपमायु वालो वशे छे, तेम सर्व विजयने विषे ते ते विज
यने नामे देवता पण कहेवा.

हवे विजयनी नदी कहेछे. निषध तथा नीलवंतने समीपे जे कुंडछे, ते थकी नी
कली एवी गंगा अने सिंधु, नामे जे नदी छे, ते कछादिक आठ विजय तथा पद्मादि
क आठ विजय मली शोल विजयने विषे ए बे बे नदी जाणवी. अने शेष बीजा जे
वछादिक आठ विजय तथा वप्रादिक आठ विजय ए शोल विजयने विषे रक्ता अने
रक्तवती नामा बे बे नदी छे, ते सर्व नदीओ वैताढ्य प्रत्ये भेदीने शीतोदा तथा शी
तामांहे प्रवेश करे छे. ए कछादिक विजयथी दक्षणावर्त्त गणीये.

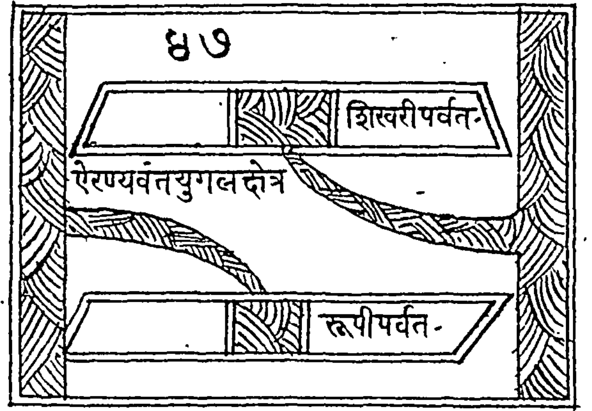
हवे महाविदेह क्षेत्रनेविषे पूर्व तथा पश्चिमदिशिए शीतोदा तथा शीतानदी जगतीने
भेदीने ज्यां समुद्रमांहे मले छे. त्यां जगती मांहेनी दिशि शीतोदा तथा शीता नदीने बन्ने
बाजु चार वन मुखछे तेनुं जगतीनी विवक्षाविना पहोलपणुं ओगणत्रीशसेने बावीस योज
ननुं शीतोदा तथा शीता नदीने समीपे जाणवुं.पछी संकोचता संकोचता निषध तथा नील
वंतने पाशे वनमुखनुं विस्तार एककला जाणवी. हवे कुलगिरि थकी नदी दिशि जातां
वांछित स्थानकने विषे वनमुखनुं विस्तार जाणवानो विधि कहेछे. निषध तथा नीलवं
तने समीपे वनमुखनो विस्तार एक कलाछे तो नदीने समीपे निषध तथा नीलवंत थकी
सोल हजार पांचसेने बाणु योजन उपर बे कला जइए तेवारे वनमुखनो विस्तार केटलुं
थाय ते जाणवा माटे ए पूर्वोक्त सोल हजार पांचसे ने बाणु योजननी कला करीए ते
कला त्रण लाख पंदर हजार बसे ने पचाश थाय. तेने नदीने समीपे वनमुखनुं वि
स्तार ओगणत्रीससेने बावीश योजनछे. तेनी साथे गुणीए तेवारे बाणुकोडी अगीआर
लाख साठ हजार ने पांचसे थाय. तेने ते क्षेत्रना विस्तार त्रण लाख पंदर हजार बसे
ने पचाश साथे भाग आपीए तेवारे ओगणत्रीशसे ने बावीश योजन वनमुखनुं विस्तार
थाय. ए प्रकारे ज्यां वांछिए त्यां वनमुखनुं विस्तार लाभे. ए प्रत्येक वनमुख पद्मवरवे
दिका अने वनखंडे करी वींटेला छे. यावत् देवता बेसे छे. इत्यादि सर्व कहेवुं.

हवे ए विजयादिकनो विस्तार एकठो करतां लाख योजन पूर्ण थाय ते कहेछे.

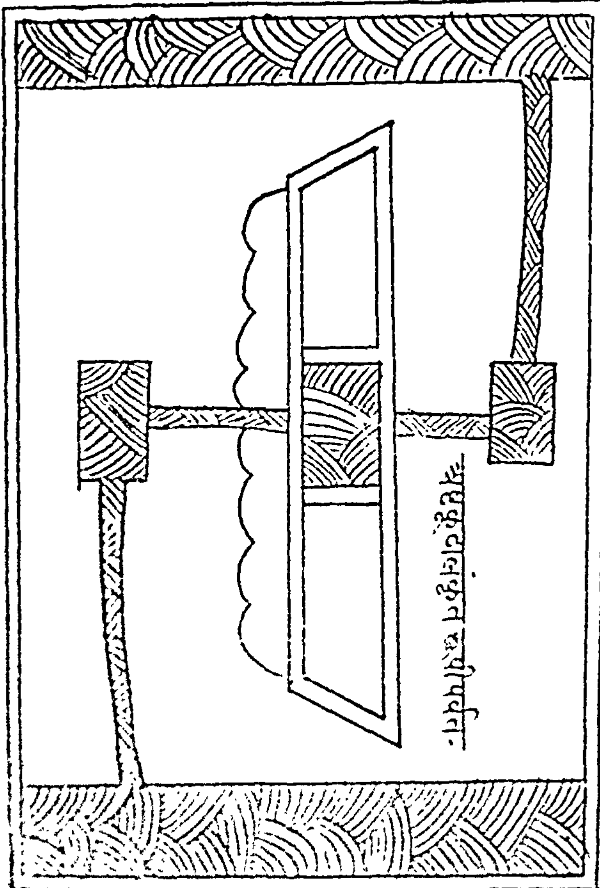
पांत्रीस हजार चारसे ने छ योजन एटलो सर्व विजयनो विष्कंभ जाणवो. अने बे वन
मुखनो विष्कंभ अठावनसे ने चुमालीश योजन छे. सातसेने पचास योजन अंतरनदीनुं
पहोलपणुंछे. अने चोपन हजार योजन मेरु तथा भद्रशाल वन छे, ते केम के भद्रशाल
वनले छे. ते मेरुथकी पूर्वदिशि अने पश्चिमदिशि बावीश बावीश हजार योजनछे. ते
माटे बे बाजुना चुमालीश हजार योजन थया अने मेरुनो मध्य विस्तार दश हजार यो



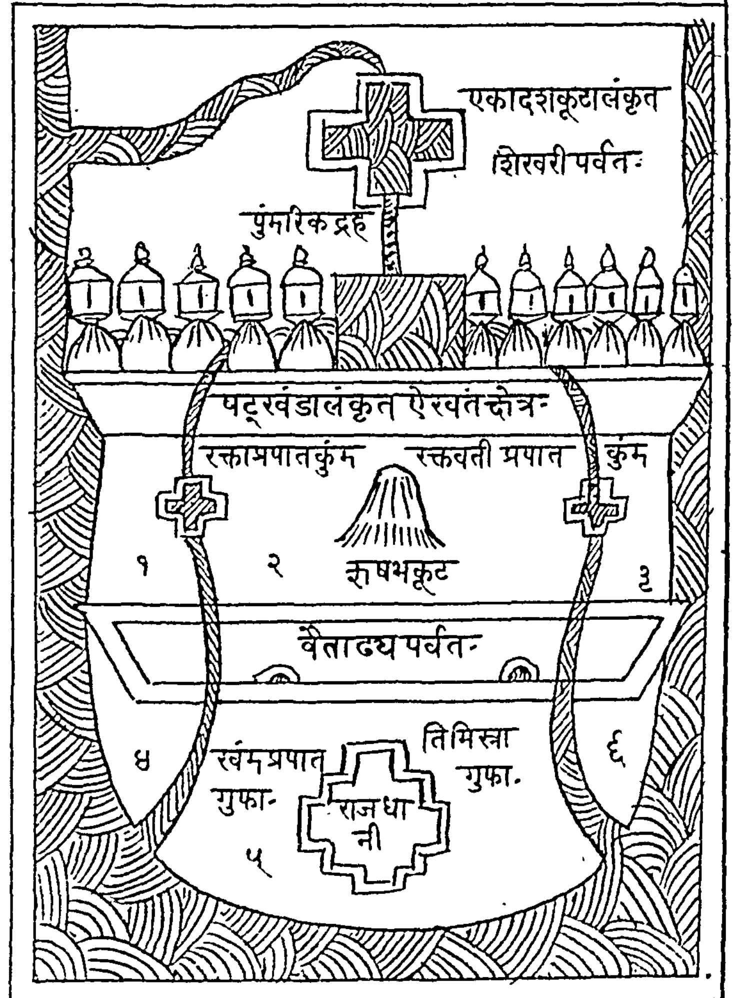
रूपीपर्वत
४५
नरकांता नदी
रम्यक् क्षेत्र युगलियानुं
माल्यवंत वृत्त
वैताढ्य
नारिकांता नदी
नीलवंत
पर्वत



४७
शिखरीपर्वत-
ऐरण्यवंतयुगलक्षेत्र
रूपीपर्वत-



४६
अष्टकूटालंकृत रुक्मीपर्वत-



४८
एकादशकूटालंकृत
शिखरी पर्वत-
पुंडरिकद्रह
षट्खंडालंकृत ऐरवतक्षेत्र-
रक्ताप्रपातकुंड
रक्तवती प्रपात कुंड
१
२
ऋषभकूट
३
वैताढ्य पर्वत-
४
खंडप्रपात
गुफा-
तिमिस्रा
गुफा-
६
राजधा
नी
५

कछ नामे देवता एक पल्योपमायु वालो वशे छे, तेम सर्व विजयने विषे ते ते विज यने नामे देवता पण कहेवा.

हवे विजयनी नदी कहेछे. निषध तथा नीलवंतने समीपे जे कुंडछे, ते थकी नी कली एवी गंगा अने सिंधु, नामे जे नदी छे, ते कछादिक आठ विजय तथा पद्मादि क आठ विजय मली शोल विजयने विषे ए बे बे नदी जाणवी. अने शेष बीजा जे वछादिक आठ विजय तथा वप्रादिक आठ विजय ए शोल विजयने विषे रक्ता अने रक्तवती नामा बे बे नदी छे, ते सर्व नदीउ वैताढ्य प्रत्ये जेदीने शीतोदा तथा शी तामांहे प्रवेश करे छे. ए कछादिक विजयथी दक्षणावर्त्त गणीये.

हवे महाविदेह क्षेत्रनेविषे पूर्व तथा पश्चिमदिशिए शीतोदा तथा शीतानदी जगतीने जेदीने ज्यां समुद्रमांहे मले छे. त्यां जगती मांहेनी दिशि शीतोदा तथा शीता नदीने बन्ने बाजु चार वन मुखछे तेनुं जगतीनी विवक्षाविना पहोलपणुं उंगणत्रीशसेने बावीस योज ननुं शीतोदा तथा शीता नदीने समीपे जाणवुं.पछी संकोचता संकोचता निषध तथा नील वंतने पाशे वनमुखनुं विस्तार एककला जाणवी. हवे कुलगिरि थकी नदी दिशि जातां वांछित स्थानकने विषे वनमुखनुं विस्तार जाणवानो विधि कहेछे. निषध तथा नीलवं तने समीपे वनमुखनो विस्तार एक कलाछे तो नदीने समीपे निषध तथा नीलवंत थकी सोल हजार पांचसेने बाणु योजन उपर बे कला जइए तेवारे वनमुखनो विस्तार केटलुं थाय ते जाणवा माटे ए पूर्वोक्त सोल हजार पांचसे ने बाणु योजननी कला करीए ते कला त्रण लाख पंदर हजार बसे ने पचाश थाय, तेने नदीने समीपे वनमुखनुं वि स्तार उंगणत्रीससेने बावीश योजनछे, तेनी साथे गुणीए तेवारे बाणुकोडी अगीआर लाख साठ हजार ने पांचसे थाय, तेने ते क्षेत्रना विस्तार त्रण लाख पंदर हजार बसे ने पचाश साथे जाग आपीए तेवारे उंगणत्रीशसे ने बावीश योजन वनमुखनुं विस्तार थाय. ए प्रकारे ज्यां वांछिए त्यां वनमुखनुं विस्तार लाजे. ए प्रत्येक वनमुख पद्मवरवे दिका अने वनखंडे करी वींटेला छे, यावत् देवता बेसे छे. इत्यादि सर्व कहेवुं.

हवे ए विजयादिकनो विस्तार एकठो करतां लाख योजन पूर्ण थाय ते कहेछे.

पांत्रीस हजार चारसे ने छ योजन एटलो सर्व विजयनो विष्कंज जाणवो, अने बे वन मुखनो विष्कंज अठावनसे ने चुमालीश योजन छे, सातसेने पचास योजन अंतरनदीनुं पहोलपणुंछे, अने चोपन हजार योजन मेरु तथा जद्रशाल वन छे, ते केम के जद्रशाल वनजे छे, ते मेरुथकी पूर्वदिशि अने पश्चिमदिशि बावीश बावीश हजार योजनछे. ते माटे बे बाजुना चुमालीश हजार योजन थया अने मेरुनो मध्य विस्तार दश हजार यो

जन छे. ए एकठा करतां चोपन्न हजार योजन पूरण थाय तथा वक्षस्कार पर्वतनुं विस्तार चार हजार योजनछे, ए सर्व एकठो करिए तेवारे लाख योजन पूर्ण थाय छे.

हवे अधो लोकमांहे गाम वखाणेछे.

मेरुना समभूतलनी अपेक्षाए मात्राएं मात्राएं भूमी नीची थती जायछे. ते मेरुपर्वत थकी पश्चिमदिशिये बेतालीश हजार योजन भूमिने विषे गया पछी त्यां एक हजार योजन भूमी समभूतलथी ऊंमीछे, त्यां अधोगामी माणस वसेछे. समभूतलथी नवसे योजन हेठ अने नवसे योजन ऊंचा तिहां सुधी तिर्छो लोक कहीये तथा नवसेथी ऊंचुं ते ऊर्द्ध लोक कहीये अने नवसेथी नीचुं ते अधोलोक कहीये. ए महाविदेहनो विचारकह्यो.

जंबूद्वीपना महाविदेह संबंधि पूर्व पश्चिमनां लक्ष योजन मेलक यंत्र.

पूर्वदिसि.			पश्चिमदिसि.		
अं०	स्थानकनां नाम.	योजनसंख्या	अं०	स्थानकनां नाम.	योजनसंख्या
१	सीतामुखवनजगतीसहीत.	२९२२	१९	भद्रशालवन पश्चिम दिसिये.	२२०००
२	आठमी नवमी, विजय.	२२१२ ७/८	२०	बत्रीशमी, सत्तरमी विजय.	२२१२ ७/८
३	वखारो पर्वत.	५००	२१	वखारो पर्वत.	५००
४	सातमी, दशमी विजय.	२२१२ ७/८	२२	एकत्रीशमी अढारमी विजय	२२१२ ७/८
५	अंतर नदी.	१२५	२३	अंतरनदी.	१२५
६	छठी अगीआरमी विजय.	२२१२ ७/८	२४	त्रीशमी, ऊंगणीशमी विजय.	२२१२ ७/८
७	वखारो पर्वत.	५००	२५	वखारो पर्वत.	५००
८	पांचमी, बारमी विजय.	२२१२ ७/८	२६	ऊंगणत्रीशमी, वीशमी विज.	२२१२ ७/८
९	अंतर नदी.	१२५	२७	अंतर नदी.	१२५
१०	चोथी, तेरमी विजय.	२२१२ ७/८	२८	अठावीशमी, एकवीशमी वि.	२२१२ ७/८
११	वखारो पर्वत.	५००	२९	वखारो पर्वत.	५००
१२	त्रीजी चौदमी विजय.	२२१२ ७/८	३०	सत्तावीशमी, बावीशमी वि०	२२१२ ७/८
१३	अंतर नदी.	१२५	३१	अंतर नदी.	१२५
१४	बीजी, पंदरमी विजय.	२२१२ ७/८	३२	छवीशमी, त्रेवीशमी विजय.	२२१२ ७/८
१५	वखारो पर्वत.	५००	३३	वखारो पर्वत.	५००
१६	पहेली, शोलमी विजय.	२२१२ ७/८	३४	पच्चीशमी, चोवीशमी विजय.	२२१२ ७/८
१७	भद्रशालवन पूर्वदिसिये.	२२०००	३५	सीतोदा मुखवनजगतीस०	२९२२
१८	मेरुपर्वतनुं विष्कंभ.	१००००	३६	सरवाळे.	१०००००

हवे तीर्थंकर तथा चक्रवर्त्ति प्रमुख क्यां उपजे ते कहेछे.

आ जंबूद्वीपने विषे जघन्य तो चार तीर्थंकर समकाले होय वली उत्कृष्टतो बत्रीश विजयना बत्रीश अने भरत तथा ऐरवतना बे मलीने चोत्रीश समकाले होय. तथा वासुदेव, चक्रवर्त्ति अने बलदेव ए त्रण पुरुष जघन्यतो समकाले प्रत्येके चार चार होय अने उत्कृष्टा त्रीश होय. जेवारे चक्रवर्त्ति होय, तेवारे वासुदेव न होय, अने जेवारे वासुदेव होय, तेवारे चक्रवर्त्ति नहोय तेमाटे त्रीश समकाले होय, पण चोत्रीश नहोय, बत्रीश विजय तथा भरत अने ऐरवत मली चोत्रीश क्षेत्र उपजवाना जाणवा.

हवे नीलवंत पर्वतनो विचार कहेछेः—

महाविदेहने उत्तरदिसे अने रम्यक्क्षेत्र युगलीयानुं तेनी दक्षण दिसे नीलवंत नामा वर्षधर पर्वत छे, ते जेम निषध पर्वतनी वक्तव्यता कही तेमज लंबाइ पोहोलाइ आदिक एमां पण कहेवी अने इहां केशरी नामे द्रहछे, तेनी दक्षणदिसि थकी सीता महानदी नीकली थकी उत्तरकुरु मांहे आवती बे यमक पर्वत तथा पांच द्रह प्रत्ये बे प्रकारे वेहेंचती थकी एनी वच्चें थइने चोरासी हजार नदीये पूराती पूराती भद्रशालवन प्रत्ये आवती मेरुपर्वत पासे बे योजन अण पोहोती थकी पूर्वदिसि साहामी वली ते माल्यवंत नामे गजदंत पर्वतने नीचे भेदीने मेरुपर्वतनी पूर्वदिसे पूर्वमहाविदेह क्षेत्रने बे भागे वेहेंचती थकी एकेका चक्रवर्त्तिना विजयथकी अठावीश अठावीश हजार नदीये पूराती पूराती ५३२००० नदीये सहीत थकी विजय नामा जंबूद्वीपनां द्वारने नीचे जगती भेदीने पूर्वदिसे लवण समुद्रमां भलेछे, शेष अधिकार सीतोदा परे जाणवुं.

इहां नारीकांता नदी, केशरी द्रहनी उत्तरदिसि थकी नीकली तेनुं अधिकार हरिकांता नदीनी पेरे जाणवुं पण एटलुं विशेष जे गंधापाती वृत्तवैताढ्य पर्वतने एक योजन अण पोहोती थकी पश्चिम साहामी वली थकी समुद्रमां भले छे, शेष तेमज जाणवुं.

नीलवंत पर्वतना नव कूटनां नाम कहेछेः—१ सिद्धायतन कूट २ नीलवंत कूट ३ पूर्वविदेह कूट ४ सीता कूट ५ कीर्त्तिदेवी कूट ६ नारीकांता कूट ७ अपरविदेह कूट ८ रम्यक्कूट ए उपदर्शन कूट ए सर्वकूट पांचशे योजनना जाणवा तथा ए पर्वतनो नीलोवर्ण, नीलीकांति, सर्ववैडूर्यरत्नमय नीलो छे, अने नीलवंत नामे देवता इहां एक पल्योपमायुये वसे छे, माटे एनुं नीलवंत एवुं शाश्वतुं नाम छे.

हवे रम्यक् नामे युगलीयानुं क्षेत्र कहेछेः—नीलवंतने उत्तरदिसे अने रूपी पर्वतने दक्षण दिसे रम्यक्क्षेत्र छे तेनुं वर्णन जेम पूर्वे हरिवर्ष युगल क्षेत्रनुं कह्युंछे तेनी परे जाणवुं. तथा नरकांता नदीने पश्चिमदिसे अने नारिकांता नदीने पूर्वदिसे ए क्षेत्रमां गंधापाती नामा वृत्तवैताढ्य पर्वतछे, तेमां घणा कमल गंधापातीना वर्ण सरिखा रक्त

वर्णे छे ते उपर पद्मनामे देवता पल्योपमायु वालो वसेछे तेमज ए रम्यक् क्षेत्र पण घणो रम्य मनोहर छे, तथा रम्यक् नामे देवता वशेछे, तेथी एनुं रम्यक् नाम शाश्वतुं छे.

हवे रुक्मि (रूपी) पर्वत कहेछेः—रम्यक्क्षेत्रने उत्तरदिसे अने हिरण्यवंत क्षेत्रने दक्षण दिसे रुक्मी पर्वतछे ते महाहिमवंतनी वक्तव्यताये जाणवो. इहां महापुंडरिक नामे द्रहछे तेमांथी नरकांता नामा नदी दक्षणदिसेथी पूर्वोक्त रोहितानी परे पूर्वदिसे जाय छे तथा रूपकुला नदी उत्तर दिसेथी नीकली ते हरिकांतानी पेरे पश्चिम दिसे जायछे.

ए रूपी पर्वत उपर आठ कूटछे तेनां नाम कहेछेः—१ सिद्धायनकूट २ रुक्मीकूट ३ रम्यक्कूट ४ नरकांता कूट ५ बुद्धिदेवीकूट ६ रूप्पकुलाकूट ७ हैरण्यवंतकूट ८ मणिकांचनकूट ए सर्व कूट पांचशे पांचशे योजननां छे ए पर्वत रूपामय छे रूपानी पेरे कांती छे अने रुक्मिनामा देवता पल्योपमनी स्थितिये वशेछे माटे एनुं रुक्मि एवुं शाश्वतुं नामछे

ए रुक्मी पर्वतने उत्तरदिसे अने शिखरी पर्वतने दक्षणदिसे हैरण्यवंत नामे युगल क्षेत्र छे तेनो अधिकार हेमवंत क्षेत्रनी पेरे जाणवो. इहां सुवर्णकुला महा नदीने पश्चिम दिसे अने रूप्पकुला महानदीने पूर्वदिसे हैरण्यवंत क्षेत्रने मध्य भागे, माल्यवंत नामे वृत्तवैताढ्य पर्वत छे तेनो वर्णन शब्दापाती वृत्तवैताढ्यनी पेरे जाणवो एना कमल ते माल्यवंत सरखा प्रभाये माल्यवंत सरखे वर्णछे तथा प्रभास नामे देवता पल्योपमनी स्थितिये इहां रहेछे तेथी तथा हैरण्यवंत क्षेत्र ते रुक्मी अने शिखरी पर्वत तेणे करी बे पासे सहीत छे, तथा नित्ये हिरण्य एटले सुवर्णरूप प्रकाशेछे तथा आशनादिके करी नित्ये हिरण्य दीएछे, अने इहां हैरण्यवंत नामे देवता वशेछे तेथी एनुं नाम हैरण्यवंतछे.

हैरण्यवंत क्षेत्रने उत्तरदिसे अने ऐरवतक्षेत्रने दक्षणदिसे शिखरी नामे वर्षधर पर्वत छे, तेनो लंबाइ आदिक सर्व अधिकार चूल हेमवंत पर्वतनी पेरे जाणवो इहां पुंडरिक नामे द्रह छे तेमांथी सुवर्णकुला महानदी दक्षणदिसे नीकली ते रोहीतांसानी पेरे पूर्व दिसि समुद्रमां जायछे अने जेम गंगा अने सिंधु ए बे नदी भरत क्षेत्रमां जायछे तेम इहां रक्ता अने रक्तवती ए बे नदी ऐरवतक्षेत्र मांहे जाय छे तेमां पूर्वदिसिये रक्ता नदी अने पश्चिम दिसिये रक्तावती नदी जाणवी शेषअधिकार सर्व चुल्ल हेमवंतनीपेरेजाणवो.

शिखरीपर्वतने विषे इग्यारकूट छे तेनां नाम कहेछेः—१ सिद्धायतन कूट, बीजो शिखरी कूट, त्रीजो हैरण्यवंत कूट, चोथो सुवर्णकूला कूट, पांचमो सूरादेवी कूट, छठो रक्तावर्त्तन कूट, सातमो लक्ष्मी कूट, आठमो रक्तावत्यावर्त्तन कूट, नवमो इलादेवी कूट, दशमो ऐरवत कूट, अगीआरमो तिगिछि कूट ए सर्व कूट पांचशे योजननां जाणवा तथा ए शिखरी पर्वतने विषे घणा कूट शिखरीवृक्षने संस्थाने संस्थित छे, सर्व रत्नमय छे, अने इहां शिखरी नामे देवता वशेछे तेथी एनुं शिखरी एवुं शाश्वतुं नाम छे.

हवे ऐरवतक्षेत्रनी वक्तव्यता कहे छे.

उत्तरदिशिना लवणसमुद्रनी दक्षिण दिशे ऐरवत नामे क्षेत्र छे, एने विषे वृंग वृक्ष तथा कांटा जरतक्षेत्रनी पेरे घणा छे, तथा एनी बीजी पण सर्व वक्तव्यता जरतक्षेत्रनी पेरे जाणवी. परंतु एटलुं विशेष जे इहां ऐरवत नामे चक्रवर्त्ती जाणवो अने जरतक्षेत्रने विषे जरत नामे चक्रवर्त्ती कहेवो. तथा इहां ऐरवत नामे देवता वसे छे, तेथी एनुं ऐरवत एवुं शाश्वतुं नाम छे.

हवे ए जरत अने ऐरवत क्षेत्रने विषे कालचक्रनुं स्वरूप कहे छे.

जरत तथा ऐरवत क्षेत्रमांहे छ आरे करी अवसर्प्पिणी अने छ आरे करी उत्सर्प्पिणी रूप बार आरानुं कालचक्र छे. ते सदा काल अनादि अनंत पणे अनुक्रमे ज्रमण करे छे.

हवे ए बार आरानां नाम कहेछे. प्रथम सुखम सुखमा, बीजो सुखमा, त्रीजो सुखम डुखमा, चोथो डुखम सुखमा, पांचमो डुखमा, छठो डुखम डुखमा ए छ आरा छे, ते अवसर्प्पिणी कालनेविषे अनुक्रमे प्रथम सुखम सुखमाथी गणीये अने उत्सर्प्पिणी काले अवला गणीये एटले डुखम डुखमाथी धुर मांडी गणीए. एम बार आरा चडता पडता जाणवा. ए चक्रनी पेठे फिरता आवे माटे एने कालचक्र कहीए. एमां अवसर्प्पिणी ते घटतो घटतो काल जाणवो अने उत्सर्प्पिणी ते चढतो चढतो काल जाणवो.

हवे ए आराना कालनुं प्रमाण कहे छे. पहेलो आरो चार कोमाकोमी सागरनो, बीजो आरो त्रण कोमाकोमी सागरनो, त्रीजो आरो बे कोडाकोडी सागरनो, ए त्रण आराने विषे अनुक्रमे करी मनुष्योनां आयुष्य कहे छेः—प्रथम आरे त्रण पल्योपमनुं, तथा बीजे आरे बे पल्योपमनुं, त्रीजे आरे एक पल्योपमनुं, ए रीते मनुष्यनुं आयुष्य जाणवुं. हवे शरीरनुं मान कहे छे. प्रथम आराने विषे त्रण कोश उंचा मनुष्यनां शरीर होय, अने बीजे आरे बे कोश, त्रीजे आरे एक कोश, ए शरीरनुं उंचपणुं जाणवुं.

हवे ए त्रण आराने विषे मनुष्योने जे आहारनी इछा थाय छे, ते कहेछेः—पहेला आराने विषे चोथे दिवसे तुअर प्रमाणे आहारनी वांछा थाय, अने बीजे आरे त्रीजे दिवसे बोर प्रमाणे आहारनी वांछा थाय. तथा त्रीजे आरे एकांतरे आमला प्रमाणे आहारनी वांछा थाय. हवे शरीरने विषे पांसलीनी संख्या कहेछे. प्रथम आरामांहे बशेने छप्पन्न पिठकरंम एटले पांसली होय, अने बीजे आरे ते पूर्वोक्त पांसलीनुं अर्द्ध एटले एकशोने अठावीश पांसली होय, तथा त्रीजे आरे वली तेनुं अर्द्ध एटले चोशठ पांसली होय.

हवे ए त्रण आराने विषे अपत्य पालना कहेछे. प्रथम आराने विषे युगलने प्रसव्या पछी उंगणपचास दिवस सुधी अपत्य एटले छोरु युगल तेहनी प्रतिपालना करे, तथा

वर्णे छे ते उपर पद्मनामे देवता पल्योपमायु वालो वसेछे तेमज ए रम्यक् क्षेत्र पण घ णो रम्य मनोहर छे, तथा रम्यक् नामे देवता वशेछे, तेथी एनुं रम्यक् नाम शाश्वतुं छे.

हवे रुक्मि (रूपी) पर्वत कहेछेः—रम्यक्क्षेत्रने उत्तरदिसे अने हिरण्यवंत क्षेत्रने द क्षण दिसे रुक्मी पर्वतछे ते महाहिमवंतनी वक्तव्यताये जाणवो. इहां महापुंडरिक नामे द्रहछे तेमांथी नरकांता नामा नदी दक्षणदिसेथी पूर्वोक्त रोहितानी परे पूर्वदिसे जाय छे तथा रूपकुला नदी उत्तर दिसेथी नीकली ते हरिकांतानी पेरे पश्चिम दिसे जायछे.

ए रूपी पर्वत उपर आठ कूटछे तेनां नाम कहेछेः—१ सिद्धायनकूट २ रुक्मीकूट ३ रम्यक्कूट ४ नरकांता कूट ५ बुद्धिदेवीकूट ६ रूप्पकुलाकूट ७ हैरण्यवंतकूट ८ मणिकां चनकूट ए सर्व कूट पांचशे पांचशे योजननां छे ए पर्वत रूपामय छे रूपानी पेरे कांती छे अने रुक्मिनामा देवता पल्योपमनी स्थितिये वशेछे माटे एनुं रुक्मि एवुं शाश्वतुं नामछे

ए रुक्मी पर्वतने उत्तरदिसे अने शिखरी पर्वतने दक्षण दिसे हैरण्यवंत नामे युगल क्षेत्र छे तेनो अधिकार हेमवंत क्षेत्रनी पेरे जाणवो. इहां सुवर्णकुला महा नदीने पश्चिम दिसे अने रूप्पकुला महानदीने पूर्वदिसे हैरण्यवंत क्षेत्रने मध्य भागे, माल्यवंत नामे वृत्तवैताढ्य पर्वत छे तेनो वर्णन शब्दापाती वृत्तवैताढ्यनी पेरे जाणवो एना कमल ते मा ल्यवंत सरखा प्रभाये माल्यवंत सरखे वर्णेछे तथा प्रभास नामे देवता पल्योपमनी स्थि तिये इहां रहेछे तेथी तथा हैरण्यवंत क्षेत्र ते रुक्मी अने शिखरी पर्वत तेणे करी बे पासे सहीत छे, तथा नित्ये हिरण्य एटले सुवर्णरूप प्रकाशेछे तथा आशनादिके करी नित्ये हिरण्य दीएछे, अने इहां हैरण्यवंत नामे देवता वशेछे तेथी एनुं नाम हैरण्यवंतछे.

हैरण्यवंत क्षेत्रने उत्तरदिसे अने ऐरवतक्षेत्रने दक्षणदिसे शिखरी नामे वर्षधर पर्वत छे, तेनो लंबाइ आदिक सर्व अधिकार चूल हेमवंत पर्वतनी पेरे जाणवो इहां पुंडरिक नामे द्रह छे तेमांथी सुवर्णकुला महानदी दक्षणदिसे नीकली ते रोहीतांसानी पेरे पूर्व दिसि समुद्रमां जायछे अने जेम गंगा अने सिंधु ए बे नदी भरत क्षेत्रमां जायछे तेम इहां रक्ता अने रक्तवती ए बे नदी ऐरवतक्षेत्र मांहे जाय छे तेमां पूर्वदिसिये रक्ता नदी अने पश्चिम दिसिये रक्तावती नदी जाणवी शेषअधिकार सर्व चुल्ल हेमवंतनीपेरेजाणवो.

शिखरीपर्वतने विषे इग्यारकूट छे तेनां नाम कहेछेः—१ सिद्धायतन कूट, बीजो शि खरी कूट, त्रीजो हैरण्यवंत कूट, चोथो सुवर्णकूला कूट, पांचमो सूरादेवी कूट, छठो रक्तावर्त्तन कूट, सातमो लक्ष्मी कूट, आठमो रक्तावत्यावर्त्तन कूट, नवमो इलादेवी कूट, दशमो ऐरवत कूट, अगीआरमो तिगिछि कूट ए सर्व कूट पांचशे योजननां जाणवा तथा ए शिखरी पर्वतने विषे घणा कूट शिखरीवृक्षने संस्थाने संस्थित छे, सर्व रत्नम य छे, अने इहां शिखरी नामे देवता वशेछे तेथी एनुं शिखरी एवुं शाश्वतुं नाम छे.

हवे ऐरवतक्षेत्रनी वक्तव्यता कहे छे.

उत्तरदिशिना लवणसमुद्रनी दक्षिण दिशे ऐरवत नामे क्षेत्र छे, एने विषे वुंग वृक्ष तथा कांटा जरतक्षेत्रनी पेरे घणा छे, तथा एनी बीजी पण सर्व वक्तव्यता जर तक्षेत्रनी पेरे जाणवी. परंतु एटलुं विशेष जे इहां ऐरवत नामे चक्रवर्त्ती जाणवो अ ने जरतक्षेत्रने विषे जरत नामे चक्रवर्त्ती कहेवो. तथा इहां ऐरवत नामे देवता वसे छे, तेथी एनुं ऐरवत एवुं शाश्वतुं नाम छे.

हवे ए जरत अने ऐरवत क्षेत्रने विषे कालचक्रनुं स्वरूप कहे छे.

जरत तथा ऐरवत क्षेत्रमांहे छ आरे करी अवसर्प्पिणी अने छ आरे करी उत्सर्प्पिणी रूप बार आरानुं कालचक्र छे. ते सदा काल अनादि अनंत पणे अनुक्रमे भ्रमण करे छे.

हवे ए बार आरानां नाम कहेछे. प्रथम सुखम सुखमा, बीजो सुखमा, त्रीजो सु खम डुखमा, चोथो डुखम सुखमा, पांचमो डुखमा, छठो डुखम डुखमा ए छ आरा छे, ते अवसर्प्पिणी कालनेविषे अनुक्रमे प्रथम सुखम सुखमाथी गणीये अने उत्सर्प्पिणी काले अवला गणीये एटले डुखम डुखमाथी धुर मांडी गणीए. एम बार आरा चडता प डता जाणवा. ए चक्रनी पेठे फिरता आवे माटे एने कालचक्र कहीए. एमां अवस र्प्पिणी ते घटतो घटतो काल जाणवो अने उत्सर्प्पिणी ते चढतो चढतो काल जाणवो.

हवे ए आराना कालनुं प्रमाण कहे छे. पहेलो आरो चार कोमाकोमी सागरनो, बी जो आरो त्रण कोमाकोमी सागरनो, त्रीजो आरो बे कोडाकोडी सागरनो, ए त्रण आ राने विषे अनुक्रमे करी मनुष्योनां आयुष्य कहे छेः—प्रथम आरे त्रण पल्योपमनुं, तथा बीजे आरे बे पल्योपमनुं, त्रीजे आरे एक पल्योपमनुं, ए रीते मनुष्यनुं आयुष्य जा णवुं. हवे शरीरनुं मान कहे छे. प्रथम आराने विषे त्रण कोश उंचा मनुष्यनां शरीर होय, अने बीजे आरे बे कोश, त्रीजे आरे एक कोश, ए शरीरनुं उंचपणुं जाणवुं.

हवे ए त्रण आराने विषे मनुष्योने जे आहारनी इछा थाय छे, ते कहेछेः—पहेला आ राने विषे चोथे दिवसे तुअर प्रमाणे आहारनी वांछा थाय, अने बीजे आरे त्रीजे दिवसे बोर प्रमाणे आहारनी वांछा थाय. तथा त्रीजे आरे एकांतरे आमला प्रमाणे आहारनी वांछा थाय. हवे शरीरने विषे पांसलीनी संख्या कहेछे. प्रथम आरामांहे बशेने छप्पन्न पिठकरंम एटले पांसली होय, अने बीजे आरे ते पूर्वोक्त पांसलीनुं अर्द्ध एटले एकशोने अठावीश पांसली होय, तथा त्रीजे आरे वली तेनुं अर्द्ध एटले चोशठ पांसली होय.

हवे ए त्रण आराने विषे अपत्य पालना कहेछे. प्रथम आराने विषे युगलने प्रसव्या पछी उंगणपचास दिवस सुधी अपत्य एटले छोरु युगल तेहनी प्रतिपालना करे, तथा

बीजे आरे चोशठ दिवस अपत्यपालना होय, अने त्रीजे आरे ओगणएंशी दिवससुधी अपत्यपालना जाणवी. तेवार पछी ते युगलनां मातपिता मरण पामे. ए त्रण आराने विषे निश्चये समस्त पंचेंद्री जीव ते सर्व युगलिया जाणवा. ते युगलिक केहेवा छे? तोके नला मनवाला एटले अल्प कषाय वाला, तथा रूपवंत तथा समचउरंस संस्थान वाला होय तेमाटे सुंदराकार छे, वली ते युगलिया मनुष्य तथा तिर्यंच ते सर्व पोताना आयुष्यथी ओछी आयुष्य प्रमाणे अथवा पोताना आयुष्य प्रमाणेज देवता मांहे जइ उपजे.

हवे ए त्रण आराने विषे युगलियाने मत्तंग प्रमुख दश जातिना कल्पवृक्ष छे ते पानक प्रमुख दश प्रकारना वांछित पदार्थ आपे, ते आवी रीतेः—प्रथम मत्तंग नामे कल्पवृक्ष ते वृक्ष खारेक प्रमुखना रस सरखा मीठा रस आपे, बीजो भृंगनामे कल्पवृक्ष ते थाली तथा वाटली तथा चरु अने कलश प्रमुख नाजन आपे. त्रीजो तुर्यांगनामे कल्पवृक्ष ते महा वाजित्र सहित बत्रीश बद्धनाटक देखाडे छे, चोथो ज्योतिरंगनामे जे कल्पवृक्ष छे ते रात्रिने विषे पण सूर्यनी पेरे प्रकाश करे छे, तथा पांचमो दीपांग नामे जे कल्पवृक्ष छे ते घरने विषे दीवानी परे अजुआलुं करे छे, तथा छठो चित्रांग नामे जे कल्पवृक्ष छे ते पंचवर्ण अने सुगंधिक फूल, सहस्रदल कमल, मालती प्रमुख आपे, तथा सातमो चित्ररसा नामे जे कल्पवृक्ष छे ते आहार एटले मनोवांछित मिष्टान्न षट्रस नोजन आपे, तथा आठमो मणितांग नामे जे कल्पवृक्ष छे, ते नूषण, आनरण, मुकुट, मुद्रिका, हार, कुंडल अने नेउर प्रमुख आपे. तथा नवमो गेहाकार नामे जे कल्पवृक्ष छे, ते सप्तनूमिना, पंच नूमिना तथा त्रिनूमिना मनोहर आवास आपे, तथा दशमो अनितांग नामे कल्पवृक्ष छे ते नलां वस्त्र तथा देवदुष्य चीर, वरपटकूलादि आसन बेसवा योग्य तथा नद्रासन शय्या प्रमुख आपे. ए दश जातिना कल्पवृक्ष ते ए पूर्वोक्त वांछित पदार्थ पूरे छे.

हवे सर्व आरानेविषे सामान्य पणे तिर्यंचनां पण आयुष्य कहे छे.

मनुष्यना आयुष्य सरखां गज, हाथी, सिंह अने अष्टापद प्रमुखनां आयुष्य होय. मनुष्यना आयुष्यनो चोथो नाग घोडा अने वेसर प्रमुखनुं आयुष्य जाणवुं. तथा गली, गाडर अने शीयाल प्रमुखनुं मनुष्यना आयुष्यने आठमे नागे आयुष्य जाणवुं. तथा गाय, नेंश, उंट अने गर्दन प्रमुखनुं आयुष्य ते मनुष्यना आयुष्यने पांचमे नागे जाणवुं. तथा कूतरा प्रमुखनां आयुष्य ते मनुष्यना आयुष्यने दशमे नागे छे. ए तिर्यंचनां आयुष्य प्रमुख प्राये सर्व आराने विषे ए प्रकारे सरखां होय. हवे त्रीजा आराने अंते नव कुलगर, राजनीति अने सर्व संसार व्यवहार तथा जिन धर्म आदि शब्दथी वादर अग्निकाय तथा ज्ञान विज्ञान प्रमुख सर्वनी उत्पत्ति थाय.

अवसर्प्पिणी त्रीजा आरानेविषे नेव्याशी पखवाडा पाछला जेवारे शेष रहे तेवारे पेहेला तीर्थंकर सिद्धिपद पामे अने चोथा आराना नेव्याशी पखवाडा पाछला जेवारे शेष रहे, तेवारे चोवीशमा तीर्थंकर सिद्धिपद पामे, अने उत्सर्प्पिणी कालना त्रीजा आराना नेव्याशी पखवाडा जेवारे जाय, तेवारे पहेला तीर्थंकर उपजे, तथा चोथा आराना नेव्याशी पखवाडा जेवारे जाय, तेवारे छेल्ला चोवीशमा तीर्थंकर उपजे.

हवे चोथा आरानुं स्वरूप कहे छे.

बेतालीश सहस्र वरसे ऊणो एक कोडाकोडी सागरोपमनो चोथो आरो होय, तेहने विषे मनुष्यनुं आयुष्य पूर्वकोडि वर्षनुं जाणवुं. अने शरीरनुं मान पांचशे धनुष्यनुं जाणवुं.

हवे पांचमा आरानुं स्वरूप कहे छे.

पांचमा आरानुं प्रमाण एकवीश सहस्र वरसनुं छे, ते पांचमा आरानेविषे सात हाथ ऊंचा मनुष्य होय, एकशोने त्रीश वरसनुं आयुष्य मनुष्यनुं होय, तथा पांचमा आराने अंते जिनधर्मादि पदार्थनो पण अंत एटले नाश थाय. व्यवहार, आचार,नीति,जाति, ए सर्वनो अंत आवशे. ए वात सिद्धांतमां कही छे. तथा केटला बोल विछेद जशे? ते कहे छे ॥गाथा॥ सुय सूरि संघ धम्मो, पुवण्हे छिज्जिही अगणि सायं ॥ निव विमलवाहणे सुहु, ममंति तद्धम्म मज्झण्हे ॥१॥ दुप्पसहो समणाणं, फग्गुसिरि होइ साहुणीणं च ॥ सड्ढो नाइल नामा, सच्चसिरि सावियाणं च ॥२॥ पुवाए सझाए, विछेउ होइ चरणधम्म स्स ॥ मज्झण्हे रायाणं. अवरण्हे जाइ तेयस्स ॥३॥इति॥ तेवार पछी शुं थशे? ते कहे छे. लवणादि खार तथा अग्नि अने कालकूटादिविष, तेनी वृष्टि तेणे करी पृथ्वी जे छे ते हाहाकार करशे तथा पक्षी जाति प्रमुखनां जे बीज छे, ते वैताढ्य प्रमुख पर्वतने विषे रहेशे तथा मनुष्य अने तिर्यंचना बीज छे, ते सर्व विलादि स्थानने विषे रहे छे.

हवे ते बिल वखाणे छे.

वैताढ्यना बे पासानेविषे ज्यां घणां माछलां छे, वली गाडानां चक्रनी धारा सरखो प्रवाह छे जेहनो एहवी गंगा अने सिंधु तथा रक्ता अने रक्तवती नामे जे नदी तेहना बे तटने विषे नव नव बिल ते गुफा सरखां जाणवा. एटले दक्षिणभरत मांहे बे नदीना चार तट छे. अने उत्तर भरतमांहे बे नदीना चार तट छे, सर्व मली आठ तट छे, ते एकेक तटे नव नव बिल गणिएं, तेवारे बहोतेर बिल थाय. एम ऐरवतने विषे पण बहोंतेर बिल छे, ते सर्व एकठा करीएं तो एकशोने चुम्मालीश बिल थाय.

हवे छठा आराने विषे मनुष्यादिकनुं जे स्वरूप छे, ते कहेछे.

एकवीश सहस्र वरस प्रमाणे पांचमा आरा सरखो जे छठो आरो छे, तेहनेविषे बे हाथ ऊंचा शरीर अने वीश वरस आयुष्यवालां एहवा मनुष्य होय, ते मनुष्य मत्स्यनां आ

हार करे तथा माठा रूपवालां होय वली निर्दय परिणाम वालां होय, बिलने विषे रहेनारां होय, वली नरक तिर्यंचरूप दुर्गतिने विषे गमन करनारां होय. वली लज्जा रहित होय, तथा वस्त्र रहित पशुनी पेठे नग्न फरे. तथा कठोरवचनना बोलनार होय, तथा ए पिता, ए पुत्र, ए स्त्री, ते ए बहेन, इत्यादि व्यवहार तेने न होय एटले तिर्यंचनी पेरे विवेकरहित होय. तथा ठ वरषनी स्त्री गर्भ धारण करे, ते पण अतिदुःखे प्रसव करे. वली ते स्त्रीयोने घणां ठोरु होय, एवी स्त्रीउं होय.

ए पूर्वोक्त ठ आरा तेणे करी अवसर्प्पिणी काल होय अने तेने विपरीत पणे अवला गणीएं तेवारे उत्सर्प्पिणीकाल थाय. त्यां अवसर्प्पिणी ते प्रथम आराथी घटतो काल होय अने उत्सर्प्पिणी ते प्रथम आराथी चढतो काल होय. ए अवसर्प्पिणी तथा उत्सर्प्पिणीना वार आराना कालचक्रनेविषे वीश कोडाकोडी सागरोपम थाय.

हवे शेष क्षेत्रने विषे आरानुं सरखापणुं कहे ठे.

देवकुरु अने उत्तरकुरु, ए बे क्षेत्रनेविषे अने हरिवर्ष तथा रम्यक् ए बे क्षेत्रनेविषे तथा हेमवंत अने हिरण्यवंत ए बे क्षेत्रनेविषे तथा पूर्वविदेह अने पश्चिमविदेह क्षेत्रनेविषे ए चार क्षेत्रना युगलनेविषे अनुक्रमे करी सदाकाले अवसर्प्पिणी कालना चार आरानो प्रथम काल जाणवो. ते केम के अवसर्प्पिणी कालनो पेहेलो आरो सुखमसुखमा ठे. तेहना धुरनो जेहवो काल होय तेहवो काल सदैव देवकुरु अने उत्तरकुरु, ए वे कुरु क्षेत्रनेविषे होय एम वीजा आरानो जेहवो प्रथम काल होय तेहवो सदैव हरिवर्ष तथा रम्यक् ए वे क्षेत्रनेविषे होय. वली त्रीजा आरानो जेहवो प्रथम काल होय, तेहवो सदैव हेमवंत तथा हिरण्यवंत ए वे क्षेत्रने विषे होय तथा चोथा आरानो जेवो प्रथम काल होय, तेवो काल महाविदेहक्षेत्रने विषे सदा जाणवो.

हवे चंद्रमा अने सूर्यनां चार क्षेत्र कहे ठे.

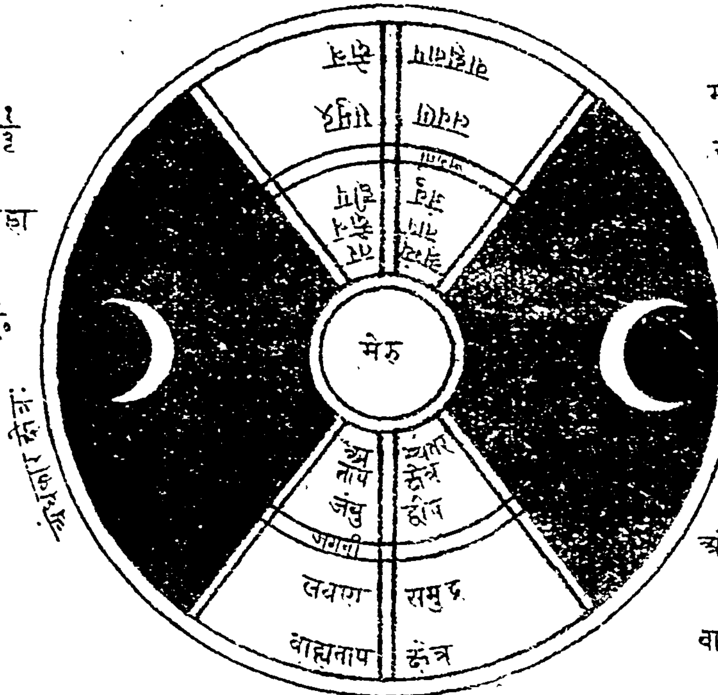
जंबूद्वीपने विषे वे चंद्रमा अने वे सूर्य ठे तेनुं दक्षिण अने उत्तर दिशिनुं जे गमनागमन तेनुं क्षेत्र पांचशे दश योजन उपर एक योजनना एकसठीआ अडतालीश भाग जाणवा.

हवे चंद्रमा अने सूर्यना मंडलनी संख्या अने प्रमाण कहे ठे. चंद्रमाना पंदर मांडलां ठे अने सूर्यना एकशोने चोराशी मांडलां ठे, ते एकयोजननां एकसठ भाग करिएं, तेवां ठपन्नभाग प्रमाण चंद्रनां मांडलां ठे, अने अडतालीशभाग प्रमाण सूर्यनां मांडलां ठे. ए चंद्र सूर्यना विमाने रोधन करेली भूमि तेने मंडल कहीएं, ते मंडलनी संख्यानी मंडलना आंतरा एकेके उंठा जाणवा, एटले चंद्रमाना मांडला पंदरना चउद आंतरा थाय. अने सूर्यना मांडला एकशोने चोराशीना आंतरा एकशोने त्र्याशी थाय.

तापक्षेत्रनुं लांबपणुं
जंबुद्वीपे ४५०००

लवणसमुद्रे ३३३३३। $\frac{१}{३}$

ताप क्षेत्र अभ्यंतर बाहा
६३२४। $\frac{६}{१०}$
बाह्यबाहा ९४८६८। $\frac{४}{१०}$

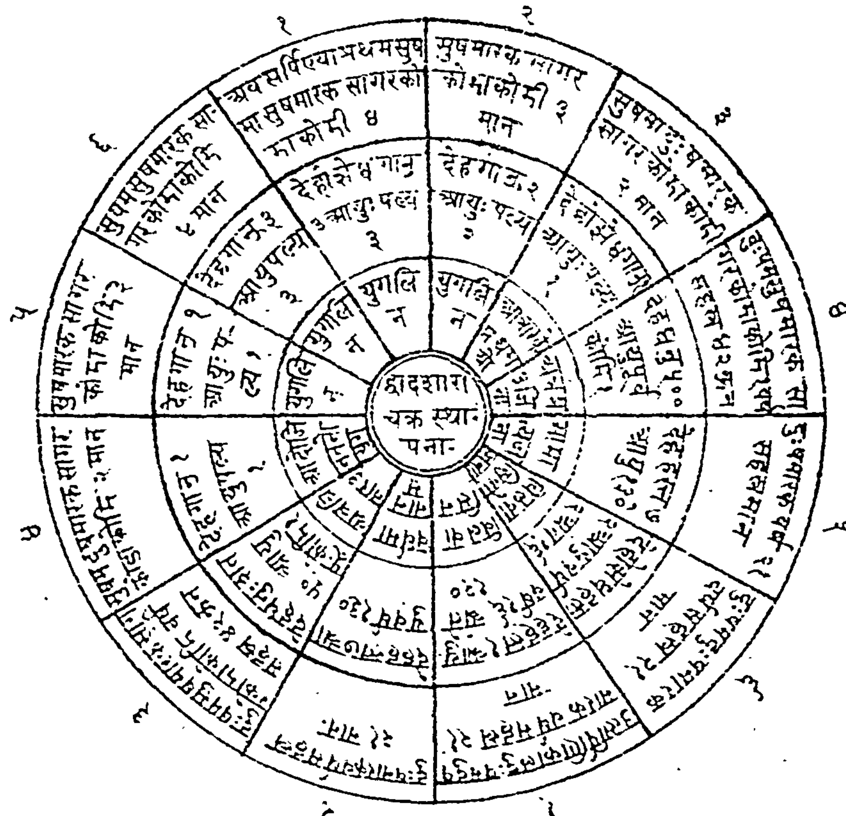


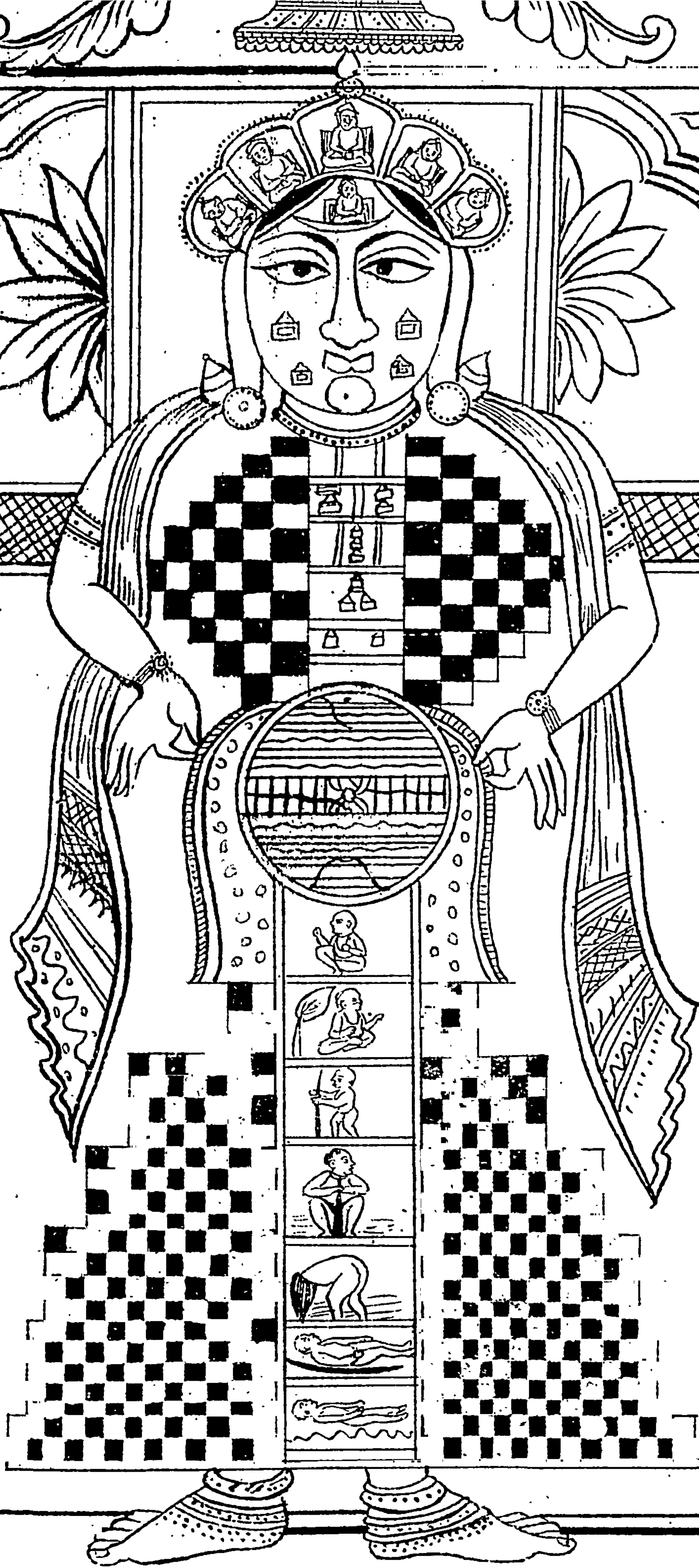
मकर संक्रांते प्रथम दिने
सर्व बाह्यमंडले सूर्यताप
क्षेत्रस्थिति
तथा
अंधकारक्षेत्रस्थिति
स्थापना.

दिनमान मुहूर्त १२
रात्रिमान मुहूर्त १८

अंधकारक्षेत्र अभ्यंतर बाहा
९४८६। $\frac{५}{१०}$
बाह्य बाहा ९४८६८। $\frac{४}{१०}$

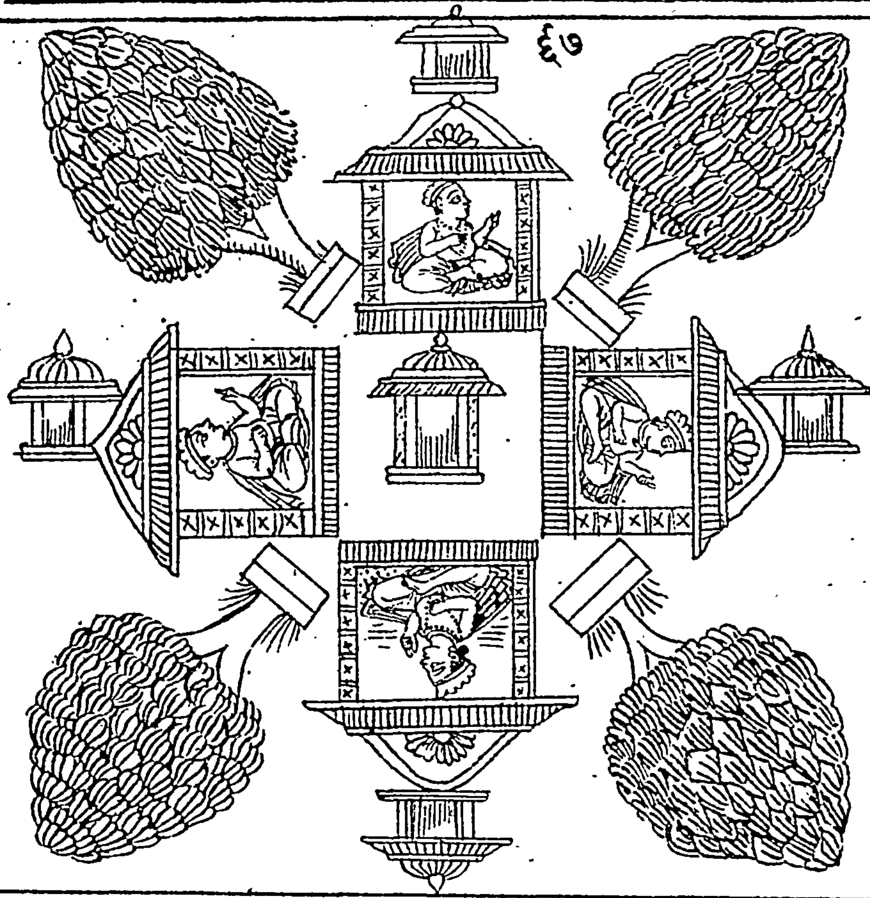
बार आरानी स्थापना.





चौदराजलोकनी स्थापना:
मनुष्याकारें

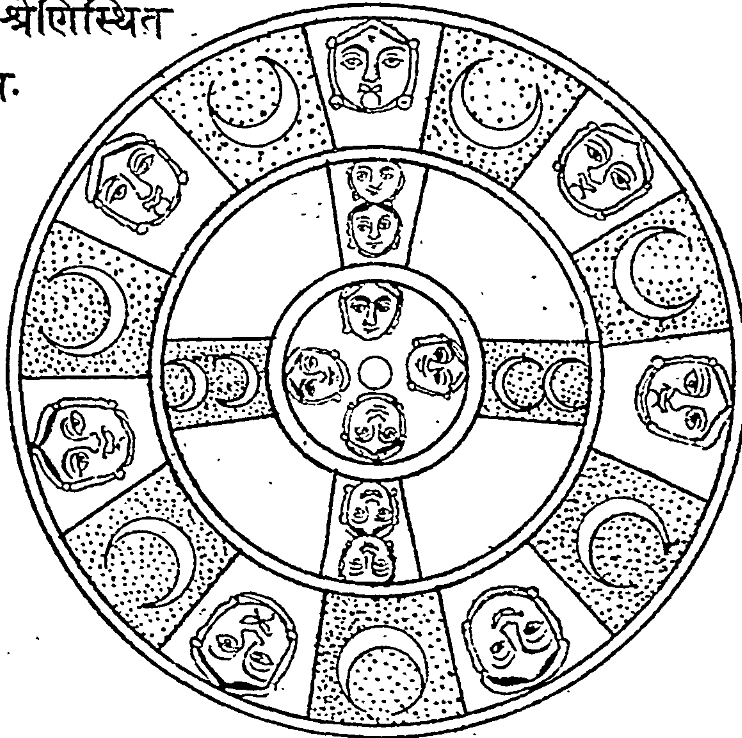
६७

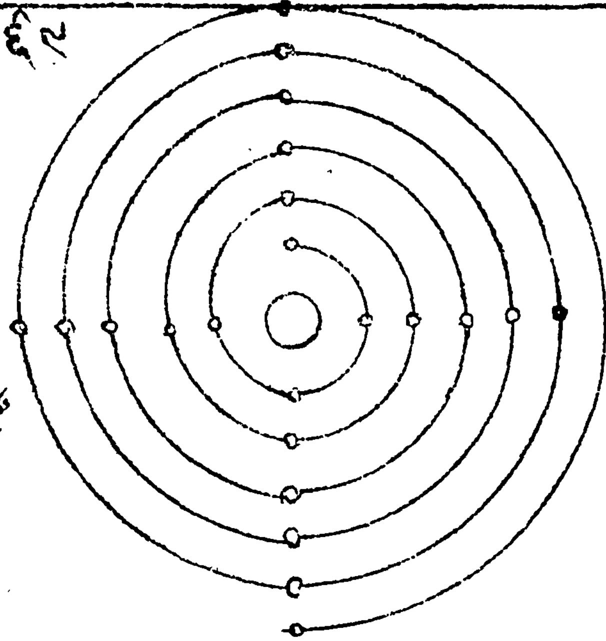


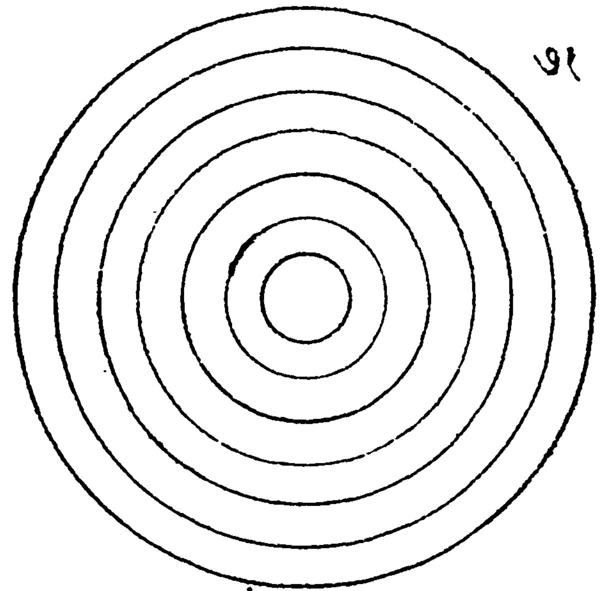
समुद्रवासी-चार देवतानी स्थापना.

मनुष्यक्षेत्रेसूचिश्रेणिस्थित
चंद्रसूर्यस्थापना.

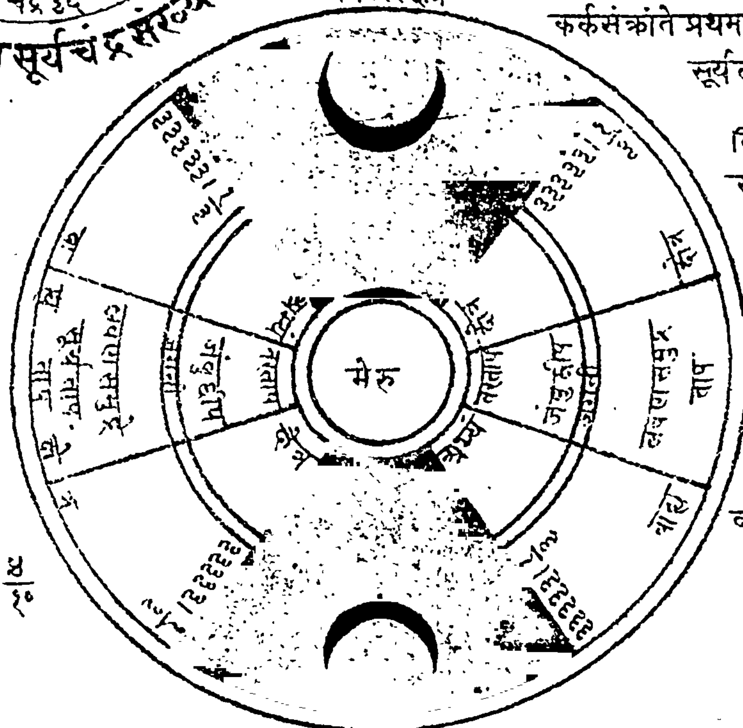
६८




६९
चंद्रसूर्य मंडल स्थापना


७१


७०
अढी द्वीपगत सूर्य चंद्र संख्या


अंधकारक्षेत्र
कर्कसंक्रांते प्रथम दिने सर्वाभ्यंतर मंडले
सूर्य तापक्षेत्र स्थापना
तापक्षेत्रनुं लांबपणुं-
जंबुद्वीपे ४५०००
लवणसमुद्रे ३३३३३। 1/3
आयां
दिनमान मुहूर्त १८
रात्रिमान मुहूर्त १२
मेरु
अंधकारक्षेत्र अभ्यंतर बाह्य
६३२४। 6/10
वाह्यबाहा ६३२४५. 6/10
तापक्षेत्र अभ्यंतर बाहा
९४८६। 9/10
बाहेरनी बाहा ९४८६८। 4/10
अंधकारक्षेत्र

हवे चंद्रमाना एक मंमलने वीजा मंडलनी वचमां अंतर कहे ले. पांत्रीश योजन उपर एकसठिआ त्रीश जाग, वली एकसठिआ एक जागना सात जाग करिएं तेवा चार जाग अधिक, एटलुं चंद्रमाना एक मंडलथी बीजा मंगलनी वचमां अंतरनुं प्रमाण जाणवुं. ते जाणवानी परें लखीएं लैयेः--चंद्रमंडल पंदर ले, ते एकेकानुं परिमाण जे एकसठिआ उप्पन्न जाग ले तेने पंदरमंडल साथे गुणीये तेवारे आठशे चालीश जाग थाय, तेने एकशठ जागे हरतां तेर योजन उपर एकसठिआ सुमतालीश जाग थाय, ते मूलगी जे चारना क्षेत्रनी राशि पांचशे दश योजन उपर एकसठिआ अडतालीश जागनी ले, ते मांहेथी बाद करतां बाकी चारशे सत्ताणुं योजन उपर एक जाग रहे, तेने चौद आंतरे वेहेंचीये तेवारे पांत्रीश योजन आवे. उपर सात योजन वधे, तेना एकसठिआ चारशेने सत्तावीश जाग थाय, तेनी साथें प्रथमनो उगस्यो एक जाग नेलीए, तेवारे चारशेने अठावीश जाग थाय, तेने चउद जागे वेहेचतां त्रीश जाग आवे, उपर आठ वधे, ते एकेकाना सात प्रतिजाग कल्पीएं तेवारे सात ने आठे गुणतां उप्पन्न थाय, तेने चउदे जाग देतां चार जाग लाजे, ए रीते चंद्रमाना मंडलनो आंतरो पांत्रीश योजन उपर एकसठिआ त्रीश जाग, तथाएकसठिआ एक जागना सात जाग करीएं तेवा चार जाग, जधिक थाय

हवे सूर्यमंमलनुं अंतर कहे ले. सूर्यमंडल एकशोने चोराशी ले. ते एकेकनुं परिमाण एकसठिआ अडतालीश जागनुं ले, अने चार क्षेत्रनुं परिमाण पांचशें दश योजन उपर एकसठिआ अमतालीश जाग ले, ते मांथी एकशोने चोराशी मंडलना परिमाणना एकसठिआ आठ हजार आठशेने वत्रीश जाग थाय, तेना योजन एकशो चुम्मालीश उपर एकसठिआ अडतालीश जाग आवे; ते उपली चार क्षेत्रनी राशिमांथी वाद करतां वाकी त्रणशे ने लासेठ योजन रहे ले, तेने एकसोने त्र्यासी अंतरे वेचतां वे योजन आवे तो एक सूर्यमंमल अने बीजा सूर्यमंडलनी वचमां अंतर वे योजननो ले

चंद्रमा तथा सूर्य जंबूद्वीपमांहे तथा लवण समुद्रमांहे केटला योजन आवे ? ते कहे लेः--जंबूद्वीपमांहे एकशोने एंशी योजन प्रमाण क्षेत्रने विषे पांच मंडल चंद्रमानां ले, अने पांसठ मंडल सूर्यनां ले, तथा लवण समुद्रमांहे त्रणसेंने त्रीश योजन प्रमाण क्षेत्रने विषे दश मंगल चंद्रमानां ले, अने एकशोने उंगणीश मंगल सूर्यनां ले, एटले एकसोने एंशी योजन चंद्रमा अने सूर्य जंबूद्वीपमांहे आवे, अने लवण समुद्रमांहें त्रणशेने त्रीश योजन चंद्रमा अने सूर्य जाय.

हवे चंद्रमानुं मंडल अने सूर्यनुं जे मंमल ले तेनुं परस्पर अंतर कहे ले. सर्व मंमल मांहेला मध्यना मंमलने विषे रहेलु जे चंद्रमंडल अने सूर्यमंमल तेनुं परस्पर अंतर नवाणुं हजार लशोने चालीश योजननुं सूर्यमंडल अने चंद्रमंडलनुं मांहोमांहे अं

तर जाणवुं. तदनंतर चंद्रमंडलोना प्रतिमंडलने विषे बहोंत्तेर योजन अने एक योजनना एकसठ भाग करिएं, तेवा बावन्न भाग उपर एवी अंतर वृद्धि छे, अने सूर्यमंडलोमां प्रतिमंडलने विषे पांच योजन अने एक योजनना एकसठ भाग करिएं, तेवा पांत्रीश भाग उपर, एटली अंतर वृद्धि छे. तेमज बाह्य मंडलने विषे रहेलुं जे चंद्रमंडल अने सूर्यमंडल, तेनुं परस्पर वचमां अंतर एक लक्ष छसेंने साठ योजननुं छे.

हवे चंद्रमाना प्रत्येक मंडलने विषे मुहुर्त्त गति कहे छे.

चंद्रमा जेवारे निषध पर्वतने माथे सर्वाभ्यंतर मंडले उगे, तेवारे एक मुहूर्त्तमांहे पांच हजार तहोंत्तेर योजन, अने ऊपर एक योजनना तेर हजार सातशोने पचीश भाग करीएं तेवा सीत्योतेरसोने चुम्मालीश भाग उपर एटली मुहूर्त्त गति करे. त्यार पछी जेवारे बीजे त्रीजे मांडले जाय तेवारे प्रतिमंडले पोणा चार योजननी वृद्धि करीएं. एम मंडल मंडलप्रत्ये मुहुर्त्त दीठ पोणा चार योजन वधारतां जेवारे पंदर मंडल सुधी मुहुर्त्त गतिएं चंद्रमा लवण समुद्रमांहे सर्व बाह्य मांडले उगे,तेवारे बावन योजने अधिक करिएं तो एकेक मुहुर्त्ते पांच हजार एकशोने पचीश योजन उपर एक योजनना तेर हजार सातशेंने पचीश भाग करीएं, तेवा छ हजार नवशेने नेवुं भाग अधिक जाणवी, एटली बाहेरने मंडले चंद्रमा एक मुहुर्त्तमांहे गति करे.

जे चंद्रमानी मांहेला मांडलानी मुहुर्त्तगति, पांच हजारने तहोत्तेर योजन झाझेरी कही तेज सर्वाभ्यंतर मांडले सूर्यनी गति छे, परंतु तेमांहे एकशोने अछोतेर योजन सहित करीएं एटली अधिक सूर्यनी मांहेले मंडले मुहुर्त्त गति जाणवी. एटले जेवारे पांच हजार तहोंत्तेर मांहे एकशोने अछोतेर भेलीएं. तेवारे पांच हजार बशेने एकावन्न योजन, अने एक योजनना साठ भाग करिएं, तेवा उंगणत्रीश भाग झाझेरी सूर्यनी गति जाणवी. अने चंद्रमानी बाहेरने मंडले जे मुहुर्त्त गति एकावनशोने पच्चिश योजन कही छे, तेमांहे एकसोने एंशी योजननी वृद्धि करिएं, तेवारे त्रेपनसेंने पांच योजन अने साठीआ पंदर भाग एटली बाहेरने मांडले सूर्यनी मुहुर्त्त गति जाणवी. कांइक उणा साठीआ अढार भाग एटला मांहेना मंडलथी बाहेरने मंडले आवतां प्रत्येक मंडलें सूर्यनी मुहुर्त्त गतिमांहे वृद्धि जाणवी.

हवे सूर्य उदय पामे त्यांथी केटले योजने अस्त थाय? ते कहे छेः—सूर्य जेवारे मांहेने मंडले उदय पामे, तेवारे चोराणुं हजार पांचशेने छव्वीस योजन उपर साठीआ बेतालीश भाग एटला योजनने आंतरे वेगलो सूर्य आथमे, तेवारे दिवस अढार मुहुर्त्तनो होय.

हवे मांहेथी बाहेर मंडले आवतां केटलो दिवस घटे, ते कहे छेः--मांहेना मंडल थकी बाहेर आवतां एकेका मंडल प्रत्यें एक मुहूर्त्तना एकसठ भाग करिएं, एवा बे भाग अ

ढार मुहूर्त्तना दिवसमांहेथी दिन प्रत्ये घटे एम घटाडतां छेहेले एकशोने चोराशीमे मंडले जेवारे सूर्य आवे, तेवारे दिवस, बार मुहूर्त्तनो होय, अने रात्रि तो ते दिवस थकी विपरीत जाणवी. ते केम? के जेवारे दिवस बार मुहूर्त्तनो होय तेवारे रात्रि अढार मुहूर्त्तनी कर्कसंक्रांतिथी मकर संक्रांति सुधी जाणवी, अने जेवारे मांहेना मंडलथी सूर्य बाहेर आवे, तेवारे दिवसमांहे मुहूर्त्तना एकसठीआ बे भाग घटे, अने जेवारे मकर संक्रांतिथकी धुर मांडीने बाहेरना मंडलथी मांहे आवे, तेवारे मुहूर्त्तना एकसठीआ बे भाग दिवसमांहे वधे, अने रात्रिने विषे घटे, ते विपरीत जाणवुं.

हवे सूर्य बाहेर मांडले आवे, तेवारे उदय अस्तनुं अंतर कहे छेः–सूर्य जेवारे बाहेरने एकशोने चोराशीमे मांडले आवे तेवारे त्रेशठ हजार छशेंने त्रेशठ योजन वेगलो अस्त थाय, कर्कसंक्रांतिथी धुर मांडीने मकर संक्रांति सुधी एकसोने अडशठ योजन प्रति मंडले उंची गति करे. तथा एक चंद्रमाने परिवारे अभिजित् प्रमुख अठावीश नक्षत्र अने अंगारक प्रमुख अठाशी ग्रह जाणवा.

हवे एक चंद्रमानी पछवाडे तारानी संख्या कहे छेः–छाशठ हजार नवसेंने पंचोत्तेर कोडाकोडी एटला तारा एक चंद्रमानी पछवाडे जाणवा. ए ताराना बाहुल्यपणा थकी क्षेत्र थोडुं छे, माटे कोइक आचार्य कोडाकोडीने संज्ञांतर एटले कोडीनुं बीजुं नाम कहे छे, अथवा उत्सेधांगुले जेवारे तारानां विमान लेखवीएं, तेवारे कोडाकोडीनो संभव होय, पछी निश्चयनी वात ज्ञानवंत जाणे.

हवे ग्रहादिकनी संख्या जाणवानुं करण कहेछेः–ग्रह, नक्षत्र अने तारा ए त्रणनी संख्या, एक चंदा आश्री जे कही, ते जे द्वीप समुद्रनेविषे जेटला चंद्रमानी संख्या होय तेटला चंद्रमानी साथे गुणाकार करिएं, एम करतां जे ग्रहादिक संख्या आवे, तेटलो परिवार जाणवो. ए रीते वांछित द्वीप समुद्रने विषे ए ग्रहादिकनुं प्रमाण जाणीये.

हवे लवण समुद्र प्रमुखने विषे चंद्र सूर्यनी संख्या कहे छे. लवण समुद्रने विषे चार चंद्रमा अने चार सूर्य जाणवा तथा धातकी खंडने विषे बार चंद्रमा अने बार सूर्य जाणवा. तेवार पछी कालोद समुद्र तथा पुष्करवर द्वीप प्रमुखने विषे पूर्वे जे कह्या छे तेणे सहित त्रिगुण जाणवा, ते केम के धातकी खंडने विषे बार चंद्र तथा बार सूर्य कह्या छे, तेने त्रिगुणा करिएं, तेवारे छत्रीश थाय. तेमांहे पहेला जंबूद्वीपना बे अने लवण समुद्रना चार, एवं छ भेलीएं, तेवारे बेतालीश सूर्य अने बेतालीश चंद्र कालोद समुद्रने विषे थाय, हवे ए बेतालीशने त्रिगुणा करिएं, तेवारे एकशोने छवीश थाय. तेनी साथे पूर्वोक्त बे, चार अने बार, एवं अढार भेलीएं, तेवारे एकशोने चुम्मालीश चंद्र अने एक

शोने चुम्मालीश सूर्य, पुष्करवर द्वीपने वीषे थाय छे, तेनुं अर्द्ध करीये, तेवारे बहोंत्तेर सूर्य अने बहोंत्तेर चंद्र पुष्करवर द्वीपना अर्द्धनेवीषे जाणवा.

हवे चंद्र,सूर्य,ग्रह अने नक्षत्र ज्यां सुधी अढीद्वीप छे त्यां सुधी यावत् समश्रेणीएं चाले छे, ते सर्वे शीघ्र शीघ्रतर गति वाला छे, एटले चंद्रमाथकी सूर्यनी गति उतावली छे. सूर्यथकी ग्रहनी गति उतावली छे, ग्रहथकी नक्षत्रनी गति उतावली छे, ते चंद्र सूर्यादिकना क्षेत्रना प्रमाणथकी केटला वेगला मनुष्यनी दृष्टि गोचर आवे, ते कहे छे. एकवीश लाख चोत्रीश हजार पांचशेने साडत्रीश योजन प्रमाण क्षेत्रथी पुष्करार्द्ध द्वीपना मनुष्य ते पूर्वदिशि उदय पामता अने पश्चिमदिशि अस्त पामता एवा सूर्य चंद्रमा प्रत्ये देखे छे, एटले त्यां तेटला क्षेत्रना वेगला विस्तारथकी देखे छे.

हवे मनुष्य क्षेत्रथकी बाहेर चंद्र सूर्यनो विचार कहेछेः—मनुष्य क्षेत्रथकी बाहेर चंद्र सूर्यनी संख्या प्रथम कही छे, तेमज होय. अथवा बीजुं करण पण होय, ते उपाय शास्त्रांतरथकी जाणवो. पण संघयणी प्रमुख ग्रंथने वषे पूर्वोक्त करण वध आदर्युं छे, तथा मनुष्य क्षेत्रथी बाहेर जे ज्योतिषी चंद्र सूर्यादिक छे, ते अचल एटले स्थिर जाणवा. अने मनुष्य क्षेत्रना चंद्र सूर्यना विमानथी तेमना विमान अर्द्ध प्रमाणे जाणवा.

ते पाकी इंटने संस्थाने रह्या छे, जेम पाकी इंट पोहोल पणाथी लांब पणे बमणी होय अने चोरस होय तेम मनुष्य क्षेत्रथी बाहेरला चंद्रसूर्यनां तापक्षेत्र पच्चाश हजार योजन पोहोलपणे अने एक लक्ष योजन लांब पणे होय, तथा मनुष्य क्षेत्रनी पेरे तिहां चंद्रमानुं अत्यंत शीतल तेज न होय अने सूर्यनुं अत्यंत उष्ण तेज पण न होय परंतु सम तेजवंत होय ॥ इति ॥

॥ हवे परिधि प्रमुख आठ बोल कहे छे.

॥ एक तो जंबुद्वीपनी पेठे वाटला क्षेत्रने परिधि कहीये; बीजुं वृत्त क्षेत्रनां जे योजन प्रमाण समचउरंस खंड करीये, तेने गणितपद कहीये, त्रीजुं छेहेला खंडादिकनुं जे बाण करीये तेने इक्षु कहीये, चोथुं धनुष्यने आकारे जरत वैताढ्य प्रमुखनी जे पणछ तेने जीवा कहीये, पांचमुं अर्द्ध चंद्रमाने आकारे जरत प्रमुख जे क्षेत्र छे, तेना पुंठना जागने धनुःपृष्ठ कहीये; छठुं वैताढ्य प्रमुख पर्वत तथा क्षेत्र प्रमुखना छेहडानुं जे परिमाण करवुं तेने बाह कहीये, सातमुं जिहां लांबपणुं तथा पोहोल पणुं सरखुं होय, तेने प्रतर कहीये, आठमुं जिहां लांबपणुं, पोहोलपणुं अने जाडपणुं, ए त्रणे सरखां होय, तेने घन कहीये ए आठ बोल कह्या ॥

तिहां प्रथम परिधि संबंधि गणित जाणवानो विधि कहे छे.

जे गोल थालीना आकारे पदार्थ होय, तेना मध्यनो विस्तार जो दश योजन होय तो ते पदार्थ गोलाकारे फरतो केटला योजन थाय? एवी रीतनुं जे गणित करवुं, तेने परिधि कहिये, ते परिधि करवानो विधि एक जंबूद्वीपना गणिते करी देखाडीये छैये. तेवीज रीते जे जे स्थानके परिधि करवो पडे, ते सर्वत्र स्थानके एमज करवुं.

जंबूद्वीपनो विष्कंभ एटले मध्य विस्तार एक लाख योजननो छे, तेनो वर्ग करीये एटले ते आंकने तद्गुणो करीये अर्थात् लाखने लाख गुणो करीये तेवारे (१००००००००००) दश अब्ज थाय, ते आंकने वली दश गुणो करीये, एटले ए वर्गना आंकने आगले एक शून्य आपीये तेवारे दश गुणो थाय, ते आंक (१०००००००००००० संख्याये एकशो अवज अर्थात् एक खर्व थाय, हवे ए आंकनुं मूल शोधीये ते जेम बशेने छपन्ननुं मूल शोधीये तो शोल शोले बे छपन्ना एटले शोलनो अंक थाय अथवा दश हजारनुं मूल एकशो थाय अथवा छशेने पच्चीशनुं मूल पच्ची पच्चीराम छ पच्ची सां ए रीते मूलनो अंक पच्चीश थाय, तेम इहां एक खर्वनी संख्यानो जे उपरलो आंक छे, तेनुं मूल शोधीये, तो केटलुं थाय? तेनी रीत देखाडे छे.

उपरला एक खर्वना आंकनो पहेलो आदिनो आंक जे एकडो छे, तेने धुरनो आं क कहिये अने छहेली शून्य छे तेने छहेलो आंक कहिये, ते छहेला आंक थकी विष म सम करतां धुरना आंक सुधी आवीये तिहां विषम ते । उभी लीटी करवी, अने सम ते–आवी आडी लीटी करवी. ते आ प्रमाणेः–१०००००००००००० आ प्रमाणे विषम सम कर्या पछी जो धुरना आंके विषम एटले (।) आवी उभी लीटी आवे तो धुरनो एकलोज आंक तेने वर्गना आंक साथे शोधीये, अने जो धुरनां आंके सम एटले (–) आवी आडी लीटी आवे, तो धुरना बे आंकने वर्गने आंके शोधीये, तो आ ठेकाणे धुरना आंके (–) आ प्रकारनी सम लीटी आवेली छे, माटे एक धुरनो आंक एकडो छे, अने तेनी पासे बीजो आंक शून्यनो छे, तेथी एक एकडो अने बी जो शून्य ए बे आंकने वर्गना आंक साथे शोधवुं ते आवी रीतेः–

एकडो अने शुन्य मली दशनो आंक थयो, तेने शोधीये तेवारे त्रण त्रिक नव जा य, शेष एकनो आंक रहे ते एकना आंक उपर वली उपरनी राशि मांहेली बे शुन्य चडावीये, तेवारे फरी (१००) नो आंक थाय अने उपरलो जे एक एकडो अने अगीआर शुन्य मली बार आंकनी राशि छे, ते मांहेलो एक एकडो अने त्रण शुन्य मली चार आंक गया बाकी ते राशिमांहेली मात्र आठ शुन्य रही.

हवे एकसोना (१००) आंकने भागवानो विधि कहे छे. पूर्वे जे वर्गनो आंक त्रणनो आव्यो छे, तेने एक बाजु स्थापन करी मूकेलो छे ते आंकने बमणो करीये तेवारे छनो आंकडो थाय, ते छना आंक साथे उपरला एकशोनां आंकने शोधीये तेवारे छ एकां छ अने एकनो भाग आव्यो माटे छनी नीचे वली एकेकां एकनो आंक चांपी मूकीये तेवारे (६१) एकशठनो आंक थाय, ते उपरली एकशोनी राशिमांथी बाद करीयें तेवारे शेष (३९) उंगणचालीशनो आंक रहे, अने वर्गना मूलनो आंक जे पूर्वे त्रणनो हतो, तेनी नीचे एकडो मूकाणो, तेवारे एकत्रीशनो आंक थयो.

हवे शेष उंगणचालीनो आंक वध्यो छे, तेनी नीचे उपरली महोटी राशि मांहेला जे आठ शुन्य शेष रहेला छे, तेमांथी बे शुन्य लहीयें तेवारे (३९००) नो आंक थाय. अने महोटी राशि मांहेली शेष छ शुन्यो रहे.

पछी वर्गनो जे एकत्रीशनो आंक छे, तेने बमणो करीये तेवारे बाशठनो आंक थाय ते बाशठना आंक साथे पूर्वोक्त (३९००) ना आंकने शोधीये, तेवारे बाशठ छक्कां ३७२ थाय. अने वली छनो भाग आव्यो छे, माटे छ छकां छत्रीशनो आंक नीचे चांपी मूकीये तेवारे ३७५६ नो आंक थाय, तेने (३९००) नां आंकमांथी बाद करीये तेवारे बाकी १४४ वधे अने वर्गना मूलनो आंक जे पूर्वे ३१ नो हतो, तेनी नीचे हमणानी शोधनो छगडो मूकीये तेवारे ३१६ नो आंक थाय.

हवे शेष जे १४४ नो आंक वध्यो छे, तेनी नीचे वली उपरली महोटी राशि मांहेली छ शुन्यो शेष रहेली छे, तेमांथी बे शुन्य लही मांडीये तेवारे (१४४००) नो आंक थाय, अने महोटी राशि मांहेली शेष चार शुन्यो रहे.

पछी वर्गनो आंक ३१६ नो छे, तेने बमणो करतां ६३२ नो आंक थाय, तेनी साथे १४४०० ना आंकने शोधीये, तेवारे (६३२) दु १२६४ अने वली बेनो भाग आव्यो माटे दुए दुए चारनो आंक थाय, तेने १२६४ ना आंकनी नीचे चांपी मांडीये, तेवारे १२६४४ नो आंक थाय, ते १४४०० ना आंकमांथी बाद करीये, तेवारे बाकी १७५६ नो आंक वधे, अने वर्गना मूलनो आंक प्रथम ३१६ नो हतो, तेनी नीचे बगडो मूकीये तेवारे ३१६२ नो आंक थाय.

हवे जे शेष १७५६ नो आंक वध्यो छे, तेनी नीचे उपरली महोटी राशि मांहेली जे चार शुन्यो शेष रहेली छे, तेमांथी बे शुन्य लहीये, तेवारे १७५६०० नो आंक थाय अने महोटी राशि मांहेली शेष बे शुन्यो रहे.

पछी वर्गनो आंक ३१६२ छे, तेने बमणो करीये तेवारे ६३२४ नो आंक थाय, ते

आंकनी साथे १७५६०० ना आंकने शोधिये, तेवारे ६३२४ ढु १२६४८ थाय, अने वली वेनो भाग आव्यो माटे ढुए ढुए चारनो आंक थाय. तेने १२६४८ ना आंकनी नीचे चांपी मांडीये, तेवारे १२६४७४ नो आंक थाय. ते १७५६०० ना आंकमांथी वाद करीये तेवारे वाकी ४९११६ नो आंक वधे, अने वर्गना मूलनो आंक प्रथम ३१६२ नो हतो तेनी नीचे वगडो लखीये, तेवारे ३१ ६२२ नो आंक थाय.

हवे शेष जे ४९११६ नो आंक वध्यो छे तेनी नीचे उपरली महोटी राशि मांहेली जे वे शुन्यो शेष रहेली छे, ते लहिये तेवारे ४९११६०० नो आंक थाय, अने महो टी राशिमांहेली शेषरहेली शुन्यो सर्वे खपी गइ.

पछी वर्गना मूलनो जे ३१६२२ नो आंक छे, तेने पूर्वली रीते द्विगुणो करीये, तेवा रे ६३२४४ नो आंक थाय. ते आंकनी साथे ४९११६०० नां आंकने शोधीये, ते आवी रीते के ६३२४४ सातां ४४२७०८ थाय, अने वली सातनो भाग आव्यो माटे सातने सात गुणा करीये तो सतियो सतियो ओगणपचाशनो आंक थाय, ते ४४२७०८ ना आंकनी नीचे चांपी मांडीये, तेवारे ४४२७१२९ नो आंक थाय, ते ४९११६०० ना आंकमांथी वाद करीये, तेवारे वाकी ४८४४७१ नो आंक वधे, अने वर्गमूलनो प्रथम ३१६२२ नो आंकहतो तेनी नीचे सातडानो आंक लखीये. तेवारे ३१६२२७नो आंक थाय हवे शेष जे ४८४४७१ नो आंक वध्यो छे, तेनी आगल आंक वधारवा माटे महोटी राशिमांहेली शेष कोइ आंकनी संख्या रही नथी. तेमज वर्ग मूलना आंकनी राशि जे ३१६२२७ नी छे, तेने द्विगुणा करीये तो ६३२४५४ नो आंक थाय, तेनी साथे शो धवामांडीये तो शोधाय पण नही कोइ भाग पोहोंचे नही. तेमाटे ए योजननी राशि ना एकेका योजनना चार चार कोश करी नाखीये तेंवारे १९३७८८४ कोश थाय. तेने वर्गमूलनी जे वमणी करेली ६३२४५४ ना आंकनी राशि छे, तेणे करी भाग आपीये तेवारे १८९७३६२ नी संख्यामां त्रण गाउ आवे. शेष ४०५२२ गाउ वधे अने मूलना आंकनी संख्या३१६२२७ योजननी उपर त्रण गाउनी थाय.

हवे शेष रहेला ४०५२२ गव्यूतिनी संख्याने पण ६३२४५४ नां आंकनी राशिनो भाग पहोंचे नही माटे ए प्रत्येक गाउना वे हजार धनुष्य प्रमाणे ८१०४४००० धनुष्यनी संख्या करीने तेने ६३२४५४ नो भाग आपतां ८०९५४११२ नी संख्यामां १२८ धनु ष्य आवे शेष ८९८८८ धनुष्यनी संख्या वधे, अने मूलनी राशि ३१६२२७ योजननी उपर त्रण गाउ तथां १२८ धनुष्य एटली थाय

हवे ८९८८८ धनुष्यनी संख्याना अंगुल करावा सारु एक धनुष्यना ९६ आंगुले गु

णीये, तेवारे ૮૬૨૯૨૪૮ अंगुलनी संख्या थाय तेने ૬૩૨૪૫૪ ने भाग देतां ૮૫૩૮૧૨૯ नी संख्यामां ૧૩॥ अंगुल आवे, शेष ૯૧૧૧૯ अंगुल वधे अने मूलनी राशि ૩૧૬૨૨૭ योजन, त्रण गाउ, ૧૨૮ धनुष्यनी उपर साडातेर अंगुल थाय.

हवे शेष ૯૧૧૧૯ अंगुल वध्या छे, ते प्रत्येक अंगुलना आठ यव थाय छे माटे एने आठे गुणीये तेवारे ૭૨૮૯૫૨ यव थाय, तेने ૬૩૨૪૫૪ नो भाग देतां एक यव आवे, शेष ૯૬૪૯૮ नो आंक वधे अने मूल राशिनो आंक ૩૧૬૨૨૭ योजन, त्रण गाउ ૧૨૮ धनुष्य, साडातेर अंगुलनी उपर एक यव थाय.

हवे शेष ૯૬૪૯૮ यवनो आंक रह्यो छे, ते प्रत्येक यवनो आठ युका (जू) करतां ૭૭૧૯૮૪ युका थाय तेने ૬૩૨૪૫૪ ने भांजतां एक युका आवे, शेष ૧૩૯૫૩૦ युका वधे, तेने वली आठे गुणीये तेवारे ૧૧૧૬૨૪૦ लीख थाय तेने ૬૩૨૪૫૪ नो भाग देतां एक लीख आवे शेष ૪૮૩૭૮૬ लीख उगरे ते प्रत्येक लीखने आठ वालाग्रे गुणतां ૩૮૭૦૨૮૮ एटला वाल थाय, तेने ૬૩૨૪૫૪ नो भाग देतां ૩૭૯૪૭૨૪ ना आंकमां छ वाल आवे, शेष ૭૫૫૬૪ वाल वधे, फरी एक वालाग्रना आठ रथरेणु थाय माटे एने आठे गुणतां ૬૦૪૫૧૨ एटला रथरेणु थाय तेने भाग पहोंचे नही माटे एक रथ रेणुना आठ त्रसरेणु थाय छे तेथी त्रसरेणु करवा सारु उपली राशिने आठे गुणीये तेवारे ૪૮૩૬૦૯૬ त्रसरेणुनी संख्या थाय तेने पूर्वोक्त ૬૩૨૪૫૪ ने भाग देतां ૪૪ ૨૭૧૭૮ नी संख्यामां सात त्रसरेणु आवे. शेष ૪૦૮૯૧૮ त्रसरेणु वधे ते एक त्रसरेणुने विषे आठ व्यवहारिक बादर परमाणुआ थाय छे, माटे ए राशिने आठे गुणतां ૩૨૭૧૩૪૪ एटला बादर एटले व्यवहारिक परमाणु थाय. तेने ૬૩૨૪૫૪ नो भाग देतां ૩૧૬૨૨૭૦ ना आंकमां पांच बादर परमाणुआ आवे, शेष ૧૦૯૦૭૪ एटला बादर परमाणुआ वधे ए जेवारे अनंता सूक्ष्म परमाणु विस्रसा परिणामे मली एकठा थाय ते एक बादर परमाणु कहेवाय छे, माटे अनंताने भाग कोइ पोहोंचे नही तेथी शेष ૧૦૯૦૭૪ बादर परमाणुने ૧૭૪ गुणा करीये तेवारे ૧૮૯૭૮૮૭૬ एटला एक बादर परमाणुना ૧૭૪ भाग करीये तेवा भाग थाय तेमांथी त्रीश भागमां ૧૮૯૭૩૬૨૦ खंड जाय ते बाद करीये, तो शेष ૫૨૫૬ एटला एक परमाणुना ૧૭૪ भाग वाला बादर परमाणुना कटकावधे. ते प्रत्येक खंडना वली ૬૩૨૪૫૪ कटका करीये, तो तेवा ૫૨૫૬ कटका उपर आवे एटलो जंबूद्वीपनो परिधि जाणवो, एटले ૩૧૬૨૨૭ योजन, त्रण गाउ, ૧૨૮ धनुष्य, साडातेर अंगुल, एक यव, एक यूका, एक लीख, छ वालाग्र अने रथरेणु बिल कुल नही परंतु सात त्रसरेणु, पांच बादर परमाणु, तथा एक

वादर परमाणुना १७४ न्नाग करीये तेवा त्रीश न्नाग, तथा ते १७४ न्नाग मांहेला एके काना ६३२४५४ न्नाग करीये तेवा(५२५६) न्नाग उपर एटलो जंबूद्वीपनो परिधि जाणवो.

हवे उपर लख्या मुजवनी हकीगत सर्वे नीचे अंके करी टांकी देखाडीये छैये.

१००००० एक लाख योजननो जंबूद्वीपनो विष्कंन्न छे.

१००००० एनो वर्ग करवा सारुं लाखने लाख गुणो करीये.

१०००००००००० लाखने लाखे गुणतां दश अब्जनी संख्या थइ.

१० उपला आंकने दश गुणवा सारु दशना आंके गुणीये.

१००००००००००० दश गुणो करतां एकशो अब्ज एटले एक खर्वनी संख्या थइ.

१००००००००००० ए उपरनी राशिने विषम सम आवी रीते करवो. विषम ते उन्नी लीटी करवी, अने सम ते आडी लीटी करवी. हवे ए विषम सम करेली राशिमांथी मूल शोधवानी रीत देखाडे छे.

१० प्रथम दशनो आंक उपली राशिमांथी लीधो.वाकी दश शुन्य रही.

९ –३ दशमांथी त्रणत्रिक नव गया वाकी एक रह्यो.

(६) १०० –१ एक रह्यो तेनी नीचे शेष रहेली दश शुन्य मांहेली वे लीधी.

६ पछी त्रणने वमणा करी छनो न्नाग आपतां छ एकां छ थया.

१ १ न्नाग आव्यो, माटे एकेकां एकना आंकने छनी नीचे चांपी मांड्यो.

६१ छनां आंकनी नीचे एकडो चांपी मांडतां एकशठ थया.

३९ ६१ नो आंक उपरला एकशोमांथी वाद करतां वाकी ३९ रह्या.

(६२) ३९०० (६ वाकी रहेला उगणचालीशनी नीचे उपरली राशिमांहेली शेष रहेली आठ शुन्यमांथी वे शुन्य लीधी तेवारे ३९०० थया.

मूलमां त्रणने नीजे एकडो मांडतां एकत्रीश थया तेने वमणां.

३७२ करी वाशठनो न्नाग आपतां वाशठ छकां ३७२ थया.

३६ छनो न्नाग आव्यो माटे छ छक छत्रीशनो आंक नीचे चांपी मांड्यो.

३७५६ छत्रीशनां आंकने नीचे चांपी मांडतां सरवालानी संख्या थइ.

१४४ ते उपरलां ३९०० ना आंकमांथी वाद करतां वाकी १४४ वध्या.

(६३२)१४४००(२) वधेला १४४ नी नीचे शेष रहेली छ शुन्यमांथी वे शुन्य लीधी.

१२६४ ३१६ ने वमणा करी ६३२ नो न्नाग आपतां ६३२ड१२६४ थया.

४ वेनो न्नाग आव्यो माटे डुए डुए ४ नो आंक नीचे चांपी मांड्यो.

१२६४४ चारना आंकने नीचे चांपी मांडतां सरवालानी संख्या थइ.

૧૭૫૬	ઉપરના આંકમાંથી બાદ કરતાં બાકી ૧૭૫૬ વધ્યા.
(૬૩૨૪)૧૭૫૬૦૦(૨	વધેલા ૧૭૫૬ ની ઉપર શેષની ૪ શુન્યમાં બે શુન્ય લીધી. મૂલ શોધવા માટે ૩૧૬૨ ને બમણા કરી ૬૩૨૪ નો ભાગ.
૧૨૬૪૮	આપતાં ૬૩૨૪ દુ ૧૨૬૪૮ થયા.
૪	બેનો ભાગ આવ્યો માટે દુએ દુએ ૪ નો આંક નીચે ચાંપી માંડ્યો.
૧૨૬૪૮૪	ચારના આંકને નીચે ચાંપી માંડતાં સરવાલાની સંખ્યા થઇ.
૪૯૧૧૬	ઉપરલા આંકમાંથી બાદ કરતાં બાકી વધ્યા ૪૯૧૧૬.
૬૩૨૪૪(૪૯૧૧૬૦૦(૭	બાકી વધેલા ૪૯૧૧૬ ઉપર શેષ બેશુન્ય રહી હતી તે લીધી. મૂલ શોધવા માટે ૩૧૬૨૨ ના આંકને બમણાકરતાં ૬૩૨૪૪ થયા.
૪૪૨૭૦૮	તેનો ભાગ આપતાં ૬૩૨૪૪ સાતાં ૪૪૨૭૦૮ થયા.
૪૯	સાતનો ભાગ આવ્યો માટે સાતું સતિયાં ૪૯ ના આંકને નીચે ચાંપી માંડ્યો.
૪૪૨૭૧૨૯	ઓગણપચાસના આંકને ચાંપી માંડતાં સરવાલાની સંખ્યા થઇ.
૪૮૪૪૭૧	ઉપરલા ૪૯૧૧૬૦૦ ના આંકમાંથી બાદ કરતાં બાકી વધ્યા.
૪	ઉપલા યોજનનાં કોશ કરવાને અર્થે ચારનાં આંક સાથે ગુણીયે.
૬૩૨૪૫૪)૧૯૩૭૮૮૪(૩	ચારે ગુણતાં કોશની સંખ્યા થઇ.
૧૮૯૭૩૬૨	મૂલ શોધવા માટે ૩૧૬૨૨૭ નો આંક આવ્યો છે. તેને બમણો કરતાં ૬૩૨૪૫૪ થાય એ આંકે ભાગ આપતાં ત્રણ ગાઉમાં ૧૮૯૭૩૬૨ ગાઉ નો આંક ગયો-
૪૦૫૨૨	એટલો આંક બાકી ગાઉની રાશિમાંથી વધ્યો.
૨૦૦૦	એના ધનુષ્ય કરવા સારું બે હજારના આંક સાથે ગુણવો.
૬૩૨૪૫૪)૮૧૦૪૪૦૦૦	બે હજારનાં આંક સાથે ગુણતાં ૮૧૦૪૪૦૦૦ થયા.
૮૦૯૫૪૧૧૨)	૬૩૨૪૫૪ ને ભાગ દેતાં ૧૨૮ ધનુષ્યમાં ૮૦૯૫૪૧૧૨ ગયા.
૮૯૮૮૮	બાકી ૮૯૮૮૮ ધનુષ્ય વધ્યા.
૯૬	એના અંગુલ કરવાને છન્નું ગુણા કરવા.
૬૩૨૪૫૪)૮૬૨૯૨૪૮	છન્નું ગુણા કરતાં એટલા અંગુલની રાશિ થઇ.
૮૫૩૮૧૨૯	એને ૬૩૨૪૫૪) ને ભાગ દેતાં સાડાતેર અંગુલમાં આંક જાય.
૯૧૧૧૯	એટલો આંક શેષ અંગુલની રાશિનો ઉગર્યો-

८	तेना यव करवा सारुं एने आठे गुणीये
(६३२४५४)७२८९५२)	आठे गुणाकार करतां यवनी राशि थइ.
६३२४५४)	एक यवना भागाकारमां ६३२४५४ गया.
९६४९८	शेष यवनी राशि रही.
८	तेनी यूका करवाने आठे गुणाकार करीये,
७७१९८४)	एटली यूकानी राशि थइ.
६३२४५४)	एने ६३२४५४) ने भाग देतां एक यूका आवे.
१३९५३०	शेष १३९५३० यूकानी राशि रहे.
८	तेनी लीख करवाने अर्थे आठ गुणा करीये,
१११६२४०	एटली लीख थाय.
६३२४५४)	एटली राशिये भागाकार करतां एक लीख आवे.
४८३७८६	शेष लीखनी राशि वधी.
८	तेना वालाग्र करवाने आठगुणा करीये.
३८७०२८८	एटली वालाग्रनी राशि थइ.
३७९४७२४	एने ६३२४५४) भागे देतां ६ वालाग्र आवे.
७५५६४	शेष वालाग्रनी राशि वधी.
८	तेना रथरेणु करवाने आठ गुणा करीये.
६०४५१२	एटला रथरेणु थाय तेने भाग पहोंचे नही.
८	माटे एना त्रसरेणु करवा सारु आठगुणा करीये.
४८३६०९६	एटली त्रसरेणुनी संख्या थाय.
४४२७१७८	एने ६३२४५४) ने भाग देतां सात त्रसरेणु आवे.
४०८९१८	शेष एटली त्रसरेणुनी राशि वधी.
८	एना व्यवहारिक बादर परमाणु करवाने आठे गुणीये.
३२७१३४४	एटली व्यवहारिक बादर परमाणुनी राशी थई.
३१६२२७०	६३२४५४)नो भाग देतां पांच बादरपरमाणुमां ए आंक आवे.
१०९०७४	एटली बादर परमाणुनी राशि शेष रही.
१७४	एकेका परमाणुना १७४) खंन्न करवा सारु १७४ गुणीये.
१८९७८८७६)	एटला एकशो चमोतेरीया भाग थया.

१८९७३६२०) तेने ६३२४५४ नो भाग देतां त्रीश भागमां ए आंक आवे.
५२५६ शेष ५२५६) एकसो चमोतेरीया खंड वध्या.
३६१ प्रत्येक खंडना ३६१) कटका करवा सारु ३६१) गुणीये.

१८९७४१६ (१७४ तेरीया एक खंडना ३६१) कटकानी राशी थइ.
१८९७३६२) ६३२४५४) भाग देतां त्रण भागमां एटला आंक आव्या.
५४ शेष चोपन कटका रह्या तेने कांइ भाग पहोंचे नही.

योजन.	गाउ.	धनुष्य.	अंगुल.	यव.	यूका.	लीख.	वालाग्र.	रथरेणु.
३१६२२७—	३—	१२८—	१३॥—	१—	१—	१—	६—	०

त्रसरेणु.	बादरपरमाणु.	एक बादर परमाणुना. १७४ भाग करीये तेवा भाग.	एकशो चमोतेरीया एक भागना ३६१) भागकरीये तेवाभाग	शेष. वध्या.
७	५	३०	३	५४

जंबूद्वीपनी परिधि गणवाना करणनो यंत्र लखीये छैये.

विष्कंभना योजन.	१०००००
तद्वर्ग योजनराशि.	१००००००००००
तेने दशगुणा करवानी राशि.	१०००००००००००
वर्गमूले लब्धयोजननी राशि.	३१६२२७
शेष राशि.	४८४४७१
छेदराशि.	६३२४५४
कोश करवाने अर्थे शेष राशिने चार गुणा करतां थयेली राशि.	१९३७८८४
छेदांकनो भाग आपवामां लाधा क्रोश.	३
शेषराशि.	४०५२०
धनुष्य करवाने अर्थे बे हजारनो गुणाकार करतां थयेली राशि.	८१०४४०००
छेदांकनो भाग आपवे करी लाधा धनुष्य.	१२८
शेष राशि.	८९८८८
अंगुल करवाने अर्थे छन्नुं गुणा करतां थयेली राशि.	८६२९२४८
छेदांकनो भाग आपवाथी लाधा अंगुल.	१३ ॥
शेष पूर्ण अंगुल राशि रही,	९१११९

हवे कमलादिक, द्वीपादिक, चूलिका, कूट, कंचनगिरि, कुंडादिक, कूटनां मूल, कूटनां शिखर, मेरुपर्वतनां मूल, मेरुनां शिखर, नंदनवननी बाहिर, नंदनवननी मांहेली कोर इत्यादिक स्थानकोनी परिधिनां गणित उपरली रीति प्रमाणें पोते करवां, अथवा गुरु मुखथी धारवां, अहीआं मात्र ते मांहेलाकेटला एक स्थानकोनां नाम संक्षेपथी मांडीने तेनी परिधि करवाने अर्थें ते स्थानकोनो विस्कंभ तथा ते विस्कंभनो वर्ग, पछी ते वर्गने दश गुणो करतां जे संख्या आवे, तेनो आंक तथा तेनुं मूल शोधता जेटला योजननो आंक लाभे, ते आंक तथा जेटला योजन शेष रहे, तेनो आंक तेमज शेष रहेला योजनना धनुष्य प्रमुख करीने पछी तेने वर्गनी राशिने शोधतां जे लब्धांक आव्यो होय, तेने बमणो करीये, तेवारे जे राशि थाय ते राशिये करीने छेदीये एटले भांजीये तेने छेदराशि कहीये, ते छेदराशिनो आंक तेनो यंत्र नीचे देखाड्यो छे, तिहांथी सुज्ञोये जोइने गणित करी मेलाववा,

जूदा जूदा स्थानकोनी परिधि विष्कंभादिकनो यंत्र,

अंक	स्थानकोनां नाम,	विष्कंभ.	वर्गनो अंक,	दशगुणो अंक,	लब्धांक.	शेषराशि	छेद,
१	कमलादिक.	१	१	१०	३	१	६
२	”	२	४	४०	६	४	१२
३	”	४	१६	१६०	१२	१६	२४
४	द्वीपादिक.	८	६४	६४०	२५	१५	५०
५	चूलिका मूल.	१२	१४४	१४४०	३७	७१	७४
६	क्रोशकूट.	२५	६२५	६२५०	७९	९	१५८
७	कांचनगिरिशिखर	५०	२५००	२५०००	१५८	३६	३१६
८	कांचनगिरि मूल.	१००	१००००	१०००००	३१६	१४४	६३२
९	कुंभादिक.	१२०	१४४००	१४४०००	३७९	३५९	७५८
१०	”	२४०	५७६००	५७६०००	७५८	१४३६	१५१६
११	कूटशिखरादिक.	२५०	६२५००	६२५०००	७९०	९००	१५८०
१२	कुंभादिक.	४८०	२३०४००	२३०४०००	१५१७	२७११	३०३४
१३	कूटमूलादिक.	५००	२५००००	२५०००००	१५८१	४३९	३१६२
१४	मेरुशिखर.	१०००	१००००००	१००००००००	३१६२	१७५६	६३२४
१५	मेरुभूतलविष्कंभ	१००००	१०००००००००	१००००००००००	३१६२२	४९११६	६३२४४

आ उपरथी एम समजवुं के एक योजन विष्कंभवालो कोइ वाटलो गोलाकारे प दार्थ होय तेनी त्रण योजन जे लब्धांकना कोठामां मूक्या छे, ते तथा उपर शेष राशि मां एक योजन रह्यो छे तेना छेद छ करीये एटले एक योजननो छठो भाग उपर एटलो फरतो परिधि थाय, अने बे योजनवाला वाटला पदार्थनी छ योजन पूरा अने तेनी उप र चार योजनना बारमा भागमां जेटली जगा आवे तेटली लेवी. एटलो परिधि जाण वो. ए रीते सर्व स्थानकोने विषे जाणी लेवुं. लब्धांकने बमणा करीये तो छेदराशि थाय हवे पूर्वेला यंत्रनी रीतेज मेरुपर्वतना नीचला तलीयानी तथा नंदनवनादिकनी भूमि मां योजनोनी जे संख्या कही छे, तेना उपर वली एक योजनना अगीआर भाग क रीये, तेवा भाग प्रत्येक स्थानके आवे छे,माटे ते स्थानकोना विस्कंभना योजनोना अ गीआरीआ भाग करीने परिधीनुं गणित कह्युं छे तेनो यंत्र नीचे लखीये छैये.

चढतो अंक.	मेरुपर्वत मांहेला जूदाजूदा स्थानकोनां नाम.	मूलयोजन तथा एकयोजनना अगीआरीआ भागनी कला संख्या.	एकंदर अगीआरीआ भाग संबंधि कलानी संख्या.	ते कलानो वर्ग करतां जे आंक आवे तेनी संख्या.
१	मेरुनो नीचेनो तलीयो.	$१००९० \frac{१०}{११}$	१११०००	१२३२१००००००
२	नंदनवननीबाहिरनीपरिधि	$९९५४ \frac{६}{११}$	१०९५००	११९९०२५००००
३	नंदनवननी मध्यपरिधि.	$८९५४ \frac{६}{११}$	९८५००	९७०२२५००००
४	सोमनसवननी बाहिरपरि.	$४२७२ \frac{८}{११}$	४७०००	२२०९००००००
५	सोमनसवननी मध्यपरिधि	$३२७२ \frac{८}{११}$	३६०००	१२९६००००००

ते वर्गनी कलाने दश गुणी करतां जे आंक आवे तेनी संख्या.	वर्गनुं मूल काढतां जे कला लाभे तेनो अंक	शेष राशि जेटली कला रही तेनीसंख्या.	छेद राशिनी संख्या.	परिधिना योजन तथा कलानो अंक.
१२३२१०००००००	३५१०१२	५७५८५६	७०२०२४	$३१९१० \frac{२}{११}$
११९९०२५०००००	३४६२६९	२७९६३९	६९२५३८	३१४७९
९७०२२५०००००	३११४८४	२१७७४४	६२२९६८	$२८३१६ \frac{८}{११}$
२२०९०००००००	१४८६२७	१४८७१	२९७२५४	$१३५११ \frac{६}{११}$
१२९६०००००००	११३८४२	१०८६३६	२२७६८४	$१०३४९ \frac{३}{११}$

॥ इतिपरिधिगणितम् समाप्तम् ॥ ॥ आ एकज यंत्रना बे विभाग कीधाछे ॥

॥ अथ द्वितीयगणितपदप्रारंज्ञः ॥

हवे हरेक वाटला क्षेत्रना योजन योजन प्रमाण समचतुरस्त्र खंम करवा, तेने गणित पद कहीये. ते करवानी रीति कहे छे. वाटला क्षेत्रनी परिधिनी संख्यानो जेटलो अंक होय, तेने तेज वाटला क्षेत्रनो जे विष्कंज्ञ होय तेना चोथा ज्ञागना आंक साथे गुणीये तेवारे तेनुं गणित पद थाय ते एक जंबूद्वीप आश्रयी देखाडे छे.

जंबूद्वीपनो परिधि (३१६२२७) योजन छे, तेने एज जंबूद्वीपनो विष्कंज्ञ एक लाख योजननो छे, तेना चोथा ज्ञागना पच्चीश हजार योजन थाय. तेनी साथे गुणीये तेवारे ७९०५६७५००० योजन थाय, अने ते परिधिनी उपर त्रण कोश छे. तेने पच्चीश हजार साथे गुणतां ७५००० कोश थाय. ते चार कोशनो एक योजन करतां १८७५० योजन थाय, तथा परिधि एकशो ने अठावीश धनुष्य छे तेने पच्चीश हजारे गुणतां बत्रीश लाख धनुष्य थाय, ते आठ हजार धनुष्यनो एक योजन गणतां ४०० योजन थाय. ए सर्व एकठा करीये, तेवारे ७९०५६९४१५० योजननी संख्या थाय. हवे परिधि उपर साडातेर अंगुल छे, तेने पच्चीश हजारे गुणतां ३३७५०० अंगुल थाय. ते एक धनुष्यमां छन्नुं अंगुल आवे, माटे एने छन्नुं ज्ञागे वेचता ३५१५ धनुष्य थाय.उपर शाठ अंगुल वधे तेना एक कोशमां वे हजार धनुष्य प्रमाणे पोणा वे कोश अने पांत्रीश सो धनुष्य थाय. तथा उपर पन्नर धनुष्य छे ते एकेका धनुष्यना चार चार हाथ करतां शाठ हाथ थाय, तथा उपर शाठ अंगुल वध्या छे, तेना अढी हाथ थाय, ए सर्व मली ७९०५६९४१५० योजन उपर पोणा वे कोश अने शाढा बाशठ हाथ एटलुं जंबूद्वीपनुं गणित पद थाय, ए एकेक योजनना खंडुक करीने जंबूद्वीपनी जेटली ज्ञूमि छे. तेमां थापीये. तो एटला रही शके. एवी रीते बीजा पण वाटला खेत्रना सर्व स्थानके गणित पदना हिसाब करवा. एनो यंत्र नीचे देखाड्यो छे. ए गणित पदनी यंत्रस्थापना.

चढतो अंक.	परिधिनां योजनादि.	विष्कंज्ञनो चोथोज्ञाग.	गुणाकारकरतां राशि थइ.	एक योजनमां अंगुलादि.	सरवाले योजननी संख्या.	गाउ	ध०	अंगुल.
१	३१६२२७	२५०००	७९०५६७५०००	पूरा योजन.	७९०५६७५०००			
२	कोश- ३	२५०००	७५०००	चारगाउयो०	१८७५०			
३	धनुष्य.१२८	२५०००	३२०००००	आठहजारध.	४००			
४	अंगुल. १३॥	२५०००	३३७५००	छन्नुं अंगुलनुं.	०	१॥।	१५	६०
५	एकंदरसंख्या.				७९०५६९४१५०	१॥।	१५	६०

॥ अथ तृतीय जीवा करण प्रारंभः ॥

हवे त्रीजो जीवा करण कहेछे. जेवारे जीवा करीये तेवारे आ वाटलुं क्षेत्र जे जंबूद्वीप एक लाख योजननुं छे, तेना उंगणीशीआ भाग करीये, तेवारे (१९००००००) ओगणीश लाख कला थाय, तेमांथी दक्षिणार्द्ध भरतनी इखु कला (४५२५) छे ते बाद करीये, तो (१८९५४७५) कला बाकी रहे, तेने चार गुणी करीये, तेवारे (७५८१९००) थाय तेने इखुनी कला (४५२५) छे तेनी साथे गुणीये अथवा (१८९५४७५) कला जे बाकी रही छे तेने इखुनी कला (४५२५) ने चोगुणी करीये, तेवारे (१८१००) थाय. तेनी साथे गुणीये, तेवारे (३४३०८८९७५००) थाय, तेने पूर्वली रीते विषम सम करीने मूल शोधीये, तेवारे (१८५२२४) एटलो आंक आवे, अने शेष (१६७३२४) एटली कला वधे, केम के (१८५२२४) आंकने एज आंक साथे गुणीये. तेवारे ३४३०७९३०१७६ थाय, ते उपरली विषम सम वाली राशिमांथी बाद करीये, तेवारे शेष (१६७३२४) कला वधे. हवे १८५२२४ कलाना योजन करवा सारु ए राशिने उंगणीश भागे वेंचीये, तेवारे ९७४८ योजननी उपर बार कला थाय, अने १६७३२४, कला वधी छे, तेना धनुष्य प्रमुख करीने पूर्वे जंबूद्वीपनी परिधिनी रीते जो आनुं मूल शोधीये, तो छेदकला (३७०४४८) आवे, तेनी साथे भागाकार करतां जेटला धनुष्य प्रमुख उपर आवे, ते ९७४८ योजन अने बार कलानी साथे लेवा एटली दक्षिणार्द्ध भरतनी जीवा जाणवी. एवीज रीते वैताढ्य प्रमुख सर्व स्थानकोनी जीवा करवी- आंहीं मात्र एनो यंत्रज नीचे लख्यो छे. अने एकज आ दक्षिणार्द्ध भरतनो हिसाब करी बताव्यो छे. परंतु वैताढ्यादिकना हिसाब पोतेज करीने मेलववा-

१९०००००० उंगणीश लाख कलानो जंबूद्वीपनो विष्कंभ छे.
    ४५२५ तेमांथी दक्षिणार्द्ध भरतना इखु कला बाद करवी-
१८९५४७५) शेष कला रही-
  १८१०० तेने ४५२५) इखुनी कलाने चार गुणी करतां १८१००) कला थाय, तेनी साथे गुणवा.

३४३०८८९७५०० एटली गुणाकार करतां कलानी राशि थइ.
३४३०८८९७५०० मूल शोधवा सारु विषम सम करीये छैयें.

१ (१ धुरना आंके विषम छे, माटे धुरना एकज आंकने शोधवो.
२)२४३ (८ एकेका एक गयो बाकी बे रह्या उपर तेतालीश लीधा.

१६	एक ड वेनो भाग आपतां आठ डु शोल थया.
६४	आठनो भाग आव्यो माटे आठुं आठुं चोशठ चांपी मांड्या.
२२४	चोशठने चांपी मांडता बशोने चोवीश थया.
१९०८	ते बाद करतां बाकी १९ रह्या नीचे (०८) वे आंक लीधा.
३६) १८० (५	त्रीशनो भाग आपतां त्री पांचुं १८० थया.
२५	पांचनो भाग आव्यो माटे पांचुं पांचुं पच्चीश चांपी मांड्या.
१८२५	पच्चीशने चांपी मांडता १८२५ थया.
८३०९	ते बाद करतां बाकी त्र्यासी रह्या नीचें (०९) वे आंक लीधा
३७०) ७४० (२	त्रणशे सीतेरनो भाग आपतां ३७० डु ७४० थया.
४	वे नो भाग आव्यो माटे डुए डुए चार चांपी मांड्या.
७४०४	चारने चांपी मांडतां ७४०४ थया.
३७०४) ९०५७५(२	बाद करतां बाकी ९०५ रह्या. नीचे ७५ वे आंक लीधा.
७४०८	३७०४ नो भाग आपतां ३७०४ डु ७४०८ थया.
४	वेनो भाग आव्यो माटे डुए डुए चार चांपी मांड्या.
७४०८४	चारने चांपी मांडतां ७४०८४ थया.
३७०४४) १६४९१००	बाद करतां बाकी १६४९१ रह्या नीचे वे शून्य लीधी.
१४८१७६(४)३७०४४	नो भाग आपतां ३७०४४ चोकुं १४८१७६ थया.
१६	चारनो भाग आव्यो माटे चार चोक शोल चांपी मांड्या.
१४८१७७६	शोलने चांपी मांडतां १४८१७७६ थया.
१९) १६७३२४(८	बाद करतां शेष कला १६७३२४ रही लाधी कला १७५२२४
१५२	एना योजन करवा सारु ओगणी आठुं १५२ गया.
१९)१५३ (८	बाकी पन्नर रह्या. उपर त्रण लीधा.
१५२	वली ओगणी आठुं १५२ गया.
१९)१२४ (०	बाकी १ रह्यो.तेनो भाग न पहोंचे माटे ० लखवी उपर चोवीशलीधा.
११४ (६	ओगणी छके ११४ गया.
१०	बाकी दश कला रही.
८८०६)१०	ए रीते ८८०६ योजन उपर दश कला शेष रही.
८०००	एना धनुष्य करवाने आठ हजारे गुणीचे.

७०४४८०००	८८०६ योजनने आठ हजारे गुणतां धनुष्य थया.
४२१०॥	दश कलाना ४२१०॥ धनुष्य उपर अरधी कला वधी.
३७०४४८)७०४५२२१०॥	सरवाले एकंदर धनुष्य थया.
३७०४४८	मूल १८५२२४ ने बमणा करी भाग आपतां एक आव्यो.
३७०४४८) ३३४०७४१ (९	बाकी ३३४०७४ रह्या उपर एक लीधो.
३३३४०३२	३७०४४८ नवा ३३३४०३२ गया.
६७०९०॥	शेष धनुष्य ६७०९० रह्या. उपर शून्य लीधो.
९६	अंगुल करवाने छन्नुंये गुणवा.
४०२५४०	उपली राशिने छएं गुणतां आंक.
६०३८१०	उपली राशिने नवे गुणतां आंक.
४८	उपली राशिना रहेला अरधा आंके गुणतां.
३७०४४८)६४४०६८८ (१	सरवाले एकंदर अंगुल थया.
३७०४४८	मूलनी राशीने बमणा करी भाग देतां एक आव्यो.
३७०४४८) २७३६२०८ (७	बाकी २७३६२० रह्या उपर आठ लीधा.
२५९३१३६	फरी ३७०४४८ ने साते गुणतां ए आंक आव्यो.
१४३०७२	शेष अंगुल १४३०७२ रही.
९२६१२	था आंगुलमां ९२६१२ नो आंक गयो.
५०४६०	शेष अंगुल ५०४६० राशि रही.

ए दक्षिणार्द्ध भरतनी जीवा ९७४८) योजन उपर एक योजनना ओगणीश भाग करीये, तेवा बार भाग तथा वली एक योजनना ओगणीशिया १६७३२४ भाग शेष वध्या छे, तेने छेद कला ३०७०४४८ भागे वेंचीये, तेवारे १९१) धनुष्य अने सवा सतर अंगुल आवतां शेष ५०४६० अंगुल राशि वधे छे, तेने छेद कलानो आंक वधारे छे, माटे भाग पोहोचे नहीं, तेथी तेना वली यव प्रमुख करीने जे रीते ते भाग पहोंचे तेम पहोंचाडवो अने गणित करी लेवुं जोइये.

हवे ए जेम दक्षिणार्द्ध भरतनुं जीवाकरण कर्युं, तेम वैताढ्यादिक पर्वतोनी जीवानुं गणित पण करवुं. अहियां सर्वेना जूदां जूदां गणित करता नथी, पण जंबूद्वीप मांहेला सर्व स्थानकोनी जीवा करवानो यंत्र नीचे लखिये छैये. ते गणित समजी लेवुं.

नव स्थानकने विषे क्षेत्र विष्कंभ एक लाख योजन छे, तेनी एकेक योजननी ओगणीश कला करतां ओगणीश लाख कला थाय तेने विषे नव स्थानकनी जीवाना यंत्रनी स्थापना.

	जीवा करवानो क्रम नाम पूर्वक.	योजन प्रमाण इखु.	ओगणीश भाग करतां इखुकला	विष्कंभमांथी बादकरतां शेषकला	इखुकलाने चार गुणा करतां.
१	दक्षण भरतार्द्ध.	२३८ ३/१९	४५२५	१८९५४७५	१८१००
२	वैताढ्य.	२८८ ३/१९	५४७५	१८९४५२५	२१९००
३	पूरण भरत.	५२६ ६/१९	१००००	१८९००००	४००००
४	हिमवंत पर्वत.	१५७८ १८/१९	३००००	१८७००००	१२००००
५	हिमवंतयुगलक्षे	३६८४ ४/१९	७००००	१८३००००	२८००००
६	महाहिमवंतप०	७८९४ १४/१९	१५००००	१७५००००	६०००००
७	हरिवर्षक्षेत्र.	१६३१५ १५/१९	३१००००	१५९००००	१२४००००
८	निषधपर्वत.	३३१५७ १७/१९	६३००००	१२७००००	२५२००००
९	महाविदेहमध्य	५००००	९५००००	९५००००	३८०००००

शेष कला रही तेने चार गुणी इखु कला साथे गुणतां.	मूल शोधतां शेषराशिरही तेनो आंक.	छेदराशिनो आंक.	मूलमां लाधी कला तेनो आंक.	लाधी कलाना योजन तथा ओगणीशीया भागनी कला.	
३४३०८०९७५००	१६७३२४	३७०४४८	१८५२२४	९७४८	१२/१९
४१४९००९७५००	७४०१९	४०७३८२	२०३६९१	१०७२०	१२/१९
७५६००००००००	२९७८८४	५४९९०८	२७४९५४	१४४७१	५/१९
२२४४०००००००००	७३०७३६	९४७४१६	४७३७०८	२४९३२	१/१९
५१२४०००००००००	२९५९५९	१४३१६४२	७१५८२१	३७६७४	१६/१९
१०५००००००००००	१५६९७५	२०४९३९०	१०२४६९५	५३९३१	६/१९
१९७१६००००००००	२०९३५०४	२८०८२७२	१४०४१३६	७३९०१	१७/१९
३२००४०००००००००	६५०८४४	३५७७९३२	१७८८९६६	९४१५६	२
३६१००००००००००	०	०	१९०००००	१०००००	०

आहीं जगानी पहोंलाइ न होवाथी एक यंत्रना बे भाग उपर अने नीचे कीधा छे. एज प्रमाणे ऐरवत क्षेत्रमां पण जीवानुं कारण जाणवुं. इति तृतीय करणम् ॥

हवे चोथुं इखु गणित कहेछे.

आ जंबूद्वीपने विषे एक देश जे भरत क्षेत्र अथवा ऐरवत क्षेत्र ते चढावेला धनुष्य ने आकारे छे, तिहां बाणना छामनी वच्चेनुं जे विष्कंभ तेने इखु कहीये ते इखुना जेट ला योजन होय तेने योजननो इखु कहीयें, अने ते एकेका योजनना ओगणीश भाग करीने ते भागनो आंकडो जेवारें लखीयें तेवारें कलानो इखु कहेवाय. जेमके दक्षिणार्द्ध भरतनो इखु (२३८) योजननी उपर त्रण कला छे तेने ओगणीशना आंक साथे गुणी यें तेवारे (४५२५) कला थाय ए कलानो इखु जाणवो. एटले दक्षिण भरत क्षेत्रनी सर एटले बाणनी कला, (४५२५) थइ ते आ प्रमाणेः--२३८) योजनने ओगणीशें गुणतां ४५२२ कला थाय तेनी साथें उपरनी त्रण कला छे ते मेलवीयें तेवारें ४५२५ कला थाय. एरीते नवे स्थानकना योजननुं इखु तथा कलाना इखु ते सर्व पाछला यंत्रमां आवी गया छे तेमांथी जोइ लेवा. इति चतुर्थ इखुगणितं समाप्तम् ॥

हवे पांचमो वैताढ्य प्रमुखनो धनुपृष्ठ एटले पुंठनो भाग तेनुं गणित करवानो उपाय कहे छे. तिहां जे स्थानकनुं धनुःपृष्ठ करवुं होय, तेना इखुनो जे आंक होय, तेने तेटलागुणो करीने वर्ग करीये; पछी ते वर्गने छ गुणो करीयें तथा जीवानो जे आंक होय तेने पण तद्गुणो वर्ग करी पछी ए बेहु वर्गने एकठा करीने तेनुं मूल शोधतां जे आंक आवे, तेटलुं ते स्थानकनुं धनुःपृष्ठ जाणवुं. तेमां प्रथम दक्षिण भरतार्द्धना धनुःपृष्ठनुं गणित करी देखाडे छे.

४५२५	दक्षिणभरतार्द्धनी इखु कला ४५२५ छे.
४५२५	तेनो वर्ग करवा सारुं तद्गुणो करीयें.
२२६२५	उपला आंकने पांच साथें गुणतां संख्या.
९०५०	उपला आंकने बे साथे गुणतां संख्या.
२२६२५	उपला आंकने पांचसाथे गुणतां संख्या.
१८१००	उपला आंकने चार साथे गुणतां संख्या.
२०४७५६२५	एकंदर इखुकलाना वर्गनी राशि थइ.
६	ए राशिने छगुणी करवामाटे छयें गुणवुं.
१२२८५३७५०	ए इखुवर्गने छगुणो करतां एटली राशि थइ.
३४३०८०९७५००	पूर्वोक्त जीवानी राशिना वर्गनो आंक साथे मेलवीयें.
३४४३०९५१२५०	ए बेहुराशिना सरवालानो आंक थयो.

૩૪૪૩૦૯૫૧૨૫૦	એનું મૂલ શોધવા સારુ વિષમ સમ કરવું.
૧ ૧)	પહેલો અંક વિષમ છે, માટે એકજ આંકને શોધ્યો.
૨) ૨૪૪ (૮	શોધતાં એકેકાં એક ગયો, બાકી બે રહ્યા. ઉપર ચુમાલીશ લીધા.
૧૬	એકનો ભાગ આવ્યો તેને બમણા કરી બે અઠા શોલ થયા.
૬૪	આઠનો ભાગ આવ્યો, માટે આઠે આઠે ચોશઠને ચાંપી માંડ્યા.
૨૨૪	સરવાલે બશે ચોવીશ થયા, તે બાદ કરવા.
૩૬) ૨૦૩૦ (૫	બાકી વીશ રહ્યા ઉપર ત્રીશ લીધા.
૧૮૦	અઢારને દ્વિગુણા કરી છત્રીશ પંચાં ૧૮૦ થયા.
૨૫	પાંચનો ભાગ આવ્યો માટે પાંચ પચા પચીશ ચાંપી માંડ્યા.
૧૮૨૫	સરવાલો ૧૮૨૫ થયો.
૩૭૦) ૨૦૫૯૫ (૫	તે બાદ કરતાં બાકી ૨૦૫ રહ્યા ઉપર ૯૫ લીધા.
૧૮૫૦	૧૮૫ ને દ્વિગુણા કરી ૩૭૦ પાંચુ ૧૮૫૦ થયા.
૨૫	પાંચનો ભાગ આવ્યો માટે પાંચ પચા પચીશ ચાંપી માંડ્યા.
૧૮૫૨૫	સરવાલે ૧૮૫૨૫ થયા.
૩૭૧૦) ૨૦૭૦૧૨ (૫	તે બાદ કરતાં ૨૦૭૦ રહ્યા ઉપર બાર લીધા.
૧૮૫૫૦	મૂલના ૧૮૫૫ ને દ્વિગુણા કરી ૩૭૧૦ પંચાં ૧૮૫૫૦ થયા.
૨૫	પાંચનો ભાગ આવ્યો માટે પાંચ પચાં પચીશ ચાંપી માંડ્યા.
૧૮૫૫૨૫	સરવાલે ૧૮૫૫૨૫ થયા.
૩૭૧૧૦) ૨૧૪૮૭૫૦(૫	બાદ કરતાં બાંકી ૨૧૪૮૭ રહ્યા ઉપર પચાસ લીધા.
૧૮૫૫૫૦	૧૮૫૫૫ ને બમણા કરી પાંચે ભાગ દેતાં એ રાશિ આવી.
૨૫	પાંચનો ભાગ આવ્યો, માટે પંચો પંચો ૨૫ ચાંપી માંડ્યા.
૧૮૫૫૫૨૫	સરવાલે ૧૮૫૫૫૨૫ થયા.
૩૭૧૧૧૦) ૨૯૩૨૨૫	બાદ કરતાં શેષ કલા રહી તેને ભાગ પોહોંચે નહી.

એ રીતે ૧૮૫૫૫૫ નો આંક આવ્યો શેષ કલા ૨૯૩૨૨૫ વધી તેને ૧૮૫૫૫૫ ને બમણા કરિયે તેવારે ૩૭૧૧૧૦ થાય. તેનો ભાગ પોહોંચે નહી માટે પૂર્વેલી રીતે કોશ ધનુષ્યાદિક કરી ભાગ પહોંચાડવો. એ દક્ષિણ ભરતાર્દ્ધનું ગણિત કરી દેખાડ્યું.શેષ સ્થાનકનું પણ એ રીતે ગણિત કરવું.એ દક્ષિણ ભરતાર્દ્ધાદિક સ્થાનકના ધનુઃપૃષ્ટનો યંત્ર નીચે લખ્યોછે.તિહાં મહાવિદેહના અર્દ્ધભાગ પર્યંત જંબૂદ્વીપની પરિધિના અર્દ્ધભાગનું ધનુઃપૃષ્ટઆવે

दक्षिण भरतार्द्धादिक नव स्थानकना धनुःपृष्ठनो यंत्र.

स्थानकोनां नाम.	इखुनी कला.	इखुना वर्गनी कलानो आंक.	इखुवर्गने छगुणो करतां कला.	जीवाना वर्गनी कलानो आंक.
भरतार्द्ध.	४५२५	२०४७५६२५	१२२८५३७५०	३४३०८०९७५००
वैताढ्ये.	५४७५	२९९७५६२५	१७९८५३७५०	४१४९००९७५००
पूर्ण भरते.	१००००	१००००००००	६००००००००	७५६००००००००
हिमवंतगिरि	३००००	९००००००००	५४०००००००००	२२४४००००००००
हिमवंतक्षेत्रे.	७००००	४९०००००००००	२९४००००००००	५१२४००००००००
महाहिमवं०	१५००००	२२५००००००००	१३५००००००००००	१०५००००००००००
हरिवर्षक्षेत्रे.	३१००००	९६१००००००००	५७६६०००००००००	१९७१६००००००००
निषधपर्वते.	६३००००	३९६९००००००००	२३८१४००००००००	३२००४००००००००
महाविदेहर्द्धे.	९५००००	९०२५००००००००	५४१५०००००००००	३६१००००००००००

छ गुणी करेली इखुना वर्गनी कला तथा जीवाना वर्गनी कलानो सरवालो.	वर्गमूल आणतां शेषराशि. नो आंक.	वर्गमूल आणतां छेदराशि. नो आंक.	वर्गमूल आणतां लब्धराशि. नो आंक.	लाधेलीकलाना योजन तथा कलानी संख्या.
३४४३०९५१२५०	२९३२२५	३७१११०	१८५५५५	९७६६। १
४१६६९९५१२५०	७७८२६	४०८२६४	२०४१३२	१०७४३।१५
७६२००००००००	२६२१५१	५५२०८६	२७६०४३	१४५२८।११
२२९८०००००००००	५६८१२४	९५८७४८	४७९३७४	२५२३०। ४
५४१८०००००००००	९५५१००	१४७२१४०	७३६०७०	३८७४०।१०
११८५००००००००००	११५०७१	२१७७१५४	१०८८५७७	५७२९३।१०
२५४८२००००००००००	७६९१३६	३१९२६१६	१५९६३०८	८४०१६। ४
५५८१८००००००००००	१५६८१११	४७२५१६६	२३६२५८३	१२४३४६।९
९०२५००००००००००	४६६९४३१	६००८३२६	३००४१६३	१५८११३।१६॥

आ एकज यंत्र छे पण पुस्तकमां साहामी बाजु जगा न मलवाथी चालता अनुक्रमना कोठाने नीचें लइ लीधा छे. प्रथमना यंत्रोमां पण बे ठेकाणे एमज कर्युं छे.

इति पंचम धनुःपृष्ठगणितयंत्रं समाप्तम्.

अथ पृष्ट बाहा करण विधि प्रारंभः ॥

हवे बहुं बाहकरण कहे छे. आ ठेकाणे बे धनुःपृष्टनो विश्लेष करीये, तिहां दक्षि ण भरतार्द्ध अने वैताढ्यपर्वत ए बे धनुष्य छे, तेमां जे न्हानुं धनुष्य होय ते महोटा धनुष्यमांथी काढाडीये तेने विश्लेष कहीये, ते काहाडीने पछी जे शेष रहे, तेनुं अर्द्ध करीये तेवारे वैताढ्य तथा हिमवंत प्रमुख पर्वतनी बाह थाय. बाह एटले पर्वतना तथा क्षेत्रना ठेकानो विस्तार जाणवो, ते आवी रीतेः—

दक्षिणार्द्ध भरतनुं धनुःपृष्ट (९७६६) योजननी उपर एक कला छे, अने वैताढ्य प र्वतनुं धनुःपृष्ट (१०७४३) योजनने पन्नर कला उपर छे, माटे वैताढ्यना धनुःपृष्टनी अ पेक्षाये दक्षिणार्द्धभरतनुं लघु धनुःपृष्ट कहेवाय, अने वैताढ्यनुं महा धनुःपृष्ट कहेवाय, तेवारे महाधनुःपृष्टनी राशिमांथी लघु धनुःपृष्टनी राशि बाद करीये, तो बाकी (९७७) योजन उपर चौद कला रहे, तेनुं अर्द्ध करीये तेवारे (४८८) योजन उपर साडीशोल कला आवे. एटला योजन प्रमाण वैताढ्य पर्वतना बेहु तरफनी प्रत्येक एकेकी बाह जाणवी. एवी रीते हिमवंत महाहिमवंतादिक सर्व पर्वतोनी तथा हिमवंतादिक क्षे त्रोनी बाहनुं गणित स्वयमेव करी लेवुं. अहिं मात्र एनो यंत्रज लखीये छैये.

अथ बाहा करण यंत्रम्

बाहा करवाना स्थानकोनां नाम.	वैताढ्यादिकनुं महा धनुः पृष्ट.		भरतार्द्धादिकनुं लघु धनुः पृष्ट.		बेहुनो विश्लेष करतां बाकी.		तेनुं अर्द्ध करतां जे आंक आवे. ते बाह.	
	योजन.	कला.	योजन.	कला.	योजन.	कला.	योजन	कला.
१ वैताढ्य पर्वत.	१०७४३	१५	९७६६	१	९७७	१४	४८८	१६॥
२ भरत क्षेत्र.	१४५२८	११	१०७४३	१५	३७८४	१५	१८९२	७॥
३ हिमवंतपर्वत.	२५२३०	४	१४५२८	११	१०७०१	१२	५३५०	१५॥
४ हिमवंतक्षेत्र.	३८७४०	१०	२५२३०	४	१३५१०	६	६७५५	३
५ महाहिमवंतपर्वत	५७२९३	१०	३८७४०	१०	१८५५३	०	९२७६	९॥
६ हरिवर्षक्षेत्र.	८४०१६	४	५७२९३	१०	२६७२२	१३	१३३६१	६॥
७ निषधपर्वत.	१२४३४६	९	८४०१६	४	४०३३०	५	२०१६५	२॥
८ विदेहार्द्ध.	१५८११३	१६॥	१२४३४६	९	३३७६७	७॥	१६८८३	१३।

॥ इति पृष्ट बाहा करणविधियंत्रादि संपूर्णम् ॥

अथ सप्तम प्रतरकरण गणितं.

हवे सातमो प्रतर करवानो उपाय कहे छे. भरत क्षेत्र प्रमुखने समचतुरस्र करवां, तेने प्रतर कहीये तिहां प्रथम छेल्लो खंड जे भरत क्षेत्र छे, तेना प्रतर करवानो उपाय देखाडे छे. भरतार्द्धनी इक्षु साथे जीवा गुणीये, ते गुणतां जे आंक आवे, तेने चार भागे वहेंची नाखतां चोथा भागमां जे आंक आवे, तेने तद्गुणो करीये एटले तेनो वर्ग करीने ते वर्गने दशे गुणीये. एम करतां जे आंक आवे, तेनुं मूल शोधिये, ते मूल शोधतां जे आंक आवे, ते प्रतिकला जाणवी; पछी ते प्रतिकलाने उंगणीश भागे वेंचीये, तेवारे तेनी कला थाय, अने शेष वधे, ते प्रतिकला कहीये. फरी ते कलानी राशिने उंगणीश भागे वेंचीये, तेवारे योजननी संख्या थाय. जेम के भरतक्षेत्रनी इक्षुकला ४५२५) छे, तेनी साथे भरतक्षेत्रनी जीवा संबंधी कला १८५२२५) किंचित् न्यून छे, तो पण ते सूक्ष्म गणित नथी करता, माटे एटलीज राशि साथे गुणतां ८३८१४३१२५ थाय, तेने चारनो भाग आपीये, तेवारे २०९५३५७८१ थाय. शेष एक वधे. पछी ए राशिने एज राशि साथे गुणीने एनो वर्ग करीये, तेवारे ४३९०५२४३५१०९२७९९६१ थाय. अने पछी एने दश गुणा करवा सारु एक मिंडुं नीचे आपीये. तेवारे ४३९०५२४३५१०९२७९९६१० थाय. तेने विषम सम करी मूल शोधीयें ते आवी रीतेः—

४३९०५२४३५१०९२७९९६१० (६६२६१०३१९ मूल शोधतां ए राशि आवे.

३६ (६	त्रैंतालीशमांथी छ छक छत्रीश गया.
१२)७९०(६	बाकी सात रह्या उपर नेवुं लीधा.
७२	छने बमणा करी बार छकां बहोंतेर थया.
३६	छनो भाग आव्यो माटे छ छक छत्रीश चांपी मांड्या.
७५६	वेहुनो सरवालो आपतां ७५६ गया.
१३२)३४५२(२	वाकी चोत्रीश रह्या, उपर वावन लीधा.
२६४	छाशठने वमणा करी १३२ दु २६४ थया.
४	वेनो भाग आव्यो माटे दुए दुए चार चांपी मांड्या.
२६४४	सरवाले २६४४ थया, ते वाद करवा.
१३२४)८०८४३(६	वाकी ८०८ रह्या उपर ४३ लीधा.
७९४४	६६२ ने वमणा करी १३२४ छकां ७९४४ थया.
३६	छनो भाग आव्यो माटे छ छकां छत्रीश चांपी मांड्या.

७९४३६ सरवाले ७९४३६ थया ते बाद करवा.

१३२५२)१३६७५१(१ बाकी १३६७ रह्या उपर एकावन्न लीधा.

१३२५२ ६६२६ ड १३२५२) एकुं १३२५२ थया.

१ एकनो जाग आव्यो माटे एकेकुं एक चांपी मांड्यो.

१३२५२१ सरवाले १३२५२१ गया.

१३२५२२)४२३०७२(०बाकी ४२३० रह्या, उपर ७२ लीधा जाग न पहोंचे माटे० पडी.

१३२५२२०)४२३०७२७९(३ फरी ४२३०७२ नी उपर ७९ नो आंक लीधो.

३९७५६६० (६६२६१० ने वमणा करतां १३५२२० त्रिकां ३९७५६६० थया.

९ त्रणनो जाग आव्यो माटे त्रण त्रिक नव चांपी मांड्या.

३९७५६६०९ सरवाले ३९७५६६०९ गया.

१३२५२२०६) २५५२६७०७६ (१ बाकी २५५२६७० रह्या उपर ७न्नुं लीधा.

१३२५२२०६ ६६२६१०३ ने वमणा करी १३२५२२०६ एकां एटलाज

१ एकनो जाग आव्यो माटे एकेकुं एक चांपी मांड्यो.

१३२५२२०६१ सरवाले १३२५२२०६१ गया.

१३२५२२०६२) १२२७४५०३५१०(९ बाकी १२२७४५०३५ रह्या उपर दश लीधा.

११९२६९७५५८ ६६२६१०३१ने वमणा करतां १३२५२२०६२

नवां ११९२६९७५५८ थया.

८१ नवनो जाग आव्यो माटे नेवे नेवे ८१ चांपी मां०

११९२६९७५६६१ सरवाले ११९२ ६९७५६६१ गया.

१३२५२२०६३८) ३४७५१३७८४९ (शेष ३४७५१३७८४९ राशि रही. एने लब्धराशिनो आंक ६६२६१०३१९ ठे तेने वमणा करतां १३२५२२०६३८ नो आंक थाय, तेनी साथे जाग पहोंचे नही तेने सूक्ष्म गणित नथी माटे एमज पडता मूकवा.

अने ६६२६१०३१९ ए लब्ध प्रतर प्रतिकला थइ. तेने उंगणीश जागे वेंचीये, तेवारे ३४८७४२२७ कलानी उपर ७ प्रतिकला थाय. हवे एना योजन करवा साम फरी उंगणीश जागे वेंचिये तेवारें (१८३५४७५) योजननी उपर चार कला अने ७ प्रतिकला तथा ३४७५१३७८४९ एटली संख्यानी पूर्वांक १३२५२२०६३८ छेद राशि वाली शेष राशि रही. ए दक्षिणजरतार्द्धना प्रतर करी देखाड्या. तेना यंत्रनी स्थापना नीचे करीये ठैये.

दक्षिण भरतार्द्धना प्रतर करवानो यंत्र.

१ इक्षु कला.	४५२५
२ किंचित् न्यून जीवा कला.	१८५२२५
३ इक्षु कलाने जीवा कला साथे गुणतां.	८३८१४३१२५
४ तेने चार भागे वेंचतां कला.	२०९५३५८८१
५ चोथा भागनी कलानो वर्ग करतां	४३९०५२४३५१९२७९९६१
६ तेने दशगुणो करतां	४३९०५२४३५१९२७९९६१०
७ ते वर्गनुं मूल शोधतां लाधेलो आंक.	६६२६१०३१९
८ शेष राशि रही.	३४७५१७८४९
९ छेद राशि.	१३२५२२०६३८
१० लाधेली प्रतिकलाने १९ भागे वेंचतां कला.	३४८७४२२७१६ प्रतिकला.
११ फरी ते कलाना योजन करवा १९ नो भाग आपतां	१८३५४८५

एटला योजननी उपर १२) कला अने ७ प्रतिकला जाणवी.

हवे वैताढ्य प्रमुख मध्यक्षेत्रोना प्रतर करवानो उपाय कहे छे. लघु जीवानो वर्ग अने महोटी जीवानो वर्ग ए बे वर्गनो शरवालो बांधी एकठा करीने तेनुं अर्द्ध करीये, पछी तेनुं मूल शोधिये, ते मूलनो जे आंक आवे, ते पोताना विस्तार साथे एटले वैताढ्यादिक पर्वतोना पहोल पणा साथे गुणिये, तेवारे वैताढ्यादिक पर्वतोनो प्रतर थाय. तिहां प्रथम वैताढ्य पर्वतना तलीया संबंधि भूमिकानुं प्रतरकरण कहे छे.

॥ अथ वैताढ्यस्य प्रतरकरणं लिख्यते ॥

दक्षिण भरतार्द्धनी लघु जीवानो वर्ग करतां कला.	३४३०८०९७५००
वैताढ्यनी गुरु जीवा कहेवाय तेनो वर्ग करतां कला.	४१४९००९७५००
ए बन्ने जीवानो सरवालो करतां कला.	७५७९८१९५०००
तेनो अर्द्धभाग करतां कला.	३८७९९०९७५००
एनुं मूल शोधतां लाधेली कला.	१९४६७६
शेष राशिनी कला.	३५२५२४
छेद राशिनी कला.	३८९३५२

ए सामान्यथी विधि कह्यो; परंतु विशेष विधि तो आवी रीते छे, ते आगल लखीये छैये.

वैताढ्य पर्वतना दक्षिणना पासानुं जेटलुं लांब पणुं छे, तेने जीवा कहीये, ते जीवाना योजनना ओगणीशिया भाग करीये, तेने कला कहिये. ते कलानो वर्ग करिये, तेने लघु जीवा वर्ग कहीये, अने ए वैताढ्य पर्वतना उत्तरना पासानुं जेटलुं लांबपणुं छे, तेनी कला करीने तेनो वर्ग करिये, ते महोटो जीवा वर्ग कहीये. पछी लघु जीवाना वर्गनो आंक अने महोटी जीवाना वर्गनो आंक, ए बे आंक एकठा मेलवतां जे आंक आवे, तेने बे भागे वेंचीये एटले अर्ध करी नाखीये, तेवारे (३३०९९००७५००) एटलो आंक आवे, पछी तेनुं पुर्वोक्त रीते मूल शोधीये, तेवारे त्रण राशि थाय, तेमां जे आंक उगरे तेने शेष राशि कहीये, अने जे आंक नीचे लाभे, ते छेद राशि कहेवाय. अने ते छेद राशिनो अर्ध लाभे ते लब्धांक राशि कहेवाय, ए त्रण राशिमांथी जे शेष राशिनो आंक (३५९५२४) आवशे, तेने बारना आंके अपवर्त्तना करीये. अपवर्त्तना एटले पाछुं ओसरवुं चालवुं विशेष जणाये बारने आंके भाग आपीये तेवारे (२९९३७) नो आंक आवे, ते एक बाजु मांडी राखीये, तथा वली छेद राशिनो आंक (३७७३५२) छे, तेने पण बारे अपवर्त्तना करीये, तेवारे (३२४४६) आवे. ए आंक पण एक बाजु मांडी राखीये, तथा ए करणी करतां जे कला लब्ध थइ छे, तेनो आंक (१८८६७६) नो छे तेने वैताढ्यनुं पहोलपणुं पचास योजननुं छे. तेनी साथे गुणाकार करीये, तेवारे (९४३३८००) नो आंक आवे, ते पण एक बाजु लखी राखीये, तथा शेष राशिना आंकने बारनो भाग आपतां जे २९९३७ नो आंक लाधो छे, तेने पण वैताढ्य पर्वतना तलीयाना पहोल पणाना पचाश योजन साथे गुणाकार करीये, तेवारे (१४९६८५०) थाय ए आंकने प्रथम छेदराशिना आंकने बारे भाग आपतां जे (३२४४३) नो आंक आव्यो छे, ते आंके भाग आपीये, तेवारे (४५) आंक आवे, अने शेष (८७००) आंक वधता रहे, हवे पीस्तालीशना आंकने पूर्वोक्त लब्धराशिने पचास गुणी करतां जे (९४३३८००) नो आंक आव्यो छे. तेनी साथे मेलवीये तेवारे (९४३३८४५) थाय एटली शेष कलानी राशि उगरी. तेना योजन करवाने अर्थे ओगणीशनो भागाकार आपीये, तेवारे (४९६५०७) योजन उपर बार कला एटला चोरस एटले समचतुरस्र चोखूणा योजनना थांभला वैताढ्य पर्वतनी नीचली तलीयानी भूमिकामांहे थाय छे.

हवे वैताढ्य पर्वत उपर दश योजन ऊंचा चढिये, तेवारे पहेली मेखला आवे, तिहां प्रतर गणित केटलुं थाय ? ते कहीये छैये.

ए पण वैताढ्य पर्वतनो लघु जीवानो वर्ग तथा महोटी जीवानो वर्ग ए बेहु वर्गने

मेलवी सरवालो करी पछी तेनुं अर्ध करी, ते अर्ध जागमां जे आंक आव्यो तेनी कर णी करवी एटले मूल शोधवुं. पछी तेनी त्रण राशि कलानी लाधी, त्यां सुधी तो बधो पूर्वली रीते वर्त्तारो वर्त्तवो. तेवार पछी पहेली मेखलाने विषे एटलुं विशेष करवुं, के पूर्वे वैताढ्य पर्वतना तलियानी करणीमां शेष राशिने वारे अपवर्त्तन करतां जे १०४६७६ कला लाधेली छे, तेने वैताढ्यना तलियानुं पहोलपणुं पचास योजननुं छे, ते नी साथे गुणाकार कीधो हतो ते इहां पहेली मेखलाये वैताढ्य पर्वत त्रीश योजन प होलो छे, माटे ए लब्ध कलाने त्रीशे गुणीये. तेवारे ५७४०२७० नो आंक आवे, ते एक बाजु मांडी राखीये, अने शेष राशिनी द्वादश अपवर्त्तनाये एटले वारना आंके जाग दे तां जे २०६११ नो आंक आव्यो छे, ते आंकने वैताढ्यनी पहेली मेखलाना त्रीश यो जन साथे गुणीये, तेवारे ७७१३१० नो आंक आवे, ते आंकने छेदराशिना आंकने बारे जाग आपतां जे ३२४४६ नो आंक आव्यो छे, ते आंके जागाकार आपीये, तेवा रे (२१) नो आंक आवे, अने उपर ५२६७ नो आंक वधे. ते वधेलो आंक कांइ जा गाकारमां काम न आवे माटे एमज रहेवा दइये. बाकी मात्र सत्तावीशना आंकने पू र्वोक्त लब्ध कलाने वैताढ्यनी पहेली मेखलाना पहोल पणाना त्रीश योजननी साथे गुणतां जे ५७४०२७० नो आंक आव्यो छे, तेनी साथे मेलवीये, तेवारे ५७४०३०१ नो आंक कलानो थाय, तेना योजन करवाने अर्थे ए आंकने उंगणीशनो जाग आपीये, तेवारे (३०१३०४) योजन उपर अगियार कला एटला एकेका योजननां समचतुरस्र खांडवा वैताढ्य पर्वतनी पहेली मेखलानी जूमिकाये थाय.

हवे वैताढ्य पर्वतनी बीजी मेखलाये प्रतर गणित करवानो उपाय कहीये छैये. तिहां पहेली मेखलाये जे करणी करतां १०४६७६ कला लब्धमान हती, ते आंकने इहां बीजी मेखला दश योजननी पहोली छे, माटे दशना आंक साथे गुणीये, तेवारे १०४६७६० थाय. ते आंकने एक बाजुये लखी राखीये.

पछी शेष राशिने बारे जागतां जे २०३११ नो आंक आव्यो छे, ते आंकने वैता ढ्यनी बीजी मेखलानुं दशयोजन पहोलपणुं छे, तेनी साथे गुणीये. तेवारे २०३११० नो आंक थाय. ते आंकने वली छेद राशिना आंकने बार जागे वेंचतां जे ३२४४६ नो आंक आवेलो छे, ते आंके जागाकार आपीये तेवारे ए नो आंक आवे, अने उपर १७५६ अंश वधे, ते अंशने जाग पहोंचे नही माटे एमज रहेवा दइये. अने नवना आंकने पूर्वोक्त लब्ध राशिना आंकने वैताढ्यनी बीजी मेखलाना पोहोलपणाना दश योजन साथे गुणीने जे १०४६७६० कलानो आंक आवेलो छे, तेनी साथे मेलवीये,

तेवारे १०५४६७६० कला थाय. पछी कलाना योजन करवा सारु ए आंकने ओगणीशनो जागाकार आपीये, तेवारे १०२४६१ योजननी उपर दश कला थाय, एटला वैताढ्यनी बीजी मेखलाना सम चोरस खांडवा थाय, ए वैताढ्यपर्वतनी बीजी मेखलानुं प्रतरग णित कह्युं. ए सर्वना यंत्रनी स्थापना आगल करशु.

हवे उत्तर जरतार्द्धनुं प्रतरकरण लखीये छैये. इहां वैताढ्य पर्वतना उत्तरना पासा नी जे जीवा तेनी कला करीने पछी तेनो वर्ग करीये, तेने लघु जीवा वर्ग कहीये, अने हिमवंत पर्वतना दक्षिण पासानी लांबपणानी जे जीवा तेनी कला करीने पछी तेनो वर्ग करीये, तेने गुरुजीवा वर्ग कहीये. पछी बेहु जीवाना वर्गने एकठा करी श रवालो आपतां जे आंक आवे, तेनुं अर्द्ध करीये, पछी तेनी करणी करी मूल शोधी ये, तेवारे लब्ध कला २४१०६० आवे. तथा शेष राशि ४०७१५० आवे, तथा छेदराशि ४८३०२० आवे, एवी त्रण राशि थाय.

हवे शेषराशिनो अंक ४०७१५० छे, तेने शून्ये करी अपवर्त्तिये, एटले शेषराशिने छेहडे शून्य अर्थात् मींडुं छे, तेने जांजी नाखीये, तेवारे दशक पड्युं. ए जाव जाणवो. अर्थात् दशने आंके जागाकार कीधो तेवारे ४०७१५ नो आंक रह्यो. तथा छेदराशिनो आंक ४८३०२० छे, तेने पण शून्ये अपवर्त्तिये, तेवारे ४८३०२ नो आंक रहे.

हवे पूर्वोक्त लब्ध राशिनो आंक २४१०६० छे, तेने जरतार्द्धना बाणनी कला एटले पहोल पणानी कला ४५२५ छे. तेनी साथे गुणीये, तेवारे १०९०८६५००० आवे

वली शेषराशिने शून्ये अपवर्त्तन करीने ४०७१५ नो आंक रह्यो छे, तेने पण जर तार्द्धना पृथुत्व एटले बाणनी कला ४५२५ नी साथे गुणाकार करीये तेवारे १८४२३५३७५ नो आंक आवे. हवे ए आंकने छेदराशिना शून्ये अपवर्त्तेलो जे ४८३०२ नो आंक छे, ए आंके जाग आपीये, तेवारे ३८०७ नो आंक लाजे, शेष ७०३१ एट लो आंक वधे. ते एमज राखीये अने प्रतिकला ३८०७ लाधी, ते पूर्वोक्त ४५२५ पहो लपणानी राशिये गुणाकार करेली प्रतिकलानी राशि १०९०८६५००० आंकनी छे, तेनी साथे मेलवीये, तेवारे १०९०८७२८०७ एटलो प्रतिकलानो आंक थाय. कारण के, एने पहोलपणाना २३८ योजनथी गुणाकार कर्यो होय तो ए कलानी राशि कहेवाय. परंतु आ ठेकाणे उत्तरार्द्ध जरतना योजन २३८ ने त्रण कलानी सर्व कला ४५२५ क रीने तेनी साथे गुणाकार करेलो छे, माटे एने प्रतिकला कहिये छैये.

हवे ए १०९०८७२८०७ जे प्रतिकला थइ तेने ओगणीशनो जाग आपीये, तेवारे

५७६२४७०४ कला थाय, अने उपर अगीयार प्रतिकला उगरे तेना योजन करवा सारु फरी ए कलानी राशिने ओगणीशनो भागाकार आपीये, तेवारे ३०३२८०० योजन बार कला अने अगीयार प्रतिकला थाय एटला एकेका योजनना चोसला खांडवा उत्तरार्द्ध भरतना जाणवा. इति उत्तर भरतार्द्धस्य प्रतरकरणविधिः समाप्तः ॥

हवे हिमवंत पर्वतने तलीये प्रतरनी संख्या करवाने अर्थे वरतारो करवानीरीत लखीये छैये. हिमवंत पर्वतनी दक्षिणने पासे जे उत्तरभरतार्द्धनो ७५६०००००००० जीवा वर्ग छे, ते लघु जीवा वर्ग जाणवो, अने हिमवंत पर्वतनी उत्तर दिशिये जे २२४४०००००००० जीवावर्ग, ते गुरु जीवावर्ग जाणवो. ए बे वर्ग एकठा मेलवीये, तेवारे ३०००००००००००० ए आंक आवे, तेनुं अर्द्ध करीये, तेवारे १५०००००००००० थाय. ए आंकने करणी करी मूल शोधिये, तेवारे ३०७७२९० लब्धराशि थाय. अने शेष राशि २५९१९६ एटली उगरे, तथा छेदराशि ७७४५९६ थाय. पछी शेष राशिनो २५९१९६ नो आंक आव्यो छे, ते आंकने चारना आंक साथे अपवर्त्तन करीये, एटले चारे भागाकार आपीये, तेवारे ६४७९९ नो आंक आवे, तथा छेदराशिना आंकने चारे अपवर्त्तन करीये, एटले चारने आंके भागाकार आपीये तेवारे १९३६४९ नो आंक आवे.

हवे लब्धराशिनो आंक जे ३०७७२९० नो आव्यो छे ते आंकने हिमवंत पर्वतनुं पहोलपणुं जे वीश हजार कलारूप छे, तेनी साथे गुणीये, तेवारे ७७४५९६०००० नो आंक आवे, ते एक बाजुये लखी मूकीये.

पछी शेष राशिने चारे अपवर्त्तन करतां जे ६४७९९ नो आंक आव्यो छे, ते राशिने हिमवंत पर्वतना पहोल पणानी वीश हजार कला साथे गुणाकार करीये, तेवारे १२९५९८०००० नो आंक आवे, तेने छेदराशिने चारे अपवर्त्तन करेला १९३६४९ ना आंके भाग आपिये, तेवारे ६६९२ नो आंक आवे, अने उपर ८०८९२ नो आंक शेष रहे, तेने भाग पहोंचे नही माटे ते आंक पडतो मूकीने ए ६६९२ नो जे आंक छे ते हिमवंत पर्वतना पहोल पणानी वीशहजार कलाये गुणेला लब्धराशिना ७७४५९६०००० आंक साथे मेलवीये, तेवारे ७७४५९६६६९२ नो आंक प्रतिकलारूप थाय, तेनी कला करवा सारु ए आंकने ओगणीशनो भागाकार आपीये, तेवारे ४०७६८२४५७ नो आंक उपर नव प्रतिकला वधे, वली ए आंकना योजन करवाने अर्थे फरी ओगणीशे भाग आपीये, तेवारे २१४५६९७१ योजननी उपर आठ कला अने नव प्रतिकला थाय. एटला एकेक योजनना चोशला खांडवा हिमवंत पर्वतना जाणवा इति ॥

हवे हिमवंत क्षेत्रना प्रतर गणितनो वरतारो कहियें छैये. इहां हिमवंत पर्वतना उत्तर पासानो जे जीवावर्ग ते लघुजीवावर्ग कहीये, अने हिमवंत क्षेत्रने छेहडे महा हिमवंत पर्वतने अडतो जे जीवावर्ग, ते महोटो जीवावर्ग जाणवो. ए बे वर्ग एकठा मेलवीने तेनुं अर्द्ध करीये, तेवारे ३६८४०००००००० एटली कलानो आंक आवे, तेनुं सम विषम करी करणी करी मूल शोधिये, तेवारे ६०६९५९ कलानो आंक लब्धराशिनो आवे, ते एक बाजुये लखी राखीये, अने शेषराशि ७७२३१९ नो आंक रहे, तथा छेदराशि १२१३९१८ नो आंक रहे. पछी लब्ध राशिनो ६०६९५९ नो आंक छे तेने हिमवंतक्षेत्रना पोहोलपणानी ४०००० कला बाणरूप छे. तेनी साथे गुणिये तेवारे २४२७८३६०००० नो आंक आवे, ते एक बाजु मांडी मूकीये, पछी शेषराशिना आंकने एके अपवर्त्तन करीये, तेवारे तेहीज ७७२३१९ नो आंक आवे तेने हिमवंतक्षेत्रना पहोलपणानी बाण रूप ४०००० कला छे तेनी साथे गुणीये तेवारे ३०८९२७६०००० नो आंक आवे. ते आंकने छेदराशिनो १२१३९१८ नो आंक छे, तेने एके अपवर्त्तन करतां एहीज आंक आवे ते आंके भागाकार आपीये, तेवारे २५४४८ नो आंक आवे, अने शेष ९७४७३६ नो आंक रहे तेने भाग पहोंचे नही माटे पडतो मूकीये. पछी लब्धराशिना चालीश हजारे गुणेला आंकनी साथे ए २५४४८ नो आंक मेलवीये, तेवारे २४२७८३८५४४८ नो आंक आवे एटली प्रतिकला थइ तेनी कला करवा सारु एने ओगणीशनो भाग आपीये, तेवारे १२७७८०९७६० कला अने उपर आठ प्रतिकला थाय तेना वली योजन करवा सारु ए आंकने ओगणीशनो भाग आपीये, तेवारे ६७२५३१४५ योजननी उपर पांच कला अने आठ प्रतिकला एटला योजनना चोसला खांडवा हिमवंत क्षेत्रना थाय.

हवे महाहिमवंत पर्वतना प्रतरनुं गणित करवुं, तेनो वरतारो लखीये छैये. हिमवंत क्षेत्रना उत्तरनी पासे जे जीवानो वर्ग ते लघु जीवावर्ग कहीये अने महाहिमवंत पर्वतना छेहडानो जे जीवावर्ग ते गुरु जीवावर्ग कहीये. ते बेहुने एकठा मेलवीने तेनुं अर्द्ध करीये, तेवारे ७८१२०००००००० एटलो आंक थाय तेनुं मूल शोधीये तेवारे लब्धराशि ८८३८५५ आवे अने छेदराशिनो आंक १७६७७१० नो आवे. तथा शेष राशि ३३८९७५ नो आंक आवे, तेने पांत्रीशना आंक साथे अपवर्त्तिये, एटले पांत्रीशे भाग आपीये तेवारे ९६८५ नो आंक आवे. पछी छेदराशिनो आंक १७६७७१० छे, तेने पांत्रीशे अपवर्त्तिये, तेवारे ५०५०६ नो आंक आवे.

हवे पूर्वे जे मूल शोधतां ८८३८५५ नो आंक लब्धराशिनो आव्यो छे, ते आंकने महा हिमवंत पर्वतना पहोलपणाना बाण रूप एंशी हजार कला छे, तेनी साथे गुणिये, ते वारे ७०७०८४०००००० नो आंक थाय.

हवे शेष राशिने अपवर्त्तन करतां जे ए६०५ नो आंक आव्यो छे, तेने महाहिमवंत पर्वतनी पृथुत्व रूप आठ हजार कलानी साथे गुणीये, तेवारे ७७४८०००००० नो आंक थाय, ते आंकने अपवर्त्तन करेलो जे छेदराशिनो ५०५०६ नो आंक छे, ते आंके जागाकार आपीये तेवारे १५३४० नो आंक आवे, शेष ३७ए६० नो आंक वधे, तेने जाग पोहोचे नही माटे पमतो मूकीये अने १५३४० ना आंकने पूर्वे जे एंशीहजार गुणो करेलो लब्धराशिनो ७०७०८४०००००० नो आंक छे, तेनी साथे मेलविये, तेवारे ७०७०८४१५३४० नो आंक प्रतिकलानो थाय, तेनी कला करवा सारु ए आंकने उंगणीशे जाग आपीये, तेवारे ३७२१४ए५५४४ एटली कला उपर चार प्रतिकला थाय. वली एना योजन करवा सारु ए कलाना आंकने बीजी वार उंगणीशे जाग आपीये, ते वारे १ए५८६८१०६ योजन उपर दश कला अने चार प्रतिकला थाय, एटला सम चोरस योजनना खांमवा महाहिमवंत पर्वतना जाणवा.

हवें हरिवर्षक्षेत्र बीजुं नाम हरिवास क्षेत्र तेनुं प्रतर करवानो वरतारो कहीये छैये, महाहिमवंत पर्वतनी उत्तर पासे जे जीवानो वर्ग ते लघु जीवावर्ग कहीये, अने हरिवास क्षेत्रने छेहडे निषध पर्वतने लगतो लांबपणानो जे जीवावर्ग ते गुरु जीवावर्ग कहीये. ए बे जीवावर्गनो सरवालो करी एकठो मेलवीने पछी तेनुं अर्द्ध करीये ते वारे १५१०८०००००००० नो आंक आवे, तेने समविषम करी मूल शोधिये तेवारे वर्ग मूल १२२ए१४६ लब्धराशिनो आंक आवे, अने ११०६०४ शेष राशिनो आंक आवे तथा २४५८२ए२ एटलो छेदराशिनो आंक आवे.

हवे शेषराशिना आंकने चारे अपहरिये तेवारे २७६५१ नो आंक आवे, तेमज छेदराशिना आंकने पण चारे जाग आपीये, तेवारे ६१४५७३ नो आंक आवे.

हवे मूलनी लब्धराशिना आंकने हरिवासक्षेत्रना पहोलपणानो बाण १६०००० कला रूप छे. तेनी साथे गुणीये तेवारे १ए६६३३६०००० नो आंक आवे, तेने एक बाजु मांमी राखीये.

पछी शेषराशिना आंकने चारे अपवर्त्तन करतां जे २७६५१ नो आंक आव्यो छे, तेने हरिवर्ष क्षेत्रना पहोल पणानी १६०००० कला साथे गुणीये, तेवारे ४४२७३६००००

नो आंक थाय. ए आंकने चारे अपवर्त्तना करेली बेदराशिना जे ६१४५७३ नो आंक बे, ते आंके नाग आपीये, तेवारे ७२०३ नो आंक आवे. शेष ५ए०६७१ नो आंक वधे, तेने नाग पहोंचे नही, माटे एमज रहेवा आपीये. अने ७२०३ ना आंकने एक लाखने शाठ हजारे गुणेला लब्धराशिना आंक साथे मेलवीये तेवारे १ए६६६३३६७२०३ नो आंक प्रतिकलानो थाय, तेनी कला करवाने अर्थे उंगणीशनो नाग आपीये, तेवारे १०३५०७०३५३७ कला थाय, तेना योजन करवा सारु फरी बीजीवार उंगणीशे नाग आपीये तेवारे ५४४७७३०७० योजननी उपर सात कला थाय. एटला हरिवास क्षेत्रनी नूमिना एक योजनीया समचतुरस्त्र खंमुक जाणवा.

हवे निषधपर्वतनुं प्रतर करवानुं गणित कहिये बैये. हरिवासक्षेत्रने बेहेडे निषधपर्वतने लगतुं जे लांबपणुं तेनी जीवानो वर्ग ते लघुजीवा वर्ग कहीये, तथा निषधपर्वतनी उत्तरनी पासे मेरुपर्वत तरफ जे निषधनुं लांबपणुं तेनी जीवानो जे वर्ग,ते गुरु जीवावर्ग जाणवो. ए बे जीवावर्गना आंकनो सरवालो करी तेनुं अर्द्ध करीये. तेवारे २५७६०००००००००० नो आंक थाय, तेनुं वर्गमूल शोधिये तेवारे १६०७१०४ लब्धराशि थाय, अने १५२५१७४ एटली शेषराशि रहे, तथा ३२१६२०७ एटली बेदराशि आवे, ए त्रण राशि थइ.

हवे शेषराशिनो आंक मांमीने तेने शोलने आंके अपवर्त्तिये एटले नागाकार आपीये, तेवारे ए५३२४ नो आंक आवे. तेमज ते बेदराशिना आंकने शोले अपवर्त्तिये तेवारे २०१०१३ नो आंक आवे.

पबी लब्धराशिनो आंक जे १६०७१०४ नो बे, तेने निषध पर्वतना पहोलपणानी ३२०००० कलानी साथे गुणीये, तेवारे ५१४५ए३२७०००० नो आंक आवे, तेने एक बाजु लखी राखीये.

हवे शेषराशिने शोलना आंके अपवर्त्तन करेलो जे ए५३२४ नो आंक बे, तेने निषध पर्वतना पहोलपणानी जे ३२०००० कला बे, तेनी साथे गुणीये, तेवारे ३०५०३६७०००० नो आंक आवे, तेने शोले अपवर्त्तन करेली बेदराशिनो जे २०१०१३ नो आंक बे, ते आंके नागाकार आपीये, तेवारे १५१७४ए नो आंक आवे. शेष १५७२६३ नो आंक वधे, तेने नाग पहोंचे नही माटे पमतो मूकीये, अने त्रण लाख वीश हजारे गुणेला लब्धराशिना आंकनी साथे ए १५१७४ए नो आंक मेलविये, तेवारे ५१४५ए३४३१७४ए नो आंक प्रतिकलारूप थाय, तेनी कला कर

वाने अर्थे ए आंकने ओगणीशनो जागाकार आपिये, तेवारे २७०८३८६४८२८ कला नी उपर सत्तर प्रतिकला थाय तेना योजन करवा सारु फरी पण ओगणीशनो जाग आपीये, तेवारे १४२५४६६५६९ योजन उपर सत्तर कला अने सत्तर प्रतिकला थाय, एटलुं निषेध पर्वतनुं प्रतर गणित जाणवुं. एटले जूमिना एकेका योजनना समचतुरस्र खंडूक एटला थाय ॥ इति ॥

हवे विदेहार्द्धनुं प्रतर गणित करी देखाडिये बैये, निषधपर्वतनो मेरु तरफ जे बेहेडो तेनो जे जीवावर्ग ते लघुजीवावर्ग जाणवो, अने जंबूद्वीपनी मध्यनो वचमांनो जे अर्द्धजाग तिहां सुधी जे बाण अथवा जीवा तेनो जे वर्ग ते गुरुजीवावर्ग जाणवो. ए बे जीवावर्गने एकठा करतां जे आंक आवे, तेनुं अर्द्ध करीये, तेवारे३४०५२०००००००० नो आंक आवे तेनुं मूल शोधिये, तेवारे १८४५३१८ नो आंक आवे, अने १४७८८७६ एटली शेष राशि रहे, तथा ३६९०६३६ एटली बेदराशि आवे, ए त्रण राशि थइ.

हवे शेषराशिनां आंकने चारे अपवर्त्तन करीये, तेवारे ३६९७१९ नो आंक आवे अने बेदराशिने चारे अपवर्त्तन करीयें, तेवारे ९२२६५९ नो आंक आवे.

हवे लब्धराशिनो आंक १८४५३१८ नो बे, ते आंकने विदेहार्द्धनुं जे बाण एटले पहोलपणुं तेनी ३२०००० कला बे, तेणे करी गुणाकार करीये, तेवारे ५९०५०१७६०००० नो आंक आवे, तेने एक बाजुये मांडी राखीये. पबी शेषराशिने चारे अपवर्त्तन करतां जे ३६९७१९ नो आंक आव्यो बे, तेने विदेहार्द्धना पहोलपणानी ३२०००० कलानी साथे गुणीये, तेवारे ११८३१००८०००० नो आंक आवे, तेने चारे अपवर्त्तन करेली बेदराशिनो जे ९२२६५९ नो आंक बे, तेणे करी जागाकार आपीये तेवारे १२८२२७ नो आंक आवे अने उपर २८४४०७ नो आंक वधे, तेने जाग पहोंचे नही, माटे तेने पडतो मूकीये, अने १२८२२७ नो जे आंक बे ते पूर्वे अपवर्त्तन करीने विदेहार्द्धनी लंबाइनी कला साथे गुणेलो जे लब्धराशिनो आंक तेनी साथे मेलवीये, तेवारे ५९०५०१८८८२२७ नो आंक प्रतिकलानो थाय. पबी एनी कला करवा सारु ओगणीशे जाग आपिये. तेवारे ३१०७९०४६७४८ एटली कला थाय, उपर पन्नर प्रतिकला वधे, तेना योजन करवाने अर्थे फरी ए आंकने ओगणीशे जाग आपीये, तेवारे १६३५७३९३०२ योजननी उपर दश कला अने पन्नर प्रतिकला थाय. एटलुं विदेहार्द्धनुं प्रतर गणित जाणवुं ॥

हवे ए प्रतरना सरवालानो अवशेष कहे बे. ए दक्षिणजरतार्द्ध आदे देइने जे क्षेत्रो

तथा पर्वतो तेना प्रतरनुं गणवुं, एटला चोसला योजनना गणितपदनुं करवुं ते व्यवहार मार्गे देखाड्युं, तेमज मेरुथकी उत्तरदिशिये जे ऐरवत क्षेत्र आदे देइने क्षेत्रो तथा पर्वतो छे तेनो पण उत्तरविदेहार्द्ध पर्यंत एज रीते वरतारो वर्त्तवो, पछी सर्वनो सरवालो एकठो मेलववो अथवा जंबूद्वीपना विदेहार्द्ध पर्यंत अर्द्धभागना चोसला योजनीयां खंम जेनुं गणित उपर करी आव्या छैये, तेने एकठा करी सरवालो बांधीने पछी बमणा करीये, तेवारे "सगसयनउय" ए गाथामां कहेली संख्या जेटलां प्रतर थाय. ए प्रतर करवाना यंत्रनी स्थापना नीचे करीये छैये.

प्रतरकरणं.	उत्तरभरतार्द्धस्य १	हिमवद्गिरेः २	हिमवंतक्षेत्रस्य ३
लघुजीवावर्गकला.	४१४९००९७५००	७५६००००००००	२२४४००००००००
गुरुजीवा वर्ग कला.	७५६००००००००	२२४४००००००००	५१२४००००००००
उभयमीलनेकला.	११७०९००९७५००	३०००००००००००	७३६८००००००००
तद्दलीकरणेकला.	५८५४५०४८७५०	१५००००००००००	३६८४००००००००
वर्गमूललब्धकला.	२४१९६०	३८७२९८	६०६९५९
शेषराशिः ॥	४०७१५०	२५९१९६	७७२३१९
छेदराशिः ॥	४८३९२०	७७४५९६	१२१३९१८
अपवर्त्तनांक १०	शून्येनापवर्त्तना.	४	०
कृतेऽपवर्त्तनेशेषराशिः	४०७१५	६४७९९	०
कृतेऽपवर्त्तनेछेदराशिः	४८३९२	१९३६४९	०
पृथुत्वकलाः ॥	४५२५	२०४००	०००००
तद्गुणोलब्धराशिः	१०९४८६९०००	७७४५९६००००	२४२७८३६००००
पृथुत्वेनशेषांशगुणाः	१८४२३५३७५	१२९५९८००००	३०८९२७६००००
छेदभागेनलब्धकला.	३८०७शेष७०३१	६६९२शेष८०८९२	२५४४८शे०९७४७३६
तासांबृहद्राशिक्षेत्र.	१०९४८७२८०७	७७४५९६६६९२	२४२७८३८५४४८
एकदा १९ भागकला॥	५७६२४८८४प्र०११	४०७६८२४५७प्र०९	१२७७८०९७६०प्र८
पुनः १९ भागेयो० ॥	३०३२८८८क०१२— प्र०११	२१४५६९७१क०८— प्र०१०	६७२५३१४५क०५ प्र०८

महाहिमवद्गिरेः४	हरिवर्षक्षेत्रस्य ५	निषधगिरेः ६	विदेहार्द्धस्य ७
५१२४००००००००	१०५०००००००००००	१९७१६००००००००	३२००४००००००००
१०५००००००००००	१९७१६००००००००	३२००४००००००००	३६१००००००००००
१५६२४००००००००	३०२१७००००००००	५१७२००००००००००	६८१०४००००००००
७८१२००००००००००	१५१०८००००००००००	२५८६००००००००००	३४०५२००००००००००
८८३८५५	१२२९१४६	१६०८१०४	१८४५३१८
३३८९७५	११०६८४	१५२५१८४	१४७८८७६
१७६७७१०	२४५८२९२	३२१६२०८	३६९०६२६
३५	४	१६	४
९६८५	२७६७१	९५३२४	३६९७१९
५०५०६	६१४५७३	२०१०१३	९२२६५९
८००००	१६००००	३२००००	३२००००
७०७०८४०००००	१९६६६३३६००००	५१४५९३२८०००००	५९०५०१७६००००
७७४८०००००	४४२७३६००००	३०५०३६८०००००	११८३१००८००००
१५३४०शेष३७९६०	७२०३शेष.५९०६८१	१५१७४९शे१५८२६३	१२८२२७शेष२८४४०७
७०७०८४१५३४०	१९६६६३३६७२०३	५१४५९३४३१७४९	५९०५०१८८८२२७
३७२१४९५५४४प्र०४	१०३५०७०३५३७	२७०८३८६४०२८प्र१७	३१०७९०४६७४८प्र१५
१९५८६८१८६क०१०	५४४७७३८७०क०७	१४२५४६६५६९क१७	१६३५७३९३०२क०१०
प्र०४		प्र०१७	प्र०१५

हवे घनगणित गणवानी रीत कहे छे.

पूर्वे जे प्रतरगणित कह्युं ते प्रतरनुं गणित भूमिकानुं गणाय छे, तेहीज प्रतर गणितनो आंक मांडीने पर्वतोनुं घन गणित करीये; केम के, पर्वतनी भूमिकाना तलियां प्रतर गणित जेटलां होय, माटे तेटलो आंक मांडीने ऊंचपणाना आंके गुणीये, तेवारे तेनुं घनगणित थाय. ए संक्षेपथी कह्युं.

विशेषार्थ तो आम छे, के वैताढ्यने तलीये भूमिकानुं प्रतर ५१२३०७ योजन उपर चार कला एटलुं छे. पहेली मेखला पर्यंत पचास योजन पहोलुं अने दश योजन ऊंचुं छे, माटे ए प्रतरना गणित पदनो आंक तेने दशे गुणाकार करीये, तेवारे ५१२३०७६ योजन उपर छ कला एटलुं भूमिकाथी मांडीने पहेली मेखला सुधी घनगणित होय.

हवे पहेली मेखलाये पर्वत सांकडो छे. केम के, पचास योजन वैताढ्यनी लंबाइमांथी

दश योजन एक पासे मूक्या, अने दश योजन बीजे पासे मूक्या, तेवारे त्रीश योजन वैताढ्य पहोला छे, माटे पहेली मेखलाये पर्वतनुं तलियुं त्रीश योजन छे, तिहां प्रतर (३०७३०४) योजन उपर अगीयार कला छे, अने तिहांथी दश योजन ऊंचा चढिये तिहां सुधी ए पर्वत बेहु पासे सरखो त्रीश योजन पहोलो छे, माटे प्रतरना आंकने दश योजननी उंचाइ साथें गुणीये, तेवारे (३०७३०४५) योजन उपर पन्नर कला एटलुं पहेली मेखलाये घनगणित जाणवुं.

वली बीजी मेखलाये ए पर्वतना दश योजन उत्तरनी पासे मूकीये, अने दश योजन दक्षिणनी पासे मूकीये, तेवारे वैताढ्य पर्वत दश योजन पहोलो छे, अने बन्ने पासे मथाला पर्यंत पांच योजन उंचो छे, तेमाटे तिहां दश योजन पहोलो छे, तेना प्रतर गणितनो आंक १०२४६१ उपर दश कलानो छे, तेने उंचपणाना पांच योजन साथे गुणीये, तेवारे ५१२३०७ योजन उपर बार कला एटलुं बीजी मेखलाये घनगणित थाय.

हवे समस्त वैताढ्य पर्वतनुं घन गणित कहीये छैयें. वैताढ्यनुं प्रतर गणित९२१५३ योजन उपर चौद कला छे, ए आंकने वैताढ्यनी पच्चीश योजननी उंचाइ छे, परंतु तेमां जुदी जुदी त्रण राशिने जुदा जुदा उंचाइना योजन साथे त्रण प्रकारनो पूर्वोक्त रीते गुणाकार करीये, तेवारे सर्व मली ७७०९२२९ योजन उपर चौद कला थाय.

हवे हिमवंतपर्वतनुं घन गणित कहे छे. हिमवंतने तलीये २१४५६९७१ योजन आठ कला अने दश प्रतिकला एटलुं प्रतरगणित छे, तेने हिमवंत पर्वतनी एकशो योजननी ऊंचाइ छे, तेनी साथे गुणतां (२१४५६९७१४४) योजननी उपर शोल कला अने बार प्रतिकला एटलो आंक घनगणितनो थाय.

महा हिमवंत पर्वतनुं घनगणित कहे छे, एने तलीये प्रतर गणित १९५८६८१८६ योजन दश कला अने पांच प्रतिकला छे, ए पर्वत बेहु पासे सरखो बशे योजन उंचो छे, माटे प्रतर गणितना आंकने बशे गुणो करतां ३९१७३६३७२०० योजन उपर बार प्रतिकला एटलुं घनगणित थाय एटले योजनना चोसला खंडुक थाय.

निषध पर्वतनुं घनगणित कहे छे. निषध पर्वतने तले १४२५४६६५६९ योजन उपर अढार कला एटलुं प्रतर गणित छे, तेने ए पर्वतनी चारशे योजननी ऊंचाइ साथे गुणीये, तेवारे (५७०१८६६२७९७८) योजन उपर अढार कला घनगणितनी थाय.

जे मनुष्य पूर्वोक्त गणित प्रमुख करवाने आलसु होय ते मनुष्यने वास्ते यंत्रोनी स्थापनाओ करेली छे, तेना उपरथी जोइ लेवुं, अने जे मनुष्य झाझा निपुणबुद्धिवाला उद्यमवंत हशे, ते तो पोतेज गणित करी वर्त्तारो करी लेशे.

घनगणितनां यंत्रनी स्थापना.

घनगणित कला.	१८३५४८५	क. १२	प्रति ६	प्रतर प्रमाणम्.	उच्चत्वम्	उच्चपणा साथें गुणवुं.
वैताढ्यभूमौ.	५१२३०७	१२	०	५१२३०७कला१२	१०	५१२३०७६। ६
वैताढ्य प्र. मे.	३०३२८८८	१२	११	३०७३८४ ।११	१०	३०७३८४५।१५
वैताढ्य द्वि. मे.	२१४५६९७१	८	१०	१०२४६१ ।१०	५	५१२३०७।१२
सकल वैता०	६७२५३१४५	५	८	९२२१५३ ।१४	श्री२५	८७०९२२९।१४
हिमवति.	१९५८६८१८६	१०	५	२१४५६९७१।८।१०	१००	२१४५६९७१४४।१६।१२
महाहिमवति	५४४७७३८७०	७	५	१९५८६८१८६।१०५	२००	३९१७३६३७३०८।प्र१२
निषधे.	१४२५४६६५६९	१७	१७	१४२५४६६५६९।१८	४००	५७०१८६६२७०९९
विदेहार्द्ध.	१६३५७३९३०२	१०	१			

एवं ३८९५९३८७२८ योजनानि ॥

३८९५९३८७२८ मेरोरुत्तरतः ॥

७७९१८७७४५६ सर्वप्रतराणामेकादयोरपि पार्श्वयोरयमंकः ॥

द्वितीयप्रकारे ११३८१६६९५ । क्रो. २ ध० ४८५ अं. ३६ न्यूनं भवति ।

पूर्वोक्त गणितपदमिदं ७९०५६९४१५० । क्रो. १$\frac{४}{३}$ ह. ६२$\frac{२}{३}$

इक्षुप्रमुख सर्वना सिद्ध थयेला आंकनो यंत्र.

सिद्धांकाः ।	इषवः	जीवाः ।	धनुःपृष्ठानि.	बाहवः ।
दक्षिणभरतार्द्धे.	२३८।३	९७४८।१२	९७६६ क. १	०
वैताढ्ये.	२८८।३	१०७२०।११	१०७४३।१५	४८८।१६।१/
संपूर्णभरते.	५२६।६	१४४७१।५	१४५२८।११	१८९२।७।$\frac{१}{२}$
हिमवति.	१५७८।१८	२४९३२।$\frac{१}{२}$	२५२३०।४	५३५०।१५$\frac{१}{२}$
हैमवति.	३६८४।४	३७६७४।१५	३८७४०।१०	६७५५।३
महाहिमवति.	७८९४।१४	५३९३१।६	५७२९३।१०	९२७६।९$\frac{१}{२}$
हरिवर्षे.	१६३१५।१५	७३९०१।१७$\frac{१}{२}$	८४०१६।४	१३३६१।६।$\frac{१}{२}$
निषधे.	३३१५७।१७	९४१५६।२	१२४३४६।९	२०१६५।२$\frac{१}{२}$
विदेहार्द्धे.	५००००	१०००००	यो. १५८११३।$\frac{१}{२}$	१६८८३।१३$\frac{१}{२}$

प्रतरगणितानि.	क. प्र.	घनगणितानि वैताढ्य भूमौ.
१८३५४८५	१२।६॥	५१२३०७६।६
५० वि० ५१२३०७।१२।१० वि०	१०२४	३०७३८४५।१५
३० वि०	३०७३८४॥११६।१०	५१२३०७।१२
	३०३२८८८।१२।११	सकलवैताढ्यग. ८७०९२२९ क १४
	२१४५६९७१।८।१०	२१४५६९७१४४१६। प्रतिकला. १२
	६७२५३१४५।५।१०	०
	१९५८६८१८६।१०।५	
	५४४७७३८७००।७	३९१७३६३७३०८। प्रतिकला १२
	१४२५४६६५६९।१७।१७	५७०१८६६२७९७९
	१६३५७३९३०२।१०।१	०

इति अष्टप्रकारगणितं समाप्तं ॥

हवे ए जीवाप्रमुख गणितनी संग्रह गाथा कहे छे ॥ योजण सहस्स नवगं, सत्ते वसया हवंति अडयाला ॥ बारसय कला सकला, दाहिण भरहद्ध जीवाउ ॥१॥ दसचेव सहस्सा इं, जीवा सत्तय सयाइ वीसाइं ॥ बारसय कला ऊणा, वेयड्ढ गिरिस्स विन्नेया ॥२॥ चउदसय सहस्साइं, सयाइं चत्तारि एग सयराइं ॥ भरहद्धुत्तर जीवा, छच्चकला ऊणिया किंचि ॥ ३ ॥ चउवीस सहस्साइं, नवयसए जोयणाण बत्तीसे ॥ चुल्लहिमवंत जीवा, आयामेणं कलद्धं च ॥ ४ ॥ सत्तत्तीस सहस्सा, छच्चसया जोयणाण चउ सयरा ॥ हेमवयवासजीवा, किंचूणा सोलस कला य ॥ ५ ॥ तेवन्न सहस्साइं, नवयसया जोयणाण इगतीसा ॥ जीवाय महाहिमवे, अद्धकला चक्कलाउ य ॥६॥ एगुत्तरा नवसया, तेवत्तरिमेव जोयण सहस्सा ॥ जीवा सत्तरस कला, अद्धकला चेव हरिवासे ॥ ७ ॥ चउणवइ सहस्साइं, छप्पन्नहियं सयंकला दोय ॥ जीवा निसहस्सेसे, लरकं जीवा विदेहद्धे ॥ ८ ॥ ॥ इति जीवासंग्रहगाथा ॥ नवचेव सहस्साइं, छावठाइं सयाइं सत्तेव ॥ सविसेस कलाचेगा, दाहिणभरहद्ध धणुपिठं ॥९॥ दसचेव सहस्साइं, सत्तेव सया हवंति तेयाला ॥ धणुपिठं वेयड्ढे, कलाय पन्नरस हवंति ॥ १० ॥ सोलस चेव कलाउ, अहियाउ हुंति अद्धभागेणं ॥ बाहावेयड्ढसउ, अठासीया तहा चउरो ॥ ११ ॥ चउदस य सहस्साइं, पंचेव सयाइं अठावीसाइं ॥ इक्कारसय कलाउ, धणुपिठं उत्तरद्धस्सं ॥ १२॥ भरहद्धुत्तर बाहा, अठारस हुंति जोयण सयाइं ॥ बाणउय जोयणाणिय, अद्धकला सत्तय कलाउ ॥ १३॥ धणु हिमवेकल चउरो, पणवीस सहस्स डुसय तीस

हिया ॥ बाहा सोलऊ कला, तेवन्न सयाय पन्नहिया ॥ १४ ॥ अमतीस सहस्स सगसय, चत्ताधणुदस कलाय हिमवए ॥ बाहा सत्तठिसए, पणपन्नेतिन्निय कलाउं ॥१५॥ धणु महहिमवे दसकल, दोसय तेणउ सहस्स सगवन्ना ॥ बाहा बाणउयसए, ठहत्तरे नवकलऊं च ॥१६॥ चुलसी सहसासोलस, धणुहरिवासे कला चउक्कं च ॥ बाहा तेरस हस्सा, तिसयइगसठ्ठा ठकल सठ्ठा ॥ १७ ॥ निसह धणुनवकलालक्खु, सहसचउवीस तिसय बायाला ॥ बाहा पन्नठिसयं, सहस्स वीस्सं डुकलअऊं ॥१८॥ सोलस सहस्स अडसय, तेसीयासठ्ठतेरस कला य ॥ बाहा विदेहमज्झे, धनुपिठुं परियरस्सऊं ॥ १९ ॥

॥ इति धनुःपृष्ठबाहासंग्रहगाथा ॥ लक्खठारसएण, ससहस्सा चउस्सया य पणसीया ॥ बार कल ठेविकला, दाहिण नरहऊपयरंतु ॥ २० ॥ सत्तहियातिन्निसया, बार सयसहस्स पंच लक्खा य ॥ बारसय कला पयरं, वेयठ्ठगिरिस्स धरणितले ॥२१॥ जोयण तीसं वासे, पढमाए मेहलाइ पयरमिमं ॥ लक्खतिगतिसयरिसया, चुलसी इक्कार सकलाउं ॥ २२ ॥ दस जोयण विरकंने, बीयाइं मेहलयपरमिमं ॥ लक्खोचउवीस सया, इगसठ्ठा दस कलाउंय ॥ २३ ॥ अमसीया अठसया, बत्तीस सहस्स तीस लक्खा य ॥ कलबार विकलिगारस्स, उत्तर नरहऊ पयरमिमं ॥ २४॥ दोकोडि चउद लक्खा, सहसा ठप्पन्न नवसइग सयरा ॥ अठकला, दसविकला, पयरमिमं चुल्लहिमवंते ॥२५॥ हेमवए ठक्कोडी, बावत्तरि लक्ख सहस तेवन्ना ॥ पणयालसयं पयरो, पंचकला अठविकला य ॥ २६ ॥ गुणवीसकोडि अडव, न्न लक्ख अमसठि सहस सयमेयं ॥ चुलसीयंदससय कला, पणविकला पयरुमहहिमवे ॥ २७ ॥ चउवन्नं कोडीउं, लक्खासीयालतिसयरि सहस्सा ॥ अठसय सतरिसत्तय, कलाउ पयर तु हरिवासे ॥२८॥ बायालं कोडिसयं, लक्खा चउपन्न सहस बासठी ॥ पणसयगुणत्तरकल, अठारस्स निसहपयरमिमं ॥ २९ ॥ तेसठिं कोमिसयं, लक्ख सगवन्न सहस गुणयाला ॥ तिसय डुडुत्तर दसकल, पन्नरसकला विदेहऊे ॥३०॥ इतिप्रतरप्रमाणसंग्रहगाथा ॥ दस जोयणुसए पुण, तेवीस सहस्सलक्ख इगवन्ना ॥ जोयण बावत्तरि ठ, क्कलाय वेयठ्ठ घणगणियं ॥ ३१ ॥ अठसया पणयाला, तीसं लक्खातिहत्तरि सहस्सा ॥ पनरस कलायघणो, दसस्सुए होइ बीयम्मि ॥ ३२ ॥ सत्तहिया तिन्निसया, बारसय सहस्सा पंच लक्खाया ॥ अवराय बारसकला, पणुस्सए होइ घणगणियं ॥ ३३ ॥ सत्तासीई लक्खा, उणवीसहियाय बिणवइ सयाइं ॥ अउणावीसयनागा, चउदस वेयठ्ठ घणगणियं ॥३४॥ हिमवंति डुसय चउदस, कोमी ठप्पन्न लक्ख सग नउई ॥ सहसा चउयाल सयं, सोलस कलबार विकलघणं ॥ ३५ ॥ गुणयाल सयासत्तर, कोमी ठत्तीस लक्ख सगतीसा ॥ सहसातिसय अमुत्तर, बारविकलघण

महाहिमवे ॥३६॥ बगवन्नसहस अठार,कोमि बासहि लक्ख गुणतीसं॥सहसानव सयएगु, एसीइनिसहस्स घणगणियं ॥३७॥ इति घनगणितसंग्रहगाथा ॥ इति जंबूद्विपाधिकारः॥

हवे लवणसमुद्रनो अधिकार कहे छे.

जेम गाय पाणी पीवाने तलावमां प्रवेश करे, तेवारे तेनी पाछली बाजु उंची होय, अने आगली बाजु नीची होय तेने गोतीर्थ कहीये, तेम लवण समुद्रमांहे पण एक जंबूद्वीपनी जगतीथकी अने बीजो पहेली तरफथी लवणसमुद्रनी जगती थकी एम बे पासाथी नीकलीने वचमां पंचाणुं पंचाणुं हजार योजन सुधी पाछली भूमि उंची अने आगलीभूमि नीची छे, जगतीथकी लवणसमुद्रनी दिग्माल तरफ जातां थोडी थोडी जलवृद्धि थतां ज्यां पंचाणुं हजार योजन थाय छे, त्यां समभूतलथकी सातशे योजन पाणीनी उंची वृद्धि छे, अने एक हजार योजन पाणी उंडुं छे.

नीचे तथा उपर दश हजार योजन पहोली अने मूलथकी सत्तर हजार योजन उंची, एवी लवणसमुद्रनी मध्यमां पाणीनी शिखा छे, तेनी उपर बे गाउ उंची पाणी नी वेल छे ते एक अहोरात्रमां बे वखत वधे छे.

लवणसमुद्रने विषे वचमां पाणीनी मेखलाये चार दिशिने विषे वज्रमय चार पाताल कलशा छे, ते कलशानी एक हजार योजन ठींकरी जाडी छे. तथा नीचे अने उपर दश हजार योजन पहोला छे, अने वचमां एक लाख योजननुं पेट पहोलुं छे तथा ते कलशा एक लाख योजन भूमिमांहे उंडा छे. ते चारे पूर्वदिशिथी दक्षिणावर्त्त गणतां एक व डवामुख, बीजो केयूप, त्रीजो यूप, चोथो ईश्वर, ए चार नामे चार कलशा जाणवा.

हवे जंबूद्वीपथकी पंचाणुं हजार योजन जातां लवणसमुद्रना दश हजार योजन विस्तारवाली पाणीनी शिखा आवे, तिहां बे लाख, नेवुं हजार योजन विष्कंभ छे. तेनो वर्ग करी ते वर्गने दशे गुणतां जे राशि आवे. तेनुं मूल शोधीये. तेवारे (९१७०६०) योजन मध्यपरिधि थाय. तेमांथी चार दिशाना चार कलशे चालीश हजार योजन रुं ध्या छे, ते बाद करतां बाकी (८७७०६०) योजन रहे, तेने चारे भागे वहेचतां २१९२६५ योजन थाय, एटलुं एकेकी दिशिना महोटा कलशनुं मांहोमांहे अंतर थाय, ते अंतरना योजनमांहे वली एकेकी दिशाये नव नव श्रेणी न्हाना पाताल कलशोनी छे, तेणे (२१५०००) योजन रुंध्या छे, अने (४२६५) योजन ते कलशनी ठींकरीने जाडपणे रुंध्या छे. तिहां प्रथम श्रेणिमां २१५ बीजीमां २१६ त्रीजीमां २१७ एम कके को कलश वधारतां यावत् नवमी श्रेणिमां (२२३) कलशा छे, ते नव श्रेणिनो सरवालो करतां (१९७१) कलशा एक दिशिना अंतरने विषे छे, तेवी चार दिशिना कलश मेल

वीयें, तेवारे (७७०४) कलश थाय. ते प्रत्येकनी ठींकरी दश योजन जाडी छे, अने एक शो योजन प्रमाण नीचे तथा उपर पहोला छे, अने एक हजार योजन भूमिमांहे ऊंडा छे. तेटलाज मध्यमां पेटे पहोला छे. एवा न्हाना कलश ते जे स्थानके महोटा कलशे भूमि रुंधी नथी तेवा जलमेखलाना प्रदेशे ठामे ठामे ए कलशा छे.

महोटा चार पाताल कलशाना अनुक्रमे पूर्वदिशिथी दक्षिणावर्त्त लेतां एक काल,बीजो महाकाल,त्रीजो वेलंब, अने चोथो प्रभंजन, ए चार नामे चार अधिष्ठायिक देवता छे. तेनुं एक पल्योपमायु छे. अने बीजा न्हाना कलशना अधिष्ठायिक देवोनुं अर्द्धपल्योपमायु छे.

महोटा पातालकलशाने अधोभागे वायु छे, अने वचला भागमां वायु तथा पाणी बेहु छे अने उपरला भागमां एकलुं पाणीज छे. ते वायु एक अहोरात्रमां पाणीने बे वखत क्षोभ पमाडे छे, तेथी पाणीना वेलनी वृद्धि थाय छे, जेवारे पाणीना जोरथी कलशा उभराय छे, तेवारे समुद्रनुं पाणी वधे छे, एवो सहेजथी चाल छे.

बहेंतालीश हजार नागकुमार देवता ते मांहे पेसती पाणीनी वेलने धरी राखे छे, वली शाठ हजार नागकुमार देवता तो उपरनी बे कोशथी उपरांत जे वेल वधे छे, तेने वारी राखे छे. तथा बहोंतेर हजार नागकुमार देवता ते बाहिरली धातकीखंडमां प्रवेश करती वेलने निवारण करे छे. ए रीते (१७४०००) नागकुमार देवो पाणीनी वेलने धरी राखे छे, माटे ए वेलंधर देवो कहेवाय छे.

जंबूद्वीपनी जगतीथकी पूर्वादि चारे दिशाये (४२०००) योजन लवणसमुद्रमांहे जाता अनुक्रमे पूर्वदिशिये गोथुभनामे आवास पर्वत छे, दक्षिणे दिग्भास नामे आवास पर्वत छे, पश्चिमे शंख नामे आवास पर्वत छे, अने उत्तरे दिक्सीम नामे आवास पर्वत छे. ए चारे दिशिना पर्वतोने विषे अनुक्रमे एक गोथूभ, बीजो शिवदेव,त्रीजो शंख अने चोथो मणोसिल,ए नामे वेलंधर देवताना राजा एवा नागकुमार देवो रहे छे.जे दिशियोने विषे रहे छे, तेने वेलंधर कहीये अने विदिशियोने विषे रहे तेने अनुवेलंधर कहीये.

ईशान प्रमुख चार विदिशिने विषे कर्कोटक, विद्युत्प्रभ, कैलास अने अरुणप्रभ, एवे नामे चार आवास पर्वत छे तेने विषे अनुक्रमे कर्कोटक, कर्दम, कैलास अने विद्युत्प्रभ एवे नामे चार वेलंधर देवोना राजा नागकुमार देवता रहे छे.

ए वेलंधर अने अनुवेलंधर नामे जे आवास पर्वतो छे ते (१०२२) योजन मूलने विषे पहोला छे, अने (४२४) योजन शिखरने विषे पहोला छे,तथा (१७२१) योजन ऊंचा छे, ते आठे पर्वत सर्व वेदिका अने वनखंड तेणे करी सहित छे, तथा पूर्वदिशिथी अनु

क्रमे सुवर्ण, अंकरत्न, रूपुं, अने स्फाटिकरत्नना गोथूभादिक चार पर्वत छे, अने विदिशिने विषे जे चार पर्वत छे ते रत्नमय जाणवा.

ए आठ पर्वत जंबूद्वीपनी दिशा तरफ ८८९ योजननी उपर एक योजनना पचाणुं भाग करीये, तेवा चालीश भाग अधिक एटला पाणीनी उपर देखाय छे, अने मांहेली लवण समुद्रनी शिखानी दिशिथी जोतां ८८३ योजननी उपर एकयोजनना पंचाणुं भाग करीये, तेवा (७७) भाग जेटला पाणीनी उपर देखाय छे.

लवणसमुद्र मध्ये पंचाणुं हजार योजने जतां सातशे योजननी जलवृद्धि छे. तो बहेंतालीश हजार योजन जइये, त्यां वेलंधर पर्वत छे, ते स्थानके केटली जलवृद्धि होय? ते जाणवानी रीति बतावे छे. आहींयां प्रथम श्रेणि पंचाणुं हजारनी, बीजी सातशेनी, अने त्रीजी श्रेणी बेहेंतालीश हजारनी, एवी आंकनी त्रण श्रेणि मांमीये, ए त्रण आंकनी राशि मांड्या पछी ते राशि "एणमज्जिल्ल ए" गाथाना विधिये गणीये, ते आवी रीते के वचमांनी जे सातशेनी श्रेणि तेने छेल्ली बहेंतालीश हजारनी श्रेणीये गुणीये, तेवारे बे क्रोम ने चोराणुं लाख थाय. पछी पहेली श्रेणी जे पंचाणुं हजारनी छे, तेनी साथे भाग वेहेंचीये, तेवारे त्रणशे ने नव योजन उपर एक योजनना पंचाणुं भाग करीये, तेवा पीस्तालीश भाग आवे, ए रीते संभूतले जंबूद्वीपे जोतां बहेंतालीश हजार योजने एटली जलवृद्धि होय.

अने पंचाणुं हजार योजने एक हजार योजन लवण समुद्र उंडो छे, तो बहेतालीश हजार योजने केटलो उंमो छे? तेनुं गणित आवी रीते करवुं, के बहेंतालीश हजार योजनने हजारने आंके गुणीये, तेवारे चारकोमीने वीश लाख थाय. तेने पंचाणुं हजार भागे वेहेंचीये, तेवारे चारशे ने बहेंतालीश योजन उपर एक योजनना पंचाणुं भाग करीये, तेवा दश भाग आवे. एटलो समुद्र उंडो छे, पछी जलवृद्धि तथा उंमपणुं ए बे एकठां करीये तेवारे सातशे ने एकावन्न योजन उपर एक योजनना पंचाणुं भाग करिये, तेवा पंचावन भाग थाय, ते सतरशे ने एकवीश योजन वेलंधर पर्वतनुं उंचपणुं छे, तेमांहेथी बाद करीये तेवारे नवशे उंगणोतेर योजन, अने उपर पंचाणुआ चालीश भाग रहे. एटलो जंबूद्वीपथी जतां वेलंधर पर्वत पाणीथी उंचो छे.

हवे त्यां पर्वतनो विस्तार केटलो छे? ते आणवानो विधि कहे छे. जलवृद्धि अने उंमपणुं ए बे सातशे एकावन योजन उपर पंचाणुआ पंचावन भाग छे, ते सर्वना पंचाणुआ भाग करीये, तेवारे एकोतेर हजारने चारशे भाग थाय, पछी "विछारडुगविसेसो" ए करण गाथाये करतां पर्वतनो मूल विस्तार एक हजार ने वावीश योजन छे,

अने शिखर विस्तार चारशे ने चोवीश योजन छे, ते अधिका मांहेथी ठेबुं काढतां बाकी पांचशे ने अठाणुं रहे, ते पर्वतनुं सत्तरशे ने एकवीश योजन उंचपणुं छे, तेनी साथे भाग वेहेंचतां भाग पहोचे नहीं, ते माटे एकोतेर हजार ने चारशे एटली जल वृद्धि, तथा उंचपणानां पंचाणुआ भाग छे, तेने पांचशे ने अठाणुं साथे गुणीये, तेवारे चार क्रोड छवीश लाख सत्ताणुं हजार ने बशे थाय, तेने पर्वतना उंचपणाना सत्तरशे ने एकवीश योजन साथे भाग वेहेंचीये, तेवारे चोवीश हजार आठशे ने नव आवे, शेष नवशे ने अगीयार वधे. ते माटे ते चोवीश हजार आठशे ने नव जे छे, तेमांहे एक भे लीये. पछी पंचाणुं भागे वेहेंचीये, तेवारे बशे ने एकशठ योजन उपर पंचाणुआ पंदर भाग आवे. हवे पर्वतनो मूल विस्तार एक हजार ने बावीश योजन छे. तेमांहेथी जेवारे ए बशे एकशठ योजन, अने पंचाणुआ पन्नर भाग काढीये, तेवारे सातशो ने साठ योजन उपर पंचाणुआ एंशी भाग रहे, एटलो पर्वतनो विस्तार जाणवो.

हवे मांहेली दिशिये जलनी वृद्धि आणवाने अर्थे ए पर्वतना विस्तारनो आंक जे सातशे शाठ योजन उपर पंचाणुआ एंशी भाग छे, तेने पंचाणुये गुणीये, तेवारे बहोंतेर हजार बशे ने एंशी एटला पंचाणुआ भाग थाय. पछी एक पंचाणुं हजारनी बीजी सातशेनी, अने त्रीजी बहोंतेर हजार बशे ने एंशीनी, एवा आंकनी त्रण राशि मांडिये तेमां वचेंनी जे सातशेनी श्रेणी छे, तेनी साथे जेवारे छेहली श्रेणी गुणीये, तेवारे पांच क्रोड पांच लाख ने छन्नुं हजार एटला प्रतिभंग थाय. पछी जे पहेली राशि पंचाशी हजारनी छे, तेना प्रतिभंग करवा माटे तेने पंचाणुये गुणीये, तेवारे नेवुं लाख ने पचीश हजार थाय. एटला प्रतिभंगे उपरना प्रतिभंगनी राशी वेहेंचीये, तेवारे योजन पांच आवे, शेष पांच हजार चारशे ने एकोतेर वधे. तेने पंचाणुं भागे वेहेचतां सत्तावन्न कला आवे, शेष छप्पन उगरे, ते माटे एक भेलीये तेवारे कला अठावन्न थाय, एटले पांच योजन उपर अठावन्न कला एटली मांहेली दिशिये जलवृद्धि छे, ते जलथकी पर्वततुं उंचपणुं नवशे ओगणोतेर योजनने उपर पंचाणुआ चालीश भाग छे, तेमांहेथी पांच योजन ने अठावन्न भाग बाद करीये, तेवारे नवशे त्रेशठ योजव उपर पंचाणुआ सत्योतेर भाग होय. एटला लवण समुद्रनी शिखादिशिथी जोतां वेलंधर पर्वत उंचा छे. तथा ए आठ पर्वतना मूलने विषे त्रण हजार बशे ने बत्रीश योजननो परिधि छे, अने शिखरने विषे तेरशेने चौद योजननो परिधिछे, हवे मांहोमांहे ते पर्वतनो आंतरो आणवानो विधि कहेछे.

जंबू द्वीपनी जगतीथकी बहेंतालीश हजार पांचशे ने अगीयार योजन लवण समुद्रमांहे गया पछी पर्वतना विष्कंभनुं मध्य छे, त्यां समुद्रनुं वृत्तविष्कंभ एक लाख पं

चाशी हजार ने बावीश योजन छे, तेनो परिधि पांच लाख पंचाशी हजार ने एकाणुं योजन थाय, ते मांहेथी आठ वेलंधरनो विष्कंज आठ हजार एकसो ने बहोंतेर योजन बाद करिये, तेवारे पांच लाख बहोंतेर हजार नवशे ने पन्नर योजन बाकी रहे; तेने आठ जागे वेहेंचीये, तेवारे बहोंतेर हजार एकशो ने चउद योजन उपर एक योजनना तेर जाग करिये, तेवा आठ जाग एटलुं प्रत्येक वेलंधर पर्वतने वचे अंतर जाणवुं ॥२११॥

हवे छप्पन्न अंतरद्वीपनी विवक्षा करे छे.

हेमवंत पर्वतना बन्ने छेमाने विषे समुद्रमांहे बे बे दाढा विदिशिने विषे नीकली छे, ते प्रत्येक दाढाने विषे सात सात अंतरद्वीप छे, ते अंतरद्वीपमांहे पहेला चार अंतरद्वीप जगतीथकी त्रणशे योजन दूर छे, तो तेनो विस्तार पण एकेक अंतरद्वीप नो त्रणशे योजन प्रमाणे जाणवो. बीजुं चतुष्क जगतीथकी चारशे योजन दूर छे, तो तेनो विस्तार पण चारशे योजन छे, एम सर्वने विषे एकशो योजननी वृद्धि करतां सातमुं अंतरद्वीपनुं चतुष्क जगतीथकी नवशे योजन दूर छे, ते एकेकानो विस्तार पण नवशे योजन प्रमाण छे. ते यंत्रथी जाणवो.

हवे ए अंतरद्वीप, पाणी उपर केटला उंचा छे ? ते कहे छे.

अंतरद्वीपनुं पहेलुं चतुष्क ते बाहेर जंबूद्वीपनी दिशाये अढी योजन उपर पंचाणुं आ वीश जाग एटलुं पाणीथी उपर उंचुं जाणवुं, बीजा अंतरद्वीपोनां छ चतुष्क अढी योजन उपर पंचाणुआ नेवुं जाग पाणीथी उंचा जाणवा, अने लवणसमुद्रनी शिखानी दिशिये बे कोश प्रमाण सर्वद्वीपनो प्रकाश जाणवो. ते यंत्रमांहे लख्यो छे ॥ २१३ ॥

हवे अंतरद्वीपनां नाम कहे छे.

सर्व अंतरद्वीप, वेदिका अने वनखंडे करी मंकित जाणवा. अंतरद्वीपना पहेला चतुष्कने विषे ईशान कूणथी दक्षिणावर्त्त गणतां एक रुचक, बीजुं आजासिक, त्रीजुं वैषाणिक, चोथुं लांगुलिक ए चार नाम अनुक्रमे जाणवां. अंतरद्वीपना बीजा चतुष्कने विषे हयकर्ण, गजकर्ण, गोकर्ण अने शष्कुलीकर्ण, एवां नाम जाणवां. त्रीजा चतुष्कने विषे आदर्शमुख, मेंढमुख, अयोमुख, अने गोमुख, एवे नामे चार द्वीप छे. चोथा चतुष्कने विषे हयमुख, गजमुख, हरिमुख अने व्याघ्रमुख, एवां चार नामे चार द्वीप छे. अने अश्वकर्ण, सिंहकर्ण, अकर्ण अने कर्णप्रवावरण, एवे नामे पांचमा चतुष्कने विषे अंतरद्वीप जाणवा. उल्कामुख, मेघमुख, विद्युन्मुख अने विद्युद्दंत. एवे नामे छठा चतुष्कना अंतरद्वीप छे. सातमा चतुष्कनेविषे घनदंत, लष्टदंत, गूढदंत, अने सिद्धदंत, एवां चार नाम जाणवां. ए अठावीश अंतरद्वीपनां नाम कह्यां.

हवे अंतरद्वीपनो परिधि कहेछे. पहेला चतुष्कने विषे नवशे ने ओगणपचास योजननो परिधि छे, पछीना छ चतुष्कने विषे प्रत्येके त्रणसो ने सोल योजननी वृद्धि करीये ॥ यथा ॥ सोलुत्तर तिसयजुय, सपढम परिहिं वरावर चउक्कं ॥ पढमे नवगुणवन्ना, साबीए बारपण सठी ॥ १ ॥ तइए पनरिक्कारसि, चउछए पुणअढार सगणउआ ॥ जो थण बावीस सया, तेरहिया पंचम चउक्कं ॥ २ ॥ पणवीस इगुणतीसा, छठे चरमेडवीस पणयाला ॥ परिहीअंतरदीवा, सत्तचउक्काण नायवा ॥ ३ ॥ २१७ ॥

ए पूर्वोक्त प्रकारे वली शीखरी पर्वतने विषे पण ईशानकूण प्रमुख चार विदिशिने विषे चार दाढा छे, अने एकेकी दाढाये सात सात अंतरद्वीप छे, तेवारे चार दाढाना अठावीश थाय. ए रीते हेमवंत तथा शिखरीना एकठा गणतां सर्व मलीने छप्पन्न अंतरद्वीप जाणवा. ए सर्व छप्पन्न अंतरद्वीपने विषे युगल मनुष्य रहे छे. तेनुं पल्योपमने असंख्यातमे भागे आयुष्य जाणवुं.

ते युगलीयाना आठशे धनुष्यनां ऊंचां शरीर छे,वली तेनां शरीरने विषे चोसठ पांसली छे.वली आहारनी इछा एकांतरे ऊपजे छे,अने ओगणयाएंशी दिवसलगे अपत्य पालनकरेछे.

मेरुपर्वतथकी पश्चिमदिशिने विषे जगतीथकी बार हजार योजन लवणसमुद्रमांहे सुस्थित एवे नामे जे लवणसमुद्रनो स्वामी देव छे, तेनो गौतम एवे नामे एक द्वीप छे. ते गौतमद्वीपनी बन्ने बाजु जंबूद्वीपना बे सूर्य अने लवणसमुद्रना बे सूर्य, तेना बे बे द्वीप जाणवा. एटले वचमां गौतमद्वीप छे, अने बन्ने पासे बे बे सूर्यद्वीप छे.

जगतीथकी द्वीपनुं वेगलाइपणुं अने द्वीपनो मांहोमांहे अंतर तथा द्वीपनो विस्तार ते बार हजार योजन जाणवो. वली ए प्रकारेज पूर्वदिशिने विषे जगतीथकी बार हजार योजन लवणसमुद्रमांहे बे चंद्रमा जंबूद्वीपना अने बे चंद्रमा लवणसमुद्रना. ए रीते चार चंद्रमाना चार द्वीप छे.

ए प्रकारे बाहेरथकी धातकीखंडने विषे तथा मंदरपर्वतथकी पूर्वपश्चिम दिशे लवणसमुद्रनी जगतीथकी बार हजार योजन लवण समुद्रमांहे शिखानीदिशि फरे तिहां बे चंद्रमा लवण समुद्रना, अने छ चंद्रमा धातकीखंडना, ए रीते आठ चंद्रमाना द्वीप पूर्वदिशिये छे, तथा बे सूर्य लवणसमुद्रना, अने छ सूर्य धातकीखंडना एवं आठ सूर्यना द्वीप पश्चिम दिशे छे.

ए चंद्रमा अने सूर्यना द्वीप पाणी ऊपर केटला छे ? ते कहे छे.

ए पूर्वे कह्या जे चंद्रमा अने सूर्यना द्वीप ते जंबूद्वीप तथा धातकीखंडनी दिशिथी जोतां साडी अठ्याशी योजन ऊपरे पंचाणुआ चालीश भाग एटला पाणीथी ऊपर छे,

ते जाणवाने अर्थे प्रथमनी पेरे आंकनी त्रण राशि मांमीये. एक पंचाणुं हजार, बीजी सातशे, अने त्रीजी चोवीश हजार, सुलनपणा माटे बिंदु टालीने वचेनी राशि, बेहेली राशि साथें गुणतां सोल हजार ने आठसो थाय, तेने पहेली राशिना पंचाणुं हजार डे, तेना बिंदु टालतां पंचाणुं नागे वेहेंचीये, तेवारे एकसो डोंतेर योजन उपर पंचाणुआ एंशी नाग आवे. एटली लवणसमुद्रनी शिखादिशिये जलवृद्धि डे. तेनुं अर्द्ध अठ्याशी योजन थाय डे. तेनी साथे पाणीथकी बाहेरनी उंचाइना बे कोश नेलीये, तेवारे साडी अठ्याशी योजन उपर पंचाणुआ चालीश नाग. एटला जंबूद्वीप तथा धातकीखंडनी दिशिथी जोतां पाणी उपर द्वीप डे. वली मांहेनी लवणशिखानी दिशाथकी जोतां बन्ने बाजुये बे कोश पाणीथकी सर्वे द्वीप उंचा डे. हवे द्वीपनो परिधि कहे डे ॥ उक्तं च ॥ सगतीस सहस्स नवसय, रुयाल परिहिं जलाउकोस बहिं ॥ उच्चा अंतो जोयण, अडसी पण नउअ चत्तंसा ॥ १ ॥

हवे ते चंद्र सूर्य द्वीपमांहे प्रासादनां प्रमाण कहे डे.

ए चंद्र सूर्यद्वीपने विषे कुलगिरिना प्रासाद सरखा सामीबासठ योजन उंचा, अने सवाएकत्रीश योजन पहोला, एवा रमवा योग्य पोतपोताना प्रनु एटले स्वामी जे सुस्थितदेव तथा चंद्र सूर्य, तेमना प्रासाद डे, तथा ए सर्वे चंद्रसूर्य प्रमुख जे ज्योतिषीयोनां विमान डे ते स्फाटिक रत्ननां डे. तथा लवणसमुद्रने विषे जे ज्योतिषी डे, तेनां विमान दगपाटन जे स्फाटिकरत्न तेनां डे, ते विमानने संयोगें लवणसमुद्रनो पाणी फाटे डे, ए रत्ननो जातिगुणज डे. वली ते रत्ननी कांति उंची लवणशिखाने विषे पण प्रकाश करे डे. लवणसमुद्रने विषे चार चंद्रमा, चार सूर्य त्रणशे ने बावन ग्रह, एकशो ने बार नक्षत्र, अने बे लाख सत्तसठ हजार ने नवशें एटली तारानी कोडाकोडी जाणवी. लवणसमुद्रनो परिधि पन्नर लाख एक्याशी हजार एकसो ने उंगणचालीश योजन जाणवो. समुद्रनी जगतीना द्वार द्वारनुं अंतर, त्रण लाख पंचाणुं हजार बशे ने सवाएंशी योजन डे. हवे लवणसमुद्रनुं प्रतरघन करवानी गाथा लखे डे ॥ दससहस रहियविडर, अर्द्धदस सहस संजुअं तेण ॥ गणियाय मज्ज परिही, पयरो लवणस्सिमो होइ ॥१॥ नव नवइ कोमिसया, इगसठी कोमिसत्तरस लस्का ॥ पन्नरसहसाय इमो, घणोसवे सत्तर सहस्स गुणो ॥ २ ॥ सो सोलकोमिकोडी, तिणवइलस्कागुणचत्त सहसाया ॥ नव सय कोमीपन्नर, कोमी पन्नास लस्काय ॥ ३ ॥ इति लवणसमुद्राधिकारः ॥

हवे धातकीखंड नामा बीजा द्वीपनो अधिकार वखाणे डे.

लवणसमुद्रनी जगतीथकी बाहेर वलयने आकारे चार लाख योजन पहोलो ए

वो बीजो धातकीखंड नामे द्वीप छे, ते धातकीखंड, इखुकार नामे जे बे पर्वत तेणे बे नागे वेहेंच्यो छे, एटले एक पूर्व धातकीखंड. अने बीजो पश्चिम धातकीखंड. ए बे नाग जाणवा. हवे ते इखुकार पर्वत दक्षिणदिशे, अने उत्तरदिशिये, लांबा छे. वली एक हजार योजन मूलने विषे, अने शिखरने विषे सरखा पहोला छे. तथा पांचशें योजन उंचा छे. लवणसमुद्रनी जगतीना दक्षिण उत्तरदिशिना वैजयंत, अपराजित एवे नामे जे बारणां छे, तेमांथी इषु एटले बाणने आकारे चार लाख योजन धातकी खंडना विस्तार सुधी लांबा निकल्या छे, एवा ते पर्वतो छे.

हवे धातकीना बे खंडने विषे कुलगिरि तथा क्षेत्र वखाणे छे.

धातकी खंडना पूर्व अने पश्चिम दिशाना एकेका खंडनेविषे छ छ कुलगिरि जाणवा अने सात सात क्षेत्र जाणवां. ते जेम गाडीनां पइडांने विषे, वच्चेनी नानिथकी आराना आंतरा होय, तेम जंबूद्वीप अने लवण समुद्र जे छे, ते नानि सरखा छे. अने धातकी खंडमांहे जे इखुकार तथा कुलगिरि प्रमुख पर्वत छे,ते आरा सरखा छे, अने क्षेत्र जे छे ते आराना विवर एटले आंतरासरखाछे. वली ते कुलगिरि इखुकार मूलनेविषेअनेछेहडाने विषे सरखा पहोलाछे.वली वासक्षेत्र जे छे,ते लवणसमुद्रथकी मांडीने पिहुल पिहुलतरछे.

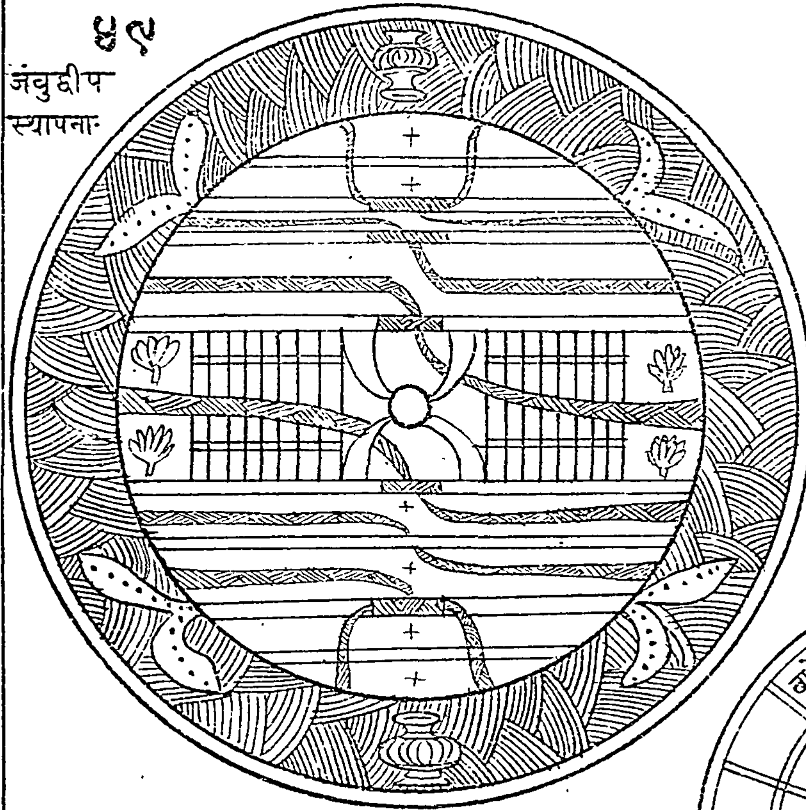
हवे धातकीखंडमांहे जे पदार्थ जंबूद्वीप मांहेला पदार्थ सरखा छे, ते कहे छे.

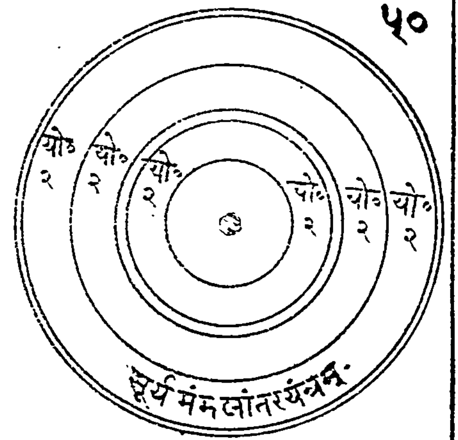
धातकी खंडनेविषे जे द्रह, कुंडनुं उंडपणुं तथा मेरुपर्वत टालीने कुलगिरि. गयदंतगिरि, वक्षस्कार, यमलगिरि, कांचनगिरि अने वैताढ्य प्रमुख पर्वतनुं उंचपणुं, तथा सुमेरुपर्वत वर्जिने वैताढ्यनो विस्तार अने बीजा वैताढ्य प्रमुख वृत्त पर्वतनो विस्तार ते सर्व पहेला कह्या छे, तेना सरखो जाणवो, एटले जंबूद्वीपनी पेरे जाणवो.

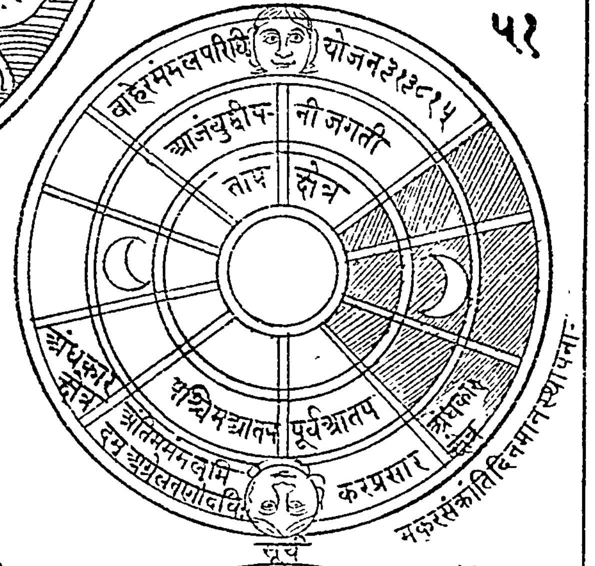
हवे धातकीखंडने विषे बे मेरु छे, ते वखाणे छे.

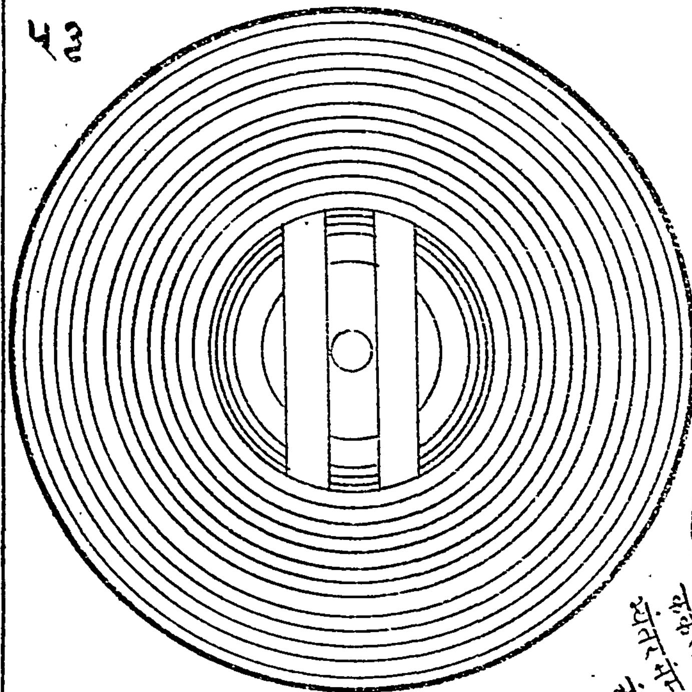
धातकीखंडना जे बे मेरु पर्वत छे, ते जंबूद्वीपना मेरु सरखा जाणवा. पण एटलुं विशेष छे के, जंबूद्वीपना मेरुनी नूमिथी पांचशे योजन उपर चढिये, त्यां नंदनवन छे; तेथकी उपर साडीबासठ हजार योजन चडीये. तेवारे सौमनस्य वन छे, त्यांथकी छत्रीश हजार योजन उंचुं पांडुक वन छे, अने धातकीखंडना मेरुनुं एटलुं विशेष जे नूमिथकी पांचशें योजन उंचुं नंदनवन छे, ते थकी साडीपंचावन हजार योजन उंचे चडीये, त्यां सौमनस्य वन छे, त्यांथी अठ्यावीश हजार योजन उंचा चडीये, त्यां पांडुक वन छे, ए चोराशी हजार योजन थया. अने एक हजार योजन नूमिमांहे उंडा छे, एम सर्व मली पंचाशी हजार योजन उंचा छे.

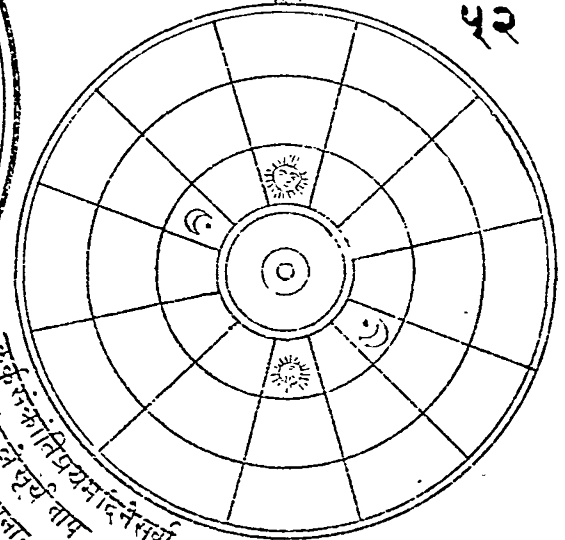
तथा नव हजार ने पांचशें योजन मूलमां नीचे विस्तार छे, अने नव हजार ने चारशें

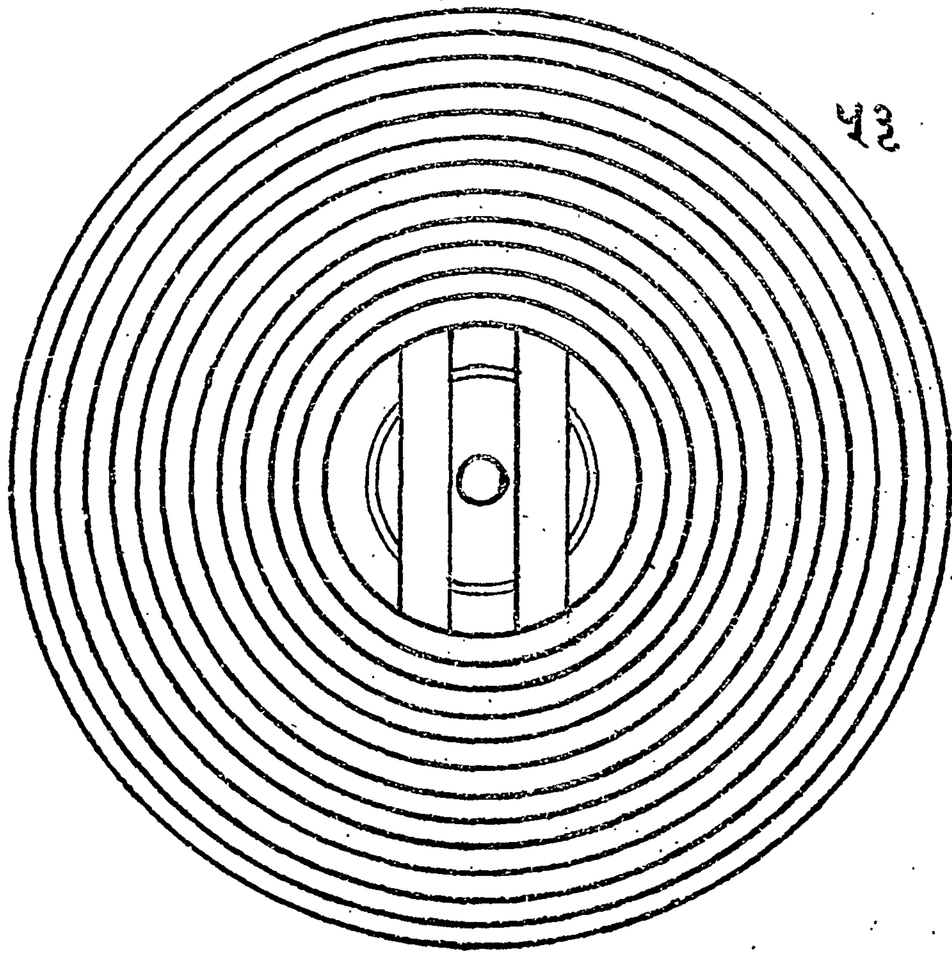

४९
जंबुद्वीप
स्थापना

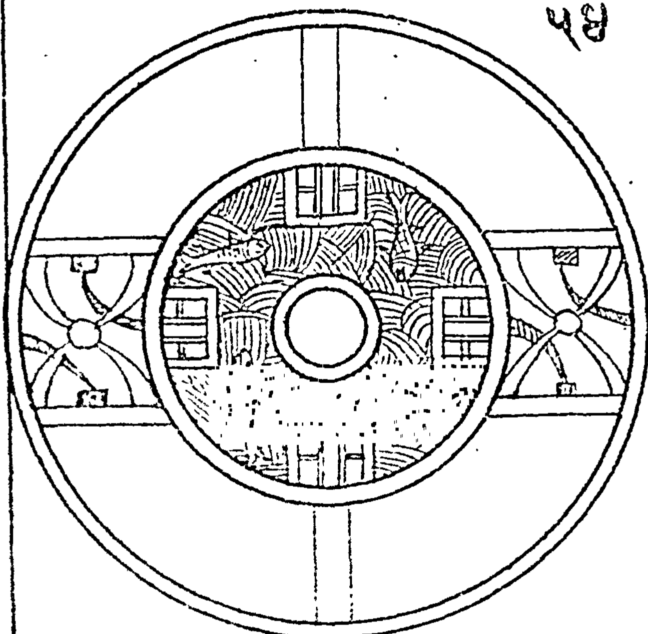

५०
सूर्य मंडलांतरयंत्रम्


सूर्य
५१
बाहरमंडलपरिधि
योजन३१८३१५
नी जगती
मकरसंक्रांतिदिनमानस्थापना
करप्रसार
सूर्य

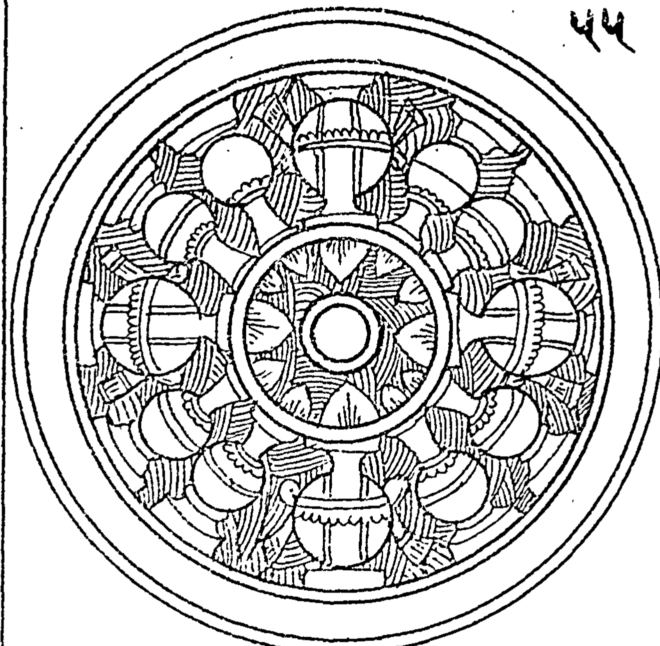

५३


५२
कर्कसंक्रांतिप्रथमदिनेसर्वा-
भ्यंतर मंडले सूर्य ताप
क्षेत्रस्थापना

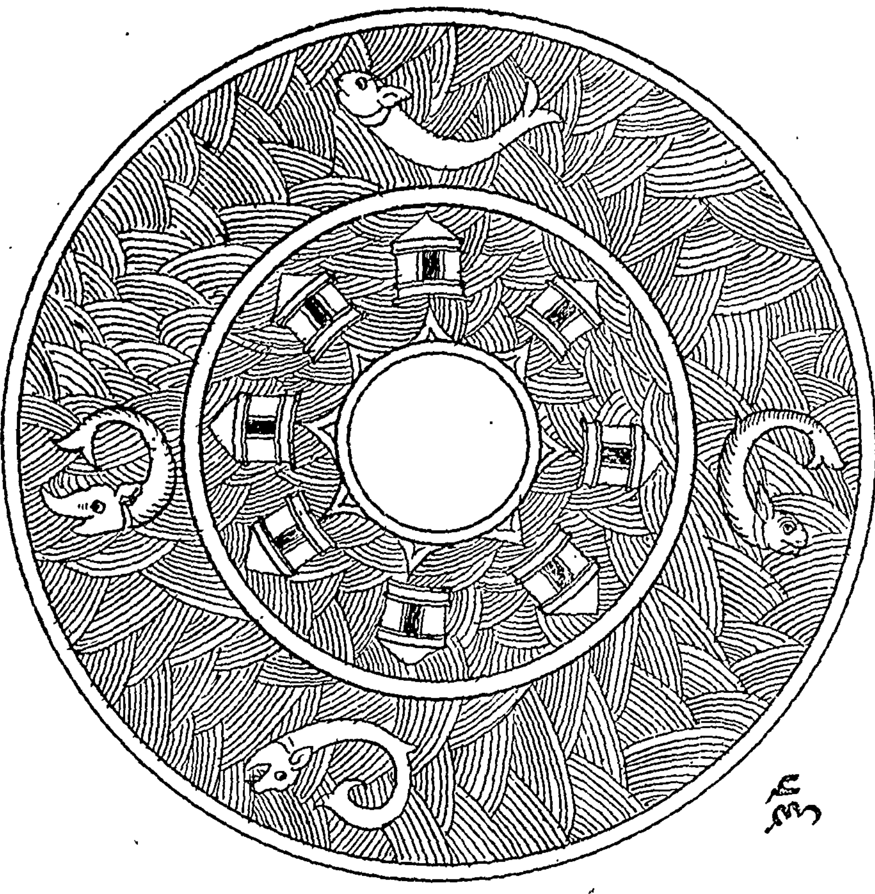




लवण समुद्र अने धातकी खंडनी स्थापना.

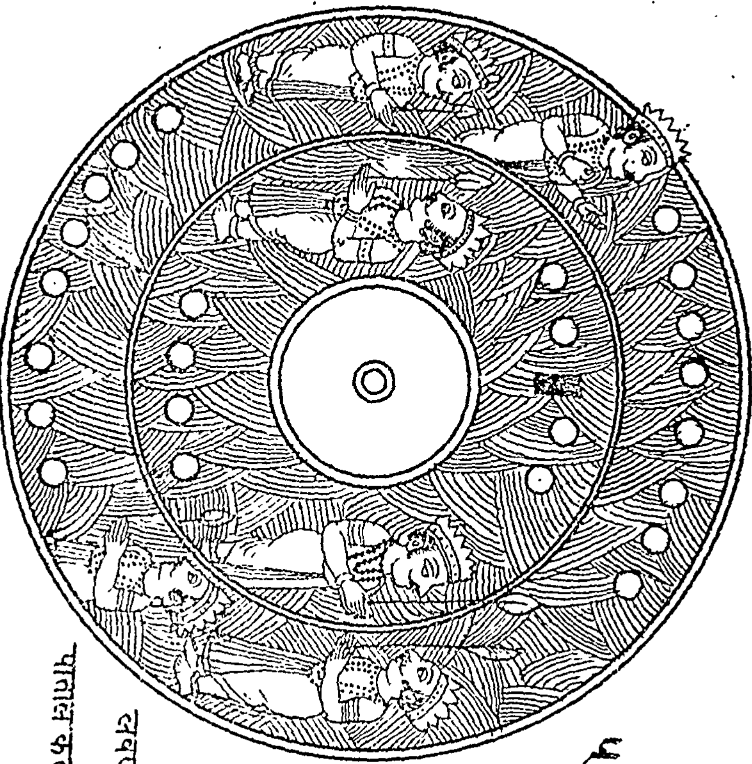


लवण समुद्र पाताल कलश स्थापना.



५६

लवण समुद्र अने तदन्तरगत वेलंधरावास पर्वत स्थापना.



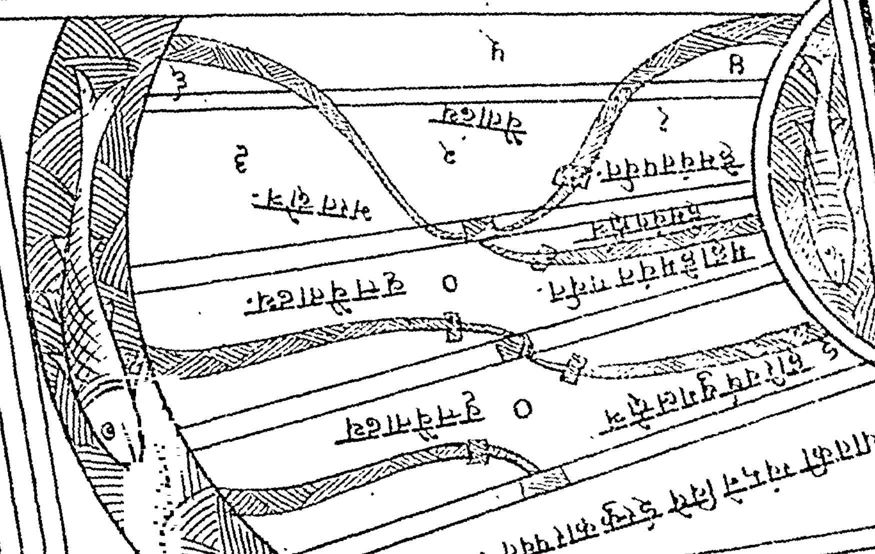
५७

लवण समुद्रगत पाताल कलशसंख्या स्थापना

५७

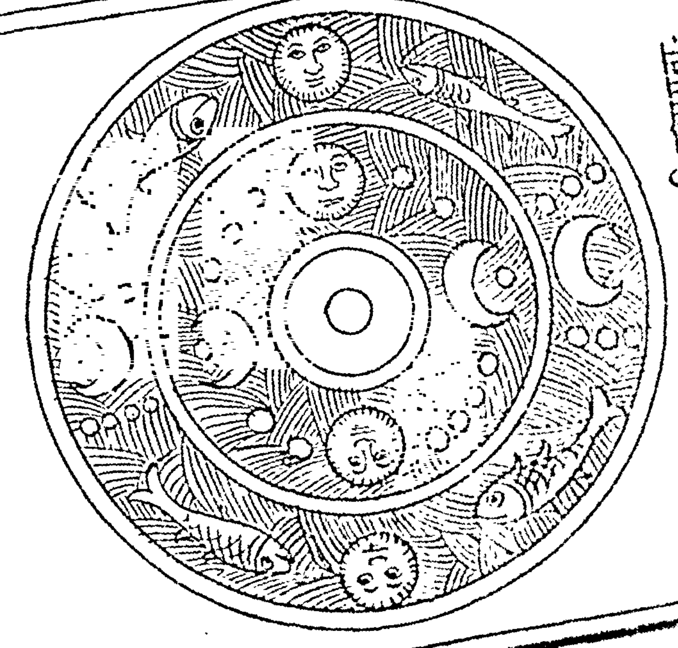
धातकी खंड मांहेला महाविदेह क्षेत्रनी स्थापना.

५९



धातकी खंडने विषे इक्षुकार पर्वत स्थापना.

५८



लवण समुद्रगत सूर्य चंद्राकृति स्थापना.

योजन भूतल विस्तार छे, तथा नव हजार ने साडा त्रणशे योजन नंदनवननो विस्तार जाणवो, त्रण हजार ने आठशे योजन सौमनस्य वननो विस्तार जाणवो, अने एक हजार योजन शिखानो विस्तार जाणवो.

हवे वांछित स्थानकने विषे विस्तार आणवानो विधि आवी रीते केः—भूतलनुं पहोलपणुं नव हजार ने चारशे योजन छे, तेमांथी शिखरनुं पहोळपणुं एक हजार योजन काढीये, तो बाकी आठ हजार ने चारशे योजन रहे. ते भूतलथकी उंचुं चोराशी हजार योजन छे, तेनी साथे भाग आपतां, भाग पहोंचे नहीं. तेमाटे आठ हजार चारशेने दशगुणा करिये. तेवारे चोराशी हजार थाय, ते उंचपणाना चोराशी हजार योजन साथे गुणीये, तेवारे एक योजननो दशमो भाग आवे. तो भूतलथकी जेवारे एक योजन उंचे चडीये, तेवारे विष्कंभमांहे एक योजनना दश भाग मांहेलो एक भाग घटे अने उतरतां वधे, एम प्रथमनी पेरे जाणवुं.

प्रथम जंबूद्वीपने विषे जे नदी, प्रपातकुंड, कुंडमांहेला द्वीप, वनमुख, द्रह, लांबा पर्वत तथा कमल, एटला पदार्थनो विस्तार तथा नदीनुं उंडपणुं, वली द्रहनुं लांबपणुं जे कह्युं, तेथी आ धातकीखंडने विषे बमणुं जाणवुं.

हवे भद्रशालवननुं परिमाण कहे छे.

एक लाख सात हजार आठशे ने उंगणयाएंशी योजन मेरुपर्वतथकी पूर्व पश्चिम दिशाये लांबपणे भद्रशालवन छे, एने जेवारे अठ्याशी भागे वेहेंचीये, तेवारे बारशे ने छवीश योजन कांइक ऊणा आवे; एटलुं मेरुथकी भद्रशालवन उत्तर तथा दक्षिण दिशा पहोलुं छे. कुरुक्षेत्रनी जीवा बे लाख त्रेवीश हजार एकशो ने अठावन योजन जेटली जाणवी.

हवे गयदंत गिरि वखाणे छे.

पूर्व अने पश्चिम दिशाना बेहु धातकीखंडने विषे बाहेरनी दिशाये धातकीखंडनी जगतीना पासाना चार गयदंत गिरि छे. ते पांच लाख उंगणोतेर हजार बशे ने उंगणसाठ योजन लांबा जाणवा. अने बीजा जंबूद्वीपनी जगतीनी दिशाना मांहेला चार गयदंत गिरि जे छे, ते त्रण लाख छप्पन हजार बशे ने सत्तावीश योजन लांबा जाणवा. तथा एक बाहेरनो गयदंतगिरि, अने एक मांहेनो गजदंतगिरि. ए बन्ने एकठा करीये, तेवारे कुरुक्षेत्रनुं धनुःपृष्ठ थाय, तेनुं प्रमाण नव लाख पच्चीश हजार चारशे ने छ्याशी योजन थाय. एटलुं धातकीखंडने विषे कुरुक्षेत्रनुं धनुःपृष्ठ जाणवुं ॥ २३२ ॥

हवे वक्षस्कार अंतर नदी प्रमुखनां प्रमाण कहे छे.

कुलगिरि तथा गजदंतनां प्रमाण कह्यां अने तेथकी अन्य जे वक्षस्कार, अंतरन

दी विजय, अने वनमुख तेनो विस्तार ते क्षेत्रना अनुमाने करी जाणवो. एटले पूर्व धातकी खंड तथा पश्चिमधातकी खंडनुं बन्ने इखुकार दिशिये जेवुं क्षेत्रनुं लांबपणुं छे; तेवुं वक्षस्कारादिकनुं पण लांबपणुं जाणवुं. तथा पूर्व धातकीखंडनां सात क्षेत्र, अने पश्चिम धातकीखंडनां सात क्षेत्र, ते चार लाख योजन लांबां जाणवां.

हवे वासक्षेत्रना विजयनो विस्तार कहे छे.

क्षेत्रना आंक जे एक, चार, सोल ने चोशठ ए एनी साथे ध्रुवांक गणीये, पछी बशे ने बार नागे वेहेंचीये, तेवारे वासक्षेत्रनो सर्वत्र आदि, मध्य अने अंत्यनो विस्तार होय.

हवे धातकी खंडना ध्रुवांक कहे छे.

प्रथम क्षेत्रना चउद लाख बे हजार बशे ने सत्ताणुं एटला ध्रुवांक जाणवा. तथा मध्यक्षेत्रना छवीश लाख सडसठ हजार बसो ने आठ ध्रुवांक जाणवा. तथा अंतक्षेत्रना ध्रुवांक ३९३२११९ जाणवा.

अंहीयां प्रथम क्षेत्रना ध्रुवांक जे चौद लाख बे हजार बशे ने सत्ताणुं छे, अने क्षेत्रनो आंक एक छे, माटे एके गुणीये, तेवारे तेहीज आंक आवे. तेने बशे ने बार नागे वेहेंचतां छ हजार छसो ने चौद योजन जाझेरा, एटलो नरत तथा ऐरवतनो आदि विस्तार जाणवो. अने बार हजार पांचशे ने एक्याशी योजन जाझेरो मध्यविस्तार छे, तथा अढार हजार पांचशे ने सुडतालीश योजन जाझेरो अंत्यविस्तार छे.

हेमवंतने ऐरण्यवतनो आदिविस्तार छवीश हजार चारशे ने अठवन योजन जाझेरो छे, मध्यविस्तार पचास हजार त्रणशे ने चोवीश योजन जाझेरो छे अने अंत्यविस्तार चम्मोतेर हजार, एकसो ने नेवुं योजन जाझेरो छे ए सर्व चारे गुणतां चौगुणा थया.

हरिवर्ष अने रम्यक क्षेत्रनो आदिविस्तार एक लाख पांच हजार आठशे ने तेत्रीश योजन जाझेरो छे, अने मध्यविस्तार बे लाख एक हजार बशे ने अठाणुं योजन जाझेरो छे, तथा अंत्यविस्तार बे लाख, छन्नुं हजार, सातशें ने त्रेशठ योजन जाझेरो छे.

विदेहनो आदिविस्तार चार लाख, त्रेवीश हजार, त्रणशें ने चोत्रीश योजन जाझेरो छे, अने मध्यविस्तार आठ लाख, पांच हजार एकसो ने चोराणुं योजन जाझेरो छे, तथा अंत्यविस्तार अगियार लाख सत्याशी हजार ने चोपन्न योजन जाझेरो छे, ए रीते ए चार स्थानकनो आदि, मध्य तथा अंत्यनो विस्तार कह्यो. ए ध्रुवांक चोशठांके गुण्या.

अहीयां आदि ध्रुवांक चौद लाख, बे हजार, बशे ने सत्ताणुं योजन जाझेरा छे. तेने एक, चार, सोल, चोसठनी साथे गणीये, पछी बन्ने ने बार नागे वेहेंचतां यथोक्त मान लाने. अने मध्यध्रुवांक छवीश लाख, सडसठ हजार, बशे ने आठ छे. तेने एक, चार

सोल ने चोसठ साथे गुणीने पछी बशे बार भागे वेहेंचतां पूर्वोक्त मध्यविस्तार लाभे, तथा अंत्यनो विस्तार (३९३२११९) छे, तेने एक, चार, सोल, अने चोसठसाथे गणीये, पछी बशे ने बार भागे वेहेंचतां पूर्वोक्त क्षेत्रनो अंत्यविस्तार आवे. अने उपर जे योजन रहे, तेनी कला करी बशे ने बार भागे वेहेंचीये, तेटलुं उपर आवे. तेमाटे जाझेरा छे.

हवे विजयनुं परिमाण कहेछे.

अंतरनदीये पन्नरशे योजन रुंध्या छे, वक्षस्कारे आठ हजार योजन रुंध्या छे, मेरुथकी पूर्व पश्चिमे भद्रशालवने तथा मेरुपर्वते बे लाख पच्चीशहजार एकसो ने अठावन्न योजन रुंध्या छे, वनमुखे अगिआर हजार छशे ने अठ्याशी योजन रुंध्या छे, ए सर्व एकठा करिये, तो बे लाख, छेतालीश हजार, त्रणशे ने छेतालीश योजन थाय. ते धातकीखंडनो विस्तार चार लाख योजननो छे.ते मांहेथी काढीये,तेवारे एक लाख,त्रेपन हजार छशे ने चोपन योजन बाकी रहे-तेने सोलविजय छे. माटे सोल भागे वेहेंचीये, तेवारे नवहजार छशे ने त्रण योजन उपर सोलहीआ छ भाग आवे. एटलुं एकेका विजयनुं प्रमाण पहोलपणेछे.

ए नदी, गिरि, वन अने विजय ए सर्वनां प्रमाण जेवारे एकठां करिये, खंडना तेवारे चार लाख योजन, धातकीखंडनो विस्तार पूर्ण थाय, अने ए धातकी खंडना बत्रीश विजयनां नाम प्रथम भरतक्षेत्रनां सरखां कच्छादिक जाणवां.

हवे नगरी अने वृक्ष वखाणे छे.

ए धातकी खंडने विषे नगरी अने वृक्ष ते पहेला जंबूद्वीपने विषे जे रीते कह्यां, ते रीते जाणवां, परंतु एटलुं विशेष छे के जे पूर्व अने पश्चिमना बेहु खंडने विषे बे उत्तर कुरुक्षेत्रमांहे धातकीने महाधातकी एवे नामे जे बे वृक्ष छे, ते बे वृक्षने विषे सुदर्शन अने प्रियदर्शन एवे नामे बे देवता अनुक्रमे वसे छे, अने बे देवकुरुक्षेत्रने विषे तो जंबूद्वीपनी पेरे गरुड देवताने वसवायोग्य बे शाल्मली वृक्ष छे.

हवे धातकी खंडना त्रण परिधि कहे छे.

प्रथम कही जे ध्रुवांकनी त्रण राशि तेनी साथे एक लाख अठयोतेर हजार आठशे ने बेहेंतालीश. एटलां योजन मेलवीये, तेवारे अनुक्रमे धातकी खंडना त्रणे परिधिनुं परिमाण थाय, ते यंत्रथी समजवुं. हवे ए ध्रुवांक केवी रीते नीपजे ? तेनो विधि ग्रंथांतरथी कहे छे ॥ यदुक्तं ॥ इहवासहराजंबू, सेलदुगुणविक्खराचउसु आरा ॥ क्खित्तं फुसंति लक्खो, अडसयरिसहस बियाला ॥१॥ तणूणलवणपरिहि, धायइसंडस्सआइ धुवरासी ॥ गिरिपिहुणा तम्मज्झा, परिहीसमज्झ धुवरासी॥२॥अंतस्सविजा परिही, गिरिविक्खर रहिय अंतधुवरासी ॥ गिरिविक्खरेण मिलियं,परिहिं तिगणुकमेण भवे ॥३॥ इतिधातकी खंडाधिकारः

दी विजय, अने वनमुख तेनो विस्तार ते क्षेत्रना अनुमाने करी जाणवो. एटले पूर्व धातकी खंड तथा पश्चिमधातकी खंडनुं बन्ने इखुकार दिशिये जेवुं क्षेत्रनुं लांबपणुं छे; तेवुं वक्षस्कारादिकनुं पण लांबपणुं जाणवुं. तथा पूर्व धातकीखंडनां सात क्षेत्र, अने पश्चिम धातकीखंडनां सात क्षेत्र, ते चार लाख योजन लांबां जाणवां.

हवे वासक्षेत्रना विजयनो विस्तार कहे छे.

क्षेत्रना आंक जे एक, चार, सोल ने चोशठ ए एनी साथे ध्रुवांक गणीये, पछी बशे ने बार भागे वेहेंचीये, तेवारे वासक्षेत्रनो सर्वत्र आदि, मध्य अने अंत्यनो विस्तार होय.

हवे धातकी खंडना ध्रुवांक कहे छे.

प्रथम क्षेत्रना चउद लाख बे हजार बशे ने सत्ताणुं एटला ध्रुवांक जाणवा. तथा मध्यक्षेत्रना छवीश लाख सडसठ हजार बसो ने आठ ध्रुवांक जाणवा. तथा अंतक्षेत्रना ध्रुवांक ३५३२११५ जाणवा.

अंहीयां प्रथम क्षेत्रना ध्रुवांक जे चौद लाख बे हजार बशे ने सत्ताणुं छे, अने क्षेत्रनो आंक एक छे, माटे एके गुणीये, तेवारे तेहीज आंक आवे. तेने बशे ने बार भागे वेहेंचतां छ हजार छसो ने चौद योजन जाझेरा, एटलो भरत तथा ऐरवतनो आदि विस्तार जाणवो. अने बार हजार पांचशे ने एक्याशी योजन जाझेरो मध्यविस्तार छे, तथा अढार हजार पांचशे ने सुडतालीश योजन जाझेरो अंत्यविस्तार छे.

हेमवंतने ऐरण्यवतनो आदिविस्तार छवीश हजार चारशे ने अठवन योजन जाझेरो छे, मध्यविस्तार पचास हजार त्रणशे ने चोवीश योजन जाझेरो छे अने अंत्यविस्तार चम्मोतेर हजार, एकसो ने नेवुं योजन जाझेरो छे ए सर्व चारे गुणतां चोगुणा थया.

हरिवर्ष अने रम्यक क्षेत्रनो आदिविस्तार एक लाख पांच हजार आठशे ने तेत्रीश योजन जाझेरो छे, अने मध्यविस्तार बे लाख एक हजार बशे ने अठाणुं योजन जाझेरो छे, तथा अंत्यविस्तार बे लाख, छन्नुं हजार, सातशें ने त्रेशठ योजन जाझेरो छे.

विदेहनो आदिविस्तार चार लाख, त्रेवीश हजार, त्रणशें ने चोत्रीश योजन जाझेरो छे, अने मध्यविस्तार आठ लाख, पांच हजार एकसो ने चोराणुं योजन जाझेरो छे, तथा अंत्यविस्तार अगियार लाख सत्याशी हजार ने चोपन्न योजन जाझेरो छे, ए रीते ए चार स्थानकनो आदि, मध्य तथा अंत्यनो विस्तार कह्यो. ए ध्रुवांक चोशठांके गुण्या.

अहीयां आदि ध्रुवांक चौद लाख. बे हजार, बशे ने सत्ताणुं योजन जाझेरा छे. तेने एक, चार, सोल, चोसठनी साथे गणीये, पछी बन्ने ने बार भागे वेहेंचतां यथोक्त मान लाभे. अने मध्यध्रुवांक छवीश लाख, सडसठ हजार, बशे ने आठ छे. तेने एक, चार

सोल ने चोसठ साथे गुणीने पछी बशे बार ज्ञागे वेहेंचतां पूर्वोक्त मध्यविस्तार लाज्ञे, तथा अंत्यनो विस्तार (३९३२११९) छे, तेने एक, चार, सोल, अने चोसठसाथे गणीये, पछी बशे ने बार ज्ञागे वेहेंचतां पूर्वोक्त क्षेत्रनो अंत्यविस्तार आवे. अने उपर जे योजन रहे, तेनी कला करी बशे ने बार ज्ञागे वेहेंचीये, तेटलुं उपर आवे. तेमाटे जाफेरा छे.

हवे विजयनुं परिमाण कहेछे.

अंतरनदीये पन्नरशे योजन रुंध्या छे, वक्षस्कारे आठ हजार योजन रुंध्या छे, मेरुथकी पूर्व पश्चिमे ज्ञद्रशालवने तथा मेरुपर्वते बे लाख पच्चीशहजार एकसो ने अठावन्न योजन रुंध्या छे, वनमुखे अगिआर हजार छशे ने अठ्याशी योजन रुंध्या छे, ए सर्व एकठा करिये, तो बे लाख, छेतालीश हजार, त्रणशे ने छेतालीश योजन थाय. ते धातकीखंडनो विस्तार चार लाख योजननो छे.ते मांहेथी काढीये,तेवारे एक लाख,त्रेपन हजार छशे ने चोपन योजन बाकी रहे-तेने सोलविजय छे. माटे सोल ज्ञागे वेहेंचीये, तेवारे नवहजार छशे ने त्रण योजन उपर सोलहीआ छ ज्ञाग आवे. एटलुं एकेका विजयनुं प्रमाण पहोलपणेछे.

ए नदी, गिरि, वन अने विजय ए सर्वेनां प्रमाण जेवारे एकठां करिये, खंडना तेवारे चार लाख योजन, धातकीखंडनो विस्तार पूर्ण थाय, अने ए धातकी खंडना बत्रीश विजयनां नाम प्रथम ज्ञरतक्षेत्रनां सरखां कच्छादिक जाणवां.

हवे नगरी अने वृक्ष वखाणे छे.

ए धातकी खंडने विषे नगरी अने वृक्ष ते पहेला जंबूद्वीपने विषे जे रीते कह्यां, ते रीते जाणवां, परंतु एटलुं विशेष छे के जे पूर्व अने पश्चिमना बेहु खंडने विषे बे उत्तर कुरुक्षेत्रमांहे धातकीने महाधातकी एवे नामे जे बे वृक्ष छे, ते बे वृक्षने विषे सुदर्शन अने प्रियदर्शन एवे नामे बे देवता अनुक्रमे वसे छे, अने बे देवकुरुक्षेत्रने विषे तो जंबूद्वीपनी पेरे गरुड देवताने वसवायोग्य बे शाल्मली वृक्ष छे.

हवे धातकी खंडना त्रण परिधि कहे छे.

प्रथम कही जे ध्रुवांकनी त्रण राशि तेनी साथे एक लाख अठ्योतेर हजार आठशे ने बेहेंतालीश. एटला योजन मेलवीये, तेवारे अनुक्रमे धातकी खंडना त्रणे परिधिनुं परिमाण थाय, ते यंत्रथी समजवुं. हवे ए ध्रुवांक केवी रीते नीपजे ? तेनो विधि ग्रंथांतरथी कहे छे ॥ यडुक्तं ॥ इहवासहराजंबू, सेलडुगुण विछराचउसु आरा ॥ खित्तं फुसंति लरको, अडसयरिसहस बियाला ॥१॥ तणूणलवणपरिहि, धायइसंडस्सआइ धुवरासी ॥ गिरिं पिडुणा तम्मज्ज, परिहीसमज्ज धुवरासी॥२॥अंतस्सविजा परिही, गिरिविछर रहिय अंतधुवरासी ॥ गिरिविछरेण मिलियं,परिहिंतिगणुकमेण ज्ञवे ॥३॥ इतिधातकी खंडाधिकारः

हवे कालोद समुद्रनो चोथो अधिकार कहे छे.

कालोदधि नामे जे समुद्र ते धातकीखंडनी जगती बाहेर वलयने आकारे छे,ते सर्वत्र हजार योजन ऊंडो छे एटले गोतीर्थनी परे नथी. वली एमां पाणीनी हानी वृद्धि थती नथी. ते कालोद समुद्रनेविषे लवणसमुद्रना सुस्थितदेव सरखा काल, अने महाकाल नामे जे बे देवता तेने रहेवायोग्य पूर्व अने पश्चिमदिशानेविषे गौतमद्वीपसरखा बे द्वीपछे.

लवण समुद्रनी पेरे धातकी खंडनी जगतीथकी बार हजार योजन कालोद समुद्र मांहे पूर्वदिशानेविषे धातकीखंडना बार चंद्रमाना बार द्वीप छे, अने पश्चिमदिशाने विषे बार सूर्यना बार द्वीप छे, तथा कालोदनी जगतीथकी कालोद समुद्रमांहे बार हजार योजने पूर्वदिशाने विषे कालोदधिना बहेंतालीश चंद्रमाना बहेंतालीश द्वीप छे,अने पश्चिम दिशाये बहेंतालीश सूर्यना बहेंतालीश द्वीप छे.तेसर्व द्वीप बाहेरनी दिशाये सर्वत्र जोतां पाणीथकी ऊपर बे कोश ऊंचा छे, तथा एकाणुं लाख सत्योतेर हजार छशे ने पांच योजन कालोद समुद्रनो परिधि जाणवो. अने बावीश लाख बाणुं हजार छशे ने बहेंतालीश योजन अने ऊपर त्रण कोश एटलुं जगतीना द्वार द्वारनुं अंतर जाणवुं ॥

हवे पांचमो पुष्करदल द्वीपनो अधिकार कहे छे. कालोद समुद्रनी जगतीथी बाहेर वलयने आकारे सोल लाख योजन पहोलो पुष्कर द्वीप छे, ते पुष्कर द्वीपनुं अर्द्ध आठ लाख योजन छे, त्यांथकी बाहेरनी दिशाये जगतीनी पेरे वलय सरखो मानुष्योत्तर एवे नामे पर्वत छे, ते वेलंधरगिरिने माने छे. मूलने विषे एक हजार बावीश योजन, अने शिखरने विषे चारशे ने चोवीश योजन पहोलो छे, अने सत्तरशे एकवीश योजन ऊंचो छे. वली जेम सिंह बेसे, तेवारे आगले भागे ऊंचो होय, अने पाछले भागे नीचो होय, तेम मानुष्योत्तर पण मांहेनी दिशाये ऊंचो छे, अने बाहेरनी दिशाये नीचो ढाल मांहे छे. वली निषध पर्वतने वर्णे मानुषोत्तर पण राता सुवर्णनो छे.

हवे त्यां क्षेत्र अने पर्वतनां स्वरूप वखाणे छे.

जेम भरतादिक क्षेत्र अने हेमवंत प्रमुख पर्वत तेनां संस्थान जे आकारविशेष धातकीखंडने विषे कह्यां छे. एटले त्यां जेम चक्रना आरा अने विवर सरखा छे, तेमज ए पुष्करवर द्वीपने विषे पण जाणवा. धातकीखंडना भद्रशाल वनथकी पुष्करार्द्धनुं भद्रशाल वन ते लांबपणे अने पहोलपणे बमणुं जाणवुं. तो मेरुनी पूर्व पश्चिमदिशाये भद्रशालवननो धातकी खंडने विषे विस्तार एक लाख सात हजार आठशे ने ओगणयाएंशी योजन छे. तेने बमणो करीये, तेवारे बे लाख पन्नर हजार सातशे ने अठावन योजन थाय. ने एने जेवारे अठ्याशी भागे वेहेंचीये, तेवारे बे हजार चारशे एकावन्न

योजन उपर एक योजनना अठ्याशी जाग करीये. तेवा सित्तेर जाग एटलो मेरु थ की दक्षिण उत्तर दिशाना जद्रशाल वननो विस्तार पुष्करार्द्धने विषे जाणवो. तथा पुष्करार्द्धना बे मेरु अने इखुकार पर्वत तेनो विस्तार धातकीखंड सरखो जाणवो.

हवे बाहेरना चार गजदंता वखाणे छे.

ए पुष्करार्द्धने विषे मानुषोत्तर पर्वतनी दिशाये बाहेरना चार गजदंतगिरि जे छे, ते वीश लाख, त्रेंतालीश हजार, बशे ने उगणीश योजन लांबा छे. कालोद समुद्रनी जग तीनी दिशाना मांहेला चार गजदंतगिरि जे छे, ते सोल लाख, छवीश हजार एकशो ने सोल योजन एटला लांबा छे. तथा चार लाख, छत्रीश हजार, नवशें ने सोल योजन एटली कुरुक्षेत्रनी जीवा छे. वली सत्तर लाख, सात हजार, सातशें ने चउद उपर एक योजनना बशे बार जाग करिये, तेवा आठ जाग एटलो कुरुक्षेत्रनो विस्तार जा णवो. त्रणशें तेत्रीश योजन उपर एक योजननो त्रीजो जाग एटलुं कंचनगिरिनुं मा होमांहे अंतर जाणवुं. बे लाख, चालीश हजार, नवशे ने उगणसाठ योजन उपर सा तीयो एक जाग एटलुं कुलगिरि, जमक अने द्रहनुं मांहोमांहे अंतर जाणवुं. तथा छ त्रीश लाख, उगणोतेर हजार, त्रणशें ने पांत्रीश योजन एटलुं कुरुक्षेत्रनुं धनुःपृष्ठ जाणवुं.

हवे शेष नदी तथा पर्वतनां परिमाण कहे छे.

शेष बीजां क्षेत्र, नदी अने द्रह प्रमुखनुं प्रमाण ते जेम जंबूद्वीपथकी कोइक बम णा, कोइक सरखा, इत्यादि धातकी खंडने विषे जेम कह्या छे, तेम अहिंयां पुष्करा र्द्धने विषे पण कोइक धातकीखंडथी बमणा, कोइक धातकीखंड सरखा पण जाणवा. एटले जे जंबूद्वीप सरखा धातकीखंडमांहे छे, ते धातकीखंड सरखा पुष्करार्द्धमांहे छे, अने जे जंबूद्वीपथकी धातकीखंडमांहे बमणा कह्या छे, ते पुष्करार्द्धने विषे धात कीखंडथकी बमणा जाणवा ॥ हवे धातकीखंडने विषे दीर्घ वैताढ्य जंबूद्वीप सरखा वखाणे छे ॥ यथा ॥ कंचण यमसुरकुरु नग, वेयड्ढा चेव वट्ट दीहाय ॥ विक्खंजबाहस मु, स्सएणजह जंबूदीवुच्चा ॥ १ ॥ पुष्करार्द्धने विषे तो दीर्घ वैताढ्यनो विस्तार बशें योजन कह्यो छे ॥ यथा ॥ उव्वेहो वेयढ्ढाणं, जोयणाइं तु छसय कोसाइं ॥ पण विसं उच्चिट्ठो, दोचेव सयाइं विच्छिन्ना ॥ २ ॥ अहिंयां निश्चयनी वात तो ज्ञानी जाणे.

पुष्करार्द्ध क्षेत्रनो ध्रुवांक कहे छे. अठ्याशी लाख, चउद हजार, नवशें ने एकवीश एटला योजन आदिक्षेत्रना ध्रुवांकनी राशि जाणवी. ते सर्व प्रथमनी पेरे क्षेत्रना आंक साथे गणीये. पछी बशे ने बार जागे वेहेंचतां परिमाण लन्यमान थाय. एक को रुडी, ते लाख, चुम्मालीश हजार, सातशें ने त्रेतालीश योजन. एटली पुष्करवरद्वीपना

मध्यक्षेत्रनी ध्रुवांकराशि जाणवी. एक करोड, आडत्रीश लाख, चम्मोतेर हजार, पां
ने पांशठ, एटली पुष्करार्द्धना अंत्यक्षेत्रनी ध्रुवांकराशि जाणवी. हवे ए ध्रुवांक जा
नी पेरे लखीये ठैये ॥यथा॥ पुस्करदलंमिउसुया, र धायइसंडा उ डुगुण वासहर
खित्तं फुसंति लक्कति, पणवन्न सहस्स ठसय चुलसी ॥१॥ तेणूणा कालोयहि, परीही इ
महो धुवरासी ॥ दीवद्ध मद्य परिही, गिरिपीहूणोय मज्झि धुवो ॥ २ ॥ नरखित्त अंत
ही, गिरिपिहूणाय अंत धुवरासि ॥ पुव्वंचगणणहरणो, खित्तपमाणं जवे पयडं ॥

हवे अनुक्रमे क्षेत्रप्रमाण विवरीने लखीये ठैये. पुष्करार्द्धने विषे भरत ऐरव
आदिध्रुवांक अठ्याशी लाख, चउद हजार, नवशें ने एकवीश तेने एक साथे गुण
ते वारे तेहीज आंक आवे, तेने बशे ने बार भागे वेहेंचीये, तेवारे एकतालीश
जार, पांचशें ने ठगणयाएंशी योजन लभ्यमान थाय. उपर एकशो ने तहोंतेर यो
वधे, ते एक योजनना बशें बार भाग करी, तेने बशें ने बार भागे वेहेंचीये, ते
उपर बशें ने बारीया एकशो ने तहोंतेर भाग आवे, एटलो प्रथम विस्तार ठे. ते
त्रेपन हजार, पांचशें ने बार योजन उपर बशें बारीया, एकशो ने नवाणुं भाग,
लो मध्यविस्तार जाणवो. पांसठ हजार चारशें ने ठेतालीश योजन उपर बशें ने
रीया तेर भाग, एटलो अंत्यविस्तार जाणवो.

हेमवंत ऐरण्यवंतनो आदि विस्तार एक लाख, ठासठ हजार, त्रणशें ने ठगणीश यो
उपर बशें ने बारीया ठप्पन भाग ठे, अने मध्यविस्तार बे लाख, चउद हजार ने
कावन योजन उपर बशें बारीया एकसो ने साठ भाग ठे, तथा अंत्यनो विस्ता
लाख, एकसठ हजार, सातशें ने चोराशी योजन उपर बशें ने बारीया बावन भाग

हरिवर्ष तथा रम्यक्नो आदि विस्तार ठ लाख, पांसठ हजार, बशें ने सत्योतेर यो
उपर बशें ने बारीया बार भाग ठे, अने मध्यविस्तार आठ लाख, ठप्पन हजार, बशें
सात योजन उपर बशे ने बारीया चार भाग ठे, तथा अंत्यविस्तार, दश लाख, सु
लीश हजार, एकशो ने ठत्रीश योजन उपर, बशें ने बारीया बशे ने आठ भाग

विदेह क्षेत्रनो आदि विस्तार, ठव्वीश लाख, एकसठ हजार, एकशो ने आठ योजन
पर बशें ने बारीया अडतालीश भाग ठे, अने मध्यविस्तार चोत्रीश लाख, चोवी
जार, आठशें ने अठ्यावीश योजन उपर बशें ने बारीया सोल भाग ठे, तथा अंत्यवि
र एकतालीश लाख, अठ्याशी हजार, पांचशे ने ठेतालीश योजन उपर बशें ने
रीया एकशो ने ठन्नुं भाग ठे. ए गुणांक, क्षेत्रांक अने ध्रुवांक, ते सर्व यंत्रथी जा

हवे प्रथमनी पेरे नदी, गिरि अने वनमुखनुं परिमाण काढीने शेष रहे, तेने

मे भागे एक विजयनुं परिमाण उंगणीश हजार, सातशें ने सवाचोराणुं योजन थाय. तथा ए पुष्करार्द्ध द्वीपने विषे, बाहेरनी दिशाये जेनां पाणी वहे छे, एवी जे नदी तेनी नजीक कोइ समुद्र नथी, तेमाटे मानुषोत्तरने हेठे मूलमां पेसे छे.

ए पुष्करार्द्धने विषे बन्ने उत्तर कुरुक्षेत्रमांहे पद्म अने महापद्म एवे नामे बे वृक्ष छे, तेने विषे पद्म तथा पुंमरीक एवे नामे बे देवता रहे छे, अने देव कुरुक्षेत्रने विषे तो जंबूद्वीपनी पेरे गरुमदेवने वसवायोग्य बे शाल्मलीनां वृक्षो छे.

पुष्करार्द्ध क्षेत्रने विषे पूर्व पश्चिम दिशाना बन्ने खंममांहे वे हजार योजन पहोला एवा बे कूट कह्या छे, ते कूटनां स्थानक गीतार्थ ज्ञानवंत होय ते जाणे.

हवे मनुष्यक्षेत्रमांहे सर्व पर्वतनी संख्या कहे छे.

एक मेरु, छ कुलगिरि, चार गजदंता, सोल वक्षस्कार, चोत्रीश लांबा वैताढ्य, चार वृत्त वैताढ्य, चार यमलगिरि, अने बशे कांचनगिरि. ए सर्व मली बशे नेउंगणयोतेर पर्वत जंबूद्वीपमांहे जाणवा. अने आठ पर्वत लवणसमुद्रमांहे छे, बीजा धातकीखंम मांहे जंबूद्वीपना बशें ने उंगणयोतेरने बमणा करीने बे इखुकार पर्वत जेलीये, तेवारे पांचशे ने चालीश थाय. अने त्रीजा पुष्करार्द्धने विषे पण पांचशें ने चालीश पर्वत जाणवा. एम तेरशो ने सत्तावन पर्वत सर्व मलीने मनुष्य क्षेत्रमांहे जाणवा, तेमां पांच मेरुपर्वत्त विना सर्व पर्वतो उंचपणाने चोथे भागे भूमिमांहे जाणवा. अने मानुषोत्तर पर्वत पण एज रीते उंचपणांने चोथे भागे भूमिमांहे छे.

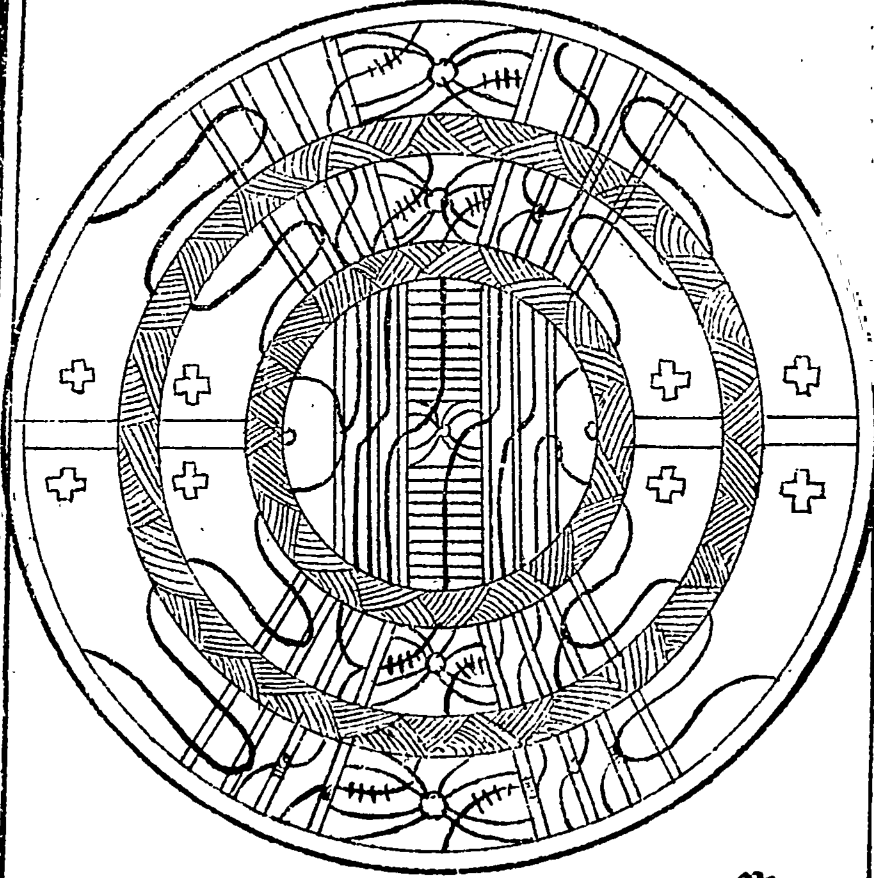
पुष्करार्द्ध द्वीपना आदि, मध्य अने अंत्यना त्रण परिधि कहे छे.

प्रथम जे ध्रुवांकनी श्रेणी कही छे, तेमांहे त्रण लाख, पंचावन हजार, छशें ने चोराशी एटला योजन जेवारे त्रणे परिधिमांहे मेलवीये, तेवारे अनुक्रमे पुष्करार्द्धना त्रण परिधि होय, ते संख्या यंत्रथकी जाणवी ॥ उक्तं च ॥ अड्ढाइदीव ड समु, इ रूव तप्परिहिं जोयणिग कोमी ॥ बायाल लरक तीसं, सहसा दोसय इगुणवन्ना ॥१॥ सोलस कोमी लरका, नव कोडिसयातिकोडि इग लरक ॥ पणवीस सहस्सासे, गणियपयं पुणसु करणेहिं ॥२॥

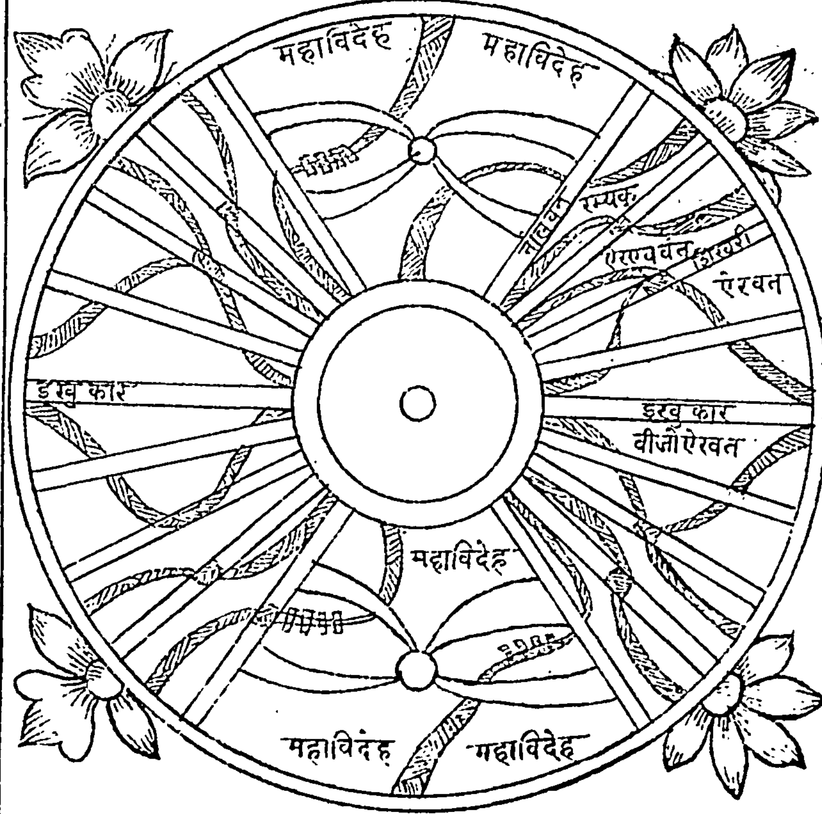
हवे मनुष्यक्षेत्र बाहेर जे पदार्थ न होय, ते कहे छे.

नदी, द्रह, मेघ, मेघनो गर्जारव, बादर अग्नि काय, तीर्थंकर, बलदेव, वासुदेव, चक्रवर्त्ती अने बीजा पण सामान्य मनुष्य तेना जन्म अने मरण तथा मुहूर्त्त, प्रहर, दिवस, चंद्र सूर्यनां परिवेष, विजली, चय, अपचय अने उपराग, एटला पदार्थ पीस्तालीश लाख योजन प्रमाण मनुष्यक्षेत्रमांहे होय. पण बाहेर न होय. एवुं नरक्षेत्रना स्वभावनुं विशेष जाणवुं ॥ इति पंचमोऽधिकारः ॥ ५ ॥

अढी द्वीप स्थापना.



धातकी खंड स्थापना.



हवे पुष्करार्द्धादिकना पर्वत प्रमुखनेविषे जिनन्नवन छे, ते कहे छे.

प्रथम कह्या जे धातकीखंम तेने विषे बे इखुकार, अने बे इखुकार पुष्करार्द्धना, ते
रे इखुकार पर्वतने विषे प्रत्येके चार कूट छे. तेमांहे छेल्ला सिद्धकूटने विषे चार प
एकेक जिनन्नवन छे, बधां मली चार जिनन्नवन छे. अने मानुषोत्तर पर्वतना चार
तेनी उपर चार जिनन्नवन छे, ते जिनन्नवन कुलगिरिना जिनन्नवनने परिमाणे प
स योजन लांबां, पच्चीश योजन पहोलां अने छत्रीश योजन उंचां जाणवां.

हवे नंदीश्वर, कुंडल अने रुचकद्वीपनेविषे जिनन्नवन कहे छे.

एकसो योजन लांबा अने पचास योजन पहोलां तथा बहोंतेर योजन उंचा अने
र बारणे सहित एवां आठमा नंदीश्वरद्वीपनेविषे बावन जिनन्नवन छे, तथा कुंम
द्वीपनेविषे कुंडलने आकारे जे मध्यगिरि छे, तेने कुंडलगिरि कहे छे, तेनी चारदि
ने विषे एवाज प्रकारना चार जिनन्नवन जाणवां. एम रुचकद्वीपने विषे पण चार
नन्नवन छे, ए सर्व साठे जिनन्नवन ते चार बारणानां छे.

अढीद्वीपने विषे गर्न्नज मनुष्य संख्याये केटलां छे? ते कहे छे.

सात क्रोड कोमाकोमी कोमी, बाणुं लाख कोडाकोडी कोमी, अठ्यावीश हजार कोमा
डी कोडी, एकशो कोमाकोडी कोमी, बाशठ कोमाकोडी कोडी, एकावन लाख कोमा
डी, बहेंतालीश हजार कोमाकोमी, छशे कोडाकोमी, त्रेंतालीश कोडाकोडी, साडत्री
लाख कोडी, उंगणसाठ हजार कोमी, त्रणशे कोडी, चोपन कोडी, उंगणचालीश
ख, पचास हजार, त्रणशे ने छत्रीश, एटले आंके स्त्री पुरुषनी संख्या जाणवी.

एटले सात क्रोड, बाणुं लाख, अठ्यावीश हजार, एकशो ने बासठ कोमाकोमी
मी, तथा एकावन लाख, बहेंतालीश हजार, छशें ने त्रेंतालीश कोडाकोमी, तथा सा
त्रीशलाख, उंगणशाठ हजार, त्रणशें ने चोपन कोमी, तेनी उपर उंगणचालीश लाख,
चास हजार त्रणशे ने छत्रीश, एटला आंक स्त्री पुरुषना एकठा साथे जाणवा. एटले
९२२८१६२,५१४२६४३,३७५९३५४,३९५०३३६, ए उंगणत्रीश आंकनी संख्या जाणवी.

ए आंकना अठ्यावीश न्नाग करीये, तेवारे एक न्नागमां २८२९५७७, २३२६५२२,
७७७११९, ७९९८२२६, ए अठ्यावीश आंक आवे, एटले अठ्यावीश लाख कोमाको
ी कोमी, उंगणत्रीश हजार कोडाकोडी कोडी, पांचशे कोडाकोडी कोमी, सत्योतेर
ोमाकोमी कोडी, तथा त्रेवीश लाख कोडाकोडी, छवीश हजार कोमाकोडी, पांचशे को
ाकोमी, बावीश कोमाकोमी, सत्ताणुं लाख कोमी, सत्योतेर हजार कोमी, एकशो को
ी अने उंगणीश कोमी, तेनी उपर उंगणाएंशी लाख, अठाणुं हजार, बशे ने छवीश,

हवे पुष्करार्द्धादिकना पर्वत प्रमुखनेविषे जिनभवन छे, ते कहे छे.

प्रथम कह्या जे धातकीखंड तेने विषे बे इखुकार, अने बे इखुकार पुष्करार्द्धना, ते चारे इखुकार पर्वतने विषे प्रत्येके चार कूट छे. तेमांहे छेल्ला सिद्धकूटने विषे चार पर्वते एकेक जिनभवन छे, बधां मली चार जिनभवन छे. अने मानुषोत्तर पर्वतना चार कूटनी उपर चार जिनभवन छे, ते जिनभवन कुलगिरिना जिनभवनने परिमाणे पचास योजन लांबां, पच्चीश योजन पहोलां अने छत्रीश योजन उंचां जाणवां.

हवे नंदीश्वर, कुंडल अने रुचकद्वीपनेविषे जिनभवन कहे छे.

एकसो योजन लांबा अने पचास योजन पहोलां तथा बहोंतेर योजन उंचा अने चार बारणे सहित एवां आठमा नंदीश्वरद्वीपनेविषे बावन जिनभवन छे, तथा कुंडलद्वीपनेविषे कुंडलने आकारे जे मध्यगिरि छे, तेने कुंडलगिरि कहे छे, तेनी चारदिशाने विषे एवाज प्रकारना चार जिनभवन जाणवां. एम रुचकद्वीपने विषे पण चार जिनभवन छे, ए सर्व साठे जिनभवन ते चार बारणानां छे.

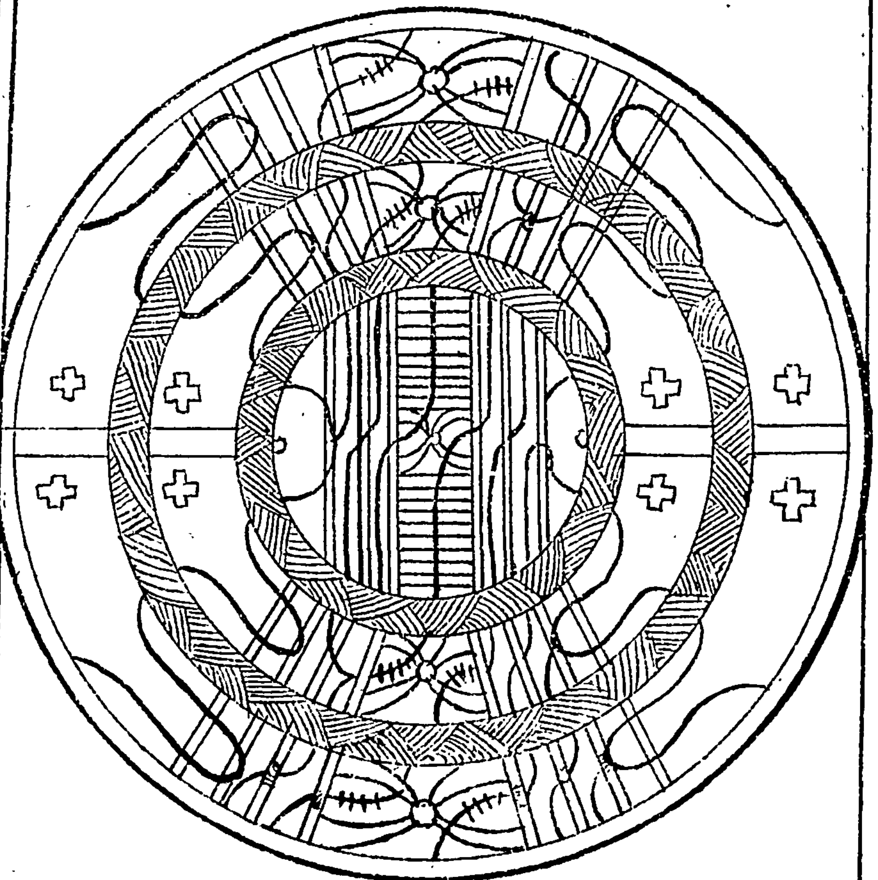
अढीद्वीपने विषे गर्भज मनुष्य संख्याये केटलां छे? ते कहे छे.

सात क्रोड कोडाकोडी कोडी, बाणुं लाख कोडाकोडी कोडी, अठ्यावीश हजार कोडाकोडी कोडी, एकशो कोडाकोडी कोडी, बाशठ कोडाकोडी कोडी, एकावन लाख कोडाकोडी, बहेंतालीश हजार कोडाकोडी, छशे कोडाकोडी, त्रेंतालीश कोडाकोडी, साडत्रीश लाख कोडी, ओगणसाठ हजार कोडी, त्रणशे कोडी, चोपन कोडी, ओगणचालीश लाख, पचास हजार, त्रणशे ने छत्रीश, एटले आंके स्त्री पुरुषनी संख्या जाणवी.

एटले सात क्रोड, बाणुं लाख, अठ्यावीश हजार, एकशो ने बासठ कोडाकोडी कोडी, तथा एकावन लाख, बहेंतालीश हजार, छशें ने त्रेंतालीश कोडाकोडी, तथा साडत्रीशलाख, ओगणशाठ हजार, त्रणशें ने चोपन कोडी, तेनी उपर ओगणचालीश लाख, पच्चास हजार त्रणशे ने छत्रीश, एटला आंक स्त्री पुरुषना एकठा साथे जाणवा. एटले ७९२२८१६२,५१४२६४३,३७५९३५४,३९५०३३६, ए ओगणत्रीश आंकनी संख्या जाणवी.

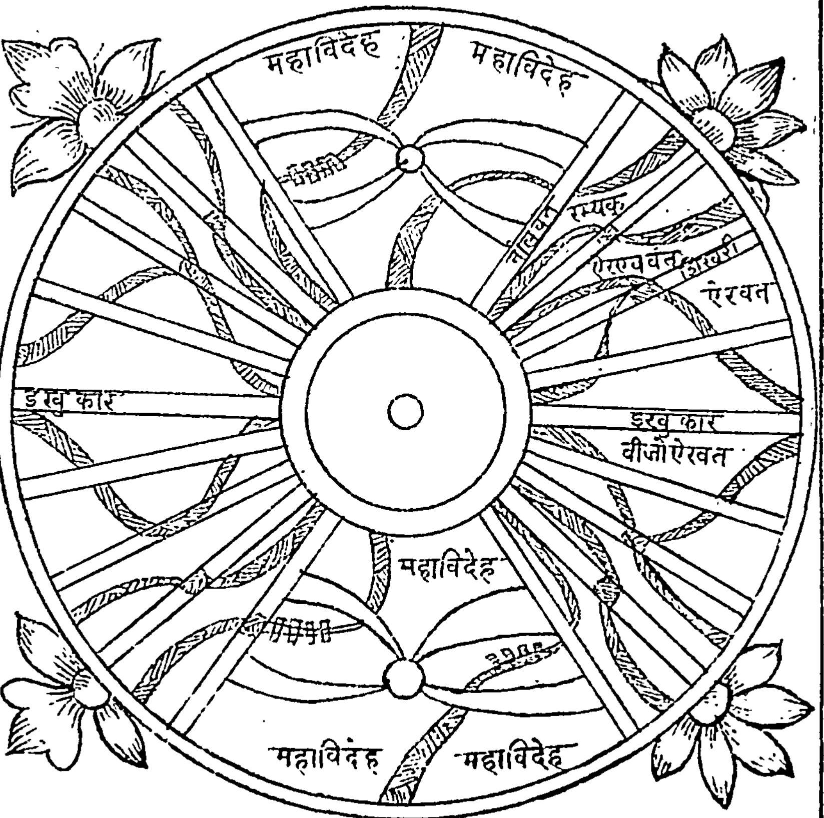
ए आंकना अठ्यावीश भाग करीये, तेवारे एक भागमां २८२९५७७, २३२६५२२, ९७७७११९, ७९९८२२६, ए अठ्यावीश आंक आवे, एटले अठ्यावीश लाख कोडाकोडी कोडी, ओगणत्रीश हजार कोडाकोडी कोडी, पांचशे कोडाकोडी कोडी, सत्योतेर कोडाकोडी कोडी, तथा त्रेवीश लाख कोडाकोडी, छवीश हजार कोडाकोडी, पांचशे कोडाकोडी, बावीश कोडाकोडी, सत्ताणुं लाख कोडी, सत्योतेर हजार कोडी, एकशो कोडी अने ओगणीश कोडी, तेनी उपर ओगणयाएंशी लाख, अठाणुं हजार, बशे ने छवीश,

अढी द्वीप स्थापना.



६२

धातकी खंड स्थापना.



६१

हवे पुष्करार्द्धादिकना पर्वत प्रमुखनेविषे जिनभवन छे, ते कहे छे.

प्रथम कह्या जे धातकीखंड तेने विषे बे इखुकार, अने बे इखुकार पुष्करार्द्धना, ते चारे इखुकार पर्वतने विषे प्रत्येके चार कूट छे. तेमांहे छेल्ला सिद्धकूटने विषे चार पर्वते एकेक जिनभवन छे, बधां मली चार जिनभवन छे. अने मानुषोत्तर पर्वतना चार कूटनी उपर चार जिनभवन छे, ते जिनभवन कुलगिरिना जिनभवनने परिमाणे पचास योजन लांबां, पच्चीश योजन पहोलां अने छत्रीश योजन उंचां जाणवां.

हवे नंदीश्वर, कुंडल अने रुचकद्वीपनेविषे जिनभवन कहे छे.

एकसो योजन लांबा अने पचास योजन पहोलां तथा बहोंतेर योजन उंचा अने चार बारणे सहित एवां आठमा नंदीश्वरद्वीपनेविषे बावन जिनभवन छे, तथा कुंडलद्वीपनेविषे कुंडलने आकारे जे मध्यगिरि छे, तेने कुंडलगिरि कहे छे, तेनी चारदिशाने विषे एवाज प्रकारना चार जिनभवन जाणवां. एम रुचकद्वीपने विषे पण चार जिनभवन छे, ए सर्व साठे जिनभवन ते चार बारणानां छे.

अढीद्वीपने विषे गर्भज मनुष्य संख्याये केटलां छे? ते कहे छे.

सात क्रोड कोडाकोडी कोडी, बाणुं लाख कोडाकोडी कोडी, अठ्यावीश हजार कोडाकोडी कोडी, एकशो कोडाकोडी कोडी, बाशठ कोडाकोडी कोडी, एकावन लाख कोडाकोडी, बहेंतालीश हजार कोडाकोडी, छशे कोडाकोडी, त्रेंतालीश कोडाकोडी, साडत्रीश लाख कोडी, ओगणसाठ हजार कोडी, त्रणशे कोडी, चोपन कोडी, ओगणचालीश लाख, पचास हजार, त्रणशे ने छत्रीश, एटले आंके स्त्री पुरुषनी संख्या जाणवी.

एटले सात क्रोड, बाणुं लाख, अठ्यावीश हजार, एकशो ने बासठ कोडाकोडी कोडी, तथा एकावन लाख, बहेंतालीश हजार, छशें ने त्रेंतालीश कोडाकोडी, तथा साडत्रीशलाख, ओगणशाठ हजार, त्रणशें ने चोपन कोडी, तेनी उपर ओगणचालीश लाख, पच्चास हजार त्रणशे ने छत्रीश, एटला आंक स्त्री पुरुषना एकठा साथे जाणवा. एटले ७९२२८१६२,५१४२६४३,३७५९३५४,३९५०३३६, ए ओगणत्रीश आंकनी संख्या जाणवी.

ए आंकना अठ्यावीश भाग करीये, तेवारे एक भागमां २८२९५७७, २३२६५२२, ९७७७११९, ७९९८२२६, ए अठ्यावीश आंक आवे, एटले अठ्यावीश लाख कोडाकोडी कोडी, ओगणत्रीश हजार कोडाकोडी कोडी, पांचशे कोडाकोडी कोडी, सत्योतेर कोडाकोडी कोडी, तथा त्रेवीश लाख कोडाकोडी, छवीश हजार कोडाकोडी, पांचशे कोडाकोडी, बावीश कोडाकोडी, सत्ताणुं लाख कोडी, सत्योतेर हजार कोडी, एकशो कोडी अने ओगणीश कोडी, तेनी उपर ओगणएयाएंशी लाख, अठाणुं हजार, बशे ने छवीश,

अढी द्वीप स्थापना.

६२

धातकी खंड स्थापना.

महाविदेह
महाविदेह
रम्यक
ऐरण्यवत
ऐरवत
इखु कार
इखु कार
बीजो ऐरवत
महाविदेह
महाविदेह
महाविदेह

६१

शाश्वत जिन प्रासाद संख्या यंत्र.

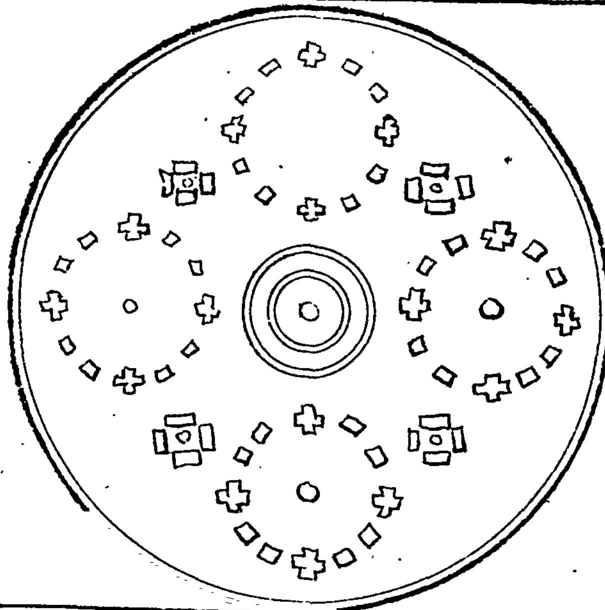
एवं मनुष्यक्षेत्रे चैत्य संख्या.

स्थान	प्रासाद	प्रतिमा	अंक	स्थान	प्रासाद	प्रतिमा
सौधर्म	३२०००००	५७६००००००	५	मेरु	८५	१०२००
ईशान	२८०००००	५०४००००००	२०	गजदंतगिरि	२०	२४००
सनत्कुमार	१२०००००	२१६००००००	८०	वखारा पर्वत	८०	९६००
महेंद्र	८०००००	१४४००००००	१००	कांचनगिरि	१०००	१२००००
ब्रह्म	४०००००	७२००००००	५	विचित्रपर्वत	५	६००
लांतक	५००००	९००००००	५	चित्रपर्वत	५	६००
शुक्र	४००००	७२०००००	१०	यमकाचल	१०	१२००
सहस्त्रार	६०००	१०८००००	३०	वर्षधर पर्वत	३०	३६००
आनत	२००	३६०००	४	इखुकारपर्वत	४	४८०
प्राणत	२००	३६०००	२०	वृत्तवैताढ्य	२०	२४००
आरण्य	१५०	२७०००	१७०	दीर्घवैताढ्य	१७०	२०४००
अच्युत	१५०	२७०००	४०	दिग्गजकूट	४०	४८
प्रथमत्रिक ३	१११	१३३२०	१०	जंब्वादिवृक्ष	११७०	१४०४००
द्वितीयत्रिक ३	१०७	१२८४०	३८०	कुंम	३८०	४५६००
त्रितीयत्रिक ३	१००	१२०००	७०	महानदिकुंम	७०	८४००
पंचानुत्तर	५	६००	८०	द्रहचैत्य	८०	९६००
एवमूर्ध्वलोके	८४९७०२३	१५२९४४४७६०	मनुष्यक्षेत्रथी बाहेरना- तीर्छी संख्या.	१ मानुषोत्तरपर्वत	४	४८०
एवंत्रिभुवने	८५७००२८२	१५४२५८३६०८०		१ नंदीश्वरद्वीप	६८	८३६८
				१ रुचकद्वीप	४	४९६
				१ कुंमलद्वीप	४	४९६

स्थान	प्रासाद	प्रतिमा.
असुरकुमार	६४०००००	११५२००००००
नागकुमार	८४०००००	१५१२००००००
सुवर्णकु०	७२०००००	१२९६००००००
विद्युत्कु०	७६०००००	१३६८००००००
अग्निकु०	७६०००००	१३६८००००००
द्वीपकु०	७६०००००	१३६८००००००
उदधिकु०	७६०००००	१३६८००००००
दिशाकु०	७६०००००	१३६८००००००
स्तनितकु०	७६०००००	१३६८००००००
वायुकु०	९६०००००	१७२८००००००
एवमधोलोके	७७२००००००	१३८९६०००००००

नंदीसरकल्पः

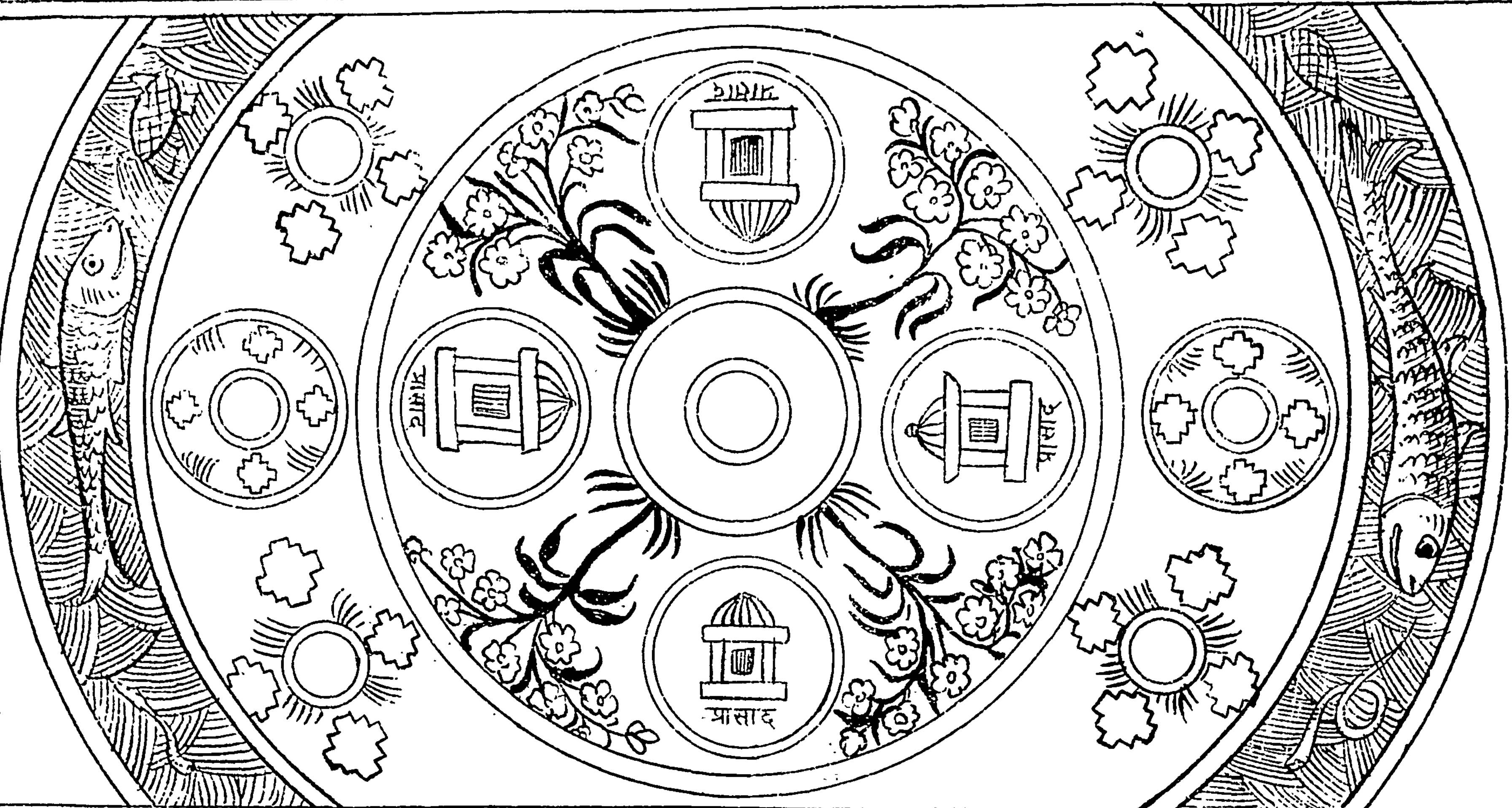
६४



६५

नंदीसरद्वीप स्थापना.

कुंमलद्वीप स्थापना:



एटला आंक अठ्यावीशमा भागमां आवे, उपर आठनो आंक वधे. एटली संख्याये पुरुष जाणवा. एटले २८२८८५७७ एटली कोडाकोडी कोडी, अने २३२६५२२ एटली कोडाकोडी तथा ८७७७११८ एटली कोडी तेनी उपर ७८८८२२६ एटला पुरुष जाणवा.

हवे पुरुषथी सत्तावीश गुणी स्त्री छे, माटे ए आंकने सत्तावीश गुणो करीये, तेवारे ७६३८८५८५, २८१६१२०, ३८८२२३४, ५८५२१०२ ए उंगणत्रीश आंक आवे, तेटली संख्याये स्त्री जाणवी. एटले सात क्रोड कोडाकोडी कोडी, त्रेशठ लाख कोडाकोडी कोडी, अठाणुं हजार कोडाकोडी कोडी, पांचशें कोडाकोडी कोडी, पंचाशी कोडाकोडी कोडी, तथा अठ्यावीश लाख कोडाकोडी, शोल हजार कोडाकोडी, एकशो कोडाकोडी, वीश कोडाकोडी, तथा उंगणचालीश लाख कोडी, बासी हजार कोडी, बशे कोडी, चोत्रीश कोडी, उपर उंगणसाठ लाख, बावन हजार, एकशो ने बे. एटले आंके स्त्री जाणवी. अर्थात् (७६३८८५८५) एटली कोडाकोडी कोडी, तथा (२८१६१२०) एटली कोडाकोडी, तथा (३८८२२३४) एटली कोडी तेनी उपर (५८५२१०२) एटले आंके स्त्री छे. ए स्त्रीना आंकनी साथे पूर्वोक्त पुरुषना आंकनी संख्यानो आंक तथा जे अठ्यावीशे भाग आपतां उपर आठ वध्या छे, ते सर्व एकठा मेलवीये, तेवारे पूर्वोक्त उंगणत्रीश आंक पूर्ण थाय. एटला आंके गर्भज मनुष्य छे. ए प्रकारे गर्भज मनुष्य पूर्वोक्त आंक जेटला होय परंतु आंक न्हाना महोटा न होय, तेमां पुरुषथी स्त्री सत्तावीश गुणी अधिक होय. अल्पबहुत्वमां पुरुषथकी स्त्री संख्यातगुणी अधिक कही छे. इहां पूर्वोक्त आंकने अठ्यावीशे भाग आपतां उपर आठनो आंक वधे छे, पण सत्यावीश वधता नथी ते वात गीतार्थगम्य जाणवी. तेनो निर्णय गीतार्थ करी आपे.

वली अल्पबहुत्वना अठाणुं द्वार जोतां सर्वथी थोडा गर्भज मनुष्य कह्यां छे, ते संख्याती कोडाकोडी प्रमाण पूर्वोक्त उंगणत्रीश आंके संख्या जाणवी.

इहां केटलाएक एम कहे छे के उंगणत्रीश आंके गर्भज मनुष्य छे, ते आंक खरेखरा छे परंतु तेमां कालविशेषे न्हाना महोटा आंक लेवा जोइये. जेम बे एकडाये अगीयारनो आंक थाय अने बे नवडाये नवाणुं आंक पण थाय. तेम श्रीअजितनाथजीना वखतमां मनुष्यनी संख्या घणी होय तेवारे महोटा आंक लेवा अने छठा आराने विषे माणस स्वल्प होय तेवारे न्हाना आंक लेवा, एवी रीते केटलाक श्रीजिनशासनना रहस्यना अनभिज्ञपणाथी कहे छे. ते असत्य कहे छे. जेमाटे पंचांगीने विषे एटलाज आंक कह्या छे ते न्हाना महोटा केम थाय ?

जे कारणे श्रीअनुयोगद्वारसूत्रमध्ये कह्युं छे केः— जेवारे जघन्यथी मनुष्य होय, ते

वारे एकडानो आंक मांडी तेने छन्नुं वार बमणो करीये, तेवारे जे आंक आवे ते आंक प्रमाण मनुष्य छे. अथवा एकनो वर्ग न होय अने बेनो वर्ग चार थाय, ए प्रथम वर्ग कहेवाय. चारनो वर्ग शोल थाय ए बीजो वर्ग. शोलनो वर्ग बशे छप्पन थाय, ते त्रीजो वर्ग. तेनो वर्ग ६५५३६ थाय ते चोथो वर्ग. तेनो वर्ग ४२९४९६७२९६ थाय ते पांचमो वर्ग. तेनो वर्ग १८४४६७४४०७३७०९५५१६१६ ए छठो वर्ग. इहां पांचमो वर्ग छठा वर्ग साथे गणतां पूर्वोक्त आंक आवे ते आंकप्रमाणे गर्भज मनुष्य छे.

हवे ए पूर्वोक्त उंगणत्रीश आंकप्रमाणे जे गर्भज मनुष्यनी संख्या कही, ते सर्व मनुष्य जो अढीद्वीपमां विचरता लहीये, तो समाइ शके नही. केम के अढीद्वीपनी भूमि पीस्तालीश लाख योजन प्रमाण छे. तेनी परिधि १४२३०२४९ योजन एक गाउ १७६६ धनुष्य उपर चार अंगुल छे. अने अढीद्वीपनुं गणितपद करीये, तो पीस्तालीश लाख विष्कंभनो चोथो भाग सवा अगीयार लाख योजन थाय, तेने पूर्वोक्त परिधिना योजन साथे गणीये, तो १६००९०३०६१९४४५ योजन, त्रण गाउ, ८८१ धनुष्य थाय. ए सर्व प्रमाणांगुले योजन जाणवा. ते एक प्रमाणांगुल योजन मनुष्य संबंधी दश लाख योजन थाय, तेनी रीत बतावे छे.

उक्तं च ॥ अंगुलसप्ततिकायां ॥ सहस्समाणे चउरं, सजोयणे दीह पिहुल भावाणं ॥ हुंति परुप्परगणणे, लक्खा दस जोयणाण फुडं ॥ १ ॥ एक प्रमाणांगुल योजन छे, ते उत्सेधांगुल सहस्रगुणुं जाणवुं. तो एक जोयण चउरस्र प्रमाणांगुले छे, ते सहस्रगणुं लांबु अने सहस्रगणुं पहोलुं होय, तेवारे सहस्रने सहस्रगणुं करतां माणसना दश लाख योजन स्फुट एटले प्रगट थाय.

हवे एक योजनभूमिना प्रमाणांगुल ५८९८२४०००००० एटले अठावन हजार कोडी, नवशे कोडी, बासी कोडी, उपर चालीश लाख थाय. ते आवी रीते केः— एक योजन भूमिनां आठ हजार धनुष्य थाय. तेने एक धनुष्यना छन्नुं अंगुले गुणतां ७६८००० थाय, ते समचउरस्र योजन छे, माटे तद्गुणा करीये तेवारे पूर्वोक्त ५८९८२४०००००० प्रमाणांगुल थाय. तेने पूर्वोक्त अढीद्वीप संबंधी गणितपदना जेटला योजन कह्या छे, तेनी साथे गुणीये तेवारे ९४४२५१०४९६८१२७९४७६८१०९८९७७६ एटला प्रमाणांगुल गणितपदना जे योजन, गाउ, धनुष्य तथा अंगुल कह्या तेना थाय.

एवुं एक समचउरस्र प्रमाणांगुल ते मनुष्यना हजार आंगुल लांबुं अने हजार आंगुल पहोलुं समचउरस्र जाणवुं. माटे हजारने हजार गुणुं करतां दश लाख उत्सेद अंगुल थाय, तेने एक समचउरस्र हाथनी चोवीशआंगुलने चोवीशे गुणतां ५७६ आंगुल

थाय. ते आंगुले भाग आपीये, तेवारे १७३६ हाथ लाभे. शेष ६४ अंगुल वधे.

हवे ते पूर्वोक्त गणितपदना अंगुलने सत्तरशे ने बत्रीश हाथे गुणीये, तेवारे १६३७८१९८२२२४६७०११७१७४३८९२१११३६ एटला हाथ उच्छेद अंगुले थाय. तथा चोशठनो आंक वध्यो छे. ते गणितपदना अंगुल साथे चोशठ गुणो करी ५७६ भागे वहेंचतां १०४९१६७८३२९७९२१०५२९७८९६८२२ हाथ थाय. शेष ४९२ वधे. हवे ए हाथनी राशि पूर्वोक्त मूलहाथनी राशि मध्ये प्रक्षेपिये, तेवारे १६३७९२४७३९०२९९९९०९२७९६८७१०७९५८ एटला हाथ थाय. ते सर्व गणितपदना उच्छेद आंगुले हाथ जाणवा. आ बे पानाना गणित तपास्या नथी.

हवे ए सर्व त्रीश आंक छे, ते पीस्तालीश लाख योजन मनुष्य क्षेत्र छे, माटे पीस्तालीश लाखने भागे वहेंचीये, तेवारे एक भागे ३६३९८३२७५३३९९९९७९८३९९३० एटला आवे. शेष २१०७९५८ एटला आंक वधे, तेने भाग पहोंचे नही.

हवे पीस्तालीश लाख योजनमां पण वीश लाख समुद्रनी भूमि छे, अने पच्चीश लाख द्वीपनी भूमि छे, तिहां समुद्रनी भूमिमां माणसनी वस्ती नथी. मात्र अंतरद्वीप छे ते स्वल्प छे तेनी विवक्षा करता नथी. ते माटे समुद्रनी भूमि रहित मात्र द्वीपनी पच्चीश लाख योजन भूमि छे, तेने एक भागमां आवेली पूर्वोक्त हाथनी राशि साथे गुणतां ९०९९५८१८८३४९९९९४९५९९८२५०००००० एटली राशि आवे. ए पण ओगणत्रीश आंक छे, ते पूर्वोक्त सातकोडी इत्यादि गर्भज मनुष्यना ओगणत्रीश आंकनी राशिने वहेंची आपतां एकेका माणसने भागे एकेक हाथ भूमिभाग आवे छे तेमां सुवाय बेसाय नही. तेमज पर्वत, नदी, द्रह, वन, अटवी प्रमुख माणस विनानी भूमि पण घणी छूटी पडेली देखाय छे अने अल्पमात्र भूमिमध्ये मनुष्य रहे छे माटे पूर्वोक्त संख्याना मनुष्य एटली भूमिमां समाइ शके नही? एवी शंका उत्पन्न थाय.

हवे पूर्वोक्त शंकानुं समाधान करे छे. जे माटे श्रीवीतरागना वचनमां कांइ पण संदेह नथी. जे ओगणत्रीश आंक प्रमाण गर्भज मनुष्य कह्यां छे. ते सदा सर्वदा काल एटलांज छे, पण ओछां अधिकां नथी. इहां समाधान आ छे, केः—पुरुषथी स्त्री सत्यावीश गुणी अधिक छे. अने गर्भ धारण करनारी पण तेज छे अने तेना गर्भमां उत्कृष्टथी नवलाखनी संख्याये पण गर्भज मनुष्य होय छे. अने जघन्य मध्यम पण होय छे पण स्त्रीनी राशि महोटी छे तेथी तेना गर्भमां गर्भज मनुष्योनी महोटी संख्या सर्वदा रही शके एवो निर्धार छे माटे घणा जीव गर्भमां होवा जोइये. अने स्वल्पजीव गर्भ बाहेर होवाथी तेटला जीव पृथ्वीमां सुखथी रही शके छे. एम कहेवाथी जैनक्रियानो

लोप न थाय. पछी केवली कहे ते सत्य जाणवुं. पण गोखवुं, चिंतववुं, अने पूछवुं. एनुं नाम त्रिपदीविद्या कहेवाय. जगतमां त्रिपदी विद्यानी कहेवत छे तेथी सांशयिक वातोनुं समाधान थाय छे ॥ इति अढीद्वीप मनुष्य संख्याप्रमाणं समाप्तम् ॥

॥ अथ चोवीश दंडक उपर पांत्रीश बोल उतारवानो थोकडो प्रारंभिये छैये ॥

समस्त संसारीजीव, चारगतिमां रहेला चोवीश दंडकोने विषे परिभ्रमण करे छे. ते चोवीश दंडकनां नाम कहे छे.

१ प्रथम सात नारकीनो एक दंडक, ते साते नारकीनां नाम तथा गोत्र नीचे प्रमाणे छे.

नाम. १ धमा. २ वंसा. ३ सैला. ४ अंजणा. ५ रिठा. ६ मघा. ७ माघवती.

गोत्र. रत्नप्रभा. शर्करप्रभा. वालुकप्रभा. पंकप्रभा. धूमप्रभा. तमःप्रभा. तमस्तमःप्रभा.

॥ ११ त्यार पछी दश भुवनपतिदेवोना जे दश दंडक छे तेमां नाम लखिये छैये ॥

१ असुरकुमार निकायनो दंडक. २ नागकुमार निकायनो दंडक.
३ सुवर्णकुमार निकायनो दंडक. ४ विद्युत्कुमार निकायनो दंडक.
५ अग्निकुमार निकायनो दंडक. ६ द्वीपकुमार निकायनो दंडक.
७ उदधिकुमार निकायनो दंडक. ८ दिशिकुमार निकायनो दंडक.
९ वायुकुमार निकायनो दंडक. १० स्तनितकुमार निकायनो दंडक.

१२ बारमो पृथिवीकायनो दंडक, तेनां मूल नाम छ छे. ते लखिये छैये.

१ सुना. २ सुधा. ३ वालुया. ४ मणसिल. ५ शर्करा. ६ खरपुढवी.

॥ हवे ए पृथिवीकायना भेद कहे छे ॥

१ स्फाटिकरत्न २ मणिरत्न. ३ परवालां. ४ रागरत्न. ५ हिंगलो. ६ हरताल. ७ मणसिल. ८ पारो. ९ सोनुं. १० रूपुं. ११ त्रांबुं. १२ लोढुं. १३ जसत. १४ शींसुं. १५ कथिर. १६ खडीमाटी १७ हरमजी वानी. १८ अरणेटो पाषाण. १९ पलेवो पाषाण. २० अबरखनी जाति. २१ तूरी माटीनी जाति. २२ खारी माटीनी जाति. २३ माटीनी सर्व जाति. २४ पाषाणनी सर्व जाति. २५ सुरमानी जाति. २६ अंजननी जाति. २७ लूणनी जाति. इत्यादि पृथिवीकायना असंख्य भेद जाणवा.

१३ तेरमो अप्कायनो दंडक, तेना भेद कहे छे.

१ जमीननुं पाणी. २ आकाशनुं पाणी. ३ ठारनुं पाणी. ४ हिमनुं पाणी. ५ रोयडानुं पाणी. ६ नीलीवनस्पति उपर पाणीना बिंदु. ७ मांकनुं पाणी. ८ घनोदधि.

१४ चौदमो तेउकायनो दंडक छे. तेना भेद कहे छे.

१ अंगारानो अग्नि. २ ज्वालानो अग्नि. ३ भ्रासडनो अग्नि.
४ उल्कापातनो अग्नि. ५ कणियानो अग्नि. ६ विजलीनो अग्नि.

१५ पंदरमो वाउकायनो दंडक छे, तेना भेद कहे छे.

१ उद्भ्रामकवायु. २ मंदवायु. ३ औत्कलिकवायु. ४ मांडलिकवायु.
५ मुखशुद्धवायु. ६ गुंजवायु. ७ घनवात. ८ तनुवात.

१६ शोलमो वनस्पतिकायनो दंडक छे, तेनी मूलजाति पांच छे, ते कहे छे.

१ गुच्छा. २ गुमा. ३ वलया. ४ वल्ली. ५ पतिरण.

हवे एना बे भेद कहे छे.

१ जे एक शरीरमां अनंता जीव होय, ते साधारण वनस्पति. २ जे एक शरीरमां एक जीव होय, ते प्रत्येक वनस्पति. ए रीते एना पण भेदानुभेद असंख्य छे.

१७ सत्तरमो बेंद्रियनो दंडक छे, तेना भेद कहे छे.

१ शंख. २ कोडा. ३ गंडोला. ४ जलो. ५ अलसीयां
६ लारीयां. ७ मेहरी. ८ कृमिया. ९ पाणीना पूरा.

१८ अढारमो त्रींद्रियनो दंडक छे, तेना भेद कहे छे.

१ कानखजुरा. २ मांकड. ३ जू. ४ कीडियो. ५ उद्देही. ६ मंकोडा
७ ईल. ८ घीमेल. ९ सावा. १० गोकीडा. ११ गद्दहीयां. १२ विष्टाना कीडा.
१३ गोबरना कीडा. १४ धनेडियां. १५ कंथुआ. १६ गोपालिक. १७ इंद्रगोप.

१९ उगणीशमो चौरिंद्रियनो दंडक छे, तेना भेद कहे छे.

१ वींछी. २ ढंकण. ३ भ्रमरा. ४ भ्रमरी. ५ टीडी. ६ माखी.
७ डांस. ८ मछर. ९ पतंगिया. १० कंसारी. ११ कोईवाडा.

२० वीशमो तिर्यंच पंचेंद्रियनो दंडक छे, तेना भेद कहे छे.

१ जलचर. २ स्थलचर. ३ खेचर. ४ उरःपरिसर्प्प. ५ भुजपरिसर्प्प. ए पांच गर्भ्रज तिर्यंच अने एज पांच संमूर्छिम तिर्यंच पंचेंद्रिय एम सर्व दश भेदें थाय.

२१ एकवीशमो मनुष्यनो दंडक छे, तेना भेद कहे छे.

१५ पंदर कर्मभूमिक्षेत्रना. ३० त्रीश अकर्मभूमिक्षेत्रना. ५६ छप्पन अंतरद्वीपना. ए सर्व मली एकशो ने एक क्षेत्रवासी होवाथी एटलाज भेदो थया.

२२ बावीशमो व्यंतरदेवोनो दंडक छे, ते बे प्रकारे छे.

तिहां एक व्यंतर निकाय, तेना आठ भेद छे.

१ पिशाच. २ भूत. ३ यक्ष. ४ राक्षस. ५ किन्नर. ६ किंपुरुष. ७ महोरग. ८ गंधर्व.

बीजी वाणव्यंतरनिकाय, तेना पण आठ भेद छे.

१ अणपनि. २ पणपनि. ३ ऋसिवादी. ४ भूतवादी. ५ कंदी. ६ महाकंदी. ७ कोहंड. ८ पतंग.

२३ त्रेवीशमो ज्योतिषी देवोनो दंडक, पांच प्रकारे छे.

१ चंद्र. २ सूर्य. ३ ग्रह. ४ नक्षत्र. ५ तारा.

२४ चोवीशमो वैमानिक देवोनो दंडक, तेना मूल बे भेद छे.

१ एक कल्प एटले आचारवाला देवो, ते बार देवलोकना भेदे करी बार प्रकारे छे,

ते बार देवलोकनां नाम कहिये छैये.

१ सौधर्म देवलोक. २ ईशान देवलोक. ३ सनत्कुमार देवलोक. ४ माहेंद्र देवलोक.
५ ब्रह्मदेवलोक. ६ लांतक देवलोक. ७ महाशुक्र देवलोक. ८ सहस्रार देवलोक.
९ आनंत देवलोक. १० प्राणत देवलोक. ११ आरण देवलोक. १२ अच्युत देवलोक.

२ बीजा कल्पातीत एटले जेने विषे स्वामी सेवक संबंध नथी एवा देवो तेनां मूल बे प्रकार छे. एक नव ग्रैवेयकवासी, बीजा पांच अनुत्तरविमानवासी.

तेमां प्रथम नवग्रैवेयकनां नाम कहे छे.

१ सुदर्शन. २ सुप्रतिबद्ध. ३ मनोरम. ४ सर्वतोभद्र. ५ विशाल.
६ सुमनस. ७ सोमनस. ८ प्रितिकर. ९ आदित्य.

हवे पांच अनुत्तरविमाननां नाम कहे छे.

१ विजय. २ विजयंत. ३ जयंत. ४ अपराजित. ५ सर्वार्थसिद्ध.

ए रीते ए चोवीश दंडकनां भेद सहित नाम कह्यां.

हवे ए प्रत्येक दंडके पांत्रीश द्वार कहेशे, तेनां नाम लखीये छैये.

तिहां पहेलुं शरीरद्वार पांच प्रकारे छे तेनां नाम कहे छे.

१ औदारिक शरीर. २ वैक्रिय शरीर. ३ आहारकशरीर. ४ तैजस शरीर. ५ कार्मणशरीर

२ बीजुं अवगाहनद्वार, ते प्रत्येक दंडके जघन्य तथा उत्कृष्ट ए बे भेदे शरीरनुं प्रमाण कहेवुं.

३ त्रीजुं संघयणद्वार ते छ प्रकारे छे.

१ वज्रऋषभनाराच संघयण. २ ऋषभनाराच संघयण. ३ नाराच संघयण.
४ अर्द्धनाराच संघयण. ५ कीलिका संघयण. ६ छेवट्ठुं संघयण.

४ चोथुं संज्ञाद्वार, दश प्रकारे छे. तेनां नाम कहे छे.

१ आहारसंज्ञा. २ नयसंज्ञा. ३ मैथुनसंज्ञा. ४ परिग्रहसंज्ञा. ५ क्रोधसंज्ञा. ६ मानसंज्ञा. ७ मायासंज्ञा. ८ लोनसंज्ञा. ए लोकसंज्ञा. १० उंघसंज्ञा. तथा नीचे लखेली छ संज्ञा साथे मेलवतां शोल प्रकार पण थाय छे. तेनां नाम कहे छे. १ सुखसंज्ञा. २ दुःखसंज्ञा. ३ मोहसंज्ञा. ४ दुगंछासंज्ञा. ५ शोकसंज्ञा. ६ धर्मसंज्ञा

५ पांचमुं संस्थानद्वार छ प्रकारे छे. तेनां नाम कहे छे.

१ समचतुरस्त्र संस्थान. २ निगोहपरिमंफल संस्थान. ३ सादि संस्थान. ४ कुब्ज संस्थान. ५ वामन संस्थान. ६ हुंडक संस्थान.

आहीं पंचेंद्रियनां संस्थान कहे छे.

१ स्पर्शेंद्रियनुं नाना प्रकारनुं संस्थान छे. २ रसेंद्रियनुं खुरपा सरखुं संस्थान छे. ३ घ्राणेंद्रियनुं अचंता वृक्षना सरखुं संस्थान छे. ४ चक्षुरिंद्रियनुं मसूरनी दाल सरखुं अर्द्ध चंद्राकारे संस्थान छे. ५ श्रोत्रेंद्रियनुं कल्पवृक्षना फूल सरखुं संस्थान छे. ६ छठुं कषाय द्वार, ते १ क्रोध. २ मान. ३ माया. अने ४ लोन. ए चार प्रकारे छे,

७ सातमुं लेश्याद्वार छ प्रकारे छे.

१ कृष्णलेश्या. २नीललेश्या. ३ कापोतलेश्या. ४ तेजोलेश्या. ५ पद्मलेश्या. ६ शुक्ललेश्या.

आठमुं इंद्रियद्वार, पांच प्रकारे छे.

१ स्पर्शेंद्रिय. २ रसेंद्रिय. ३ घ्राणेंद्रिय. ४ चक्षुरिंद्रिय. ५ श्रोत्रेंद्रिय.

ए नवमुं समुद्घात द्वार सात प्रकारे छे.

१ वेदना समुद्घात. २ कषाय समुद्घात, ३ मरण समुद्घात. ४ वैक्रिय समुद्घात. ५ तैजससमुद्घात. ६ आहारक समुद्घात. ७ केवलि समुद्घात.

१० दशमुं दृष्टिद्वार. १ सम्यक्दृष्टि. २ मिथ्यादृष्टि. ३ मिश्रदृष्टि. ए त्रण प्रकारे छे.

११ अगीयारमुं दर्शनद्वार, चार प्रकारे छे.

१ चक्षुर्दर्शन, २ अचक्षुर्दर्शन. ३ अवधिदर्शन. ४ केवलदर्शन.

१२ बारमुं ज्ञानद्वार आठ प्रकारे छे.

१ मतिज्ञान. २ श्रुतज्ञान. ३ अवधिज्ञान. ४ मनः पर्यवज्ञान. ५ केवलज्ञान. ६ मतिअज्ञान. ७ श्रुतअज्ञान. ८ विन्नंगज्ञान.

ए रीते पांच ज्ञान ने त्रण अज्ञान मली, आठ प्रकारे ज्ञानद्वार छे.

१३ तेरमुं योगद्वार पन्नर प्रकारे छे.

१ सत्यमनोयोग. २ असत्यमनोयोग. ३ सत्यामृषामनोयोग. ४ असत्यामृषामनोयोग

५ सत्यवचनयोग. ६ असत्यवचनयोग. ७ सत्यामृषावचनयोग. ८ असत्यामृषावचनयोग. ९ औदारिक काययोग. १० औदारिकमिश्र काययोग. ११ वैक्रियकाययोग. १२ वैक्रियमिश्र काययोग १३ आहारक काययोग. १४ आहारकमिश्र काययोग. १५ कार्मण काययोग. एवं पन्नर योग जाणवा.

चौदमुं उपयोगद्वार. ते पांच ज्ञान, तथा त्रण अज्ञान अने चार दर्शन मळी, बार प्रकारे छे.

१ मतिज्ञान. २ श्रुतज्ञान. ३ अवधिज्ञान. ४ मनःपर्यवज्ञान.
५ केवलज्ञान ६ मतिअज्ञान. ७ श्रुतअज्ञान. ८ विभंगज्ञान.
९ चक्षुर्दर्शन. १० अचक्षुर्दर्शन. ११ अवधिदर्शन. १२ केवलदर्शन.

१५ पन्नरमुं उपपात द्वार ते प्रत्येक दंडकने विषे एक समयमां केटला जीव आवी उपजे? तेनी जघन्य तथा उत्कष्टथी संख्या कहेवानुं द्वार.

१६ सोलमुं च्यवनद्वार ते प्रत्येक दंडकने विषे एक समयमां केटला जीव च्यवे, तेनी जघन्य तथा उत्कृष्टथी संख्या कहेवानुं द्वार.

१७ सत्तरमुं आयुष्य ते चार गतिआश्री चार प्रकारे छे. तेमां कया कया दंडके केटलुं आयुष्य छे? तेनुं प्रमाण कहेवानुं द्वार.

१८ अढारमुं पर्याप्तिनुं द्वार छ प्रकारे छे.

१ आहारपर्याप्ति. २ शरीरपर्याप्ति. ३ इंद्रियपर्याप्ति.
४ श्वासोच्छ्वासपर्याप्ति. ५ भाषापर्याप्ति. ६ मनःपर्याप्ति.

१९ उंगणीशमुं दिग्आहार द्वार छ प्रकारे छे.

१ अधोदिशि आहार. २ ऊर्ध्वदिशि आहार. ३ पूर्वदिशि आहार.
४ पश्चिमदिशि आहार. ५ दक्षिणदिशि आहार, ६ उत्तरदिशि आहार.

२० वीशमुं संज्ञा द्वार त्रण प्रकारे छे.

१ दीर्घकालिकी संज्ञा. २ हितोपदेशिकी संज्ञा. ३ दृष्टिवादोपदेशिकी संज्ञा.

एकवीशमुं गतिद्वार ते कयादंडकनो जीव मरीने कया कया दंडकमां जाय? ते कहेवानुंद्वार.

बावीशमुं आगति ते कया दंडकने विषे कया दंडकना जीव, आवी उपजे? ते कहेवानुं द्वार.

२३ त्रेवीशमुं वेद द्वार. १ पुरुषवेद. २ स्त्रीवेद. ३ नपुंसकवेद. ए त्रण प्रकारे छे.

२४ चोवीशमुं अल्पाबहुत्वनुं द्वार. अठाणुं प्रकारे छे. ते प्रकार कहे छे.

१ सर्वथकी थोडा गर्भज मनुष्यसंख्याती कोडाकोडी प्रमाण छे, तेमाटे अल्प छे.
२ तेथकी मनुष्यनी स्त्री संख्यातगुणी अधिक छे, एटले सत्यावीश गुणी छे. ए बे बोल मळी अढीद्वीपमांहेला एकशो ने एक क्षेत्रना मनुष्यनी संख्या कहे छे.

(७९२२८१६२५१४२६४३३७५९३५४३९५०३३६) एटले सात क्रोड कोडा कोडीकोडी, बाणुं लाख कोडाकोडीकोडी, अठ्यावीश हजार कोडाकोडीकोडी, एकशो कोडा कोडी कोडी, बाशठ कोडाकोडी कोडी, एकावन लाख कोडाकोडी, बहेंतालीश हजार कोडाकोडी, छशो कोडाकोडी, त्रैंतालीश कोडाकोडी, साडत्रीश लाख कोडी, ओगणंशाठ हजार कोडी, त्रणशे कोडी, चोपन कोडी, ओगणचालीश लाख, पचास हजार, त्रणशे ने छत्रीश. एटली संख्याये मनुष्य छे. तेना अठ्यावीश भाग करीये, तेमां एक भाग जेटला पुरुष छे, अने सत्यावीश भाग जेटली स्त्री छे.

३ तेथकी बादर तेउकायपर्याप्ता असंख्यातगुणा एक आवलिकाना समयनो वर्ग करी तेने कांइक न्यून आवलिकाना समयसाथे गुणतां जेटला समय थाय, तेटला छे.

४ तेथकी अनुत्तरविमानवासी देवो असंख्यात गुणा छे. क्षेत्र पल्योपमने असंख्यातमे भागे जेटला आकाशप्रदेश होय तेटला छे.

५ तेथकी उपरला त्रण ग्रैवेयकना देवता संख्यात गुणा छे. विमान घणा छे माटे.

६ तेथकी मध्य त्रण ग्रैवेयकना देवो संख्यात गुणा छे.

७ तेथकी नीचला त्रण ग्रैवेयकना देवो संख्यात गुणा छे.

८ तेथकी अच्युतदेवलोकना देवता संख्यात गुणा छे.

९ तेथकी आरण्यदेवलोकना देवो संख्यात गुणा छे.

१० तेथकी प्राणात देवलोकना देवो संख्यात गुणा छे.

११ तेथकी आनत देवलोकना देवो संख्यात गुणा छे.

१२ तेथकी सातमी नरकपृथिवीना नारकी असंख्यात गुणा छे. घनीकृत लोकनी एक श्रेणिना असंख्याता भागमां जेटला आकाश प्रदेशनी राशि छे, तेटली संख्याये छे.

१३ तेथकी छठी नरकपृथिवीना नारकी असंख्यात गुणा छे, केम के नरकावासा घणा छे, तथा उत्कृष्ट पापी जीवोथकी हीनपापी जीवो घणा होय ते इहां उपजे.

१४ तेथकी सहस्रार देवलोकना देवो असंख्यात गुणा छे.

१५ तेथकी महाशुक्र देवलोकना देवता असंख्यात गुणा छे, तिहां विमान घणां छे माटे.

१६ तेथकी पांचमी नरकपृथिवीना नारकी असंख्यात गुणा छे.

१७ तेथकी लांतकदेवलोकना देवता असंख्यात गुणा छे.

१८ तेथकी चोथी नरकपृथिवीना नारकी असंख्यात गुणा छे.

१९ तेथकी ब्रह्मदेवलोकना देवो असंख्यात गुणा छे.

२० तेथकी त्रीजी नरकपृथिवीना नारकी असंख्यात गुणा छे.

२१ तेथकी माहेंद्रदेवलोकना देवता असंख्यात गुणा बे.

२२ तेथकी सनत्कुमार देवलोकना देवता असंख्यात गुणा बे.

२३ तेथकी बीजी शर्करप्रज्ञा नरक पृथिवीना नारकी असंख्यात गुणा बे. बारमा बोलथी मांमीने आ त्रेवीशमा बोल पर्यंतना बार बोलमां प्रत्येके सर्व घनीकृत लोकनी एक श्रेणीने असंख्यातमे जागे जेटला आकाश प्रदेश होय, ते प्रमाणे बे अने एकेकथी असंख्यात गुणा कह्या बे. कारण के असंख्याताना असंख्याता जेद बे तेमाटे एमां विरोधता समजवी नहीं.

२४ तेथकी संमूर्बिम मनुष्य असंख्यात गुणा बे. अंगुल प्रमाण क्षेत्र प्रदेश रासिसंबंधी त्रीजा वर्ग मूलने प्रथम वर्ग मूलसाथे गुणतां जे प्रदेश थाय तेटला बे.

२५ तेथकी ईशानदेवलोकना देवता असंख्यातगुणा बे. अंगुल मात्र आकाश क्षेत्रनी प्रदेशराशि संबंधी बीजो वर्ग मूल तेने त्रीजा वर्ग मूल साथे गुणतां जेटला प्रदेश थाय, तेटली घनीकृत लोकनी एक प्रदेशनी श्रेणियो लेवी, तेने विषे जेटला आकाश प्रदेश होय, तेटला ईशानदेवलोकना देवता बे.

२६ तेथकी ईशानदेवलोकनी वसनारी देवीयो संख्यातगुणी अधिक बे,बत्रीश गुणीबे माटे

२७ तेथकी सौधर्मदेवलोकना देवता संख्यातगुणा बे, केम के तिहां विमान घणां बे, अने वली दक्षिणदिशिये कृष्णपक्षी जीव घणा बे माटे.

२८ तेथकी सौधर्म देवलोकवासी देवी, बत्रीश गुणी बे, माटे संख्यातगुणी बे.

२९ तेथकी जवनपति देवता असंख्यात गुणा बे. कारण के एक अंगुलमात्र आकाश क्षेत्रनी प्रदेशराशि संबंधी प्रथम वर्गमूल तेने त्रीजा वर्गमूल साथे गुणतां जे प्रदेशराशि थाय, तेटली घनीकृत लोकनी एकप्रादेशिक श्रेणिउने विषे जेटला आकाशप्रदेश होय तेटला बे. इहां यद्यपि प्रदेश असंख्याता बे तथापि असत्कल्पनाये २५६ कल्पीये तेनो प्रथम वर्ग मूल १६ थाय, बीजो वर्गमूल चार थाय अने त्रीजो वर्गमूल बे थाय माटे शोलने बे साथे गणीये तेवारे बत्रीश थाय.

३० तेथकी जवनपतिनी देवीयो बत्रीश गुणी बे, माटे संख्यातगुणी बे.

३१ तेथकी पहेला रत्नप्रज्ञा नामा नरकपृथ्वीना नारकी असंख्यात गुणा बे, अंगुल प्रमाण आकाशक्षेत्रनी प्रदेशराशि संबंधी प्रथमवर्ग मूल तेने बीजा वर्गमूलनी साथे गणतां जे प्रदेश थाय, तावत् प्रमाण श्रेणियोमां जे आकाश प्रदेश थाय तेटला बे.

३२ तेथकी खेचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया पुरुष असंख्यात गुणा बे, जेमाटे एकप्रदेशी प्रतरना असंख्यातमा जागमां असंख्याती आकाश प्रदेशनी श्रेणिगत प्रदेश प्रमाण बे.

३३ तेथकी खेचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिनी स्त्रीयो त्रिगुणी छे. माटे संख्यात गुणी छे.
३४ तेथकी स्थलचर पंचेंद्रिय योनिया पुरुष संख्यात गुणा छे जेमाटे एक बृहत्प्रतरना असंख्यातमा भागमां जे आकाश प्रदेशनी असंख्याती श्रेणी छे, तेटली श्रेणीमां जेटला आकाश प्रदेश छे, तावत् प्रमाण ए जीवो छे.
३५ तेथकी स्थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनि संबंधी स्त्रीयो त्रिगुणी छे, संख्यातगुणी जाणवी.
३६ तेथकी जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया पुरुष संख्यात गुणा छे, जे माटे अतिप्रभूत एक प्रतरना असंख्यातमा भागमां असंख्य आकाश प्रदेशनी श्रेणीगत जेटला आकाश प्रदेश छे, तावत् प्रमाण छे.
३७ तेथकी जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिवाली स्त्रीयो त्रिगुणी छे, माटे संख्यातगुणी.
३८ तेथकी व्यंतरनिकायना देवो संख्यातगुणा छे, संख्यात कोडाकोडी योजन प्रमाण एक प्रतरने विषे जेटला सूचीरूप खंड थाय, तावत् प्रमाण छे.
३९ तेथकी व्यंतरदेवीयो संख्यातगुणी छे, बत्रीश गुणी माटे.
४० तेथकी ज्योतिषी देवता संख्यातगुणा छे, एक प्रतरने विषे बशे छप्पन अंगुल प्रमाण एक सूचीरूप खंड एवा जेटला खंड थाय तेटली संख्याये छे.
४१ तेथकी ज्यौतिषिक देवीयो बत्रीश गुणी छे माटे संख्यात गुणी कहेवी.
४२ तेथकी खेचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया नपुंसक संख्यात गुणा छे.
४३ तेथकी स्थलचर पंचेंद्रितिर्यंचयोनिया नपुंसक संख्यात गुणा छे.
४४ तेथकी जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया नपुंसक संख्यात गुणा छे.
४५ तेथकी चौरिंद्रिय पर्याप्ता संख्यातगुणा छे. एक प्रतरने विषे जेटला एक अंगुलना संख्यातमा भाग प्रमाणवाला जेटला सूचीखंड थाय, तेटला छे.
४६ तेथकी सर्व पंचेंद्रिय पर्याप्ता विशेषाधिक छे.
४७ तेथकी बेंद्रिय पर्याप्ता विशेषाधिक छे.
४८ तेथकी त्रींद्रिय पर्याप्ता विशेषाधिक छे.
४९ तेथकी पंचेंद्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक छे. एक प्रतरमां अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाण जेटला सूची खंड थाय, तेटला छे.
५० तेथकी चौरिंद्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक छे.
५१ तेथकी त्रींद्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक छे.
५२ तेथकी बेंद्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक छे.
५३ तेथकी प्रत्येक शरीरवाला बादर वनस्पतिकायिया अपर्याप्ता असंख्यात गुणा छे.

एक प्रभूत प्रतरमां अंगुलना असंख्यातमा भागप्रमाण जेटला सूचीखंड थायतेटलाछे.

५४ तेथकी बादरनिगोद पर्याप्ता अनंतकायनां शरीर असंख्यात गुणां छे. जे माटे संख्याता प्रतरमां एक अंगुलना असंख्याता भाग जेवडा जेटला सूचीखंड समाइ शके, तेटला खंड प्रमाण छे.

५५ तेथकी बादर पृथ्वीकायिया पर्याप्ता जीव असंख्यात गुणा छे, जेमाटे प्रभूत संख्याता प्रतरमध्ये अंगुलना असंख्यात भाग मात्र सूचीखंड जेटला समाइ शके तेटला छे.

५६ तेथकी बादर अप्कायिया पर्याप्ता असंख्यात गुणा छे.जेमाटे अत्यंत प्रभूत संख्याता प्रतर मध्ये अंगुलना असंख्य भागमात्र जेटला सूचीखंड समाइ शके, तेटला छे.

५७ तेथकी बादरवायुकायिया पर्याप्ता जीव असंख्यात गुणा छे, घनीकृत लोकना असंख्याता प्रतरने विषे जेटला आकाश प्रदेश छे तेटला प्रदेश प्रमाण छे.

५८ तेथकी बादर तेउकायिया अपर्याप्ता असंख्यात गुणा छे, जेमाटे असंख्याता लोकाकाश प्रदेश राशि प्रमाण छे.

५९ तेथकी प्रत्येक शरीरवाला बादर वनस्पतिकायिया अपर्याप्ता जीव असंख्यात गुणाछे.

६० तेथकी बार निगोदीया अपर्याप्ताना शरीर असंख्यात गुणा छे.

६१ तेथकी बादर पृथ्वीकायिया अपर्याप्ता असंख्यात गुणा छे.

६२ तेथकी बादर अप्कायिया अपर्याप्ता असंख्यात गुणा छे.

६३ तेथकी बादर वायुकायिया अपर्याप्ता असंख्यात गुणा छे.

६४ तेथकी सूक्ष्म तेउकायिया अपर्याप्ता असंख्यात गुणा छे. सर्वलोक व्यापी माटे.

६५ तेथकी सूक्ष्मपृथ्वीकायिया अपर्याप्ता विशेषाधिक छे.

६६ तेथकी सूक्ष्मअप्कायिया अपर्याप्ता विशेषाधिक छे.

६७ तेथकी सूक्ष्मवायुकायिया अपर्याप्ता विशेषाधिक छे.

६८ तेथकी सूक्ष्म तेउकायिया पर्याप्ता संख्यात गुणा छे. इहां ए सूक्ष्म मध्ये स्वभावे ज अपर्याप्ताथी पर्याप्ता घणा छे माटे.

६९ तेथकी सूक्ष्म पृथ्वीकायिया पर्याप्ता विशेषाधिक छे.

७० तेथकी सूक्ष्म अप्कायिया पर्याप्ता विशेषाधिक छे.

७१ तेथकी सूक्ष्म वाउकायिया पर्याप्ता विशेषाधिक छे.

७२ तेथकी सूक्ष्म निगोदनां शरीर अपर्याप्ता असंख्यात गुणां छे.

७३ तेथकी सूक्ष्म निगोदनां शरीर पर्याप्ता संख्यात गुणां छे.

७४ तेथकी अभव्यसिद्धिया जीव अनंतगुणा छे.जघन्ययुक्त चोथा अनंता जेटला छे माटे.

७५ तेथकी पडिवाइ प्रतिपत्ति सम्यग्दृष्टि जीव अनंतगुणा छे.
७६ तेथकी सिद्धना जीव अनंतगुणा छे. मध्यमयुक्त पांचमा अनंता जेटला छे, माटे.
७७ तेथकी बादर वनस्पतिकायिया पर्याप्ता जीव अनंतगुणा छे. जेमाटे एक निगोदने अनंतमे भागे सिद्ध छे, एवा असंख्याता निगोद पर्याप्ता बादर वनस्पतिमांहे छे,माटे.
७८ तेथकी बादर पर्याप्ता जीव विशेषाधिक छे. बादर पर्याप्ता पृथिव्यादिक प्रक्षेपवा थकी.
७९ तेथकी बादर वनस्पतिकायिया अपर्याप्ता असंख्यातगुणा छे, जेमाटे एकेक बादर निगोद पर्याप्तानी निश्राये असंख्याता अपर्याप्ता निश्चें होय, ते माटे.
८० तेथकी बादर अपर्याप्ता विशेषाधिक छे, बादर अपर्याप्ता पृथिव्यादिक प्रक्षेपवाथकी.
८१ तेथकी सर्वपर्याप्ता बादर जीव विशेषाधिक छे.
८२ तेथकी सूक्ष्मवनस्पतिकायिया अपर्याप्ता असंख्यात गुणा छे, केम के बादर जीवो थी सूक्ष्म घणा छे अने वली सर्व लोकव्यापी छे माटे.
८३ तेथकी सूक्ष्म अपर्याप्ता विशेषाधिक छे. केम के सूक्ष्म अपर्याप्ता पृथिव्यादिकने तेमां प्रक्षेपवाथकी विशेषाधिक थाय.
८४ तेथकी सूक्ष्मपर्याप्ता वनस्पतिकायिया जीव संख्यातगुणा छे, केम के सूक्ष्मपर्याप्ता मांहे सूक्ष्म अपर्याप्ता स्वभावे सदैव संख्यात गुणा प्राप्त होय, माटे.
८५ तेथकीसर्व सूक्ष्मपर्याप्ताजीवविशेषाधिकछे.सूक्ष्मपर्याप्ता पृथिव्यादिकसाथे भेलवाथी.
८६ तेथकी सर्व पर्याप्ता अपर्याप्ता सूक्ष्मजीव विशेषाधिक छे.
८७ तेथकी भव्यसिद्धिक भव्यजीव विशेषाधिक छे जेमाटे जघन्ययुक्त अनंता प्रमाण अभव्य जीवो छे तेने टालीने बीजा सर्व भव्यजीवो छे ते माटे.
८८ तेथकी निगोदना जीव विशेषाधिक छे, जे भणी निगोदना जीव टाली बीजां सर्व जीव असंख्यात लोकाकाश प्रदेश प्रमाणज छे, माटे.
८९ तेथकी वनस्पतिना जीव विशेषाधिक छे, निगोदमां प्रत्येक वनस्पति प्रक्षेपवाथकी.
९० तेथकी एकेंद्रिय जीव विशेषाधिक छे.वनस्पतिमां वली पृथिव्यादिकना प्रक्षेपवाथकी.
९१ तेथकी तिर्यंचयोनिया विशेषाधिक छे, बेंद्रियादिकना भेलवाथकी.
९२ तेथकी मिथ्यादृष्टि विशेषाधिक छे, ए जीव चारे गतिमां लाभे, माटे.
९३ तेथकी अविरति जीव विशेषाधिक छे, अविरति सम्यग्दृष्टि जीव एमां भलवाथकी.
९४ तेथकी सकषायिजीव विशेषाधिक छे, देशविरत्यादिना भलवाथकी.
९५ तेथकी छद्मस्थ जीव विशेषाधिक छे, उपशांत मोही पण एमां भळ्याते थकी.
९६ तेथकी सयोगी विशेषाधिक छे, सयोगी केवलीना भलवा थकी.

९७ तेथकी सर्व संसारी जीव विशेषाधिक छे, एमां अयोगी केवली पण भल्या.
९८ तेथकी सर्वजीव विशेषाधिकछे,एमां सिद्धनाजीव पण भल्या.इतिअल्पबहुत्वसमाप्तं॥

---

२५ पच्चीशमुं चवन द्वार. ते प्रत्येक दंडकने विषे चवन कहेवानुं द्वार जाणवुं.
२६ छव्वीशमुं विरहकालद्वार. एटले अमुक दंडके जघन्य तथा उत्कृष्टथी अमुक काल पर्यंत कोइ जीव मरे नहीं अथवा उपजे नही, ते विचार कहेवानुं द्वार.

२७ सत्त्यावीशमुं चउद गुणठाणानुं द्वार. चौद प्रकारे छे.

१ मिथ्यात्व. २ सास्वादन ३ मिश्र गुणठाणुं. ४ अविरतिसम्यग्दृष्टि.
५ देशविरति. ६ प्रमत्त. ७ अप्रमत्त. ८ अपूर्वकरण.
९ अनिवृत्ति. १० सूक्ष्मसंपराय. ११ उपशांतमोह.
१२ क्षीणमोह. १३ सयोगीकेवली. १४ अयोगी केवली.

२८ अठयावीशमुं प्राणद्वार दश प्रकारे छे.

१ स्पर्शेंद्रिय २ रसेंद्रिय. ३ घ्राणेंद्रिय. ४ चक्षुरिंद्रिय. ५ श्रोत्रेंद्रिय.
६ कायबल. ७ वचनबल. ८ मनोबल. ९ श्वासोश्वास. १० आयु.

२९ उगणत्रीशमुं संयतिद्वार, त्रिभंगी पूर्वक आठ प्रकारे छे.

१ संयती, २ व्रती, ३ पच्चख्काणी, ४ पंडिया,
५ संवुडा, ६ जगरा, ७ धम्मिया, ८ धम्मविवसाइया.

---

१ असंयति, २ अव्रती, ३ अपच्चख्काणी. ४ बाला.
५ असंवुडा, ६ च्युता, ७ अधम्मिया, ८ अधम्मविवसाइया.

---

१ संयतासंयती, २ व्रताव्रती, ३ पच्चख्काणापच्चख्काणी. ४ बालापंडिया.
५ संवुडाअसंवुडा, ६ च्युताजगरा, ७ धम्माधम्मीया, ८ धम्माधम्मविवसाइया.

---

३० त्रीशमुं आहारद्वार, त्रण प्रकारे छे. १ सचित्ताहार. २ अचित्ताहार. ३ कवलाहार.
३१ एकत्रीशमुं आहारजातिनो द्वार त्रण प्रकारे छे.१ उजाहार.२लोमाहार. ३ कवलाहार.
३२ बत्रीशमुं आहारनी इछानुं द्वार. ते प्रत्येक दंडकवालाने जघन्य तथा उत्कृष्टथी केटले काले आहार लेवानी इछा थाय? तेनो विवरो कहेवो, ते आहार इछाद्वार.
३३ तेत्रीशमुं कायस्थितिनुं द्वार. ते प्रत्येक दंडकवालाने पोतानी कायाने विषे अनुक्रमे पुनः पुनः उपजवुं, केटली वार थाय? तेना कालनुं प्रमाण कहेवुं.
३४ चोत्रीशमुं योनिद्वार, ते चोराशी लाख भेदे प्रसिद्ध छे.
३५ पांत्रीशमुं कुलकोडिद्वार, ते प्रत्येक दंडकमां केटला लाख कुलकोडि छे? एम कहेवानुं द्वार. ए रीते पांत्रीश द्वारनां नाम कह्यां.

हवे पूर्वोक्त चोवीश दंडकमांना प्रत्येक दंमके ए पांत्रीश द्वार कहियें छैये.

१ तिहां प्रथम सात नारकीना दंमके पांत्रीश द्वार कहे छे.

१ वैक्रिय, तैजस ने कार्मण, ए त्रण शरीर होय.

२ अवगाहना नवधारणीय शरीर जघन्यथी मांडी उत्कृष्ट पांचशे धनुष्य होय तथा उत्तर वैक्रिय शरीर तेथी बमणुं होय. तेमां जघन्यथी साडा पन्नर धनुष्य ने बार अंगुल अने उत्कृष्टुं एक हजार धनुष्य होय. उपजतां नवाधारणीय अंगुलनो असंख्यातमो नाग होय अने उत्तर वैक्रिय अंगुलनो संख्यातमो नाग होय.

३ नारकीने संघयण नथी. असंघयणी छे.

४ संज्ञा आश्रयी संज्ञा, दश पण होय, अथवा शोल होय.

५ नारकीने हुंडसंस्थान होय.

६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.

७ नारकीने कृष्ण, नील अने कापोत, ए त्रण लेश्या होय.

८ इंद्रियो पांचे होय.

९ वेदना, कषाय, मरण अने वैक्रिय ए चार समुद्घात होय.

१० सम्यक्त्वादिक त्रणे दृष्टि होय. सम्यक्त्व, मिश्र अने मिथ्यात्व.

११ चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन अने अवधिदर्शन, ए त्रण दर्शन होय.

१२ मत्यादि त्रण ज्ञान तथा त्रण अज्ञान होय.

१३ मनना चार योग, वचनना चार योग, तथा कायना त्रण योग, वैक्रियकाययोग, वैक्रियमिश्रकाययोग तथा कार्मण काययोग मलीने अगीयार योग होय.

१४ उपयोग प्रथमना त्रण ज्ञान, त्रण अज्ञान अने चक्षुरादिक त्रण दर्शन सर्व मलीने नव होय.

१५ उपपात एक समयमां जघन्यथी एक, बे, त्रण, जीव उपजे अने उत्कृष्टथी संख्याता असंख्याता जीव पण उपजे.

१६ उपपातनी परे च्यवनद्वार पण समजवुं. एटले जेम उपजे, तेम चवे.

१७ आयुष्य जघन्यथी दश हजार वर्ष, उत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपम जाणवुं.

१८ पर्याप्ति छ होय, परंतु नाषा अने मन ए बे पर्याप्ति साथेज उपजे, तेथी प्रकारांतरे पांच पर्याप्ति पण कहेवाय.

१९ आहार, छ दिशिनो लिये छे.

२० दीर्घकालिकी संज्ञा एकज होय.

२१ चवीने गर्नज मनुष्य तथा गर्नज तिर्यंच ए बे दंडकमां आवे.

२२ तिर्यंच पंचेंद्रिय तथा गर्नज मनुष्य ए दंडकना जीवो नारकीमां आवी उपजे.

२३ वेदद्वारमां नारकीने एक नपुंसकवेद होय.

२४ अल्प बहुत्वमां सर्वथकी थोमा, सातमी नरकपृथ्वीना नारकी जाणवा. पछी अल्पपापना सेवनार घणा माटे तेथकी छठीना असंख्यातगुणाधिक, तेथकी पांचमीना असंख्यात गुणाधि

क. तेथकी चोथीना असंख्यातगुणाधिक, तेथकी त्रीजीना असंख्यातगुणाधिक, तेथकी बीजीना असंख्यातगुणाधिक. तेथकी पहेलीना असंख्यातगुणाधिक जाणवा.

२५ भवनद्वारआश्री साते नरक पृथिवीना मली, ओगणपचास प्रतर अने चोराशी लाख नरकावासा जाणवा.

२६ छवीशमा विरहकाल द्वारमां जघन्य एक समय अने उत्कृष्टो छ महिनानो विरह जाणवो. प्रथम नरके जघन्य एक समय उत्कृष्ट चोवीश मुहूर्त्त. बीजीमां सात दिवस, त्रीजीमां पंदर दिवस, चोथीमां एक मास, पांचमीमां बे मास, छठीमां चार मास, अने सातमीमां छ मास. तथा जघन्यथी सर्वमां एक समय.

२७ गुणठाणा प्रथमना चार लाभे.

२८ नारकीने दश प्राण जाणवां.

२९ संयतिद्वार आश्री असंयती, अव्रती, अपच्चखाणी, बाला, असंवुडा, च्युता, अधार्मिक अने अधर्मव्यवसायिका, ए आठ भांगा होय.

३० आहारद्वारमां नारकी जीवो एकज अचेत आहार लिये.

३१ आहार जातिना द्वारमां नारकीने ओजाहार अने लोमाहार. ए बे रीते आहार लेवानुं होय.

३२ आहारनी इच्छा आश्रयी साते नरक पृथ्वीना नारकीने जघन्यथी एक समये अने उत्कृष्टी अंतर मुहूर्त्तें उपजे.

३३ कायस्थितिआश्री जेटली भवस्थिति होय, तेटलो काल कायस्थिति पण जाणवी. कारण के नरकनो जीव मरीने फरी नरकमां न जाय.

३४ योनिद्वार आश्रयी नारकी जीवोनी चार लाख योनि उपजवानी जाणवी.

३५ कुलकोडीद्वार आश्रयी नारकी जीवोना पच्चीश लाख कोडी कुल जाणवां.

ए नरकाश्री पांत्रीशद्वारनो विचार कह्यो.

---

११ हवे दश भवन पतिना दश दंडकने विषे पांत्रीश द्वार कहे छे.

१ शरीरद्वार आश्रयी, वैक्रिय तेजस ने कार्मण, ए त्रण शरीर होय.

२ अवगाहनाद्वार आश्रय उपजतां वखत, अंगुलनो असंख्यातमो भाग शरीर होय. पछी उत्कृष्ट, सात हाथनुं शरीर होय. अने उत्तरवैक्रिय करे तो एक लाख योजन सुधी करे.

३ संघयण आश्रयी देवोने कोइ पण संघयण नथी असंघयणी छे माटे.

४ संज्ञा आश्रयी दश अथवा शोल होय.

५ संस्थानआश्रयी देवोने एकज समचतुरस्र संस्थान होय.

६ कषायाश्रयी क्रोधादिकचारे कषायहोय.

७ लेश्या आश्रयी कृष्ण, नील, कापोत अने तेजो, ए चार लेश्या होय.

८ इंद्रिय आश्रयी पांचे इंद्रिय होय.
ए समुद्घात आश्रयि वेदना, कषाय, मरण, वैक्रिय अने तैजस,ए पांच होय.
१० दृष्टि सम्यत्त्वादिक सम्यक्त्व, मिथ्यात्व अने मिश्र. ए त्रणे होय.
११ दर्शन, आश्रयी चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन अने अवधिदर्शन, ए त्रण होय.
१२ प्रथमनां त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान.
१३ योग आश्रयी नारकीनी पेरे चार मनना, चार वचनना अने त्रण कायना मलीने ए अगीयार योग होय.
१४ उपयोगद्वार आश्रयी प्रथमना त्रण ज्ञान, त्रण अज्ञान अने प्रथमनां त्रण दर्शन. ए रीतें नव उपयोग होय.
१५ जघन्यथी एक समयमां एक, बे, त्रण, उपजे अने उत्कृष्टपणे संख्याता अथवा असंख्याता पण एक समयमां उपजे
१६ उपजवानी पेरे च्यवनद्वार पण जाणवुं
१७ आयुष्यद्वार आश्रयी, जघन्यथी दश हजार वर्ष, अने उत्कृष्ट, एक सागरोपम जाजेरुं आयुष्य जाणवुं.
१८ पर्याप्ति ब होय परंतु भाषा अने मन, ए बे पर्याप्ति साथे हो य. तेथी प्रकारांतरे पांच पण कहेवाय.
१ए आहारआश्री भवनपति देवो बए दिशिनो आहार लिये बे.
२० संज्ञामां एक दीर्घकालिकी संज्ञा होय.
२१ च्यवीने मनुष्य, तिर्यंच पंचेंद्रिय, पृथ्वीकाय, अप्काय अने वनस्पति काय, ए पांच दंडकने विषे जाय.
२२ एक गर्भज मनुष्य अने बीजा तिर्यंच पंचेंद्रिय, ए बे दंडकवाला आवी, भवनपतिनी दशे निकायने विषे उपजे.
२३ वेदमां पुरुषवेद अने स्त्रीवेद,ए बे होय.
२४ अल्पबहुत्वमां सौधर्म, देवलोकनी देवीयोथकी असंख्यात गुणा बे.
२५ भवनद्वारमां दशे निकायना वाश इंद्रना भवननी संख्या ७७२००००० बे.
२६ विरहकाल, जघन्यथी एक समय अने उत्कृष्टो चोवीश मुहूर्त्त जाणवो.
२७ गुणठाणां आश्रयी प्रथमनां चार होय.
२८ प्राणद्वारआश्रयी एमने दशे प्राण होय.
२ए संयतीना ८ भांगा नारकीनी पेरे होय.
३० आहारआश्री अचित्ताहार लिये.
३१ उंजाहार ने लोमाहार बे आहार करे.
३२ दश हजार वर्षना आयुष्य वालाने चोथभक्तें आहारनी इछा उपजे.पल्योपमना आयुष्यवालाने दिवस पृथक्त्वे आहारनी इछा उपजे.एकसागरोपम आयुवालाने एक हजार वर्षे आहारनी इछा उपजे. सागरोपम जाजेरा आयुष्यवालाने हजार वर्ष जाजेरे आहारनी इछा उपजे.
३३ भवनपति मरीने भवनपति न थाय. माटे जेटली भवस्थिति होय, तेटलीज एमनी कायस्थिति पण जाणवी.
३४ भवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी ने वैमानिक, ए चारे निकायना देवोनी चार लाख योनि उपजवानी कही बे.
३५ ए देवोना तेरे दंडकने विषे बवीश लाख कोडी कुल जाणवां.

१२ हवे बारमा पृथ्वी कायना दंरुकने विषे पांत्रीश द्वार कहे ठे.

१ औदारिक, तैजस अने कार्मण, ए त्रण शरीर होय.

२ अवगाहना जघन्य तथा उत्कृष्टी अंगुलनो असंख्यातमो न्नाग होय.

३ एक ठेवहुं संघयण होय.

४ संज्ञा, आहार, न्नय, मैथुन अने परिग्रह, ए चार अथवा दश होय.

५ एक हुंरुक संस्थान मसूरने आकारे ठे.

६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.

७ अपर्याप्ताने प्रथमनी चार लेश्यायो होय अने पर्याप्ताने कृष्ण, नील ने कापोत, ए त्रण लेश्या होय.

८ इंद्रियद्वारे एक स्पर्शेंद्रियज होय.

९ समुद्घात द्वार आश्रयी वेदन, कषाय ने मरण, ए त्रण समुद्घात होय.

१० दृष्टि आश्रयी एक मिथ्यादृष्टि होय.

११ दर्शन आश्रयी एक अचक्षुदर्शन होय.

१२ ज्ञानद्वार आश्रयी मतिअज्ञान अने श्रुतअज्ञान, ए बे अज्ञान होय.

१३ औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग अने कार्मणकाययोग, ए त्रण योग होय. मन अने वचन एने नथी.

१४ मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान अने अचक्षुदर्शन, ए त्रण उपयोग होय.

१५ उपपात द्वार आश्रयी एक समयमां असंख्याता पृथिवीकाय जीव उपजे.

१६ एक समयमां असंख्यात जीव च्यवे.

१७ जघन्य, अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्ट बावीश हजार वर्षनुं आयुष्य जाणवुं.

१ सुनानुं हजार वर्ष.
२ सुधानुं चार हजार वर्ष.
३ वालुकानुं चौद हजार वर्ष.
४ मणसिलनुं शोल हजार वर्ष.
५ शर्करानुं अढार हजार वर्ष.
६ खरपुढवीनुं बावीश हजार वर्ष.

१८ आहार, शरीर, इंद्रिय अने श्वासोश्वास. ए चार पर्याप्ति होय.

१९ आहारद्वारआश्रयी त्रण, चार, पांच अथवा ठ दिशिनो आहार लिये.

२० त्रण संज्ञामांहेली कोइ पण संज्ञा ए दंरुके न होय.

२१ पृथिवीकाय मरीने पांच स्थावरना पांच दंरुक तथा विकलेंद्रियना त्रण दंरुक, पंचेंद्रियतिर्यंचनो दंडक अने मनुष्यनो दंरुक, ए दश दंडकमां जइ उपजे.

२२ नारकी वर्जीने बाकी त्रेवीशे दंरुकना जीव, पृथिवीकायमां आवी उपजे.

२३ एकज नपुंसक वेद होय. परंतु स्त्री अने पुरुष ए बे वेद एमां नथी.

२४ अल्पबहुत्वमां त्रींद्रियथकी पृथिवीकायिया जीव अधिक ठे.

२५ न्नुवनद्वारे पृथिवीकायमां न्नवन नथी.

२६ ए दंरुकने विषे विरहकाल पण नथी.

२७ ए दंडकने विषे एकज मिथ्यात्व गुणगणुं लान्ने. केम के सर्वे मिथ्यादृष्टि ठे.

२८ स्पर्शेंद्रिय, कायबल, श्वासोश्वास अने आयु, ए चार प्राण होय.
२९ नारकीनी पेरे संयतीना आठ ज्ञांगा होय.
३० सचित्तादिक त्रणे प्रकारनो आहार लीये.
३१ उज अने लोमे करी आहार लीये.
३२ समय समय आहारनी इञ्चा उपजे.
३३ सूक्ष्म पृथिवीकायनी कायस्थिति जघन्य अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्टी असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी कालनी जाणवी. बादरपृथिवीकायनी कायस्थिति जघन्य अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्टी सित्तेर कोमाकोमी सागरोपमनी जाणवी.
३४ सात लाख योनि जाणवी.
३५ बार लाख कोडी कुल जाणवां.

---

१३ हवे तेरमा अपूकायना दंमकने विषे पांत्रीश द्वार कहे डे.

१ शरीरद्वार आश्रयी औदारिक, तैजस अने कार्मण, ए त्रण शरीर होय.
२ जघन्य अने उत्कृष्टी अवगाहना अंगुलनो असंख्यातमो ज्ञाग होय.
३ एक डेवठुं संघयण होय.
४ संज्ञा चार अथवा दश होय.
५ एक हुंम संस्थान पाणीना पर्पोटाने आकारे होय.
६ क्रोधादिक चारे कषाय, ए दंमके होय.
७ अपर्याप्ताने प्रथमनी चार लेश्या होय, अने पर्याप्ताने प्रथमनी कृष्ण, नील ने कापोत ए त्रण लेश्या होय,
८ एक स्पर्शेंद्रियज होय, एकेंद्रिय डे माटे.
९ समुद्घात आश्रयी वेदना, कषाय ने मरण ए त्रण समुद्घात होय.
१० दृष्टिद्वारमां एकज मिथ्यादृष्टि होय.
११ दर्शनद्वारमां एक अचक्षुदर्शन होय.
१२ मति अने श्रुत, ए बे अज्ञान होय.
१३ योगद्वार आश्रयी औदारिक काययोग, औदारिक मिश्रकाययोग अने कार्मण काययोग, ए त्रण योग होय.
१४ मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान अने अचक्षुदर्शन. ए त्रण उपयोग होय.
१५ एक समयमां असंख्याता जीव उपजे.
१६ एक समयमां असंख्याता मरण पामे.
१७ जघन्य अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्ट सात हजार वर्षायु होय.
१८ पर्याप्ति, आहार, शरीर, इंद्रिय अने श्वासोश्वास, ए चार होय.
१९ आहारआश्रयी त्रण, चार, पांच अथवा ड दिशिनो आहार लीये.
२० दीर्घकालादिक कोइ पण संज्ञा न होय.
२१ ए दंमकवालाजीव पण पृथिवीकायनी पेरे दश दंमकने विषे जाय.
२२ एक नारकी वर्जी बाकी त्रेवीश दंमकना जीवो अप्कायमां आवी उपजे.
२३ वेद आश्रयी एकज नपुंसक वेद होय.
२४ अल्प बहुत्वमां पृथ्वीकायथी अपूकायिक. जीव अधिक डे.
२५ अपूकायने च्यवन नथी.
२६ विरहकाल पण नथी.
२७ एकज मिथ्यात्व गुणगणुं लाज्ञे.

२७ पृथिवीकायनी पेरे चार प्राण होय.
२७संयतीना आठ जांगा, नारकी पेरेजाणवा.
३०सचित्तादिक त्रणे प्रकारनो आहार लीये.
३१ उंज अने लोमे करी आहार लीये.
३२ समय समय आहारनी इज्ञा उपजे.
३३ कायस्थिति पृथिविकायनी पेरे जाणवी.
३४ सात लाख जीवायोनि जाणवी.
३५ सात लाख कोडी कुल जाणवां.

---

१४ हवे तेउकायना दंमके पांत्रीश द्वार कहे छे.

१ शरीर आश्रयी औदारिक, तैजस अने कार्मण, ए त्रण शरीर होय.
२ जघन्य तथा उत्कृष्टी अवगाहना अंगुलनो असंख्यातमो जाग होय.
३ एकज छेवटुं संघयण होय.
४ संज्ञा चार अथवा दश होय.
५ हुंम संस्थान सूइनी आणीने आकारे.
६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.
७ कृष्ण, नील ने कापोत, त्रण लेश्या होय.
८ एक स्पर्शेंद्रिय होय.
९ प्रथमनी त्रण समुद्घात होय.
१० एकज मिथ्यादृष्टि होय.
११ एकज अचक्षुर्दर्शन होय.
१२ मति अने श्रुत, ए बे अज्ञान होय.
१३ औदारिक काययोग, औदारिक मिश्र काययोग अने कार्मणकाययोग, ए त्रण योग होय.
१४ प्रथमनां बे अज्ञान अने अचक्षुर्दर्शन ए त्रण उपयोग होय.
१५ एक समयमां असंख्याता जीव उपजे.
१६ एक समयमां असंख्याता जीव च्यवे.
१७ जघन्य अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्ट त्रण अहोरात्रिनुं आयुष्य होय.
१८ प्रथमनी चार पर्याप्ति होय.
१९ आहार आश्रयी त्रण, चार, पांच अथवा छ दिशिनो आहार लीये.
२० दीर्घ कालादिक त्रणे संज्ञारहित होय.
२१ मरीने पांच स्थावर, त्रण विकलेंद्रिय अने एक तिर्यंच, पंचेंद्रियनो दंडक मलीने नवदंमकने विषे जाय.
२२ एमां दश दंडकना जीवो आवी उपजे.
२३ एमां एकज नपुंसक वेद होय.
२४ अल्पबहुत्व अठाणुं बोलमां कह्युं छे.
२५ जुवन ए दंडकमां नथी.
२६ विरहकाल नथी. निरंतर उपजे छे.
२७ एकज मिथ्यात्व गुणठाणुं लाजे.
२८ स्पर्शेंद्रिय, कायबल, श्वासोच्वास अने आयु, ए चार प्राण होय.
२९संयतीना नारकीनी पेरे आठ जांगा होय.
३०सचित्तादिक त्रणे प्रकारनो आहार लीये.
३१ उंज अने लोमे करी आहार लीये.
३२ समय समय आहारनी इज्ञा उपजे.
३३ कायस्थिति पृथिवीकायनी पेरेजाणवी.
३४ सात लाख योनि उपजवानी छे.
३५ त्रण लाख कोमी कुल जाणवां.

---

१५ हवे पन्नरमा वायुकायना दंडके पांत्रीश द्वार कहे छे.

१ औदारिक, वैक्रिय, तैजस अने कार्मण, ए चार शरीर होय.
२ जघन्योत्कृष्ट अवगाहना अंगुलनो असंख्यातमो भाग होय.
३ एकज छेवठुं संघयण होय.
४ संज्ञा चार अथवा दश होय.
५ हुंडसंस्थान,ध्वजा ने पताकाने आकारे.
६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.
७ कृष्ण,नील ने कापोत,ए त्रण लेश्या होय.
८ एक स्पर्शेंद्रिय होय.
९ प्रथमना चार समुद्घात होय.
१० एकज मिथ्यादृष्टि होय.
११ एकज अचक्षुदर्शन होय.
१२ मति अने श्रुत, ए बे अज्ञान होय.
१३ औदारिककाययोग, औदारिक मिश्र काययोग, वैक्रियकाययोग, वैक्रियमिश्र काययोग अने कार्मणकाययोग. ए पांच योग होय.
१४ प्रथमनां बे अज्ञान अने एक अचक्षुदर्शन, ए त्रण उपयोग होय.
१५ एक समयमां असंख्याता उपजे.
१६ एक समयमां असंख्याता च्यवे.
१७ जघन्यथी अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्टुं त्रण हजार वर्षायु होय.
१८ प्रथमनी चार पर्याप्ति होय.
१९ त्रण, चार, पांच अथवा छ दिशिनो पण आहार लीये.
२० दीर्घकालादिकी त्रणे संज्ञा रहित होय.
२१ तेउकायनी पेरे नव दंडकने विषे जाय.
२२ पांच स्थावर, त्रण विकलेंद्रिय, पंचेंद्रिय तिर्यंच अने मनुष्य, ए दश दंडकवाला जीवो एमां आवी उपजे.
२३ वेदद्वारे एक नपुंसक वेद होय.
२४ अल्पबहुत्वद्वारमां अप्कायथकी वायुकायिया जीव अधिक छे.
२५ ए दंडके भवन नथी.
२६ विरहकाल नथी.
२७ एकज मिथ्यात्व गुणठाणुं लाभे.
२८ तेउकायनी पेरे चार प्राण होय.
२९ नारकीनी पेरे संयतीना आठ बोल छे.
३० सचित्तादिक त्रण प्रकारनो आहार लीये.
३१ उज अने लोमे करी आहार लीये.
३२ समय समय आहारनी इछा उपजे.
३३ कायस्थिति पृथिवीकायनी पेरे जाणवी.
३४ सात लाख जीवा योनि छे.
३५ बार लाख कोडी कुल जाणवां.

---

१६ हवे सोलमा वनस्पतिकायना दंडके पांत्रीश द्वार कहे छे.

१ औदारिक, तैजस अने कार्मण, ए त्रण शरीर होय.
२ जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग उत्कृष्टी एक हजार योजन प्रमाण शरीरनी अवगाहना जाणवी.
३ एकज छेवठुं संघयण होय.
४ संज्ञा चार अथवा दश होय.
५ हुंडसंस्थान नाना प्रकारना आकारनुं.

६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.
७ कृष्ण, नील, कापोत अने तेजो. ए चार लेश्या अपर्याप्ताने होय, अने पर्याप्ताने पहेली त्रण लेश्या होय.
८ एक स्पर्शेंद्रियज होय.
९ प्रथमना त्रण समुद्घात होय.
१० एकज मिथ्यादृष्टि होय.
११ एकज अचक्षुदर्शन होय.
१२ मति अने श्रुत, ए बे अज्ञान होय.
१३ औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग अने कार्मणकाययोग, ए त्रण योग होय.
१४ तेउकायनी पेरे त्रण उपयोग होय.
१५ एक समयमां अनंता जीव उपजे.
१६ एक समयमां अनंता जीव च्यवे.
१७ जघन्य अंतर मुहुर्त्त अने उत्कृष्ट दश हजार वर्षायु होय.
१८ प्रथमनी चार पर्याप्ति होय.
१९ त्रण, चार, पांच अथवा छ दिशिनो आहार लीये.
२० दीर्घकालादिक संज्ञा रहित होय.
२१ पांच स्थावरना, त्रण विकलेंद्रियना, एक तिर्यंच पंचेंद्रियनो अने एक मनुष्यनो. ए रीते दश दंडकने विषे जइ उपजे.
२२ नारकी वर्जिने बाकी त्रेवीश दंडकवाला जीवो, ए दंडकमां आवी उपजे.
२३ एक नपुंसक वेद होय.
२४ अल्पबहुत्वमां वायुकायथी वनस्पतिकायिया जीव अधिक छे.
२५ च्यवन नथी.
२६ विरहकाल नथी.
२७ एकज मिथ्यात्व गुणठाणुं लाभे.
२८ तेउकायनी पेरे चार प्राण होय.
२९ संयतीना आठ भेद नारकीनी पेरे.
३० सचित्तादिक त्रण प्रकारनो आहार लीये.
३१ उंज अने लोमे करी आहार लीये.
३२ समय समय आहारनी इछा उपजे.
३३ कायस्थिति प्रत्येक वनस्पति आश्रयी असंख्याती उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पिणी होय अने अनंतकाय आश्रयी अनंती उत्सर्प्पिणी ने अवसर्प्पिणी होय.
३४ प्रत्येकनी दश लाख अने साधारणनी चौदलाख मली चोवीश लाखयोनि छे.
३५ अठ्यावीश लाख कोडी कुल जाणवां.

---

१७ हवे सत्तरमा बे इंद्रियना दंडके पांत्रीश द्वार कहे छे.

१ औदारिक, तैजस ने कार्मण, ए त्रण शरीर होय.
२ अवगाहना जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग उत्कृष्टी बार योजन होय.
३ एकज छेवठुं संघयण होय.
४ संज्ञा चार अथवा दश होय.
५ एकज हुंडसंस्थान जाणवुं.
६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.
७ कृष्ण, नील अने कापोत, ए त्रण लेश्या.
८ स्पर्शेंद्रिय अने रसेंद्रिय, ए बे इंद्रियहोय.
९ प्रथमना त्रण समुद्घात होय.
१० सम्यक् अने मिथ्या, ए बे दृष्टि होय.

११ एकज अचक्षुर्दर्शन होय.
१२ अपर्याप्तावस्थाये कोइएकने मति अने श्रुत ए बे ज्ञान होय अने एज बे अज्ञान पण होय. तथा पर्याप्तावस्थाये तो बे अज्ञानज होय.
१३ औदारिककाययोग, औदारिक मिश्र काययोग, कार्मणकाययोग अने असत्यअमृषा वचनयोग,ए चार योग होय.
१४ कोइएक अपर्याप्ताने प्रथमनां बे ज्ञान, बे अज्ञान अने अचक्षुर्दर्शन. ए पांच उपयोग होय, अने पर्याप्ताने बे ज्ञान होय, माटे त्रणज उपयोग होय.
१५ एक समयमां जघन्य, एक, बे त्रण जीव उपजे अने उत्कृष्टथी संख्याता अथवा असंख्याता जीव आवी उपजे.
१६ उपजवानी पेरे मरण पण जाणी लेवुं.
१७ आयुष्य आश्रयी जघन्य अंतर मुहुर्त्त अने उत्कृष्टथी बार वर्षायु होय.
१८ मनःपर्याप्ति वर्जीने पांच पर्याप्ति होय.
१९ छ दिशिनो आहार लीये.
२० एक हितोपदेशिकी संज्ञा होय.
२१ वनस्पतिनी पेरे दश दंरुकमां जइ उपजे.
२२ दश दंरुकना जीव एमां आवी उपजे.
२३ एक नपुंसक वेद होय.
२४ अल्पबहुत्वमां पंचेंद्रिय तिर्यंचथकी बेंद्रिय जीव अधिक होय.
२५ च्यवन नथी.
२६ जघन्य एक समय अने उत्कृष्टो एक मुहुर्त्त विरहकाल होय.
२७ एमां मिथ्यात्व अने सास्वादन ए बे गुण ठाणां लाभे.
२८ स्पर्शेंद्रिय,रसेंद्रिय,वचनबल, कायबल, श्वासोश्वास अने आयु. ए छ प्राण होय-
२९ संयतीना आठ भेद नारकीनी पेरे.
३० सचित्तादिक त्रणे प्रकारनोआहार लीये.
३१ उजादिक त्रणे प्रकारे आहार लीये.
३२ जघन्य एक समय अने उत्कृष्टथी अंतरमुहुर्त्ते आहारनी इछा उपजे.
३३ कायस्थिति संख्याता वर्षनी जाणवी.
३४ बे लाख योनि जाणवी.
३५ सात लाख कोडी कुल जाणवां.

---

१८ हवे अढारमा त्रींद्रियना दंरुकें पांत्रीश द्वार कहे छे.

१ औदारिक, तैजस अने कार्म्मण. ए त्रण शरीर होय.
२ जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्टी त्रण गाउनी अवगाहना.
३ एकज छेवतुं संघयण होय.
४ संज्ञा चार अथवा दश होय.
५ एकज हुंडसंस्थान जाणवुं.
६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.
७ कृष्ण, नील अने कापोत. ए त्रण लेश्या होय.
८ स्पर्शेंद्रिय रसेंद्रिय अने घ्राणेंद्रिय, ए त्रण इंद्रियो होय.
९ प्रथमना त्रण समुद्घात होय.
१० सम्यक् अने मिथ्या, ए बे दृष्टि होय.

११ एकज अचक्षुदर्शन होय.
१२ ज्ञान द्वींद्रियनी पेरे जाणी लेवुं.
१३ औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, कार्मणकाययोग, अने असत्य अमृषा वचनयोग, ए चार योग होय.
१४ द्वींद्रियनी पेरे उपयोग जाणवा.
१५ द्वींद्रियनी पेरे उपपात जाणवा.
१६ उपपातनी पेरे च्यवन पण जाणवुं.
१७ जघन्य अंतरमुहुर्त्त अने उत्कृष्टुं उंगणपचास दिवसायु जाणवुं.
१८ मनःपर्याप्ति वर्जीने पांच पर्याप्ति होय.
१९ छ दिशिनो आहार लीये.
२० एक हितोपदेशिकी संज्ञा होय.
२१ वनस्पतिनी पेरे दश दंडकमां जइ उपजे.
२२ दश दंडकवाला जीवो एमां आवी उपजे.
२३ एक नपुंसक वेद होय.
२४ अल्पबहुत्वमां बेंद्रियथकी तेंद्रियजीव अधिक होय.
२५ च्यवन नथी.
२६ जघन्य एक समय ने उत्कृष्टो एक मुहूर्त्त विरहकाल होय.
२७ प्रथमना बे गुणठाणां लाभे.
२८ स्पर्शेंद्रिय, रसेंद्रिय, घ्राणेंद्रिय, वचनबल, कायबल, श्वासोश्वास अने आयु, ए सात प्राण होय.
२९ संयतीना आठ भंग, नारकीनी पेरे.
३० सचित्तादिक त्रणेप्रकारनो आहारलीये.
३१ ओजादिक त्रणे प्रकारे आहार लीये.
३२ जघन्य एक समय अने उत्कृष्टथी एक अंतरमुहूर्त्तें आहारनी इच्छा उपजे.
३३ कायस्थिति संख्यातादिवसनी जाणवी.
३४ बे लाख योनि छे.
३५ आठ लाख कोडि कुल जाणवां.

---

१९ हवे ओगणीशमा चउरिंद्रियना दंडके पांत्रीश द्वार कहे छे.

१ औदारिक, तैजस अने कार्मण, ए त्रण शरीर होय.
२ जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्टी चार गाउनी अवगाहना.
३ एकज छेवठुं संघयण होय.
४ संज्ञा चार अथवा दश होय.
५ एकज हुंडसंस्थान जाणवुं.
६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.
७ कृष्ण, नील ने कापोत ए त्रण लेश्या.
८ स्पर्श, रस, घ्राणनेचक्षु, एचार इंद्रियोहोय.
९ प्रथमना त्रण समुद्घात होय.
१० सम्यक् अने मिथ्या, ए बे दृष्टि होय.
११ चक्षु ने अचक्षु, ए बे दर्शन होय.
१२ ज्ञान, द्वींद्रियनी पेरे जाणी लेवुं.
१३ औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, कार्मणकाययोग अने असत्यअमृषावचनयोग ए चार योग होय.
१४ अपर्याप्ता लगे कोइकने प्रथमनां बे ज्ञान, बे अज्ञान अने बे दर्शन. ए छ उपयोग होय, अने पर्याप्ताने प्रथमनां बे ज्ञान विना चार उपयोग होय.
१५ द्वींद्रियनी पेरे उपपात जाणवो.

१६ उपपातनी पेरे च्यवन पण जाणवुं.
१७ जघन्य अंतरमुहूर्त्त, उत्कृष्टुं छ मासायु.
१८ मनःपर्याप्ति वर्जीने पांच पर्याप्ति होय
१९ छ दिशिनो आहार लीये.
२० एक हितोपदेशिकी संज्ञा होय.
२१ वनस्पतिनी पेरे दश दंडकमां जाय.
२२ एमां दश दंडकवाला जीवो आवी उपजे.
२३ एक नपुंसक वेद होय.
२४ अल्पबहुत्वमां ज्योतिषी देवोथकी चोरिंद्रिय जीव अधिक होय.
२५ भवन नथी.
२६ जघन्य एक समय अमे उत्कृष्टो एक मुहूर्त्त विरहकाल होय.
२७ प्रथमनां बेज गुणठाणां लाभे.
२८ स्पर्शेंद्रिय, रसेंद्रिय, घ्राणेंद्रिय, चक्षुरिंद्रिय, वचनबल, कायबल, श्वासोश्वास अने आयु. ए आठ प्राण होय.
२९ संयतीना आठ भंग नारकीनी पेरे छे.
३० सचित्तादिक त्रणे प्रकारनो आहारलीये.
३१ ओजादिक त्रणे प्रकारे आहार लीये.
३२ जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट एक अंतर मुहूर्त्तें आहारनी इछा उपजे.
३३ कायस्थिति संख्याता मासनी जाणवी.
३४ बे लाख योनि छे.
३५ नव लाख कोडी कुल जाणवां.

---

२० हवे वीशमा पंचेंद्रिय तिर्यंचना दंडके पांत्रीश द्वार कहे छे.

१ संमूर्छिमने औदारिक, तैजस अने कार्मण. ए त्रण शरीर होय. तथा गर्भज ने औदारिक, वैक्रिय, तैजस अने कार्मण, ए चार शरीर होय.
२ जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्टो एक हजार योजन शरीर, तेमां गर्भज जलचरनुं हजार योजननुं, स्थलचरनुं छ गउ, खेचरनुं धनुष्य पृथक्त्व, उरःपरिसर्पनुं हजार योजन अने भुजपरिसर्पनुं गाउ पृथक्त्व. तेमज उत्तर वैक्रियशरीर करे, तो नवशे योजन प्रमाण जाणवुं. तथा संमूर्छिममां जलचरनुं एक हजार योजन, स्थलचरनुं गाउ पृथक्त्व, खेचरनुं धनुष्यपृथक्त्व, उरःपरिसर्पनुं योजनपृथक्त्व, भुज परिसर्पनुं गाउपृथक्त्व जाणवुं.
३ संमूर्छिमने एकज छेवटुं संघयण होय. अने गर्भजने छए संघयण होय.
४ संज्ञा चार अथवा दश होय.
५ संमूर्छिमने एक हुंडसंस्थान अने गर्भजने छ ए संस्थान होय.
६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.
७ संमूर्छिमने प्रथमनी त्रण लेश्या होय. अने गर्भजने छए लेश्या होय.
८ इंद्रिय पांचे होय.
९ संमूर्छिमने प्रथमना त्रण समुद्घात होय अने गर्भजने पांच समुद्घात होय.
१० सम्यक्त्वादिक त्रणे दृष्टि होय.

११ एकज अचक्षुदर्शन होय.
१२ ज्ञान द्वींड्रियनी पेरे जाणी लेवुं.
१३ औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, कार्मणकाययोग, अने असत्य अमृषा वचनयोग, ए चार योग होय.
१४ द्वींड्रियनी पेरे उपयोग जाणवा.
१५ द्वींड्रियनी पेरे उपपात जाणवा.
१६ उपपातनी पेरे च्यवन पण जाणवुं.
१७ जघन्य अंतरमुहुर्त्त अने उत्कृष्टुं उंगण पचास दिवसायु जाणवुं.
१८ मनःपर्याप्ति वर्जीने पांच पर्याप्ति होय.
१९ ब दिशिनो आहार लीये.
२० एक हितोपदेशिकी संज्ञा होय.
२१वनस्पतिनी पेरे दश दंमकमां जइ उपजे.
२२दश दंमकवाला जीवो एमां आवी उपजे.
२३ एक नपुंसक वेद होय.
२४ अल्पबहुत्वमां बेंड्रियथकी तेंड्रियजीव अधिक होय.
२५ ज्ञवन नथी.
२६ जघन्य एक समय ने उत्कृष्टो एक मुहूर्त्त विरहकाल होय.
२७ प्रथमना बे गुणगणां लाज्ने.
२८ स्पर्शेंड्रिय, रसेंड्रिय, घ्राणेंड्रिय, वचनबल, कायबल, श्वासोच्छ्वास अने आयु, ए सात प्राण होय.
२९ संयतीना आठ ज्ञंग, नारकीनी पेरे.
३० सचित्तादिक त्रणेप्रकारनो आहारलीये.
३१ उंजादिक त्रणे प्रकारे आहार लीये.
३२ जघन्य एक समय अने उत्कृष्टथी एक अंतरमुहूर्त्तें आहारनी इछा उपजे.
३३ कायस्थिति संख्याता दिवसनी जाणवी.
३४ बे लाख योनि बे.
३५ आठ लाख कोमि कुल जाणवां.

---

१९ हवे उंगणीशमा चउरिंड्रियना दंमके पांत्रीश द्वार कहे बे.

१ औदारिक, तैजस अने कार्मण, ए त्रण शरीर होय.
२ जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो ज्ञाग अने उत्कृष्टी चार गाउनी अवगाहना.
३ एकज बेवटुं संघयण होय.
४ संज्ञा चार अथवा दश होय.
५ एकज हुंडसंस्थान जाणवुं.
६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.
७ कृष्ण, नील ने कापोत ए त्रण लेश्या.
८स्पर्श,रस,घ्राणनेचक्षु,एचार इंड्रियोहोय.
९ प्रथमना त्रण समुद्घात होय.
१० सम्यक् अने मिथ्या, ए बे दृष्टि होय.
११ चक्षु ने अचक्षु, ए बे दर्शन होय.
१२ ज्ञान, द्वींड्रियनी पेरे जाणी लेवुं.
१३ औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, कार्मणकाययोग अने असत्य अमृषावचनयोग ए चार योग होय.
१४ अपर्याप्ता लगे कोइकने प्रथमनां बे ज्ञान, बे अज्ञान अने बे दर्शन. ए ब उपयोग होय, अने पर्याप्ताने प्रथमनां बे ज्ञान विना चार उपयोग होय.
१५ द्वींड्रियनी पेरे उपपात जाणवो.

१६ उपपातनी पेरे च्यवन पण जाणवुं.
१७ जघन्य अंतरमुहूर्त्त, उत्कृष्टुं छ मासायु.
१८ मनःपर्याप्ति वर्जीने पांच पर्याप्ति होय
१९ छ दिशिनो आहार लीये.
२० एक हितोपदेशिकी संज्ञा होय.
२१ वनस्पतिनी पेरे दश दंडकमां जाय.
२२ एमां दश दंडकवाला जीवो आवी उपजे.
२३ एक नपुंसक वेद होय.
२४ अल्पबहुत्वमां ज्योतिषी देवोथकी चौरिंद्रिय जीव अधिक होय.
२५ जवन नथी.
२६ जघन्य एक समय अमे उत्कृष्टो एक मुहूर्त्त विरहकाल होय.
२७ प्रथमनां बेज गुणठाणां लाजे.
२८ स्पर्शेंद्रिय, रसेंद्रिय, घ्राणेंद्रिय, चक्षुरिंद्रिय, वचनबल, कायबल, श्वासोश्वास अने आयु. ए आठ प्राण होय.
२९ संयतीना आठ जंग नारकीनी पेरे छे.
३० सचित्तादिक त्रणे प्रकारनो आहारलीये.
३१ उंजादिक त्रणे प्रकारे आहार लीये.
३२ जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट एक अंतर मुहूर्त्त आहारनी इछा उपजे.
३३ कायस्थिति संख्याता मासनी जाणवी.
३४ बे लाख योनि छे.
३५ नव लाख कोडी कुल जाणवां.

---

२० हवे वीशमा पंचेंद्रिय तिर्यंचना दंडके पांत्रीश द्वार कहे छे.

१ संमूर्छिमने औदारिक, तैजस अने कार्मण. ए त्रण शरीर होय. तथा गर्जजने औदारिक, वैक्रिय, तैजस अने कार्मण, ए चार शरीर होय.
२ जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो जाग अने उत्कृष्टो एक हजार योजन शरीर, तेमां गर्जज जलचरनुं हजार योजननुं, स्थलचरनुं छ गउ, खेचरनुं धनुष्यपृथक्त्व, उरःपरिसर्पनुं हजार योजन अने जुजपरिसर्पनुं गाउ पृथक्त्व. तेमज उत्तर वैक्रियशरीर करे, तो नवशे योजन प्रमाण जाणवुं. तथा संमूर्छिममां जलचरनुं एक हजार योजन, स्थलचरनुं गाउ पृथक्त्व, खेचरनुं धनुष्यपृथक्त्व, उरःपरिसर्पनुं योजनपृथक्त्व, जुज परिसर्पनुं गाउपृथक्त्व जाणवुं.
३ संमूर्छिमने एकज छेवटुं संघयण होय. अने गर्जजने छए संघयण होय.
४ संज्ञा चार अथवा दश होय.
५ संमूर्छिमने एक हुंमसंस्थान अने गर्जजने छ ए संस्थान होय.
६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.
७ संमूर्छिमने प्रथमनी त्रण लेश्या होय. अने गर्जजने छए लेश्या होय.
८ इंद्रिय पांचे होय.
९ संमूर्छिमने प्रथमना त्रण समुद्घात होय अने गर्जजने पांच समुद्घात होय.
१० सम्यक्त्वादिक त्रणे दृष्टि होय.

११ चक्षुर्दर्शन, अचक्षुर्दर्शन अने अवधि दर्शन, ए त्रण दर्शन होय.

१२ प्रथमनां त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान मली ठ ज्ञान होय.

१३ संमूर्छिमने औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, कार्मणकाययोग अने असत्यअमृषावचनयोग. ए चार योग होय. तथा गर्नजने मनना चार, वचनना चार अने औदारिककाय योग, औदारिकमिश्रकाय योग, वैक्रियकाय योग, वैक्रियमिश्रकाय योग, कार्मणकाय योग. ए तेर योग होय.

१४ संमूर्छिममां कोइएकने अपर्याप्तावस्थाये चौरिंद्रियनी पेरे ठ उपयोग होय अने पर्याप्तावस्थाये चार होय, ने गर्नजने नारकीनी पेरे नव उपयोग.

१५ द्वींद्रियनी पेरे उपपात जाणवो.

१६ उपपातनी पेरे मरण जाणवुं.

१७ जघन्य अंतरमुहुर्त्त आयु होय अने उत्कृष्टुं त्रण पल्योपमायु होय. तेमां गर्नज तिर्यंचनुं आयु आ प्रमाणे ठे.

१ जलचरनुं पूर्वकोटि वर्षायु जाणवुं,
२ खेचरनुं पल्योपमनो असंख्य नाग.
३ स्थलचरनुं त्रण पल्योपमायु.
४ उरःपरिसर्पनुं पूर्वकोमी वर्षायु.
५ नुजपरिसर्पनुं पूर्वकोमी वर्षायु.संमूर्छिम पंचेंद्रिय तिर्यंचनुं आयु कहे ठे.
१ जलचरनुं पूर्वकोमी वर्षायु.
२ स्थलचरनुं चोराशी हजार वर्षायु.
३ खेचरनुं वहोंतेर हजार वर्षायु.
४ उरःपरिसर्पनुं पूर्वकोमी वर्षायु.
५ नुजपरिसर्पनुं पूर्वकोमी वर्षायु.

१८ संमूर्छिमने मनपर्याप्ति वर्जी बाकीनी पांच पर्याप्ति अने गर्नजने ठ पर्याप्ति होय.

१९ ठ दिशिनो आहार लीये.

२० दीर्घकालादिकी त्रणे संज्ञा होय.

२१ संमूर्छिम,तिर्यंच तो एक ज्योतिषी तथा बीजा वैमानिक,ए बे दंडक वर्जिने बाकीना बावीश दंडकमां जइ उपजे अने गर्नज तिर्यंचतो चोवीश दंडकमां जइ उपजे.

२२ संमूर्छिममां दश दंमकवाला जीवो. आवी उपजे अने गर्नजमां चोवीशे दंडकना जीवो आवी उपजे.

२३ संमूर्छिमने एक नपुंसकवेद होय अने गर्नजने त्रणे वेद होय.

२४ अल्पबहुत्वमां चौरिंद्रिय जीवथकी पंचेंद्रिय तिर्यंच जीव अधिक ठे.

२५ नवन नथी.

२६ संमूर्छिमने जघन्य एक समय अने उत्कृष्टो चोवीशमुहुर्त्त, तथा गर्नजने जघन्य एक समय अने उत्कृष्टो बार मुहुर्त्त विरहकाल जाणवो.

२७ संमूर्छिममां प्रथमनां बे गुणठाणां लान्ने अने गर्नजमां प्रथमनां पांच गुणठाणां लान्ने.

२८ संमूर्छिमने मन विना नव प्राण होय अने गर्नजने दशे प्राण होय.

२९ संमूर्छिममां संयतीना आठ नंग ना

रकीनी पेरे होय अने गर्न्नजमां संयती तथा असंयतासंयती, ए वे न्नंग होय.
३० सचित्तादिक त्रणे प्रकारनो आहारलीये.
३१ उंजादिक त्रणे प्रकारे आहार लीये.
३२ संमूर्छिमने जघन्य एक समय अने उत्कृष्टथी एक अंतरमुहूर्त्त तथा गर्न्नजने जघन्य, एक अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्टी ठठन्नक्तें आहारनी इछा उपजे.
३३ कायस्थिति सात आठ न्नवनी जाणवी.
३४ चार लाख योनि जाणवी.
३५ सामी त्रेपन लाख कोमी कुल जाणवां.

---

२१ हवे एकवीशमा मनुष्यना दंमकें पांत्रीश द्वार कहे ठे.

१ संमूर्छिमने औदारिक, तैजस अने कार्मण, ए त्रण शरीर होय अने गर्न्नजने पांचे शरीर होय.
२ जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो न्नाग अने उत्कृष्टी त्रण गाउनी अवगाहना.
३ संमूर्छिमने एक ठेवठुं संघयण होय अने गर्न्नजने ठए संघयण होय.
४ संज्ञा चार, दश अने शोल होय.
५ संमूर्छिमने एक हुंमसंस्थान. अने गर्न्नजने ठ संस्थान होय.
६ केवली अने क्षीणमोही विना वाकीना सर्व मनुष्यने चारे कषाय होय.
७ गर्न्नजने ठ लेश्या अने संमूर्छिमने प्रथमनी त्रण लेश्या होय.
८ इंद्रिय पांचे होय.
ए संमूर्छिमने प्रथमी त्रण समुद्घात होय अने गर्न्नजने साते समुद्घात होय.
१० सम्यक्त्वादिक त्रणे दृष्टि होय.
११ चक्षुआदिक चारे दर्शन होय.
१२ गर्न्नजने पांच ज्ञान अने त्रण आज्ञान,ए आठे ज्ञान लान्ने, अने संमूर्छिमने प्रथमनां वे ज्ञान, अने वे अज्ञान होय.
१३ संमूर्छिमने औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग अने कार्मणकाययोग, ए त्रण योग होय अने गर्न्नजने पन्नरे योग होय.
१४ संमूर्छिमने प्रथमना वे अज्ञान अने प्रथमनां वे दर्शन,ए चार उपयोग होय अने गर्न्नजने वारे उपयोग होय.
१५ संमूर्छिमने विषे एक समयमां असंख्याता जीव उपजे.ते सर्व मिथ्यादृष्टि जाणवा अने गर्न्नजने विषे जघन्यथी एक, वे, त्रण तथा उत्कृष्टा संख्याता उपजे.
१६ उपजवानी पेरे च्यवन पण जाणवुं.
१७ जघन्य अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्टुं त्रण पल्योपमायु जाणवुं.
१८ संमूर्छिमने प्रथमनी चार पर्याप्ति अने गर्न्नजने सर्वे ठए पर्याप्ति होय.
१ए ठ दिशिनो आहार लीये.
२० दीर्घकालादिकी त्रणे संज्ञा होय.
२१ संमूर्छिम मरीने वनस्पतिनी पेरे दश दंडकमां जाय अने गर्न्नज मरीने चोवीशे दंमकमां जाय.
२२ संमूर्छिममां पृथिवी, अप्, वनस्पति,

त्रण विकलेंद्रिय, तिर्यंच अने मनुष्य, ए आठ दंडकवाला जीवो आवी उपजे. अने गर्भजमां तो तेउ अने वाउ, ए बे दंडक वर्जीने शेष बावीश दंडकना जीवो आवी उपजे.

२३ संमूर्छिमने एक नपुंसक वेद होय अने गर्भजने त्रणे वेद होय.

२४ अल्पबहुत्वमां गर्भज मनुष्य, संख्याये सर्वदंडकथकी स्वल्प छे.

२५ एमनां भवन नथी.

२६ विरहकाल तिर्यंच पंचेंद्रियनी पेरे छे.

२७संमूर्छिममां एकज मिथ्यात्व गुणठाणुं लाभे अने गर्भजमां चउदे गुणठाणां लाभे.

२८ संमूर्छिमने मनोबल अने वचनबल विना आठ अथवा सात प्राण होय, अने गर्भजने दशे प्राण होय.

२९ संमूर्छिमने संयतीना आठ भंग नारकीनी पेरे होय, अने गर्भजने विषे संयतीना चोवीश भंग सर्व प्रकारे लाभे.

३०सचित्तादिक त्रणेप्रकारना आहार लीये.

३१ उजादिक त्रण प्रकारे आहार लीये.

३२ संमूर्छिमने जघन्य एक समय अने उत्कृष्टथी एक अंतरमुहूर्त्त अने गर्भजने जघन्य एक अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्टथी अठमभक्तें आहारनी इछा उपजे.

३३ कायस्थिति सात आठ भवनी जाणवी.

३४ चौद लाख योनि जाणवी.

३५ बार लाख कोडी कुल जाणवां.

---

२२ हवे बावीशमा व्यंतर देवोना दंडकें पांत्रीश द्वार कहे छे.

१ वैक्रिय, तैजस अने कार्मण, ए त्रण शरीर होय.

२ उपजतां जघन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्टी सात हाथनी अवगाहना होय तथा उत्तरवैक्रिय करे तो जघन्यथी अंगुलनो संख्यातमो भाग अने उत्कृष्ठ एक लाख योजन जाणवो.

३ संघयण रहितहोय असंघयणी छे माटे.

४ संज्ञा चार, दश, शोल, होय.

५ एक समचतुरस्र संस्थान जाणवुं.

६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.

७ तेजो पर्यंत प्रथमनी चार लेश्या होय.

८ पांचे इंद्रिय होय.

ए प्रथमना पांच समुद्घात होय.

१० सम्यक्त्वादिक त्रणे दृष्टि होय.

११ प्रथमनां त्रण दर्शन होय.

१२ प्रथमनां त्रण ज्ञान तथा त्रण अज्ञान मली छ होय.

१३ मनना चार, वचनना चार तथा वैक्रिय काययोग, वैक्रियमिश्रकाययोग अने कामर्ण काययोग.ए अगीआरयोग होय.

१४ नारकीनी पेरे नव उपयोग होय.

१५ एकसमये जघन्यथी एक, बे, त्रण अने उत्कृष्टा संख्याता असंख्याता उपजे.

१६ उपपातनी पेरे च्यवन पण जाणवुं.

१७ जघन्य दश हजारवर्ष अने उत्कृष्टुं एक पल्योपमायु जाणवुं.

१८ पर्याप्ति छ होयपरंतु भाषा अने मन सा

थे उपजे माटे पांच पर्याप्ति पण कहिये.
१९ ७ दिशिनो आहार लीये
२० एक दीर्घकालिकी संज्ञा होय.
२१ पृथिवी, अप्, वनस्पति, तिर्यंच पंचेंद्रिय अने मनुष्य. ए पांच दंडकमां जइ उपजे.
२२ गर्भज तिर्यंच अने गर्भज मनुष्य. ए बे दंडकवाला जीवो एमां आवी उपजे.
२३ पुरुष अने स्त्री, ए बे वेद होय.
२४ अल्पबहुत्वमां जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचिणीथकी एजीव संख्यातगुणा छे. अथवा नारकीथकी अधिक छे.
२५ एमनां भवन असंख्यातां छे.
२६ जघन्य एक समय अने उत्कृष्टो चोवीश मुहूर्त्त विरहकाल जाणवो.
२७ प्रथमना चारें गुणठाणां लाभे.
२८ प्राण आश्रयी दशे प्राण होय.
२९ संयतीना आठ भंग त्रीजे प्रकारे लाभे.
३० एकज अचित्ताहार लीयें.
३१ ओज अने लोमे करी आहार लीये.
३२ दशहजार वर्षायुवालाने चोथभक्ते आहारनी इच्छा अने पल्योपमायुवालाने दिवस प्रथक्त्वे आहार इच्छा उपजे.
३३ कायस्थिति भवस्थिति जेटली जाणवी. ए मरीने फरी देव गतिमां न उपजे.
३४ चारे निकायनी ४ लाखयोनि जाणवी.
३५ कुलकोडी पण चारे निकायनी साथेज भवनपतिना दंडकमां कही छे.

---

२३ हवे त्रेवीशमा ज्योतिषीदेवोना दंडकें पांत्रीश द्वार कहे छे.

१ वैक्रिय, तैजस अने कार्मण. ए त्रण शरीर होय.
२ जघन्य तथा उत्कृष्टावगाहना व्यंतर देवोनी पेरे जाणवी.
३ संघयण रहित छे असंघयणी छे.
४ संज्ञा, चार, दश, शोल होय.
५ एक समचतुरस्र संस्थान जाणवुं.
६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.
७ एकज तेजोलेश्या होय.
८ पांचे इंद्रियो होय.
९ प्रथमना पांच समुद्घात होय.
१० सम्यक्त्वादिक त्रणे दृष्टि होय.
११ चक्षुरादि त्रण दर्शन होय.
१२ प्रथमनां त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान.
१३ व्यंतरनी पेरे अगीयार योग होय.
१४ नारकीनी पेरे नव उपयोग होय.
१५ व्यंतरदेवोनी पेरे उपपात जाणवो.
१६ उपपातनी पेरे च्यवन पण जाणवुं.
१७ जघन्य एक पल्योपमनो आठमो भाग अने उत्कृष्टुं एक पल्योपम एक लाख वर्षें अधिक एटलुं आयु जाणवुं.
१८ पर्याप्ति ७ होय परंतु भाषा अने मन साथे लेतां पांच पर्याप्ति पण कहिये.
१९ ७ दिशिनो आहार लीये.
२० एक दीर्घकालिकी संज्ञा होय.
२१ व्यंतरनी पेरे पांच दंडकमां जइ उपजे.
२२ व्यंतरनी पेरे बे दंडकना जीवो एमां आवी उपजे.

२३ पुरुषवेद अने स्त्रीवेद, ए बे वेद होय.
२४ अल्पबहुत्वमां व्यंतरिकदेवोथकी ज्यो तिषी देवो अधिक छे.
२५ एमनां चवन असंख्यातां छे.
२६ जघन्य एक समय अने उत्कृष्टो चोवी श मुहूर्त्त पर्यंत विरहकाल जाणवो.
२७ प्रथमना चारे गुणठाणां लाजे.
२८ एमने दशे प्राण होय.
२९ संयतीना आठ जंग त्रीजे प्रकारे लाजे.
३० एक अचित्ताहार लीये.
३१ उंज अने लोमे करी आहार लीये,
३२ जघन्योत्कृष्ट दिवस पृथक्त्वे आहार नी इच्छा उपजे.
३३ ज्योतिषी मरी फरी ज्योतिषी न थाय.
३४ योनिद्वार बद्धा देवोनुं साथे कहेवाणुंछे.
३५ कुलकोमी द्वार पण साथे कहेवाणुं छे.

---

२४ चोवीशमा वैमानिक देवोना दंमके पांत्रीश द्वार कहे छे.

१ वैक्रिय तैजस अने कार्मण,ए त्रण शरीर.
२ जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो जाग अ ने उत्कृष्टी सात हाथनी अवगाहना तथा उत्तर वैक्रिय शरीर करे तो जघन्य अंगुलनो संख्यातमो जाग अने उत्कृष्ट लाख योजन सुधी ते बारमा देवलोक सुधीना देवो करें, उपरांतना न करे.
३ संघयण रहित छे असंघयणी छे.
४ संज्ञा चार, दश, शोल होय.
५ एकज समचतुरस्र संस्थान जाणवुं.
६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.
७ तेजो,पद्म अने शुक्ल ए त्रण लेश्या होय.
८ इंद्रियद्वार आश्रयी पांचे इंद्रिय होय.
९ प्रथमना पांच समुद्घात होय.
१० सम्यक्त्वादिक त्रणे दृष्टि होय.
११ चक्षुरादि त्रण दर्शन होय.
१२ प्रथमनां त्रण ज्ञान, त्रणअ ज्ञान होय.
१३ व्यंतरनी पेरे अगीयार योग होय.
१४ बार देवलोक अने नव ग्रैवेयकना दे वोने विषे नारकीनी पेरे नव उपयोग होय अने पांच अनुत्तर विमानवासी देवो,बद्धा सम्यक्दृष्टि छे,माटे तेमने तो प्रथमनां त्रण ज्ञान अने त्रण दर्शन म ली छ उपयोग होय.
१५ जघन्यथी एक समयमां एक, बे, त्रण उपजे अने उत्कृष्टथी तो आठमा देव लोक पर्यंत संख्याता असंख्याता पण उपजे. परंतु नवमा देवलोकथी मांमी ने सर्वार्थसिद्धनामा पांचमा अनुत्तर विमान पर्यंत संख्याताज उपजे, कारण के, त्यां मात्र मनुष्यमांथीज आवी उ पजे छे अने फरी च्यवे, तेवारे पण म नुष्यमांज जाय, बीजे क्यांहि न जाय.
१६ उपपातनी पेरे च्यवन पण जाणी लेवुं.
१७ जघन्य एक पल्योपम अने उत्कृष्ट ते त्रीश सागरोपमायु जाणवुं.
१८ छ पर्याप्ति होय पण जाषा अने मन ए बे पर्याप्ति एके वखत साथेज उपजे छे तेथी पांच पर्याप्ति पण कहिये.
१९ छ दिशिनो आहार लिये.

२० एक दीर्घकालिकी संज्ञा होय.

२१ पहेला अने बीजा देवलोकना देवो मरीने पृथिवीकायनी पेरे पांच दंडकमां जइ उपजे अने त्रीजाथी आठमा सुधी ठ देवलोकना देवो गर्नज तीर्यंच अने गर्नज मनुष्यमां आवी उपजे.

२२ आठमा देवलोक सुधी गर्नज तिर्यंच अने गर्नज मनुष्य, ए बे दंडकना जीवो जाय अने उपरांतना देवलोकोमां तो एक गर्नज मनुष्य आवी उपजे.

२३ पहेला अने बीजा देवलोकने विषे पुरुष तथा स्त्री, ए बे वेद होय अने उपरांतना देवोमां एकज पुरुष वेद होय.

२४ अल्पबहुत्वमां बादर अग्निकायिया जीवोथकी वैमानिक देवो अधिक ठे.

२५ नवन (०४०७०२३) ठे पाथडा ६२ ठे.

२६ जघन्य सर्व स्थानके एक समय अने उत्कृष्टो पल्योपमनो संख्यातमो नाग विरहकाल जाणवो. तिहां जुदे जुदे स्थानके उत्कृष्टो विरह आ प्रमाणे.

१ पहेला बीजा देवलोके चोवीश मुहूर्त्त.
२ त्रीजा देवलोकें नव दिवसवीशमुहूर्त्त.
३ चोथा देवलोके बार दिवस दशमुहूर्त्त.
४ पाचमां देवलोकेसाडी बावीश दिवस.
५ ठठा देवलोके पीस्तालीश दिवस.
६ सातमा देवलोके एंशी दिवस.
७ आठमा देवलोके एकशो दिवस.
८ नवमा तथा दशमा देवलोके संख्याता महीनानो विरहकाल जाणवो.
९ अगीयारमा तथा बारमा देवलोके संख्याता वर्षनो विरहकाल जाणवो.
१० ग्रैवेयकना पहेला त्रिकनेविषे संख्याता शेंकडा वर्षनो विरह जाणवो.
११ बीजा मध्यम ते वचला त्रिकने विषे संख्याता हजार वर्षनो विरह जाणवो.
१२ त्रीजा उपरला त्रिकने विषे संख्याता लाख वर्षनो विरहकाल ठे.
१३ विजयादि चार अनुत्तर विमाने पल्योपमनो असंख्याततमो नाग विरह काल जाणवो.
१४ पांचमा सर्वार्थसिद्धविमाने पल्योपमनो संख्यातमो नाग विरह ठे.

२७ गुणठाणां द्वार आश्री बे नेद ठे.

१ बार देवलोक अने नव ग्रैवेयकना देवोमां प्रथमना चारे गुणठाणां लाने.
२ पांच अनुत्तरविमानना सर्व देवोमां एकज चोथुं गुणठाणुं लाने.

२८ वैमानिक देवोमां दशे प्राण होय.

२९ संयतिना आठबोल त्रीजा प्रकारे लाने.

३० एकज अचित्त आहार लीये.

३१ उज अने लोमे करी आहार लीये.

३२ आहारनी इछा आ प्रमाणे उपजे.

१ एक पल्योपमायुवाला देवोने बे दिवसथी मांडीने नव दिवस पर्यंते आहारनी इछा उपजे.
२ जेनुं एकसागरोपमायु होय, तेने एक हजारवर्षे आहारनी इछा उपजे.
३ एक सागरोपम उपरांत

गरोपमनुं आयु होय तेटला हजार वर्षे आहारनी इछा उपजे.

४ सर्वार्थसिद्ध विमाने तेत्रीश सागरोपमायु छे माटे तेने तेत्रीश हजार वर्षे आहारनी इछा उपजे.

३३ वैमानिक देवोनी कायस्थिति तो एमनी नवस्थिति जेटली जाणवी. मरीने वैमानिकमां पाछा उपजता नथी.

३४ चारेनिकायना देवोनी ४ लाख योनिछे.

३५ चारे निकायना देवो संबंधी तेरे दंडकमां छवीश लाख कोडी कुल जाणवां.

ए रीते चोवीश दंडक मांहेला प्रत्येक दंडकने विषे पांत्रीश द्वारनो विचार संक्षेपथी लख्यो अने ए सबंधि देव नरकादिकोनां प्रतरे प्रतरे जूदां जूदां आयु तथा शरीरनी अवगाहना प्रमुख अनेक वातो विस्तारे समजवामां आववा माटे आगल तेना खुलासा पूर्वक यंत्रो दाखल करेला छे, ते जोइ लेवा.

तिहां चार निकायनां देवोमां प्रथम नवनपति देवोनी वक्तव्यता कहे छे

एक लाख एंशी हजार योजन रत्नप्रनानो पृथ्वीपिंम छे, तेमां एक हजार योजन उपर मूकी आपीये अने एक हजार योजन तलीये मूकी आपीये, बाकी वचेंना १७८००० योजननो पिंम तेमांहे यथायोग्य पणे दश जातिना नवनपति देवतानां नवन छे.

नवन एटले देवतानी काया प्रमाण महामंडप समान आवास जाणवा. ते बाहेर वाटला गोलाकारे छे अने मांहे चोखूणां तथा तलीयामां कमलना मोमा सरखां छे.

ते नवनमध्ये जे न्हानामां न्हानां नवन छे, ते जंबूद्वीप प्रमाण एक लाख योजन लांबां पहोलां छे. अने जे मध्यमनवन छे, ते संख्याता कोटि योजन प्रमाण छे, तथा जे अत्यंत महोटां नवन छे, ते असंख्याता कोटाकोटि योजन प्रमाण छे. ते महोटा एकेका नवनमां असंख्य देवोनो निवास छे.

मेरुमध्यवर्त्ती जे आठ रुचक प्रदेश छे, तिहांथी अर्द्धोअर्द्ध बे खंम करीये, एक दक्षिण दिशिनुं अर्द्ध अने बीजुं उत्तरदिशिनुं अर्द्ध. एवा बे नागे वहेंचतां एकेक निकायनो एक दक्षिणदिशिनो इंद्र अने बीजो उत्तरदिशिनो इंद्र जूदा जूदा गणतां दश निकायना वीश इंद्र छे. ते दशनिकायमां पहेला निकायनुं नाम असुरकुमार निकाय छे, केम के वैमानिक देवोने सुर कहीये, ते वैमानिक ए नही माटे एने असुर कहीये, तथा वालकनी पेरे क्रीडाना करनार माटे कुमार कहीये. तेमनुं आयु आ प्रमाणे छे, ते कहे छे.

१ दक्षिणदिशिनो अधिपति असुरकुमारनो राजा चमरेंद्र,तेनुं उत्कृष्टायु एक सागरोपम.
२ उत्तरदिशिनो अधिपति बलींद्र असुरकुमारो राजा, तेनुं उत्कृष्टायु सागरोपम जाजेरुं.
३ चमरेंद्रनी देवीनुं उत्कृष्टायु साडा त्रण पल्योपम जाणवुं.

४ वलींद्र देवीनुं उत्कृष्टायु साडाचार पल्योपम जाणवुं.
५ शेष दक्षिण दिशिना धरणेंद्र प्रमुख नव इंद्रोनुं उत्कृष्टायु प्रत्येके दोढ पल्योपम जाणवुं.
६ उत्तरदिशिना ज्ञूतानंदेंद्र प्रमुख नव इंद्रोनुं उत्कृष्टायु देशे ऊणा बे पल्योपम जाणवुं.
७ धरणेंद्र प्रमुख नव इंद्रोनी देवीनुं उत्कृष्टायु अर्द्ध पल्योपम जाणवुं.
८ ज्ञूतानंदेंद्र प्रमुख नव इंद्रोनी देवीनुं उत्कृष्टायु देशोन एक पल्योपम जाणवुं.
९ ए सर्वेनुं जघन्यायु दश हजार वर्षनुं जाणवुं. अने जघन्यथी उपरांत उत्कृष्टथी नीचुं ज्यां सुधी उत्कृष्ट पूर्ण न थाय, त्यांसुधीनुं सर्व मध्यमायु कहेवुं. एम ए दशे निकायनां नाम तथा प्रत्येक निकायना दक्षिण उत्तरदिशिना बे बे इंद्रोनां नाम तथा दक्षिण उत्तरना ज्ञेदे करी प्रतिनिकायना ज्ञवननी संख्या तथा ते देवोसंबंधी पोतपोताना निकाय जेथकी उंलखाय तेवां चिन्ह, तेमना आज्ञरणोने विषे होय छे ते चिन्ह तथा तेमना शरीरना वर्ण, तथा वस्त्रना वर्ण, तथा ते इंद्रोना सामानिक देवो जे इंद्रसरखी ऋद्धिना धणी होय ते प्रत्येक इंद्रने केटला होय? तेनी संख्या तथा प्रत्येक इंद्रना आत्मरक्षक देवोनी संख्या तथा कटकना देवो इत्यादिक वातो सर्व नीचे लखेला यंत्रोथी जाणवी.

ज्ञवनपतिनी दशनिकायनां चिन्ह तथा वर्ण, वस्त्रवर्ण, अने सामानीक देव, तथा आत्मरक्षक देवोनी संख्यानो यंत्र.

निकायनां नाम.	निकाय चिन्ह.	निकाय शरीरवर्ण.	निकायना वस्त्रवर्ण.	दक्षिणश्रेणिसामानिकदेव.	उत्तरश्रेणिसामानिकदेव.	दक्षिणश्रेणिना आत्मरक्षकदेवता.	उत्तरश्रेणिनाआत्मरक्षकदेव.
असुरकुमार,	चूडामणि	कृष्णवर्ण.	रक्तवर्ण.	६४०००	६००००	२५६०००	२४००००
नागकुमार.	फणी	धवलवर्ण.	नीलवर्ण.	६०००	६०००	२४०००	४००००
सुवर्णकुमार.	गरुड.	कनकवर्ण.	धवलवस्त्र.	६०००	६०००	२४०००	२४०००
विद्युत्कुमार.	वज्र.	रक्तवर्ण.	नीलांवस्त्र.	६०००	६०००	२४०००	२४०००
अग्निकुमार.	कलश.	रक्तवर्ण.	नीलांवस्त्र.	६०००	६०००	२४०००	२४०००
द्वीपकुमार.	सिंह.	रक्तवर्ण.	नीलांवस्त्र.	६०००	६०००	२४०००	२४०००
उदधिकुमार.	अश्व.	धवलवर्ण.	नीलांवस्त्र.	६०००	६०००	२४०००	२४०००
दिशिकुमार.	हाथी.	रक्तवर्ण.	धवलांवस्त्र	६०००	६०००	२४०००	२४०००
वायुकुमार.	मकर.	नीलवर्ण.	संध्यराग.	६०००	६०००	२४०००	२४०००
स्तनितकुमार.	वर्द्धमान.	कनकवर्ण.	धवलांवस्त्र	६०००	६०००	२४०००	२४०००

भवनपति अने व्यंतर देव तथा तेमनी देवीयोनां जे जघन्य उत्कृष्टायु तेनो यंत्र.

इंद्रोनां नाम.	देवोनुं जघन्यायु.	देवोनुं उत्कृष्टायु.	देवीनुं जघन्यायु.	देवीनुं उत्कृष्टायु.
दक्षिण चमरेंद्र.	दश हजार वर्ष.	एक सागरोपम.	दश सहस्र वर्ष.	३॥ पल्योपम.
उत्तरश्रेणि बलींद्र.	दश हजार वर्ष.	१ सागर जाझेरुं.	दश सहस्र वर्ष.	४॥ पल्योपम.
दक्षिण ए निकाय.	दश हजार वर्ष.	दोढ पल्योपमनुं.	दश सहस्र वर्ष.	अर्द्ध पल्योपमनुं.
उत्तर नव निकाय.	दश हजार वर्ष.	बे पल्यदेशे ऊणो.	दश सहस्र वर्ष.	एकपल्यदेशेऊणुं
व्यंतर.	दश हजार वर्ष.	एक पल्योपम.	दश सहस्र वर्ष.	अर्द्ध पल्योपम.
वाणव्यंतर.	दश हजार वर्ष.	एक पल्योपम.	दश सहस्र वर्ष.	अर्द्ध पल्योपम.

दशभवनपतिना तथा दक्षिणोत्तरेंद्रनां नाम तथा दक्षिण उत्तर भवन संख्यानो यंत्र.

दश निकायनां नाम.	दक्षिणेंद्रनां नाम.	उत्तरेंद्रनां नाम.	दक्षिणेंद्रभवन संख्या.	उत्तरेंद्रभवन संख्या.	उभयमलीभवन संख्या.
असुरकुमार.	चमरेंद्र.	बलींद्र.	३४०००००	३००००००	६४ लाखभवन.
नागकुमार.	धरणेंद्र.	भूतानंदेंद्र.	४४०००००	४००००००	८४ लाखभवन.
सुवर्णकुमार.	वेणुदेव.	वेणुदाली.	३८०००००	३४०००००	७२ लाखभवन.
विद्युत्कुमार.	हरिकांत.	हरिशिख.	४००००००	३६०००००	७६ लाखभवन.
अग्निकुमार.	अग्निशिख.	अग्निमाणव.	४००००००	३६०००००	७६ लाखभवन.
द्वीपकुमार.	पूर्णेंद्र.	वशिष्टेंद्र.	४००००००	३६०००००	७६ लाखभवन.
उदधिकुमार.	जलकांत.	जलप्रभ.	४००००००	३६०००००	७६ लाखभवन.
दिशिकुमार.	अमितगति.	अमितवाहन.	४००००००	३६०००००	७६ लाखभवन.
पवनकुमार.	वेलंबक.	प्रभंजन.	५००००००	४६०००००	९६ लाखभवन.
स्तनितकुमार.	घोष.	महाघोष.	४००००००	३६०००००	७६ लाखभवन.
शरवाले संख्या.			४०६०००००	३६६०००००	७७२०००००

हवे व्यंतरदेवोनी वक्तव्यता कहे छे.

रत्नप्रभा पृथ्वीनी उपर मूकेलो जे एकहजार योजननो रत्नमयकांड, तेमांथी एक शो योजन नीचेना तथा शो योजन उपरना मूकीने वचला आठशें योजननी भूमिकामध्ये व्यंतरदेवोनां महारमणीय असंख्यातां नगर छे, तेमां रह्यां थकां व्यंतरिक देवो वरप्रधान तरुणीयोनां गीत गानना अने वाजित्रो वजाववाना शब्द सांभलवे करी प्रमुदित थया थका गत कालने पण जाणता नथी.

ते व्यंतरदेवोना आठ निकाय छे, तेना पण दक्षिण श्रेणि अने उत्तर श्रेणिना प्रत्येके एकेक इंद्र गणतां आठ निकायना शोल इंद्रो छे.

ते व्यंतरोनां नगर, उत्कृष्टां महोटां ते जंबूद्वीप जेवडां लांवां पहोलां छे, अने घणां न्हानां छे, ते नरतक्षेत्र जेवडां (५२६) योजनने छ कला प्रमाण छे. तथा मध्यम विमान ते महाविदेह समान (३३६७४) योजननी उपर उगणीया चार नाग जेवडा छे, ते आठ व्यंतर निकायनां नाम तथा तेमना इंद्रोनां नाम तेमज चिन्ह प्रमुख पूर्वोक्त नवनपतिनी पेठे सर्व वातो नीचेना यंत्रथी जोइ लेवी.

हवे जेम व्यंतर देवोना आठनिकाय कह्या तेम वली रत्नप्रनाना उपरलां एकशो योजनना पिंडमांहे दश योजन नीचे तलीये मूकीये अने दश योजन उपर मूकीये,शेष एंशी योजन पृथ्वीपिंडमांहे वीजा वाणव्यंतरना आठ निकाय छे, एटले मेरुमध्यवर्त्ती गोस्तनने आकारे आठ रुचक प्रदेशथी नीचे दश योजन मूकीने नीचला एंशी योजनमां आठ निकायना दक्षिणदिशि अने उत्तरदिशिना नेदे करी वे वे इंद्रो छे, तेमनां नाम तथा निकायनां नाम आदिक चिन्ह वर्ण प्रमुख सर्व, नीचला यंत्रोथकी जाणवां.

इहां व्यंतरना शोल तथा वाणव्यंतरना शोल मली वत्रीश इंद्र व्यंतर देवोना अने वीश नवनपतिना. तेमज यद्यपि सूर्य अने चंद्र असंख्याता इंद्र छे, तथापि जातिनी अपेक्षाये एक चंद्रमा अने एक सूर्य, ए वे इंद्र ज्योतिषीना लेवा अने पहेलां देवलोकथी आठमा देवलोक सुधी एकेक इंद्र छे, अने नवमा दशमा ए वे देवलोकनो एक, तथा अगीयारमा, वारमा, ए वे देवलोकनो एक, मली वार देवलोकना दश इंद्र गणतां सरवाले चोशठ इंद्र संख्याये जाणवा.

वली एटलुं विशेष छे जे, ज्योतिषी अने व्यंतर, ए वे निकायने विषे इंद्रोना लोकपाल तथा गुरुस्थानीया जे त्रयस्त्रिंशद्देवता, ते नथी.

हवे व्यंतर देव देवीयोनुं जघन्योत्कृष्टायु कहे छे.

व्यंतर अने वाणव्यंतरना देवो तथा देवीयोनुं जघन्यायु दश हजार वर्ष जाणवुं; अने देवोनुं उत्कृष्टायु संपूर्ण एक पल्योपमनुं जाणवुं. तथा देवीयोनुं उत्कृष्टायु अर्द्ध पल्योपमनुं जाणवुं. अने श्री ह्रीं धृति, कीर्त्ति, बुद्धि अने लक्ष्मी. ए छ देवीयोनुं जे एक पल्योपमायु कह्युं छे, ते देवीयो नवनपतिनी छे, पण व्यंतरनी नथी. व्यंतरना आयुना यंत्रनी स्थापना नीचे करीये छैये, तेथी तेनुं आयु जाणवुं.

आठ जातिना व्यंतरदेवी संबंधि प्रतिभेद कहे छे.

पिशाचनाप्रकार. १५	१	कूष्मांड १ पटक २ जोष ३ आन्हिक ४ काल ५ महाकाल ६ मोक्ष ७ आमोक्ष ८ तालपिशाच. ९ पिखरपिशाच १० अधस्तारक ११ देव १२ महादेव १३ उक्षिक १४ वनपिशाच १५.
भूतनाप्रकार. ९	२	सुरूप १ प्रतिरूप २ श्वेतभद्र ३ भूतोत्तम ४ स्कंदिक ५ अतिपातकभद्र ६ महावेग ७ प्रतिवेग ८ आकाशवेग ९.
यक्षनाप्रकार. १३	३	पूर्णभद्र १ माणिभद्र २ श्वेतभद्र ३ हरिभद्र ४ सुमनोभद्र ५ व्यतिपाकभद्र ६ सुभद्र ७ सर्वतोभद्र ८ मनुष्यभद्र ९ धनाधिपति १० धनहार ११ सूपयक्ष १२ यक्षोत्तम १३.
राक्षसनाप्रकार. ७	४	भीम १ महाभीम २ विघ्नविनायक ३ जलराक्षस ४ रुक्षराक्षस ५ ब्रह्मराक्षस ६ दत्तराक्षस ७.
किन्नरनाप्रकार. १०	५	किंनर १ किंपुरुष २ किंपुरुषोत्तम ३ हृदयंगम ४ रूपशाली ५ अनिंदतई ६ किंनरोत्तम ७ मनोरम ८ रतिप्रिय ९ रतिश्रेष्ठ १०
किंपुरुषनाप्रकार १०	६	पुरुष १ सत्पुरुष २ महापुरुष ३ पुरुषवृषभ ४ पुरुषोत्तम ५ अतिपुरुष ६ माहादेव ७ मरुत ८ मेरुकांत ९ भास्वत १०
महोरगनाप्रकार १०	७	भुजंग १ भोगशाली २ महाकाय ३ अतिकाय ४ स्कंधशाली ५. मनोरम ६ माहावेग ७ महेश्वक्ष ८ मेरुकांत ९ भास्वत १०
गंधर्वनाप्रकार. १२	८	हाहा १ हूहू २ तुंबरु ३ नारद ४ ऋषिवादक ५ भूतवादक ६ कादंब ७ महाकादंब ८ रैवत ९ विश्वावसु १० गीतरति ११ गीतयशा १२

हवे ज्योतिषी देवोनी वक्तव्यता कहे छे.

मेरुमध्य रुचकथकी नवशें योजन उपर अने नवशें योजन नीचे मली अढारशें योजन प्रमाण तिर्यक् लोक छे. तिहां समभूतला पृथ्वीथकी ७९० योजन उपरांत एकशो ने दश योजनमांहे ज्योतिषचक्र रहे छे, ते केवी रीते? तो के प्रथम समभूतल थकी ७९० योजने तारानां विमान छे ८०० योजने सूर्यनुं विमान छे, अने ८८० योजने चंद्रमानुं विमान चाले छे, ८८४ योजने नक्षत्रनां विमान चाले छे, ८८८ योजने बुधनुं विमान चाले छे, ८९१ योजने शुक्रनुं विमान चाले छे. ८९४ योजने बृहस्पतिनो तारो चाले छे, ८९७ योजने मंगलनुं विमान चाले छे, अने ९०० योजने शनिनुं विमान चाले छे. एम ११० योजनमां ज्योतिषचक्र चार चाले छे.

१ ज्योतिषीयोनां विमान मेरुपर्वतथकी ११२१ योजन अरहां एटलां दूर मनुष्य

लोकमांहे चरे छे,भमे छे अने ११२१ तुं योजन अलीकथी उरहां एटले चारे दिशाये लोक ना छेहमाथकी ११२१ योजनमांहेली कोरे अलोकनी अवाधाये ज्योतिषचक्र स्थिर रहेछे.

हवे सूर्य, चंद्र, ग्रह, नक्षत्र अने तारा, ए पांच जातिना ज्योतिषी देव देवीयोनुं ज घन्योत्कृष्टायु कहे छे. ते ज्योतिषी देवो अढी द्वीपमांहे जेटला छे, ते सर्व चर छे,अने अढीद्वीपथी वाहिर जे असंख्याता द्वीप समुद्र छे, तेमां जेटला ज्योतिषीदेवो छे, ते सर्व स्थिर जाणवा.ए चर तथा स्थिर, वेहु प्रकारना ज्योतिषी देव तथादेवीनुं आयु कहेछे

१ चंद्रमानुं तथा चंद्रमाना विमानवासी देवोनुं उत्कृष्टायु एक पल्योपम एक लाख वर्षे अधिक तथा तेमनी देवीयोनुं अर्द्धपल्योपम पच्चास हजार वर्षे अधिक जाणवुं.

२ सूर्य तथा तेना विमानवासी देवोनुं उत्कृष्टायु एक पल्योपम एक हजारवर्षे अधिक तथा तेमनी देवीयोनुं आयु पांचशे वर्षे अधिक अर्द्धपल्योपम जाणवुं.

३ ग्रह तथा ग्रहना विमानवासी देवोनुं उत्कृष्टायु संपूर्ण एक पल्योपम जाणवुं तथा तेमनी देवीयोनुं उत्कृष्टायु अर्द्धपल्योमनुं जाणवुं.

४ नक्षत्र तथा नक्षत्रना विमानवासी देवोनुं उत्कृष्टायु अर्द्धपल्योपम अने तेमनी देवीयोनुं आयु एक पल्योपमनो चोथो भाग जाणवुं.

५ तारा तथा ताराना विमानवासी देवोनुं उत्कृष्टायु पल्योपमनो चोथो भाग कांइक जाजेरुं अने तेमनी देवीयोनुं एक पल्योपमनो आठमो भाग विशेषाधिक जाणवुं.

६ जघन्यायुमां चंद्रमा अने सूर्य,ए वे तो इंद्र छे,तथा ग्रह,नक्षत्र अने तारा,ए त्रण विमानना धणी छे तेमनुं आयु जघन्य मध्यम न होय परंतु उत्कृष्टज होय, तेथी चंद्रना विमानवासी देव तथा देवीयो एक युगल तथा सूर्यना विमानवासी देव तथा देवीयो ए बीजुं युगल, तथा ग्रहना विमानवासी देव तथा देवीयो. ए त्रीजुं युगल,तथा नक्षत्रना विमानवासी देव तथा देवीयो.ए चोथुं युगल. ए चार युगलनुं जघन्यायु पल्योपमनो चोथो भाग तथा ताराना विमानवासी देव तथा देवीयो. ए पांचमुं युगल छे,तेनुं आयु पल्योपमनो आठमो भाग जाणवुं एना यंत्रो आगल आवशे

हवे वैमानिकदेवोनुं जघन्य तथा उत्कृष्टायु कहे छे.

१ सौधर्मदेवलोकने छेहला तेरमे प्रतरे उत्कृष्टायु वे सागरोपमनुं जाणवुं अने जघन्यथी तो सर्व तेरे प्रतरे एक पल्योपमायु जाणवुं.

२ ईशान देवलोके उत्कृष्ट वे सागरोपम पल्योपमना असंख्यातमे भागे अधिक अने जघन्यथी पल्योपमने असंख्यातमे भागे अधिक, एक पल्योपम जाणवुं.

३ सनत्कुमारे उत्कृष्ट सात सागरोपम अने जघन्य बे सागरोपम जाणवुं.

४ माहेंद्रे उत्कृष्टथी पल्योपमना असंख्यातमे जागे अधिक सात सागरोपम अने जघन्यथी बे सागरोपम जाजेरुं जाणवुं.

५ ब्रह्मदेवलोके उत्कृष्ट दश सागरोपम अने जघन्यथी सात सागरोपम.

६ लांतक देवलोके उत्कृष्ट चौद सागरोपम, अने जघन्यथी दश सागरोपम.

७ शुक्रदेवलोके उत्कृष्ट सत्तर सागरोपम. अने जघन्यथी चौद सागरोपम.

८ सहस्रारे उत्कृष्ट अढार सागरोपम अने जघन्य सत्तर सागरोपम.

९ आनत देवलोके उत्कृष्ट उंगणीश सागरोपम अने जघन्यथी अढार सागरोपम.

१० प्राणत देवलोके उत्कृष्ट वीश सागरोपम अने जघन्यथी उंगणीश सागरोपम.

११ आरण देवलोके उत्कृष्ट एकवीश सागरोपम अने जघन्यथी वीश सागरोपम.

१२ अच्युत देवलोके उत्कृष्ट बावीश सागरोपम अने जघन्यथी एकवीश सागरोपम.

१३ पछी नवग्रैवेयके प्रत्येक एकका ग्रैवेयके जघन्य उत्कृष्ट बेहुमां अच्युतदेवलोकथी एकेक सागरोपमनी वृद्धि करीये, तेवारे नवमा ग्रैवेयके उत्कृष्टा एकवीश सागर अने जघन्यथी त्रीश सागरोपमायु थाय.

१४ पांच अनुत्तर विमानमांहेला पहेला विजयादि चार विमाने उत्कृष्ट तेत्रीश सागर अने जघन्य एकत्रीश सागरायु कह्युं छे, अने पांचमा सर्वार्थसिद्ध विमाने तो अजघन्योत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपमायु छे, एमां वध घट नथी.

हवे वैमानिक देवीयोनुं जघन्य उत्कृष्ट आयु कहे छे.

वैमानिक देवीयोनी उत्पत्ति मात्र प्रथमना सौधर्म अने ईशान ए बे देवलोकमांज छे, ते देवीयो बे प्रकारनी छे एक तो परिग्रहीता ते परणेली कुलांगना सरखी जाणवी अने बीजी अपरिग्रहीता ते वेश्या सरखी जाणवी. ए देववेश्या कहेवाय.

१ तिहां सौधर्मदेवलोके परिग्रहीता अपरिग्रहीता ए बेहुनुं जघन्यायु एक पल्योपम छे, अने ईशान देवलोके बेहुनुं जघन्यायु एक पल्योपम जाजेरुं जाणवुं.

२ सौधर्म देवलोके परिग्रहीता देवीयोनुं उत्कृष्टायु सात पल्योपम छे, तथा अपरिग्रहीतानुं उत्कृष्टायु पच्चास पल्योपम छे, तेमज ईशानदेवलोके परिग्रहीतानुं उत्कृष्टायु नव पल्योपम छे अने अपरिग्रहीतानुं पच्चावन पल्योपम छे.

हवे चारे निकायना देवो संबंधि इंद्रोनी सर्व अंतेउरमां प्रधान मुख्य पट्टराणी सरखी जे देवीयो, तेने अग्रमहीषी कहीये, ते कया कया इंद्रने केटली केटली होय ?

१ जवनपतिनी पहेली निकायना चमरेंद्र तथा बलींद्रने प्रत्येके पांच पांच होय.

२ जवनपतिनी नागकुमारादिक नव निकायना धरणेंद्र अने जूतानंदेंद्र आदिक अढार इंद्रोने प्रत्येके ठ ठ अग्रमहीषी होय.
३ व्यंतर देवोना काल महाकालादिक बत्रीश इंद्रोनेप्रत्येके चार चार अग्रमहीषीहोय
४ ज्योतिषीना इंद्र जे चंद्रमा अने सूर्य, तेने प्रत्येके चार चार अग्रमहीषीयो होय.
५ सौधर्म तथा ईशान,ए बे देवलोकना इंद्रोने प्रत्येके आठ आठ अग्रमहीषीयोहोय.
६ बे देवलोकथी उपरांतना देवलोकमां देवीयोनी उत्पत्ति नथी माटे तिहांना इंद्र तथा तिहांना निवासी देवोने जेवारे विषय सेववानी वांठा थाय, तेवारे सौधर्म ईशानवासी अपरिग्रहीता देवीयो यथायोग्य पणे तेमने उपजोगमां आवे.

हवे वैमानिक देवोनुं प्रतरे प्रतरे जूडुं जूडुं आयु कहेवा माटे प्रतरसंख्या कहेछे. तिहां जेम घरनी उपर जूदा जूदा चार पांच मजला होय, तेम पहेला अने बीजा देव लोकनी उपराउपर तेर जूमिरूप तेर मजला छे, तेने प्रतर कहीये. ते आवी रीते केः– बे देवलोक मल्यां वलयाकारे छे. तिहां पूर्वमहाविदेह अने पश्चिम महाविदेहनी उपर आवेली देवलोकसंबंधी जूमिनी वचमांहे अर्द्धवलयाकार खंरुथकी एक दक्षिणदिशिखंरु अने बीजो उत्तरदिशिखंरु, एवा बे खंड अर्द्धोअर्द्ध करीये, तेनां दक्षिणदिशिखंडना अर्द्धवलयाकार खंरु प्रतर सौधर्मेंद्रना अने उत्तरदिशिना अर्द्धवलयाकार खंड प्रतर ईशानेंद्रना जाणवा. एम बीजा पण वलयाकार देवलोकना युगलमां एज व्यवस्था करवी. एटले त्रीजा, चोथा, देवलोकना मल्या वलयाकार चार प्रतर छे, तेमां दक्षिण दिशि सनत्कुमारनी अने उत्तरदिशि माहेंद्रनी जाणवी. पांचमे ठ प्रतर, ठठे पांच प्रतर, सातमे चार प्रतर, आठमे चार प्रतर, नवमा दशमा मली बेहुना चार प्रतर, अगीयारमा बारमाना चार प्रतर, तथा नव ग्रैवेयके प्रत्येक एकेक प्रतर गणतां नवप्रतर छे, अने पांच अनुत्तरविमाननो एकज प्रतर छे. एम सर्व मली ऊर्ध्वलोके बासठ प्रतर छे.

हवे ए प्रत्येक प्रतरे जघन्य उत्कृष्ट आयुष्य जाणवां, माटे प्रथम सौधर्मदेवलोके उपाय कहे छे. सौधर्मदेवलोके उत्कृष्टी स्थिति बे सागरोपमनी छे अने प्रतर तेर छे, माटे एक सागरना तेर जाग करी प्रतरे प्रतरे एकेका सागरोपमे एकेको जाग आपीये, ते एवी रीते के तेरेया बे सागरोपमना ठवीश जाग थाय, तेने प्रतरे प्रतरे वहेंचीये, तो पहेला प्रतरे तेरेया बे जाग आवे, तेटलुं पहेला प्रतरे उत्कृष्टायु जाणवुं, पठी बीजे प्रतरे बे साथे गुणीये, तेवारे बीजे प्रतरे चार जाग, त्रीजे त्रणथी गुणीये तेवारे ठ जाग, एम यावत् तेरमे प्रतरे बेहु सागरना ठवीशे जाग पूर्ण थाय, तिहां उत्कृष्टी स्थिति बे सागरोपम पूर्ण थाय. एम ईशानदेवलोके पण प्रतरे प्रतरे एज जाग जोजेरा कहेवा.

४ माहेंद्रे उत्कृष्टथी पल्योपमना असंख्यातमे जागे अधिक सात सागरोपम अने जघन्यथी बे सागरोपम जाजेरुं जाणवुं.

५ ब्रह्मदेवलोके उत्कृष्ट दश सागरोपम अने जघन्यथी सात सागरोपम.

६ लांतक देवलोके उत्कृष्ट चौद सागरोपम, अने जघन्यथी दश सागरोपम.

७ शुक्रदेवलोके उत्कृष्ट सत्तर सागरोपम. अने जघन्यथी चौद सागरोपम.

८ सहस्रारे उत्कृष्ट अढार सागरोपम अने जघन्य सत्तर सागरोपम.

९ आनत देवलोके उत्कृष्ट उंगणीश सागरोपम अने जघन्यथी अढार सागरोपम.

१० प्राणत देवलोके उत्कृष्ट वीश सागरोपम अने जघन्यथी उंगणीश सागरोपम.

११ आरण देवलोके उत्कृष्ट एकवीश सागरोपम अने जघन्यथी वीश सागरोपम.

१२ अच्युत देवलोके उत्कृष्ट बावीश सागरोपम अने जघन्यथी एकवीश सागरोपम.

१३ पछी नवग्रैवेयके प्रत्येक एकका ग्रैवेयके जघन्य उत्कृष्ट बेहुमां अच्युतदेवलोकथी एकेक सागरोपमनी वृद्धि करीये, तेवारे नवमा ग्रैवेयके उत्कृष्टा एकत्रीश सागर अने जघन्यथी त्रीश सागरोपमायु थाय.

१४ पांच अनुत्तर विमानमांहेला पहेला विजयादि चार विमाने उत्कृष्ट तेत्रीश सागर अने जघन्य एकत्रीश सागरायु कह्युं छे, अने पांचमा सर्वार्थसिद्ध विमाने तो अजघन्योत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपमायु छे, एमां वध घट नथी.

हवे वैमानिक देवीयोनुं जघन्य उत्कृष्ट आयु कहे छे.

वैमानिक देवीयोनी उत्पत्ति मात्र प्रथमना सौधर्म अने ईशान ए बे देवलोकमांज छे, ते देवीयो बे प्रकारनी छे एक तो परिग्रहीता ते परणेली कुलांगना सरखी जाणवी अने बीजी अपरिग्रहीता ते वेश्या सरखी जाणवी. ए देववेश्या कहेवाय.

१ तिहां सौधर्मदेवलोके परिग्रहीता अपरिग्रहीता ए बेहुनुं जघन्यायु एक पल्योपम छे, अने ईशान देवलोके बेहुनुं जघन्यायु एक पल्योपम जाजेरुं जाणवुं.

२ सौधर्म देवलोके परिग्रहीता देवीयोनुं उत्कृष्टायु सात पल्योपम छे, तथा अपरिग्रहीतानुं उत्कृष्टायु पचास पल्योपम छे, तेमज ईशानदेवलोके परिग्रहीतानुं उत्कृष्टायु नव पल्योपम छे अने अपरिग्रहीतानुं पचावन पल्योपम छे.

हवे चारे निकायना देवो संबंधि इंद्रोनी सर्व अंतेउरमां प्रधान मुख्य पट्टराणी सरखी जे देवीयो, तेने अग्रमहीषी कहीये, ते कया कया इंद्रने केटली केटली होय?

१ जवनपतिनी पहेली निकायना चमरेंद्र तथा बलींद्रने प्रत्येके पांच पांच होय.

२ भवनपतिनी नागकुमारादिक नव निकायना धरणेंद्र अने भूतानंदेंद्र आदिक अढार इंद्रोने प्रत्येके छ छ अग्रमहीषी होय.
३ व्यंतर देवोना काल महाकालादिक बत्रीश इंद्रोनेप्रत्येके चार चार अग्रमहीषीहोय
४ ज्योतिषीना इंद्र जे चंद्रमा अने सूर्य, तेने प्रत्येके चार चार अग्रमहीषीयो होय.
५ सौधर्म तथा ईशान,ए बे देवलोकना इंद्रोने प्रत्येके आठ आठ अग्रमहीषीयोहोय.
६ बे देवलोकथी उपरांतना देवलोकमां देवीयोनी उत्पत्ति नथी माटे तिहांना इंद्र तथा तिहांना निवासी देवोने जेवारे विषय सेववानी वांछा थाय, तेवारे सौधर्म ईशानवासी अपरिग्रहीता देवीयो यथायोग्य पणे तेमने उपभोगमां आवे.

हवे वैमानिक देवोनुं प्रतरे प्रतरे जूदुं जूदुं आयु कहेवा माटे प्रतरसंख्या कहेछे. तिहां जेम घरनी उपर जूदा जूदा चार पांच मजला होय, तेम पहेला अने बीजा देव लोकनी उपराउपर तेर भूमिरूप तेर मजला छे, तेने प्रतर कहीये. ते आवी रीते केः– बे देवलोक मल्यां वलयाकारे छे. तिहां पूर्वमहाविदेह अने पश्चिम महाविदेहनी उपर आवेली देवलोकसंबंधी भूमिनी वचमांहे अर्द्धवलयाकार खंडरूपकी एक दक्षिणदिशिखंड अने बीजो उत्तरदिशिखंड, एवा बे खंड अर्द्धोअर्द्ध करीये, तेनां दक्षिणदिशिखंडना अर्द्धवलयाकार खंड प्रतर सौधर्मेंद्रना अने उत्तरदिशिना अर्द्धवलयाकार खंड प्रतर ईशानेंद्रना जाणवा. एम बीजा पण वलयाकार देवलोकना युगलमां एज व्यवस्था करवी. एटले त्रीजा, चोथा, देवलोकना मल्या वलयाकार बार प्रतर छे, तेमां दक्षिण दिशि सनत्कुमारनी अने उत्तरदिशि माहेंद्रनी जाणवी. पांचमे छ प्रतर, छठे पांच प्रतर, सातमे चार प्रतर, आठमे चार प्रतर, नवमा दशमा मली बेहुना चार प्रतर, अगीयारमा बारमाना चार प्रतर, तथा नव ग्रैवेयके प्रत्येक एकेक प्रतर गणतां नवप्रतर छे, अने पांच अनुत्तरविमाननो एकज प्रतर छे. एम सर्व मली ऊर्ध्वलोके बासठ प्रतर छे.

हवे ए प्रत्येक प्रतरे जघन्य उत्कृष्ट आयुष्य जाणवां, माटे प्रथम सौधर्मदेवलोके उपाय कहे छे. सौधर्मदेवलोके उत्कृष्टी स्थिति बे सागरोपमनी छे अने प्रतर तेर छे, माटे एक सागरना तेर भाग करी प्रतरे प्रतरे एकेका सागरोपमे एकेको भाग आपीये, ते एवी रीते के तेरैया बे सागरोपमना छव्वीश भाग थाय, तेने प्रतरे प्रतरे वहेंचीये, तो पहेला प्रतरे तेरैया बे भाग आवे, तेटलुं पहेला प्रतरे उत्कृष्टायु जाणवुं. पछी बीजे प्रतरे बे साथे गुणीये, तेवारे बीजे प्रतरे चार भाग, त्रीजे त्रणथी गुणीये तेवारे छ भाग, एम यावत् तेरमे प्रतरे बेहु सागरना छव्वीशे भाग पूर्ण थाय. तिहां उत्कृष्टी स्थिति बे सागरोपम पूर्ण थाय. एम ईशानदेवलोके पण प्रतरे प्रतरे एज भाग जोजेरा कहेवा.

यावत् तेरमे प्रतरे बे सागरोपम जाजेरा कहेवा. अने जघन्य तो सौधर्म देवलोकना तेरे प्रतरे एक पल्योपम पूर्ण आयु जाणवुं. अने ईशान देवलोके जघन्यथी एक पल्यो पम ऊपर पल्योपमनो असंख्यातमो भाग अधिक एटली स्थिति प्रतरे प्रतरे कहेवी.

हवे इंद्रना लोकपालोनुं आयु कहे छे. सघला इंद्रना लोकपाल पोतपोताना देव लोकना छेहला प्रतरे इंद्रना विमाननी फरता चारे दिशाये चार लोकपाल रहे, ते लोकपाल पोतपोताना विमानना धणी छे, तथापि तेमनुं आयु आ प्रमाणे छे.

सौधर्मेंद्रना सोम अने यम ए बे लोकपालनुं उत्कृष्टायु एक पल्योपमनी ऊपर एक पल्योपमना त्रण भाग मांहेलो एक भाग जाणवुं. अने वरुणनुं देशे ऊणां बे पल्योप मायु जाणवुं तथा वैश्रमणनुं उत्कृष्टायु बे पल्योपम पूर्ण जाणवुं.

ईशानेंद्रना सोम तथा यमनुं उत्कृष्टायु एक पल्योपमनी ऊपर एक पल्योपमना त्रण भाग करीये, तेवा बे भाग जाणवा. तथा वरुणनुं आयु बे पल्योपम पूर्ण जाणवुं. अने कुबेरनुं बे पल्योपमनी ऊपर एक पल्योपमना त्रण भाग करीये तेवुं एक भाग जाणवुं, तथा सौधर्मेंद्रना पुत्र सरखा अपत्य देवोनुं आयु एक पल्योपम जाणवुं.

हवे सनत्कुमारादि देवलोके प्रतरे प्रतरे उत्कृष्ट जघन्यस्थिति जाणवा भणी उपाय कहे छे.

जेम के सौधर्मदेवलोके उत्कृष्टीस्थिति बे सागरोपम छे अने सनत्कुमार देवलोके उ त्कृष्टी स्थिति सात सागरोपम छे, तेमांथी बे सागरोपम काहाढीये, बाकी पांच साग रोपम रहे, तेने सनत्कुमारना बार प्रतर छे. तेनो भाग पहोंचे नही, माटे एकेक साग रना बार बार भाग करीये, तेवारे पांच सागरना शाठ भाग थाय, तेने बार भागे वहें चतां एकेक प्रतरे पांच पांच भाग आवे, तिहां पहेले प्रतरे एक आंक छे, माटे पांच एकां पांच भाग आवे. तेनी साथे सौधर्म देवलोकनी उत्कृष्टी स्थिति बे सागरोपम छे,ते भेलीये,तेवारे पहेले प्रतरे बे सागरोपमनी ऊपर बारइया पांच भाग आयु जाणवुं. बीजे प्रतरे बे आंक छे तो पांच दु दश भाग बारइया आवे,तेवारे बे सागरोपम ऊपर दशभा गायु जाणवुं, त्रीजे प्रतरे त्रण आंक छे, तो पांच त्रिक पन्नर भाग आवे, तेमां बार भागनुं एक सागरोपम थाय. ऊपर त्रण भाग वधे, तेनी साथे बे सागरोपम भेलतां त्रण सागरने बारइया त्रण भागआयु छे. एम यावत् बारमे प्रतरे सात सागरोपम उत्कृष्टा यु थाय. अने जघन्यस्थिति तो बारे प्रतरे सनत्कुमार देवलोकनी बे सागरोपमनी जा णवी. तेमज चोथा माहेंद्र देवलोके प्रतरे प्रतरे सनत्कुमार देवलोकथी साधिक स्थि ति कहेवी. ए प्रमाणे पांचमा ब्रह्म आदिक देवलोके पण प्रतरे प्रतरे आयु जाणवा, माटे एज उपाय करवो, ए सर्वना यंत्रोनी स्थापना आगल करी छे, ते जोवुं.

बार देवलोक. नव ग्रैवेयक, अने पांच अनुत्तरविमान. एटलां स्थानक

एक बीजानी उपर केवी रीते छे? ते देखाडनारो तथा ते प्रत्येक

स्थानके जघन्य उत्कृष्टायु दर्शावनारो यंत्र.

बीजा विजयंत विमाने. जघन्यायु सागर एकत्रीश. अने उत्कृष्ट सागर तेत्रीश. पहेला विजयविमाने.	सर्वार्थ सिद्धिविमाने. अजघन्योत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपमायु छे.	त्रीजा जयंतविमाने जघन्य सागर एकत्रीश अने उत्कृष्ट सागर तेत्रीश. चोथा अपराजित विमाने.
नवमा आदित्य ग्रैवेयके.	जघन्य सागर ३०	९ उत्कृष्ट सागर ३१
आठमा प्रीतिकर ग्रैवेयके.	जघन्य सागर २९	८ उत्कृष्ट सागर ३०
सातमा सौमनस्य ग्रैवेयके.	जघन्य सागर २८	७ उत्कृष्ट सागर २९
छठा सुमनस ग्रैवेयके.	जघन्य सागर २७	६ उत्कृष्ट सागर २८
पांचमा विशाल ग्रैवेयके.	जघन्य सागर २६	५ उत्कृष्ट सागर २७
चोथा सर्वतोभद्र ग्रैवेयके.	जघन्य सागर २५	४ उत्कृष्ट सागर २६
त्रीजा मनोरम ग्रैवेयके.	जघन्य सागर २४	३ उत्कृष्ट सागर २५
बीजा शुभंकर ग्रैवेयके.	जघन्य सागर २३	२ उत्कृष्ट सागर २४
पहेला सुदर्शन ग्रैवेयके.	जघन्य सागर २२	१ उत्कृष्ट सागर २३
बारमा अच्युत देवलोके.	जघन्य सागर २१	१२ उत्कृष्ट सागर २२
अगीयारमा आरण्यदेवलोके.	जघन्य सागर २०	११ उत्कृष्ट सागर २१
दशमा प्राणतदेवलोके.	जघन्य सागर १९	१० उत्कृष्ट सागर २०
नवमा आनतदेवलोके.	जघन्य सागर १८	९ उत्कृष्ट सागर १९
आठमा सहस्रार देवलोके.	जघन्य सागर १७	८ उत्कृष्ट सागर १८
सातमा शुक्रदेवलोके.	जघन्य सागर १४	७ उत्कृष्ट सागर १७
छठा लांतक देवलोके.	जघन्य सागर १०	६ उत्कृष्ट सागर १४
पांचमा ब्रह्मदेवलोके.	जघन्य सागर ७	५ उत्कृष्ट सागर १०
चोथा माहेंद्र देवलोके.	जघन्य साधिकसागर २	४ उत्कृष्ट साधिक सागर ७
त्रीजा सनत्कुमार देवलोके.	जघन्य सागर २	३ उत्कृष्ट सागर ७
बीजा ईशान देवलोके.	जघन्य साधिकपल्योपम १	२ उत्कृष्ट साधिक सागर २
पहेला सौधर्म देवलोके.	जघन्य एक पल्योपम.	१ उत्कृष्ट सागर २

ज्योतिषीदेवोना जघन्य उत्कृष्टायुनो यंत्र.

चंद्रउत्कृष्टा.	एक पल्य एक लक्षवर्षाधिक.	जघन्य पल्य चतुर्थ जाग.	चंद्रदेवी उत्कृष्टायु	अर्द्धपल्य पचास हृ०वर्षाधिक	जघण्यपल्य चतुर्थ जाग.
सूर्यउत्कृष्टायु.	एक पल्य सहस्त्र वर्षाधिक.	जघन्यपल्य चोथो जाग.	सूर्यदेवी उत्कृष्टायु.	अर्द्धपल्य पांच सोवर्षाधिक.	जघन्यपल्य चतुर्थ जाग.
ग्रहउत्कृष्टायु.	एकपल्योपम.	जघन्यपल्य चोथो जाग.	ग्रहदेवी उत्कृष्टायु.	अर्द्ध पल्योपम ॥	जघन्यपल्य चतुर्थ जाग.
नक्षत्र उत्कृष्टायु.	अर्धपल्योपम.	जघन्यपल्य चोथो जाग.	नक्षत्रदेवी उत्कृष्टायु.	पल्यनो चोथो जाग.	जघन्यपल्य चतुर्थ जाग.
ताराणामुत्कृष्टायु.	पल्य चतुर्थ जाग साधिक.	जघन्यपल्याष्टम जाग.	तारादेवी उत्कृष्टायु.	पल्य अष्टम जाग साधिक.	जघन्यपल्य ८ जागसाधिक.

सौधर्म अने ईशानदेवलोके परिग्रहिता अपरिग्रहिता देवीना आयुनो यंत्र.

सौधर्मपरि०देवी आ०	जघन्य पल्योपम. १	उत्कृष्ट पल्यो० ७
ईशानपरि०देवी आ०	जघन्य पल्यो०जाजेरुं.	उत्कृष्ट पल्यो० ए
सौधर्मपरि०देवी आ०	जघन्य पल्योपम. १	उत्कृष्ट पल्यो०५०
ईशानपरि०देवी आ०	जघन्य पल्यो०जाजेरुं.	उत्कृष्ट पल्यो०५५

सौधर्मईंद्रने आयुष्यमांहे केटली देवी थाय? तेहनी संख्या कहेछे. बे करोड, पंचासी लाख, एकोतेर हजार, चारशेने अठावीश कोडी उपर सत्तावनलाख चौदहजार बशेने पचासी एटली देवीउं सौधर्म इंद्रना एक जन्मने विषे चवे.

चारे निकायना देवोनी अग्र महिषीनुं यंत्र

सौधर्मेंद्र.	अग्रमहिषी८
ईशानेंद्र.	अग्रमहिषी८
ज्योतिषी२	अग्रमहिषी४
व्यंतरेंद्र३२	अग्रमहिषी४
नागकु०१८	अग्रमहिषी६
बलींद्र.	अग्रमहिषी५
चामरेंद्र.	अग्रमहिषी५

हवे सौधर्मदेवलोक प्रमुखने विषे प्रतरनी संख्या कहे छे.

१३ सौधर्म अने ईशान बे देवलोक प्रतरतेर.
१२ सनकुमार अने माहेंद्र ए बेना बार प्रतर
६ ब्रह्मदेवलोके छ प्रतर.
५ लांतक देवलोके पांच प्रतर.
४ शुक्रदेवलोके चार प्रतर.
४ सहस्त्रार देवलोके चार प्रतर.
४ आणत अने प्राणत बेना चार प्रतर.
४ आरण अने अच्युत ए बेना चार प्रतर.
ए नवग्रैवेयके मली नव प्रतर.
१ अनुत्तरविमाने एक प्रतर.

एम सर्वे मली ऊर्ध्वलोकने विषे ६२ प्रतर छे, ते कह्या.

सौधर्मादि देवलोके प्रत्येक प्रतरे उत्कृष्टायु दर्शावनारो यंत्र.

त्यां प्रथम सौधर्म अने ईशान, ए बे देवलोके प्रतर तेर छे तेहनुं आयु लखिये छैये.

प्रतर.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
सागर.	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२
एक सागरना तेरीया भाग.	२	४	६	८	१०	१२	१	३	५	७	९	११	०
छेदांक.	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	०

सनत्कुमार अने माहेंद्र, ए बे देवलोके प्रतर बार छे, तेहने विषे आयु.

प्रतर.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सागर.	२	२	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७
बारैया भाग.	५	१०	३	८	१	६	११	४	९	२	७	०
छेदांक.	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	०

ब्रह्मदेवलोके छ प्रतरे आयुःप्रमाणं.

प्रतर.	१	२	३	४	५	६
सागर.	७	८	८	९	९	१०
छैया भाग.	३	०	३	०	३	०
छेदांक.	६	०	६	०	६	०

लांतकदेवलोके पांच प्रतरे आयुःप्रमाणं ॥

प्रतर.	१	२	३	४	५
सागर.	१०	११	१२	१३	१४
पांचीयाभाग.	४	३	२	१	०
छेदांक.	५	५	५	५	०

शुक्रदेवलोके चार प्रतरे आयुःप्रमाणं.

प्रतर.	१	२	३	४
सागर.	१४	१५	१६	१७
चोथीया भाग.	३	२	१	०
छेदांक.	४	४	४	०

सहस्रार देवलोके चार प्रतरे आयुःप्रमाणं.

प्रतर	१	२	३	४
सागर.	१७	१७	१७	१८
चोथीयाभाग.	१	२	३	०
छेदांक.	४	४	४	०

आणत अने प्राणतना चार प्रतरे आयुर्मान.

प्रतर.	१	२	३	४
सागर.	१८	१९	१९	२०
चोथीयाभाग.	२	०	२	०
छेदांक.	४	४	४	०

आरण अने अच्युते चार प्रतरे आयु.

प्रतर.	१	२	३	४
सागर.	२०	२१	२१	२२
चोथीयाभाग.	२	०	२	०
छेदांक.	४	०	४	०

नव ग्रैवेयके नव प्रतरे आयुःप्रमाण. पांच अनुत्तर विमाने आयु.

प्रतर.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	प्रतर.	१
सागर.	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	सागर.	३३
जाग.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	जाग.	०
छेदांक.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	छेदांक.	०

वैमानिक देवोमां बाशठ प्रतर छे, ते एकेका प्रतरना मध्यजागने विषे एकेक इंद्रक विमान छे एम सर्व बाशठ प्रतरे बाशठ इंद्रक विमान छे.

हवे पहेला प्रतरना उडु नामे वाटला इंद्रकविमानथकी चारे दिशाये बाशठ बाशठ विमानोनी पंक्ति निकली छे अने बीजा प्रतरना इंद्रक विमानथकी पूर्वादि चारे दिशाये एकशठ एकशठ विमानोनी पंक्ति नीकली छे. एम प्रतरे प्रतरे चारे दिशानी पंक्तिये पंक्तिये प्रत्येके एकेकुं विमान घटाडतां जइये, तेवारे छेहले बाशठमे प्रतरे अनुत्तर विमाने इंद्रक विमानथकी चारे दिशाये चार पंक्ति एकेका विमाननी थइ छे.

हवे मध्यनुं विमान वाटलुं होय ते पछी चारे दिशाये पंक्तिनुं पहेलुं एकेकुं विमान त्रिखूणुं होय, पछी चोखूणुं होय, पछी वली वाटलुं होय, पछी वली त्रिखूणुं, वली चोखूणुं होय, पछी वाटलुं होय. ए रीते त्रण प्रकारनां विमानो पंक्तिमां छे.

अने ए चार पंक्तियोना आंतराने वच्चें जे विमानो छे ते जेम रायणना फूल बूटां बूटां विखरेलां जेम तेम पड्यां होय, तेनी पेठे नंदावर्त्त, स्वस्तिक प्रमुख विविध संस्थानवालां पुष्पावकीर्ण विमानो छे. तेनी पंक्तियो नथी.

सघला वाटला गोल विमानने एक बारणुं होय अने त्रिखूणा विमानने त्रण बारणां होय. तथा चोखूणा विमानने चार बारणां होय.

पहेला प्रतरना चारे दिशि संबंधि पंक्तिगत एकेकुं विमान देवद्वीपे छे, तेमज बे बे विमान नाग समुद्रनी चारे दिशाये छे, चार चार विमान यक्ष द्वीपनी चारे दिशाये छे, तथा आठ आठ विमान जूतसमुद्रनी चारे दिशाये छे, शोल शोल विमान, स्वयंजुरमण नामा द्वीपनी चारे दिशिने विषे छे. तथा एकत्रीश एकत्रीश विमान स्वयंजूरमण समुद्रनी चारे दिशाये छे. एम मेलवतां एक दिशानां बाशठ थाय अने चारे दिशानां २४८ थाय. तेनी साथे वच्चमांनुं इंद्रक विमान मेलवीये तेवारे २४९ विमान थाय.

चोखूणा विमानने चारे दिशाये कांगरा विनानो सादो गढ होय तेने वेदिका कहिये. अने वाटला विमानने कांगरा सहित कोट होय तथा त्रिखूणीया विमानने तो जे दि

शाये वाटलां विमान होय ते दिशाये वेदिका एटले कांगरां विनानो कोट होय अने बाकीनी सर्व दिशाये कांगरां सहित कोट होय.

आवलिकागत विमानोने मांहोमांहे अंतर असंख्याता योजननुं छे अने पुष्पावकीर्णने मांहोमांहे संख्याता तथा असंख्याता योजननुं पण अंतर छे.

सौधर्म तथा ईशान, ए बे देवलोकना तेर प्रतर छे. तेमां प्रथम प्रतरनी चार दिशिनी पंक्तिनां विमान २४९ थाय. तेने मुख्य विमान कहीये. अने छेहला तेरमा प्रतरनी चार दिशिनां पंक्तिगत विमान २०१ थाय. तेने भूमि कहिये. ए बेहुने एकठां करतां ४५० थाय. तेने समास कहीये. पछी एनुं अर्द्ध करीने छेहला तेरमा प्रतर साथे गुणीये तो २९२५ पंक्तिगत विमाननी संख्या थाय. एम सघला देवलोकने विषे गणित करतां वांछित देवलोकना पंक्तिगत विमानोनी संख्या थाय.

हवे जेम सौधर्म तथा ईशान मली बे देवलोकनां पंक्तिगत विमान २९२५ थया. शेष ५९९७०७५ पुष्पावकीर्ण विमान जाणवां. सर्व मली ६०००००० विमान छे. ते समजवामां आववा माटे सर्व देवलोकोनां वाटलां, त्रिखूणां, तथा चोखूणां अने पुष्पावकीर्ण विमान संबंधि गणतरीनो यंत्र आ पुस्तकमां दाखल कर्यो छे ते जोवो.

हवे वैमानिक देवोने विषे प्रत्येक देवलोके विमाननी संख्या कहे छे.

देवलोकनां नाम.	विमान संख्या.	देवलोकनां नाम.	विमान संख्या.
सौधर्म देवलोके.	बत्रीश लाख.	सहस्रार देवलोके.	छ हजार.
ईशान देवलोके.	अठ्ठावीश लाख.	आणत प्राणत देवलोके.	चारसो विमान.
सनत्कुमार देवलोके.	बार लाख.	आरण अच्युत देवलोके.	त्रणसो विमान.
माहेंद्र देवलोके.	आठ लाख.	ग्रैवेयकना हेठिमत्रिके.	एकसो अगियार.
ब्रह्मदेवलोके.	चार लाख.	ग्रैवेयकना मध्यमत्रिके.	एकसो सात.
लांतक देवलोके.	पचास हजार.	ग्रैवेयकना उवरिमत्रिके.	एकसो विमान.
शुक्र देवलोके.	चालीश हजार.	पांचेअनुत्तरविमाने मली	पांच विमान.

सर्व मली ऊर्ध्वलोके ८४९७०२३ विमानो छे. ए विमान अत्यंत सुरभिगंध वाला माखणनी पेरे सुकुमार अने सुखकारी फरस वाला तथा उद्योतवंत मनोहर एवी देवोनी पोतानी कांतिये करीने बिराजमान छे.

लोकपालनां विमान बार लाख योजन लांबां पहोलां देवलोकना प्रत्तरमांहे जिहां इंद्रोनां निजकल्प अवतंसक विमान छे,तेनी चारदिशिने विषे चार लोकपालनां विमान छे.

भवनपतिना वीशे इंद्र जंबूद्वीपने छत्र अने मेरुपर्वतने दंडनी पेठे करवा समर्थ छे.

सौधर्म देवलोके अपरिग्रहीता देवीयोनां छ लाख विमान छे, ते देववेश्या कहेवाय छे, तेमां पण जे त्रीजा देवलोकनी निश्राये छे, ते त्रीजे देवलोकेज जाय.

ईशान देवलोके अपरिग्रहीता देवीयोनां चार लाख विमान छे, तेमां पण जे चोथा प्रमुख देवलोकना देवताउने भोगयोग्य छे, ते चोथे देवलोकेज जाय.

बधा देवो केटला प्रकारना छे? ते कहे छे.

१ इंद्र पोते सर्वचारनिकायनाइंद्रोजाणवा.
२ सामानिकदेव जे इंद्रसरखी ऋद्धिना धणी होय तेने कहेवा.
३ इंद्रसरखी ऋद्धिना धणी होय इंद्रने गुरु स्थानीया सलाह पूछवा योग्य, सर्वने पूजनीय जे देवो तेने तायत्रिंशक देवोकहीये
४ इंद्रोनी बाह्य अभ्यंतर अने मध्य एवी त्रण पर्षदाना देवो.
५ इंद्रोना शरीरनी रक्षा करनारा देवो ते अंगरक्षक आत्मरक्षक देवो जाणवा.
६ चारलोकपालना देवो ते सोम, यम, वरुण अने कुबेर ए चार जाणवा.
७ सात प्रकारना कटकना देवो.
८ प्रजाना देवो.
९ आभियोगिक ते किंकर देवो.
१० कैल्बिषिक देवो.

ए दश जातिना देवो भवनपति, व्यंतर तथा वैमानिकमां छे.

भवनपतिनी दश निकायनां आभरण उपर चिन्ह तथा शरीरना वर्ण.

दश निकायनां नाम.	असुर कुमार	नाग कुमार.	सुवर्ण कुमार.	विद्युत्कुमार	अग्नि कुमार	द्वीप कुमार.	उदधि कुमार	दिशि कुमार	वायु कुमार	स्तनित कुमार.
आभरण उपर चिन्ह.	चूडा मणि.	सर्प.	गरुड पंखी.	वज्र.	पूर्ण कलश.	सिंह.	घोडो.	हाथी	मछ.	वर्द्धमानस०
वस्त्र वर्ण.	रातां	नीलां	उज्वज्ल	नीलां	नीलां	नीलां	नीलां	उज्ज्व	संध्या	उज्ज्वल
शरीर वर्ण.	कालो	गौर.	कनक	रक्तवर्ण	रक्त.	रक्त.	गौर.	कनक	नीलो	कनक.

कटकना देवो सात प्रकारना छे, ते कहे छे.

पहेला गंधर्वानीक गांधर्वदेवो ते मृदंगधर जाणवा.	बीजा नटानीक ते नाटककरनार.	त्रीजुं घोडानुं कटक.	चोथुं हाथीनुं कटक.	पाचमुं रथनुं कटक.	छठुं पालानुं कटक.	सातमुं वृषभनुं कटक तथा पाडानुं कटक छे.

एमां प्रथमनां छ कटक सर्व इंद्रोने होय अने सातमुं वृषभनुं कटक वैमानिक देवोने होय तथा अधोनिवासी जे भवनति अने व्यंतर देवो छे तेने सातमुं महिषनुं कटक होय. एम साते प्रकारनुं कटक सर्व इंद्रोने होय.

अढीद्वीप समुद्रने विषे चंद्रमा तथा सूर्य केटला छे? तेनी संख्या कहे छे.

१ जंबूद्वीपमां बे सूर्य अने बे चंद्र.
२ लवण समुद्रमां चार सूर्य ने चार चंद्र
३ धातकी खंडमां बार चंद्र ने बार सूर्य.
४ कालोद समुद्रमां धातकी खंडना बारने त्रिगुणा करतां छत्रीश थाय तेमां जंबूद्वीपने लवण समुद्रना छ मेलीये,तेवारे बेहेंतालीश चंद्र अने बेहेंतालीश सूर्य थाय.
५ पुष्करवर द्वीपमां धातकी खंडना बेहेंतालीने त्रिगुणा करतां १२६ थाय तेनी साथे जंबूद्वीपना बे, लवण समुद्रना चार अने धातकीखंडना बार मली अढार मेलवीये, तेवारे १४४ थाय, तेमां अर्द्धद्वीपे ७२ चंद्र अने ७२ सूर्य आवे.

सर्व मेलवतां जंबूद्वीपना बे, लवण समुद्रना चार, धातकीखंडना बार, कालोद समुद्रना बेहेंतालीश अने पुष्करार्द्धना बहोंतेर मली १३२ चंद्र अने १३२ सूर्य थाय. अढीद्वीपमां सूर्यनीपंक्ति बे तथा चंद्रमानी पंक्ति बे एकेक पंक्तिमांएकेकने आंतरेछाशठ छाशठ सूर्य तथा छाशठ छाशठ चंद्र छे.

१ ज्योतिषीनां महा रमणिक स्फाटिकरत्नमय विमान, अर्द्धा कोठ फलने आकारे छे.
२ ते विमान व्यंतरना नगरोथकी असंख्यात गुणां छे.
३ लवण समुद्रमां ज्योतिषीनां विमान पाणीने फाडी नाखे एवा दिगस्फाटिक रत्नमय छे तेथी लवण शिखामांथी चाल्या जता बाधा थती नथी.

हवे ज्योतिषीनी शीघ्रशीघ्रतरगति कहेछे.

१ सर्वथकी थोडो चंद्रमा चाले.
२ तेथकी सूर्य शीघ्र चाले.
३ तेथकी ग्रह शीघ्र चाले.
४ तेथकी नक्षत्र शीघ्र चाले.
५ तेथकी तारा शीघ्र चाले.

हवे ए ज्योतिषीनी ऋद्धि कहे छे.

१ सर्वथकी तारानी स्वल्प ऋद्धि छे.
२ तेथकी नक्षत्रनी ऋद्धि अधिक छे.
३ तेथकी ग्रहनी महोटी ऋद्धि छे.
४ तेथकी सूर्यनी महोटी ऋद्धि छे.
५ तेथकी चंद्रमानी महोटी ऋद्धि छे.

हवे चंद्रसूर्यादिक ज्योतिषीना विमानवाहक देवोनी संख्या कहे छे.

१ चंद्र विमान वाहक शोलहजार देवो छे.
२ सूर्य विमान वाहक शोलहजार देवो छे.
३ ग्रह विमान वाहक आठ हजार देवो छे.
४ नक्षत्र विमान वाहक चारहजार देवो छे.
५ ताराना विमान वाहक बे हजार देवो छे.
६ ए पांचे ज्योतिषीयोना जे विमान वाहक छे ते बरावर सरखे चोथे भागे एकेकी दिशिये जूदे जूदे रूपे वहे छे, तेमां चंद्रमाना पूर्वदिशाये सिंहने रूपे तथा दक्षिणदिशे हाथीने रूपे, पश्चिमदिशिये वृषभने रूपे अने उत्तरदिशिये अश्वने रूपे चार चार हजार किंकर देवो वहे छे.

१ एक चंद्रमानी पछवाडे अठ्ठाशी ग्रह, अठ्ठावीश नक्षत्र, ६६९७५ एटली कोडाकोडी तारा, एटलो परिवार चाले.

२ राहुनुं विमान कालुं छे सर्वदा चंद्रमानी हेठे चार अंगुल छेटे चाले छे. तिहां राहु बे प्रकारे छे एक नित्यराहु अने बीजो पर्वराहु छे, ते पर्वराहु जघन्यथी छ महीने चंद्र विमानने ग्रहण करे छे.

ज्योतिषी देवोना विमानोनी लंबाइ पहोलाइ तथा उंचपणानो यंत्र.

ज्योतिषी देवोना प्रकार.	मनुष्य क्षेत्र मांहेला विमानोनी लंबाइ पहोलाइ एक योजनना एकशठिया भाग.	विमानोनुं उच्चपणुं योजनना एकशठिया भाग.	मनुष्यक्षेत्रथी बाहिरला विमानोनी लंबाइ पहोलाइ योजनना एकशठिया भाग.	मनुष्यक्षेत्रथी बाहिरला विमानोनुं उच्चपणुं योजनना एकशठिया भाग.
१ चंद्रमा.	छप्पन भाग.	अठ्ठावीश भाग.	अठ्ठावीश भाग.	चौद भाग.
२ सूर्य.	अडतालीश भाग.	चोवीश भाग.	चोवीश भाग.	बार भाग.
३ ग्रह.	बे गाउ.	एक गाउ.	एक गाउ.	अर्द्ध गाउ.
४ नक्षत्र.	एक गाउ.	अर्द्ध गाउ.	अर्द्ध गाउ.	गाउनो चोथो भा.
५ तारा.	अर्द्ध गाउ.	गाउनोचोथोभा.	गाउनो चोथो भाग.	गाउनो आठमो०

ज्योतिषीनां विमानो समभूतलथकी केटलां उंचां छे? तेना यंत्रनी स्थापना.

समभूतला० पृथ्वी थकी.	तारा.	सूर्य.	चंद्र.	नक्षत्र.	बुध,	शुक्र.	बृहस्पति.	मंगल.	शनि.
	७९०	८००	८८०	८८४	८८८	८९१	८९४	८९७	९००

सर्व नक्षत्रमां सर्वथकी हेठे भरणी नक्षत्र चाले छे अने स्वाति नक्षत्र उपर चाले छे तथा सर्वथी बाहिर मूल नक्षत्र चाले छे अने सर्वनी वचाले अभिजित् नक्षत्र चाले छे.

केटला एक समुद्र संबंधी पाणीना स्वाद तथा तेमां रहेला मत्स्योना अल्प बहुत्व अने ते मत्स्यना शरीर माननो यंत्र.

समुद्रनां नाम.	वारुणिवर समुद्र.	क्षीरवर समुद्र.	घृतवर समुद्र.	लवण समुद्र.	कालोदधि समुद्र.	पुष्करवर समुद्र.	स्वयंभूरमण समुद्र.	बाकीअसंख्याता स०
पाणीनो स्वाद.	मदिरा समान.	क्षीरदुधनो स्वाद.	चोखाघृतनोस्वाद	लुणनो स्वाद.	मधनो स्वाद.	मेहनुं पाणी.	मेहनुं पाणी.	इक्षुरस जेवो स्वाद.
मत्स्यसं०	अल्प.	अल्प.	अल्प.	बहु.	बहु.	अल्प.	बहु.	अल्प.
मत्स्यदेह मान.	तुछदेह मान.	अल्पदेह मान.	तुछ देह मान.	५०० योजन.	७०० योजन.	छोटोदेह मान.	१००० योजन.	तुछदेह. मान.

हवे वैमानिक देवोना शरीरनुं प्रमाण,तेमना आयु उपर कहे छे. जेम के सौधर्म तथा ईशान देवलोके बे सागरोपम उत्कृष्टायु छे तेमनुं शरीर सात हाथ प्रमाण छे. तो सनत्कुमार तथा माहेंद्रे सात सागरोपम उत्कृष्ट स्थिति छे. तेमांथी पूर्वोक्त बे सागरोपम काढीये,तेवारे शेष पांच सागरोपम रहे, तेमांथी पण वली त्रण सागरोपमायु वालानुं शरीर मान कहेवुं छे माटे बीजो पण एक आंक ओछो करीये, तेवारे शेष चार आंक रहे.

तिहां सौधर्म तथा ईशान देवलोकना देवोनुं शरीर सात हाथनुं छे, तेमांथी छ हाथ पूरा राखीये बाकी एक हाथना अगीयार भाग करीये, ते मांहेला चार भाग काहाढी लइये. बाकी सात भाग परूता मूकीये तेवारे सनत्कुमार तथा माहेंद्र देवलोकना त्रण सागरोपमायुवाला देवोनुं छ हाथ पूरा अने तेनी उपर एक हाथना अगीयार भाग करीये तेवारे चार भाग, एटलुं देहमान थाय. एम आयुष्यनुं एकेको सागरोपम वधारतां शरीरना मानमांथी एक हाथनो अगीयारियो एकेको भाग घटारूतां संपूर्ण सात सागरोपम आयुवाला देवोनुं पूरुं छ हाथ देहमान थाय.

तथा ब्रह्मदेवलोके अने लांतकदेवलोके चौद सागरोपमनी उत्कृष्टी स्थिति छे. तेमांथी त्रीजा चोथा देवलोकना आठ सागरवाला देवोनुं आयु कहेवुं छे, माटे आठ काहाढी नाखीये शेष छ आंक रहे. हवे एक हाथना अगीयार भाग करीये, तेमांथी पांच भाग परूता मूकीये बाकी छ भाग राखीये,तेवारे पांचमा, छठा देवलोकना आठ सागरोपम आयुवाला देवोनुं पांच हाथनीउपर एक हाथना अगीआरीया छ भाग एटलुं देहमान जाणवुं.ए रीते सर्व देवलोकोनेविषे वर्त्तारो करवो,एनो यंत्र नीचे लखेलो छे ते जोइ लेवो.

सामान्यपणे भवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी, अने सौधर्म, ईशान, पर्यंत सात हाथ शरीर छे. उपरांत सनत्कुमारथी मांमी बारमो अच्युतदेवलोक तथा नवग्रैवेयक अने पंचानुत्तरे ज्यां जेटला सागरोपमायु छे, त्यां आ प्रमाणे शरीनुं मान कहेवुं.

सागर.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
हस्त.	७	७	६	६	६	६	६	५	५	५	५	५	५	५	४	४
भाग.	०	०	४	३	२	१	०	६	५	४	३	२	१	०	३	२
छेदांक.	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११

सागर.	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३
हस्त.	४	४	३	३	३	३	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१
भाग.	१	०	३	२	१	०	८	७	६	५	४	३	२	१	०	१	०
छेदांक.	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११

सर्वे इंद्रोना सामानिक देवो, गुरुस्थानीया तायत्रिंशक देवो, आत्मरक्षक देवो, लोकपाल तथा पर्षदानी संख्या, कटकना प्रकार कटकाधिपनी संख्यानो यंत्र.

इंद्रोनां नाम	सामानिकदेव.	ताय०	आत्मरक्ष.	लोकपा.	पर्षदा.	अनीक.	अनीकाधि.
चमरेंद्र.	६४०००	३३	२५६०००	४	३	७	७
बलींद्र.	६००००	३३	२४००००	४	३	७	७
धरणेंद्रप्रमुख १८	६०००	३३	२४०००	४	३	७	७
व्यंतरेंद्र बत्रीश.	४०००	०	१६०००	०	३	७	७
चंद्रसूर्य २.	४०००	०	१६०००	०	३	७	७
सौधर्मेंद्र.	८४०००	४३	३३६०००	४	३	७	७
ईशानेंद्र.	८००००	३३	३२००००	४	३	७	७
सनत्कुमारेंद्र.	७२०००	३३	२८८०००	४	३	७	७
माहेंद्र.	७००००	३३	२८००००	४	३	७	७
ब्रह्मेंद्र.	६००००	३३	२४००००	४	३	७	७
लांतकेंद्र.	५००००	३३	२०००००	४	३	७	७
शुक्रेंद्र.	४००००	३३	१६००००	४	३	७	७
सहस्रारेंद्र.	३००००	३३	१२००००	४	३	७	७
आनतप्राणत.	२००००	३३	८००००	४	३	७	७
आरण अच्युत.	१००००	३३	४००००	४	३	७	७

व्यंतर तथा वाणव्यंतर देवोना दक्षिण उत्तर इंद्र तथा चिन्ह अने शरीरना वर्ण.

वाणव्यंतर	दक्षिणेंद्र.	उत्तरेंद्र.	व्यंतरनि०	दक्षिणेंद्र.	उत्तरेंद्र.	चिन्ह.	वर्ण.
अणपन्नी.	सन्निहित.	सन्मान.	पिशाच.	काल.	माहाकाल.	कदंबवृक्ष.	कालेवर्णे.
पणपन्नी.	धाता.	विधाता.	भूत.	सुरूप.	प्रतिरूप.	शूलसवृक्ष.	कालेवर्णे.
ऋषिवादी.	ऋषि.	ऋषिपाल.	यक्ष.	पूर्णभद्र.	मणिभद्र.	वडवृक्ष.	कालेवर्णे.
भूतवादी.	ईश्वर.	महेश्वर.	राक्षस.	भीम.	माहाभीम.	खट्वांग.	धवलवर्णे
कंदी.	सुवछ.	विशाल.	किन्नर.	किन्नर.	किंपुरुष.	अशोकवृक्ष.	नीलवर्णे.
महाकंदी	हास्य.	हास्यरति.	किंपुरुष.	सुपुरुष.	महापुरुष.	चंपकवृक्ष.	धवलवर्णे
कोहंडग.	श्वेत.	महाश्वेत.	महोरग.	अतिकाय	महाकाय.	नागवृक्ष.	कालेवर्णे.
प्लवक.	प्लवक.	प्लवकपति.	गंधर्व.	गीतरति.	गीतयश.	टींवरुवृक्ष.	कालेवर्णे.

प्रत्येक देवलोके प्रतरे प्रतरे चतुरस्र प्रमुख जूदी जूदी जातना विमानोनी संख्यानो यंत्र.

सौधर्मईशाने प्रतर.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	सर्वसंख्या.
त्र्यंश विमान.	८४	८४	८०	८०	८०	७६	७६	७६	७२	७२	७२	६८	६८	९८८
चतुरस्र विमान.	८४	८०	८०	८०	७६	७६	७६	७२	७२	७२	६८	६८	६८	९७२
वृत्त विमान.	८१	८१	८१	७७	७७	७७	७३	७३	७३	६९	६९	६९	६५	९६५
सर्व संख्या.	२४९	२४५	२४१	२३७	२३३	२२९	२२५	२२१	२१७	२१३	२०९	२०५	२०१	२९२५

सनत्कुमार माहेंद्र प्रतर.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सर्वसंख्या.
त्र्यंश विमान.	६८	६४	६४	६४	६०	६०	६०	५६	५६	५६	५२	५२	७१२
चतुरस्र विमान.	६४	६४	६४	६०	६०	६०	५६	५६	५६	५२	५२	५२	६९६
वृत्त विमान.	६५	६५	६१	६१	६१	५७	५७	५७	५३	५३	५३	४९	६९२
सर्व विमान संख्या	१९७	१९३	१८९	१८५	१८१	१७७	१७३	१६९	१६५	१६१	१५७	१५३	२१००

ब्रह्मदेवलोकेप्रतर.	१	२	३	४	५	६	सर्वसं०	शुक्रदेव० प्र०	१	२	३	४	सर्वसंख्या.
त्र्यंश विमान.	५२	४८	४८	४८	४४	४४	२८४	त्र्यंश विमान.	३६	३६	३२	३२	१३५
चतुरस्र विमान.	४८	४८	४८	४४	४४	४४	२७६	चतुरस्रविमान.	३६	३२	३२	३२	१३२
वृत्त विमान.	४९	४९	४५	४५	४५	४१	२७४	वृत्त विमान.	३३	३३	३३	२९	१२८
सर्व विमानसंख्या.	१४९	१४५	१४१	१३७	१३३	१२९	८३४	सर्वविमानसं०	१०५	१०१	९७	९३	३९६

लांतकदेवलोके प्र०	१	२	३	४	५	सर्वसं०	सहस्रारदे० प्र०	१	२	३	४	सर्वसंख्या.
त्र्यंश विमान.	४४	४०	४०	४०	३६	२००	त्र्यंशविमान.	३२	२८	२८	२८	११६
चतुरस्र विमान.	४०	४०	४०	३६	३६	१९२	चतुरस्रविमान.	२८	२८	२८	२४	१०८
वृत्त विमान.	४१	४१	३७	३७	३७	१९३	वृत्तविमान.	२९	२९	२५	२५	१०८
सर्वविमानसंख्या.	१२५	१२१	११७	११३	१०९	५८५	सर्वविमानसं०	८९	८५	८१	७७	३३२

आनत, प्राणत दे० प्र.	१	२	३	४	सर्वसंख्या.
त्र्यंश विमान.	२४	२४	२४	२०	९२
चतुरस्र विमान.	२४	२४	२०	२०	८८
वृत्त विमान.	२५	२१	२१	२५	८८
सर्वविमानसंख्या.	७३	६९	६५	६१	२६८

अरणअनेअच्युतदे.	१	२	३	४	सर्वसंख्या.
त्र्यंशविमान.	२०	२०	१६	१६	७२
चतुरस्र विमान.	२०	१६	१६	१६	६८
वृत्त विमान.	१७	१७	१७	१३	६४
सर्व विमानसंख्या.	५७	५३	४९	४५	२०४

ग्रैवेयकपहेलात्रिके प्र०	१	२	३	सर्वसंख्या.
त्र्यंश विमान.	१६	१२	१२	४०
चतुरस्र विमान.	१२	१२	१२	३६
वृत्तविमान.	१३	१३	९	३५
सर्वविमानसंख्या.	४१	३७	३३	१११

ग्रैवेयकउपरिमत्रिके प्र.	१	२	३	सर्वसंख्या.
त्र्यंश विमान.	८	४	४	१६
चतुरस्र विमान.	४	४	४	१२
वृत्त विमान.	५	५	१	११
सर्वविमानसंख्या.	१७	१३	९	३९

ग्रैवेयकमध्यत्रिके प्रतर.	१	२	३	सर्वसंख्या.
त्र्यंश विमान.	१२	८	८	२८
चतुरस्रविमान.	८	८	८	२४
वृत्त विमान.	९	९	५	२३
सर्वविमानसंख्या.	२९	२५	२१	७५

पंचानुत्तरविमाने प्रतर.	१	सर्वसंख्या.
त्र्यंश विमान.	४	४
चतुरस्रविमान.	०	०
वृत्त विमान.	१	१
सर्वविमानसंख्या.	५	५

वैमानिकमां प्रत्येक देवलोके वाटलां, त्रिखूणां, चौखूणां अने पुष्पावकीर्ण विमानोनी संख्यानो यंत्र.

देवलो०	सौधर्म.	ईशान.	सनत्कु०	माहेंद्र	ब्रह्मं.	लांतके	शुक्रं.	सहस्रा.	आ.प्रा.	आ.	अधो	मध्य	उप०	पंचा०	सर्व संख्या.
वाटलां०	७२७	२३८	५२२	१७०	२७४	१९३	१२८	१०८	८८	६४	३५	२३	११	१	२५८२
खूणां.	४९४	४९४	३५५	३५६	२८४	२००	१३६	११६	९२	७२	४०	२८	१६	४	२५८८
चोखूणां	४८६	४८६	३४८	३४८	२७६	१९२	१३२	१०८	८८	६८	३६	२४	१२	०	२६०४

वैमानिक देवोनां चिन्ह तथा मुख्य विमाननुं नाम तथा विमानोना वर्ण अने विमानोनुं उंचपणुं तथा पृथ्विपिंड ते कया देवलोके केटलो उंचपणे छे? तथा तेमनां विमान शेने आधारे रह्यां छे? तेनो यंत्र.

देवलोकनुंनाम.	शेनेआधारेरह्या.	चिन्ह.	इंद्रविमान.	पृथ्विपिं०	उंचपणुं.	विमान वर्ण.				
						कालो.	नीलो.	रातो.	पीलो.	धोलो.
सौधर्मदेवलोक.	घनोदधि आधारे.	मृगनुं.	सर्वतोभद्र.	२७००	५००	कालो.	नीलो.	रातो	पीलो.	धोलो.
ईशानदेवलोक.	घनोदधि आधारे.	महिष.	विमल.	२७००	५००	कालो.	नीलो.	रातो.	पीलो.	धोलो.
सनत्कुमारदेव.	घनवात आधारे.	वाराह.	मनोरम.	२६००	६००	०	नीलो.	रातो.	पीलो.	धोलो.
माहेंद्रदेवलोक.	घनवात आधारे.	सिंह.	प्रियंगम.	२६००	६००	०	नीलो.	रातो.	पीलो.	धोलो.
ब्रह्म देवलोक.	घनवात आधारे.	बकरो.	कामग.	२५००	७००	०	०	रातो.	पीलो.	धोलो.
लांतकदेवलोक.	घनोदधि घनवात.	देडको.	नंदावर्त्त.	२५००	७००	०	०	रातो.	पीलो.	धोलो.
शुक्र देवलोक.	घनोदधि घनवात.	अश्व.	श्रीवत्स.	२४००	८००	०	०	०	पीलो.	धोलो.
सहस्रारदेवलो.	घनोदधि घनवात.	हाथी.	सौमनस्य.	२४००	८००	०	०	०	पीलो.	धोलो.
आनतदेवलोक.	आकाशने आधारे	सर्प.	पुष्पकवि	२३००	९००	०	०	०	०	धोलो.
प्राणतदेवलोक	आकाशने आधारे	गेंडो.		२३००	९००	०	०	०	०	धोलो.
आरणदेवलोक	आकाशने आधारे	वृषभ.	पालक.	२३००	९००	०	०	०	०	धोलो.
अच्युतदेवलोक	आकाशने आधारे	मृगविशे.		२३००	९००	०	०	०	०	धोलो.
नवग्रैवेयक.	आकाशने आधारे	०	०	२२००	१०००	०	०	०	०	धोलो.
पंचानुत्तरविमा-	आकाशने आधारे	०	०	२१००	११००	०	०	०	०	धोलो.

१ एक लवण समुद्रमां जंबूद्वीप सरखा चोवीश खंड समाय.
२ धातकी खंडमां जंबूद्वीप सरखा १४४ खंड समाय.
३ कालोद समुद्रमां जंबूद्वीप सरखा ६७२ खंड समाय.
४ पुष्करार्द्धमां जंबूद्वीप सरखा २४७४ खंड समाय.
५ आखा पुष्करार्द्धमां जंबूद्वीप सरखा ११९०४ खंड समाय.

१ जेवा विमानोना वर्ण तेवाज ते विमानोनी ध्वजाओना वर्ण पण जाणी लेवा.
२ भवनपति, व्यंतर अने ज्योतिषी देवोना विमानो कोइ कालां, कोइ नीलां, कोइ पीलां, कोइ रातां अने कोइ श्वेत एम विविध वर्ण वालां छे.

१ सौधर्म ईशान देवलोके दक्षिणदिशिना [illegible] विमानोनी पंक्ति ते दक्षिणेंद्रनी जाणवी.

२ उत्तरदिशिना विमानोनी पंक्ति उत्तरेंद्रनी.

३ पूर्व अने पश्चिमदिशाये जे आवलिकागत [illegible] त चारखां विमान छे, ते सर्व दक्षिणेंद्रनांछे.

४ पूर्वदिशिये जे आवलिकागत [illegible] विमान, ते केटु [illegible] छे.

५ पूर्वदिशिये जे प्रथम मध्यमां इंद्रक [illegible] विमान छे, ते सर्व [illegible] छे.

६ पुष्पावकीर्ण विमान [illegible] छे.

वैमानिकदेवोमां प्रत्येकदेवलोके विमानोनीसंख्याआवलिकागत मुख भूमिसमासादिकनी

देवलोक नाम.	सौधर्मेशान.	सनत्कुमारमाहेंद्र	ब्रह्म देवलोक.	लांतकदेवलोक.	शुक्रदेवलो
मुख.	२४९	१९७	१४९	१२५	१०
भूमि.	२०१	१५३	१२९	१०९	९
समास.	४५०	३५०	२७८	२३४	१९
तदर्द्ध.	२२५	१७५	१३९	११७	९
प्रतरे गुणवाना.	१३	१२	६	५	
आवली संख्या.	२९२५	२१००	८३४	५८५	३९
पुष्पावकीर्ण.	५९९७०७५	१९९७९००	३९९१६६	४९४१५	३९६०
सर्वसंख्या.	६०००००	२००००००	४०००००	५००००	४०००

	सहस्रार देवलोक.	आनत प्राणत.	आरण अच्युत.	अधो ग्रैवेयकत्रिक.	मध्य ग्रैवेयकत्रिक.	ऊर्ध्व ग्रैवेयकत्रिक.	पंचानुत्तर.	ऊर्ध्वलोके सर्व संख्या.
मुख.	८९	७३	५७	४१	२९	१७	५	२४९
भूमि.	७७	६१	४५	३३	२१	९	०	५
समास.	१६६	१३४	१०२	७४	५०	२६	०	२५४
तदर्द्ध.	८३	६७	५१	३७	२५	१३	०	१२७
प्रतरे गुणवाना.	४	४	४	३	३	३	१	६२
आवली संख्या.	३३२	२६८	२०४	१११	७५	३९	५	७८७४
पुष्पावकीर्ण.	५६६८	१३२	९६	०	३२	६१	०	८४८९१४९
सर्वसंख्या.	६०००	४००	३००	१११	१०७	१००	५	८४९७०२३

हवे भवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी अने पहेला बीजा देवलोकना देवो कायाये करी सं भोग सेवे छे. मनुष्यनी पेठे भोगवे छे, परंतु मनुष्यने, स्त्रीनी सेवा करतां वीर्य खरे एटले कामथी निवृत्ति पामे. अने देवताने वीर्य होय नही, माटे अतृप्ताज होय. जेवारे क्यारेक मन निवर्त्ते, तेवारेज संभोग न होय, नहींकां अतृप्त थका सर्वदा भोग भोगवताज रहेछे

त्रीजा चोथा देवलोकना देवो मुख, हाथ, नख, स्तन प्रमुखना फरसे संजोग सुख पामे. पांचमा छठा देवलोकना देवो देवांगनानां रूप देखी संजोगसुख पामे. सातमा आठमादेवलोकनादेवो देवांगनाना गीत,हास्यना शब्द सांजलीनेसंजोगसुखपामे उपरांत आणतादि चार देवलोकना देवता तो पोताने स्थानके रह्या थकाज जे देवांगनानी मनमां चिंतवणा करे, तेवारे ते देवी पण पोताने स्थानकें बेठी जलीबुरी कामचेष्टा मनमां धरतीजोग माटे सावधान थाय,तेवारे ते देवो तिहांज रह्या मनःसंकल्पे सुरत सुख पामे.

नवग्रैवेयक तथा अनुतरविमानवासी देवोने विषयविकार अल्प छे, तेथी ते कोइ रीते देवांगनाने सेवता नथी तथापि तेमने सुख बीजा देवोथी पण अनंतगुणुं छे.

सौधर्म तथा ईशान देवलोकनी देविउं कया देवलोकवालाने केटला आयुवाली जोग मां आवे? तथा ते देवोने जोगनी इछा केवी रीते पूर्ण थाय? तेनो यंत्र.

जवनपति,व्यंतर अने ज्योतिषी देवो सर्व काय सेवीछे.अने वैमानिक देवोनो यंत्रआप्योछे.

सौधर्म. १	पल्यो० १	काय जोग सेवी.	ईशान. २	पल्यो० १	काय जोग सेवी.
सनत्कु० ३	पल्यो० १०	फरसजोग सेवी.	माहेंद्र. ४	पल्योप० १५	फरसजोग सेवी.
ब्रह्मदेव. ५	पल्यो० २०	रूपदेखी जोगसेवी.	लांतक. ६	पल्योप० २५	रूपदेखी जोग सेवी.
शुक्रलोक.७	पल्यो० ३०	शब्दजोग सेवी.	सहस्रा. ८	पल्योप० ३५	शब्दसंजोग सेवी.
आनत. ९	पल्यो० ४०	मनेकरी,मनसेवी.	प्राणत. १०	पल्योप० ४५	मनेकरी जोग सेवी.
आरण. ११	पल्यो० ५०	मनेकरीजो०मनसे.	अच्युत.१२	पल्योप० ५५	मनेकरी जोग सेवी.

सौधर्म तथा ईशान देवलोकनी देवीयोनुं गमनागमन कया कया देवलोक सुधी छे. तेनो यंत्र तथा त्रण प्रकारना किल्बिषीया देवोनुं आयु अने उत्पत्ति स्थाननो यंत्र.

सौधर्मदेवलोकनी.	१–२–३–४	किल्विषी देवोनुं.	आयुष्य.	उत्पत्तिस्थान.
देवीनुं गमनागमन.	५–६–७–८	किल्विषी देवोनुं.	पल्य. ३	सौधर्म ईशाननी नीचें.
ईशान देवलोकनी.	१–२–३–४	किल्विषी देवोनुं.	सागर. ३	सनत्कु० माहेंद्रनीचे.
देवीनुं गमनागमन.	५–६–७–८	किल्विषी देवोनुं.	सागर.१३	ब्रह्मलांतकनी नीचे.

हवे किल्वषीया देवोनो अधिकार कहे छे.

ए देवो अशुजकर्मना उदयथी देवतामांहे चंमाल सरखा जाणवा, तेमनां स्थानक कहे छे.

१ जे देवो सौधर्म तथा ईशान देवलोकने तले वसे छे, तेनुं त्रण पल्योपमायुं छे.

२ जे देवो सनत्कुमार देवलोकने तले वसे छे, तेनुं त्रण सागरोपम आयु छे.

३ जे देवो लांतक देवलोकने अधोजागे वसे छे, तेनुं तेर सागरोपमायु छे.

हवे वैमानिक देवोनां शरीरना वर्ण कहे छे.

१ सौधर्मईशान ए बे देवलोकना देवोनां शरीर सुवर्ण सरखी कांतिवालां छे.
२ त्रीजा चोथा अने पांचमा देवलोकना देवोनां शरीरनी कांति कमलना केसरा जेवी छे.
३ छठा लांतक आदिक सर्व देवोनां शरीर एक बीजाथी उत्तरोत्तर उज्ज्वल उज्ज्वलतर अने उज्ज्वलतम शरीरवाला जाणवा.

हवे लोकांतिक देवोनुं स्वरूप कहे छे.

आ जंबूद्वीपथकी असंख्याता द्वीप समुद्र उल्लंघीये, तेवारे अरुणवर नामा द्वीपनी वेदिकाना छेहेमाथी अरुणवर नामा समुद्रमां बेहेतालीश हजार योजन जइये, तिहां पाणीनी उपरना तलीयाथी उंचो अप्‌कायमय,महांधकाररूप तमस्काय निकल्यो छे, ते अगीयारसो योजन सुधी नींत सरखो थइने पछी तीर्छो विस्तार पामतो पामतो सौधर्मादि चार देवलोकने आवरी उंचो ब्रह्मदेवलोकना अरिष्टनामा त्रीजा प्रतरे जइ रह्यो छे.

हवे पांचमा देवलोकनो जे त्रीजो प्रतर छे तेना अरिष्ठनामा विमाननी चारे दिशाये सचित्त पृथ्वीमय बे बे कृष्णराजियो छे,

एम चारे दिशिनी आठ कृष्णराजि नाटकना अखाडाने आकारे छे, ते आठे कृष्णराजिना आठ आंतरामां आठ विमान छे. अने नवमुं कृष्णराजिनी वचमां मध्यनागे विमान छे. ए नव विमानवासी देवो ते ब्रह्मलोकना समीपे वसे, माटे लोकांतिक देवो कहेवाय अथवा वचला मध्यनागना विमानवासी देवता सर्व एकावतारी छे माटे लोकशब्दे संसार, तेने अंते थया, माटे लोकांतिक देव कहेवाय छे.

बीजा आठ विमानमां वसनारा देवता एकांते एकावतारी न होय पण नवमा विमानना देवो एकांते एकावतारीज होय, ए नव प्रकारना लोकांतिक देवो पांचमा देवलोकने छेहडे वसे छे, तेमनुं आठ सागरोपमायु छे. तेमना विमानोनां नाम तथा पोतानां नाम अने जेमने जेटला देवोनो परिवार छे, तेनी संख्या नीचे लखीये छैये.

विमाननांनाम	देवोनां नाम.	परिवार संख्या.			
१ अर्चिवि०	सारस्वत देव.	सातशे देवो.	५ चंद्राजविं०	गर्द्दतोय देव.	सात हजारदेव
२ अर्चिमाली	आदित्य देव.	सातशे देवो.	६ सूर्याजवि०	तुषित देव.	सातहजारदेवो
३ वैरोचन.	वन्हि देव.	चौदशे देवो.	७ शुक्राजवि०	अव्याबाधदेव	नवशे देवो.
४ प्रजंकर.	वरुण देव.	चौदशे देवो.	८ सुप्रतिष्ठाज.	आग्नेय देव.	नवशे देवो.
			९ रिष्ठाजवि०	रिष्टाज देव.	नवशे देवोपरि.

हवे पीस्तालीश लाख योजनना त्रण पदार्थ छे, तेनां नाम कहे छे.

१ सीमंतनामे नरकावासो. २ मनुष्यक्षेत्र अढीद्वीप प्रमाण. ३ उडुविमान. ४ सिद्धशिला.

हवे त्रण पदार्थ एक लाख योजनना छे, ते कहे छे,

१ अपइठाणो सातमा नरकनो नरकावासो, २ सर्वार्थसिद्ध विमान, अने ३ जंबूद्वीप.

हवे देवता कहेवा होय? तेनुं स्वरूप कहे छे.

१ सर्व देवता शुभकर्मना उदयथी केश, हाड, मांस, दाढी मूछना रोमनी वृद्धि, नख, रुधिर, वसा, चरबी, चामडी, मूत्र, विष्टा, एणे करी रहित निर्मल होय अने कर्पूर, कस्तूरीना सुगंध सरखो मुखनो निःश्वास होय, रजःप्रस्वेदादिक उपलेप रहित, कास श्वासादिक रोग रहित निरुज होय. तेजवंत शरीर होय.

२ उपजती वेलाये शालिभद्र प्रमुखना पितानी पेठे अंतरमुहूर्त्तमांहे पर्याप्ति पूरी करी पछी तरुण पुरुष सरखा निरंतर होय.

३ उपजतांज शरीरने विषे सर्व आभूषण पहेर्यां थकां उपजे.

४ सदा यौवनावस्था रहे, पण क्यारे वृद्धावस्था न आवे.

५ समचतुरस्र संस्थान होय. ६ आंख मटकावे नही निरंतर उघाडी रहे.

७ फूलनी माला पहेरेली कुमलाय नही. ८ चार आंगुल धरतीथी ऊंचा चाले.

हवे जे कारणे देवोने मनुष्यलोकमां आववुं पडे, ते कारणो कहे छे.

१ श्रीतीर्थंकरना पांच कल्याणिके आवे. २ महाऋषीश्वरनी तपस्याना प्रभावे आवे.

३ जन्मांतरना स्नेहथी इहां आवे. ४ संगमानी पेठे क्रोधथी इहां आवे.

५ शीलना प्रभावे आवे, सुभद्रा शेठाणी माटे आव्या तेनी पेठे जाणवुं.

हवे देवता इहां कारण विना शामाटे न आवे? ते कहे छे.

१ देवांगनाना प्रेममां मग्न रह्या छे माटे. २ विषयसुखमां घणा आसक्त छे माटे.

३ मनुष्यने आधीन रहेवानुं काम नथी. ४ इहां जेवारे मनुष्य, तिर्यंचनां कलेवर घणा मुवेलां होय, तेवारे पांचशे योजन गंध ऊंचो जाय अशुभ गंध जाणे माटे नआवे,

हवे वैमानिक देवोना अवधिज्ञाननी स्थिति कहे छे.

१ सौधर्मदेवलोकना देवता तीर्छा असंख्याता द्वीप समुद्र देखे अने उपरला देवता तेथी घणा असंख्याता द्वीप समुद्र देखे. अने ऊंचुं पोताना विमाननी चूलिका ध्वजा सुधी देखे.

हवे नीचे क्यांसुधी देखे? ते कहे छे.

१ पहेला बे देवलोकवाला पहेली नरक लगे देखे. २ त्रीजा चोथावाला बीजी नरक लगे.

३ ब्रह्मलांतक वाला त्रीजी नरक लगे देखे. ४ शुक्रसहस्रार वाला चोथी नरक लगे देखे.

५ आणतादि चारवाला पांचमी नरक लगे देखे. ६ छ ग्रैवेयकना देवो छठी नरक लगे देखे.

७ उपरला त्रण ग्रैवेयक सातमी लगे देखे. ८ अनुत्तरना देवो कांइक ऊणुं लोकनाल देखे.

हवे सामान्यथी शेष देवोनो अवधि कहे छे.

१ जे सागरोपमथी किंचित् न्युन आउखावाला एवा नवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी देवता छे ते अवधिज्ञाने करी संख्याता योजन पर्यंत देखे.
२ अर्द्ध सागरोपमथी वधता आउखावाला देवता असंख्याता योजन पर्यंत देखे.
३ जघन्यथी दश हजार वर्षायुवाला एवा नवनपति व्यंतर पच्चीश योजन लगे देखे.
४ नवनपति व्यंतर देवो उंचुं घणुं देखे, सौधर्म देवलोक सुधी देखे. ५ वैमानिक देवो नीचुं घणुं देखे. ६ नारकी अने ज्योतिषी तीर्छुं घणुं देखे. ७ मनुष्य तिर्यंचने अनेकरीते अवधि ज्ञान होय. इहां सुधी देवोनुं आयु तथा शरीरमान प्रमुख केटलि एक वातो कही.

हवे नारकी जीवोना आयु प्रमुख कहेवा माटे प्रथम आयु कहे छे.

सामान्यथी जघन्योत्कृष्टायु साते नरकनुं प्रथम पांत्रीशद्धारना अधिकारे कहेवाणुं छे, अने इहां पाथडे पाथडे प्रथम उत्कृष्टायु कहे छे.

रत्नप्रनाना तेर पाथडा मांहेला पहेले पाथडे नेवुं हजार वर्ष, बीजाने विषे नेवुं लाख वर्ष, त्रीजाने विषे एक पूर्वकोटि वर्ष, चोथाने विषे एक सागरोपमना दश नाग करीये तेवो एक नागायु अने पांचमाने विषे बे नाग एम पाथडे पाथडे एकेक नाग वधारतां यावत् तेरमे पाथडे संपूर्ण एक सागरोपम उत्कृष्टायु थाय छे,

अने जघन्यायु तो पहेले पाथडे दश हजार वर्ष, बीजे पाथडे दशलाख वर्ष, त्रीजे नेवुं लाख वर्ष, चोथे पाथडे एक पूर्वकोटि वर्ष, पांचमे एक सागरोपमना दश नाग करीये तेवो एक नाग पछी पाथडे पाथडे एकेको नाग वधारतां यावत् तेरमे पाथडे एक सागरना दशैय्या नवनाग आयु थाय.

हवे बीजी नरकपृथ्वीआदिकमां उत्कृष्टी आयुःस्थिति आणवाने अर्थे उपाय कहे छे.

शर्करप्रनाने विषे उत्कृष्टी स्थिति त्रण सागरोपम छे, तेमांथी रत्नप्रनाने विषे उत्कृष्टी स्थिति एक सागरोपमनी छे ते काढीये, तेवारे शेष बे सागरोपम रहे, ते बे सागरोपमने शर्करप्रनाना अगीयार प्रतरे नाग आपीये, तेवारे एक नागमां एक सागरोपमना अगीयारीया बे नाग आवे, ते बेने वांछित प्रतर साथे गुणीये, तेवारे प्रथम प्रतरे एकनी साथे गुण्यां थकां बे नागज आवे. तेनी साथे वली रत्नप्रना पृथ्वीने विषे उत्कृष्टी स्थिति एक सागरोपमनी छे ते नेलीये, तेवारे प्रथम प्रतरे एक सागरोपमनी उपर एक सागरोपमना अगीयार नाग करीये, तेवा बे नाग आवे. एटली शर्करप्रनाना प्रथम प्रतरे उत्कृष्टी आयुःस्थिति जाणवी. पछी प्रतरे प्रतरे बे बे नाग वधारतां यावत्

अगीयारमे प्रतरे पूर्ण त्रण सागरोपम आयु थाय, अने पहेला प्रतरनी उत्कृष्टी स्थिति तेटलीज बीजे प्रतरे जघन्य स्थिति होय. एम सर्व प्रतरे कहेवुं.

एमज त्रीजी वालुकाप्रभाने विषे सात सागरोपम उत्कृष्टायु छे, तेमांथी शर्करप्रभाना त्रण सागरोपम काढीये, शेष चार सागरोपम रहे. ते त्रीजी पृथ्वीना नव प्रतर छे, तेनी साथे वहेंचीये, तेवारे एक भागमां एक सागरोपमना नव भाग करीये, तेवा चार भाग आवे. तेनी साथे शर्करप्रभानी उत्कृष्ट स्थितिना त्रण सागरोपम मेलवीये, एटलुं प्रथम प्रतरे उत्कृष्टायु होय, तेम बीजे प्रतरे त्रण सागरोपमनी उपर आठ भाग आयु होय यावत् नवमे प्रतरे सात सागरोपमायु पूर्ण थाय, अने जघन्यायु पूर्वली रीते कहेवुं.

प्रत्येक नरके प्रतरे प्रतरे जघन्योत्कृष्टायु जाणवानो यंत्र.

रत्नप्रभाप्रतर.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
जघन्यसागर.	दशस.	दशला	नेवुंला	पूर्वको	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दशैयाभाग.	०	०	०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९
उत्कृष्टसाग.	नेवुंस.	नेवुंला	पूर्वको	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१
दशैयाभाग.	०	०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	०
शर्करप्रभाप्र०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	तमस्त०	१
जघन्यसागर.	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	जघन्य.	१२
अग्यारियाभा	०	२	४	६	८	१०	१	३	५	७	९	उत्कृष्ट.	३३
उत्कृष्टसागर.	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३		
अग्यारियाभा	२	४	६	८	१०	१	३	५	७	९	०		
वालुप्रभाप्र०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	तमःप्र	१	२	३
जघन्यसागर.	३	३	३	४	४	५	५	६	६	जघ०	१७	१८	२०
नवैयाभाग.	०	४	८	३	७	२	६	१	५	त्राइ.	०	२	१
उत्कृष्टसागर.	३	३	४	४	५	५	६	६	७	उत्कृ.	१८	२०	२२
नवैयाभाग.	४	८	३	७	२	६	१	५	०	त्राइ.	२	१	०
पंकप्रभाप्रत०	१	२	३	४	५	६	७	धूमप्र.	१	२	३	४	५
जघन्यसागर.	७	७	७	८	८	९	९	जघन्य	१०	११	१२	१४	१५
सातैयाभाग.	०	३	६	२	५	१	४	पांचै०	०	२	४	१	३
उत्कृष्टसागर.	७	७	८	८	९	९	१०	उत्कृष्ट	११	१२	१४	१५	१७
सातैया भाग.	३	६	२	५	१	४	०	पांचै०	२	४	१	३	०

हवे साते नरके मली चोराशी लाख नरकावासा छे ते सर्व मांहेली बाजुये गोल छे, बाहेर चोखुणा छे, हेठे धरतीनुं तलीयुं पाषाणनी धार सरखुं छे, ते अत्यंत दुर्गंधमय छे.

हवे ए नरकावासानुं आयाम, विष्कंभ अने उंचपणुं कहे छे. सर्व साते पृथिवी संबंधि नरकावासा त्रण त्रण हजार योजन उंचपणे छे. तेमां एक हजार योजन नीचे छे, अने एक हजार योजन वचमां पहोला छे. तथा एक हजार योजन उपर पृथ्वी पिंड छे, तेमज पहोला अने लांबा असंख्याता योजन छे. मात्र रत्नप्रभाने पहेले पाथडे सीमंतो नरकावासो छे, ते पीस्तालीश लाख योजन लांबो पहोलो छे अने सातमी नरकनो अपइठाणो इंद्रक नरकावासो एक लाख योजन लांबो पहोलो छे.

हवे पाथडानुं मांहोमांहे अंतर कहेछे. रत्नप्रभा पृथिवीये १८०००० योजन पृथ्वीपिंड छे, तेमांथी एकेक हजार योजन नीचे उपरथी काढीये, बाकी १७८००० रहे, तेमांथी तेर पाथडानी उंचाइना ३९००० योजन काढीये बाकी १३९००० योजन रहे, ते तेर पाथडाना आंतरा बार थाय, तेनी साथे वहेंचीये तेवारे एक भागमां ११५८३ योजन नी उपर एक योजनना बार भाग करीये, तेवा चार भाग आवे, एटलुं पहेली नरकना प्रतरे प्रतरे अंतर छे, एमज बीजी नरक प्रमुखने विषे आंतरानुं गणित करवुं.

पहेली नरकना बार आंतरामां पहेलो तथा छेहलो ए बे आंतरा शून्य छे अने शेष दश आंतरामां भुवनपति देवोनी दश निकाय छे, पण बीजी आदिक नरक पृथिवीना आंतरा सर्व शून्य जाणवा. एना यंत्रोनी स्थापना नीचे करी छे ते जोइ लेवी.

हवे साते नरकना प्रत्येक प्रतर मांहेला मध्यना वचला इंद्रक नरकावासाथी चार दिशाये चार श्रेणि अने चार विदिशाये चार श्रेणि एम आठ श्रेणि नरकावासानी निकली छे, तिहां पहेले पाथडे प्रत्येक चार दिशानी एकेक श्रेणिमां उंगणपच्चास नरकावासा छे अने चार विदिशानी प्रत्येक श्रेणिमां अडतालीश नरकावासा छे. पछी पाथडे पाथडे एकेक नरकावासो घटाडतां यावत् सातमी नरके उंगणपच्चासमे प्रतरे चारे दिशानी पंक्तिमां एकेक नरकावासो छे अने विदिशानी पंक्तिमां नरकावासो नथी तेनी साथे एक मध्यने इंद्रक नरकावासो मेलवीये, तेवारे सातमी नरके पांच नरकावासा छे.

रत्नप्रभा पृथ्वीने पहेले पाथडे चारे दिशिना १९६ अने चार विदिशाना १९२ तथा एक वचमांनो मेलवतां ३८९ पंक्तिगत नरकावासा थाय. पछी बीजे पाथडे चार दिशिना चार अने चार विदिशिना चार मली आठ घटे, तेवारे ३८१ थाय. एम त्रीजा आदिकमां आठ आठ घटावतां यावत् उंगणपच्चासमे प्रतरे पांच नरकावासा पंक्तिगत रहे, शेष्य नरकावासा सर्व पुष्पावकीर्ण जाणवा. अथवा आवलिकागत नरकावासा

जाणवानो उपाय कहे छे. पहेली नरकना पहेला पाथडाना नरकावासाने मुख्य कहीये अने पहेली नरके तेर पाथडा छे, माटे तेरमा पाथडाना नरकावासाने भूमि कहीये, ए बेनो शरवालो करी तेनुं अर्द्ध करी वांछित प्रतरे गुणीये, तेवारे ते प्रतरना पंक्तिगत नरकावासानी संख्या आवे. एना यंत्रो दाखल करेला छे, ते जोइ लेवा.

रत्नप्रभाने पहेले कांडे रत्न घणां छे, माटे एनुं रत्नप्रभा गोत्र कहीये, बीजी शर्कराये कांकरा घणा छे, त्रीजी वालुकाये वेलु एटले रेती घणी छे, चोथी पंकप्रभाये कादव घणो छे, पांचमी धूमाये धूम्र घणो छे, छठी तमःप्रभाये अंधकार घणो छे, अने सातमी तमस्तमः प्रभाये अंधकारनुं बहुलपणुं छे, एम साते नरकना गुणनिष्पन्न गोत्र छे. ए सात नरक संबंधि गोत्रना हेतु जाणवा.

सात नरकनां नाम, गोत्र, नरकावासानी संख्या, प्रतरसंख्या, पृथ्वीपिंड, सामान्य थी जघन्य उत्कृष्टायु, तेमज देहमान, अवधिज्ञाननुं क्षेत्र, एक नारकी उपना पछी बीजो नारकी केटले काले उपजे, तेनो विरहाकाल ए सर्वेनो यंत्र.

साते नारकीनां नाम.	सात नारकीनां गोत्र.	नरकावासानी संख्या.	प्रतरसं० पाथडा.	नरकनुं उंचपणुं पृथ्वीपिंड.	सामान्ये जघन्यायु.
घम्मा.	रत्नप्रभा.	३०००००००	१३	१८००००	दश हजारवर्ष.
वंशा.	शर्करप्रभा.	२५००००००	११	१३२०००	एक सागर.
शैला.	वालुकप्रभा.	१५००००००	९	१२८०००	त्रण सागर.
अंजणा.	पंकप्रभा.	१००००००	७	१२००००	सात सागर.
रिठा.	धूमप्रभा.	३००००००	५	११८०००	दश सागर.
मघा.	तमःप्रभा.	९९९९५	३	११६०००	सत्तर सागर.
माघवती.	तमस्तमप्रभा.	५	१	१०८०००	बावीश सागर.

सामान्येउत्कृष्टायु.	सामान्य देहमान धनुष्य.	उत्कृष्ट वैक्रिय देहमान.	उत्कृष्ट अवधि ज्ञानके० क्षे०	जघन्य विरहकाल.	उत्कृष्ट विरहकाल
एक सागर.	ध०७॥। अं० ६	ध० १५॥अं १२	गाउ. ४	एक समय.	चोवीशमुहूर्त्त
त्रण सागर.	ध.१५॥ अं. १२	ध० ३१।	गाउ. ३॥	एक समय.	सात दिवस.
सात सागर.	ध० ३१।	ध० ६२॥	गाउ. ३	एक समय.	पन्नर दिवस.
दश सागर.	ध० ६२॥	ध० १२५	गाउ. २॥	एक समय.	एक मास.
सत्तर सागर.	ध० १२५	ध० २५०	गाउ. २	एक समय.	बे मास.
बावीश सार.	ध० २५०	ध० ५००	गाउ. १॥	एक समय.	चार मास.
तेत्रीश सागर.	ध० ५००	ध० १०००	गाउ. १	एक समय.	छ मास.

साते नरकना ओगणपच्चास प्रतरे दिशि अने विदिशि संबंधी नरकावासानी पंक्तिनी संख्यानो तथा एकंदर पंक्तिगत नरकावासानी संख्यानो यंत्र.

प्रतर.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
दिशि.	४९	४८	४७	४६	४५	४४	४३	४२	४१	४०	३९
विदिशि.	४८	४७	४६	४५	४४	४३	४२	४१	४०	३९	३८
सर्वसं०	३८९	३८१	३७३	३६५	३५७	३४९	३४१	३३३	३२५	३१७	३०९

१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१	३०	२९	२८	२७	२६
३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१	३०	२९	२८	२७	२६	२५
३०१	२९३	२८५	२७७	२६९	२६१	२५३	२४५	२३७	२२९	२२१	२१३	२०५

प्र०	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
दि०	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४
वि०	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३
सर्व.	१९७	१८९	१८१	१७३	१६५	१५७	१४९	१४१	१३३	१२५	११७	१०९

३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
१३	१२	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	१
१२	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	१	०
१०१	९३	८५	७७	६९	६१	५३	४५	३७	२९	२१	१३	५

सात नरक पृथिवीमां आवलिकागत नरकावासानी संख्या आणवा माटें मुख, भूमि समासादिक करणनो यंत्र तथा पुष्पावकीर्ण नरकावासानी संख्या

७पृथिवी.	१ रत्नप्र०	२ शर्करा.	३ वालु०	४पंकप्र०	५ धूमप्र०	६ तमःप्र०	७ तमस्त०	सर्वसं०
मुखानि.	३८९	२८५	१९७	१२५	६९	२९	४	३८९
भूमयः	२९३	२०५	१३३	७७	३७	१३	०	५
समास.	६८२	४९०	३३०	२०२	१०६	४२	०	३९४
समासा०	३४१	२४५	१६५	१०१	५३	२१	०	१९७
प्रतराः	१३	११	९	७	५	३	१	४९
पंक्तिगत.	४४३३	२६९५	१४८५	७०७	२६५	६३	५	९६५३
पुष्पाव०	२९९५५६७	२४९७३०५	१४९८५१५	९९९२९३	२९९७३५	९९९३२	०	८३९०३४७
शरवाले.	३००००००	२५०००००	१५०००००	१००००००	३०००००	९९९९५	५	८४०००००

७ नारकीना पृथ्वीपिंडमांथी नीचें तथा उपरना एकेक हजार योजन न्युन करवा अने सातमी नरक पृथ्वीयें साढी बावन हजार योजन नीचें अने साढी बावन हजार योजन उपर मूकीयें. तेवारें बाकी त्रण हजार योजन रहे. तेमां एकज पाथडो छे. शेष ७ नरक पृथ्वी संबंधि पाथडाना आंतरानो यंत्र.

नरकनां नाम.	रत्नप्रभा.	शर्करप्रभा.	वालुकप्रभा.	पंकप्रभा.	धूमप्रभा.	तमःप्रभा.	तमस्त०ःप्रभा
पृथ्वी पिंड.	१८००००	१३२०००	१२८०००	१२००००	११८०००	११६०००	१०८०००
द्विसहस्रो० करतां	१७८०००	१३००००	१२६०००	११८०००	११६०००	११४०००	३०००
प्रतरसंख्या.	१३	११	९	७	५	३	१
प्रतरनुं उंचपणुं.	३०००	३०००	३०००	३०००	३०००	३०००	३०००
पाथडा० पृ० पिंड	३९०००	३३०००	२७०००	२१०००	१५०००	९०००	३०००
शेष पा० विना पृ०	१३९०००	९७०००	९९०००	९७०००	१०१०००	१०५०००	१०५०००
पाथडानी संख्या.	१२	१०	८	६	४	२	०
प्रतरांतर मान.	११५८३ $\frac{४}{१२}$	९७००	१२३७५	१६१६६ $\frac{८}{१२}$	२५२५०	५२५००	०

प्रत्येक नरक पृथिवीयें आवलिकागत वाटला नरकावासानी तथा त्रिखूणा अने चौखूणा नरकावासानी तथा छूटा पुष्पावकीर्ण नरकावासानी संख्यानो यंत्र. अने वचलो इंद्रक नरकावासो गोल होय पछी पंक्तिमां पहेलो त्रिखूणो, चौखूणो पछी वाटलो एम आवलिकाना छेहेडा सुधी कहेवुं.

नरकनाम.	घम्मा. १	वंशा, २	शेला. ३	अंजणा. ४	रिठा. ५	मघा. ६	माघ० ७	आवलिकागत.
वाटला.	१४५३	८७५	४७७	२२३	७७	१५	१	३१२१
त्रिखूणा.	१५०८	९२४	५१६	२५२	१००	२८	४	३३३२
चोखणा.	१४७२	८९६	४९२	२३२	८८	२०	०	३२००
सर्वसंख्या.	४४३३	२६९५	१४८५	७०७	२६५	६३	५	९६५३
पुष्पावकीर्ण.	२९९५५६७	२४९७३०५	१४९८५१५	९९९२९३	२९९७३५	९९९३२	०	८३९०३४७
सर्वसंख्या.	३००००००	२५०००००	१५०००००	१००००००	३०००००	९९९९५	५	८४०००००

पहेली रत्नप्रभा नारकी संबंधि १८०००० योजन पृथिवीपिंडमांहे नारकीना तेर पाथडा त्रण त्रण हजार योजननां उंचा एक बीजानी उपर छे, तेनी वचमां केटलुं केटलुं एकेका प्रतरनी मांहोमांहे अंतर छे? तथा भवनपति देवोनी दश निकाय कया कया प्रतरना अंतरमां छे! अने कयुं अंतर शून्य छे ? तथा नीचेंना हजार योजन शून्य छे अने उपरना हजार योजनमां व्यंतर तथा वाणव्यंतर देवोनी निकाय कया कया स्थानके छे ? ते देखाडवानो यंत्र.

उत्तरश्रेणि.	पिंड योजन प्रमाण.	दक्षिणश्रेणि.
रत्नप्रभा बीजी उत्तरश्रेणि.	१० योजन मृतपिंड.	पहेली दक्षिणश्रेणि रत्नप्रभा.
सुवत्स आदिक आठ इंद्र.	८०अणपन्नीयादिकवाणव्यं.	सन्निहित आदि आठ इंद्र.
शून्यपिंड छे.	१० योजन मृतपिंड.	शून्यपिंड छे.
माहाकालादि आठ इंद्र.	८०० योजनपिशाचव्यंतर.	कालेंद्रप्रमुख आठ इंद्र.
शून्यपिंड छे.	१०० योजननो पिंड.	शून्य पिंड छे.
पहेलो पाथडो उंचो छे.	३००० योजन प्रमाण उंचो.	एमां नरकावासा छे.
पहेलुं प्रतरांतर मान.	११५८३$\frac{४}{१२}$ योजनमां.	एटलामां आकाश शून्य छे.
बीजो पाथडो उंचो छे.	३००० योजन प्रमाण.	एमां नरकावासा छे.
असुरकुमार निकाय बलींद्र.	११५८३$\frac{४}{१२}$ आंतरामां.	असुरकुमार निकाय चमरेंद्र.
त्रीजो पाथडो.	३००० योजन प्रमाण.	एमां नरकावासा छे.
नागकुमार निकायभुतानंदेंद्र.	११५८३$\frac{४}{१२}$ आंतरामां.	नागकुमारनिकायधरणींद्र.
चोथो पाथडो.	३००० योजन प्रमाण.	एमां नरकवासा छे.
सुवर्णकुमार वेणुदालींद्र.	११५८३$\frac{४}{१२}$ आंतरामां.	सुवर्णकुमारनिकायवेणुदेवेंद्र
पांचमो पाथडो.	३००० योजन प्रमाण.	एमां नरकवासा छे.
विद्युत्कुमार निकाय हरिशि०	११५८३$\frac{४}{१२}$ आंतरामां.	विद्युत्कुमार निकायहरिकांतें.
छठो पाथडो.	३००० योजन प्रमाण.	एमां नरकावासा छे.
अग्निकुमारनि.अग्निमाणवेंद्र	११५८३$\frac{४}{१२}$ आंतरामां.	अग्निकुमारनि०अग्निशिखेंद्र.
सातमो पाथडो.	३००० योजन प्रमाण.	एमां नरकावासा छे.
द्वीपकुमार निकाय विशिष्टेंद्र	११५८३$\frac{४}{१२}$ आंतरामां.	द्वीपकुमारनिकाय पूर्णेंद्र.
आठमो पाथडो.	३००० योजन प्रमाण.	एमां नरकावासा छे.
उदधिकुमारनिकायजलप्रभें०	११५८३$\frac{४}{१२}$ आंतरामां.	उदधिकुमारनि० जलकांतेंद्र.
नवमो पाथडो.	३००० योजन प्रमाण.	एमां नरकावासा छे.

दिशिकु०नि०अमितवाहनेंद्र.	११५८३ ४/१२ आंतरामां.	दिशिकुमार निकायअमितेंद्र
दशमो पाथडो.	३००० योजन प्रमाण.	एमां नरकावासा छे.
पवनकुमारनि० प्रत्नंजनेंद्र.	११५८३ ४/१२ आंतरामां.	पवनकुमारनिकायवेलंवकेंद्र.
अगियारमो पाथडो.	३००० योजन प्रमाण.	एमां नरकावासा छे.
स्तनितकुमारनिकाय घोषेंद्र.	११५८३ ४/१२ आंतरामां.	स्तनितकुमार नि०महाघोषेंद्र
वारमो पाथडो.	३००० योजन प्रमाण.	एमां नरकावासा छे.
ए आंतरामां शून्य छे.	११५८३ ४/१२ आंतरामां.	ए आंतरो शून्य छे.
तेरमो पाथडो.	३००० योजन प्रमाण.	एमां नरकावासा छे.
अधो त्नाग.	१००० योजन प्रमाण.	नरकावासा रहित छे.
सर्वसंख्या.	१८०००० योजन.	रत्नप्रत्नानो पिंड प्रमाण छे.

हवे नारकीमां प्रतरें प्रतरें जूडं जूडं उत्कृष्ट देहमान कहे छे.

रत्नप्रत्नाना प्रथम प्रतरें उत्कृष्ट देहमान त्रण हाथनुं छे, अने तेरमे प्रतरें सात धनुष्य त्रण हाथ ने छ अंगुल छे, तेमांथी पहेला प्रतरना त्रण हाथ काढीयें, तेवारें शेष सात धनुष्य ने छ आंगुल रहे. ते सात धनुष्यना अठावीश हाथ थाय. तेने तेर प्रतर मांथी प्रथमनो प्रतर एक मूकी शेष वारने आंके वहेंचीयें, तेवारें एक त्नागमां वे हाथ आवतां वार डुचोवीश हाथ जाय, वाकी चार हाथ रहे. तेनां ठन्नु अंगुल थाय तेनी साथें प्रथमनी छ अंगुल उपर छे, ते मेलवियें, तेवारें १०२ अंगुल थाय, तेने वार ने आंकें वहेंचतां एक त्नागमां साडाआठ अंगुल आवे, तेवारें वे हाथ ने साडाआठ अंगुलनी वृद्धि करतां वीजो पांच हाथ ने साडाआठ अंगुल देहमान थाय. एम प्रतरें प्रतरें वे हाथने साडाआठ आंगुल वधारतां यावत् तेरमे प्रतरें सात धनुष्यनी उपर त्रण हाथ ने छ अंगुल देहमान थाय. फरी तेटलुंज देहमाए वीजा नरकना प्रथम प्रतरें कहेवुं. वली शर्कराने अगीयारमे प्रतरें एथी बमणुं देहमान थवानुं छे, माटें उत्कृष्टामांथी जघन्य देहमान काढीयें, एटले पोणा आठ धनुष्य ने छ अंगुल वधे, तेना अंगुल करीयें, तो ७५० थाय, ते शर्कराना अगियार प्रतरमांथी पहेला प्रतरनुं आयु कहेवाणुं माटे तेने पडतुं मूकी वाकी दश प्रतरें वहेचीयें तेवारे पंचोतेर अंगुल एक त्नागमां आवे तेना त्रण हाथ ने त्रण अंगुल थाय, तेटलुं प्रत्येक प्रतरें देहमान वधारतां अगीयारमे प्रतरें साडा पन्नर धनुष्य ने वार अंगुल देहमान थाय, तेटलुं देहमान वली त्रीजी नरकने प्रतरें आणीने पठी तेज करण करवुं एम सर्व नरकपृथ्वीयें करतां देह प्रमाण थाय. ते सर्व नीचेंना यंत्रथी जोइ लेजो.

रत्नप्रभादिक प्रत्येक पृथ्वीना जूदा जूदा प्रतरें शरीरना प्रमाणनो यंत्र.

१ रत्नप्रभा.

प्रतर.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
धनुष्य.	०	१	१	२	३	३	४	४	५	६	६	७	७
हस्त.	३	१	३	२	०	२	१	३	१	०	२	०	३
अंगुल.	०	८॥	१७	१॥	१०	१८॥	३	११॥	२०	४॥	१३	२१॥	६

२ शर्करप्रभा.

प्रतर.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
धनुष्य.	७	८	९	१०	१०	११	१२	१३	१४	१४	१५
हस्त.	३	२	१	०	३	२	२	१	०	३	२
अंगुल.	६	९	१२	१५	१८	२१	०	३	६	९	१२

३ वालुकप्रभा.

प्र०	१	२	३	४	५	६	७	८	९
ध०	१५	१७	१९	२१	२३	२५	२७	२९	३१
ह०	२	२	२	१	१	१	१	१	१
अं०	१२	७॥	३	२२॥	१८	१३॥	९	४॥	०

४ पंकप्रभा.

प्र०	१	२	३	४	५	६	७
ध०	३१	३६	४१	४६	५२	५७	६२
ह०	१	१	२	३	०	१	२
अं०	०	२०	१६	१२	८	४	०

५ धूमप्रभा.

प्र०	१	२	३	४	५
ध०	६२	७८	९३	१०९	१२५
ह०	२	०	३	१	०
अं०	०	१२	०	१२	०

६ तमःप्रभा.

प्र०	१	२	३
ध०	१२५	१८७	२५०
ह०	०	२	०
अं०	०	०	०

७ तमस्तमप्रभा.

प्र०	१
ध०	५००
ह०	०
अं०	०

हवे ए साते नरक पृथ्वी शेने आधारें रहेली बे ते कहे बे. नारकीना मध्यमां वचें घनोदधिनो पिंम वीश हजार योजन बे, अने घनवात, तनुवात तथा आकाश असंख्याता योजननो पिंम बे, तेमां घनवातथी असंख्यातगुणो तनुवात बे, अने तनुवातथी असंख्यातगुणो आकाशनो पिंम बे. घनोदधि, घनवात उपर प्रतिष्ठित बे, घनवात तनुवात उपर प्रतिष्ठित बे; तनुवात आकाश उपर प्रतिष्ठित बे आकाश कोइ उपर प्रतिष्ठित नथी. ए घनोदध्यादिक चार वलयें करी सर्व पृथ्वीयो वीटेली बे, ते अनुक्रमें मध्य भागथी चारे दिशायें चारे वलय प्रदेशें प्रदेशें घटतां घटतां यावत् आप आपणी

पृथ्वीने छेहडे छेक घणाज स्वल्प थया थका वलयाकारे वींटी रह्या छे त्यां सर्व नरक पृथ्वी योने छेहडे केटला केटला योजननां वलय रह्यां छे, तेना यंत्र, तथा साते नरक पृथिवी भेली कस्या थकां छत्रातिछत्र आकार ने,एटले उपर न्हानुं छत्र तेनी नींचे महोटुं छत्र, तेनी नींचे महोटुं एम हेठली हेठली नरक महोटीमहोटी छे. वीश हजार योजन घनोदधिनो पिंड कह्यो,अने असंख्याता योजन घनवातादिकनो पिंड कह्यो. ते सर्व नरकनी वचाले होय,पछी अनुक्रमे प्रदेशे प्रदेशे घटतो घटतो छेहडे आ यंत्रमां लख्या प्रमाणे वलय होय.

नरक.	घनोदधिवलयप्रमाण.			घनवातवलय.		तनुवातवलयप्रमाण.			त्रणेनोसरवालो		
नरक आंक.	योजन	गाउ.	गाउत्रैयाभाग	योजन.	गाउ.	योजन.	गाउ.	गाउना त्र.भाग	योजन.	गाउ.	गाउत्रइयाभाग.
१	६	०	०	४	२	१	२	०	१२	०	०
२	६	१	१	४	३	१	२	१	१२	२	२
३	६	२	२	५	०	१	२	२	१३	१	१
४	७	०	०	५	१	१	३	०	१४	०	०
५	७	१	१	५	२	१	३	१	१४	२	२
६	७	२	२	५	३	१	३	२	१५	१	१
७	८	०	०	६	०	२	०	०	१६	०	०

रत्नप्रभा पृथ्वीना १८०००० पिंडमां पहेलो खरकांड १६००० योजन छे वीजो पंकव हुलकांड ८४००० योजन छे, त्रीजो जलवहुलकांड ८०००० योजन छे. अने वीजी सर्व पृथ्वी पृथ्विकायमय जाणवी. साते नरक पृथ्वी घनोदधि, घनवात, तनुवातने वलये करी वींटली छे, माटे आयाम विष्कंभे करी चारे दिशाये अलोकने फरसे नही. चारे दिशाये छेहलो तनुवात वलय अलोकने फरशे छे माटे. तथा नारकीने वेदनानुं स्व रूप जैनप्रबोध पुस्तक तथा सूयगडांग सूत्र तथा संघयणादि ग्रंथोमां छपायुं छे.

हवे आ पुस्कमां देव नारकियादिकनां आयु तथा द्वीपसमुद्रनां प्रमाण सर्व पल्यो पम अने सागरोपमे करी कह्यां छे, माटे पल्योपम अने सागरोपमनुं स्वरूप लखीये छैये.

ते पल्योपम तथा सागरोपम एकेका त्रण प्रकारना वादर तथा त्रण प्रकारना सू क्ष्म मली छ प्रकारे छे. तेमां वादर कोइ काममां नथी आवता परंतु सूक्ष्म काममां आवे छे. पल्य एटले जेमां धान्य भरीये तेनी जेने उपमा छे तेने पल्योपम कहीये. ते अथवा जेणे करी कालादिकनां प्रमाण मवीये उपमीजे, तेने पल्योपम कहीये. ते

एक उद्धार पल्योपम बीजो अद्धा पल्योपम अने त्रीजो क्षेत्रपल्योपम, एवा त्रण प्रकारे छे. ते उद्धारादिक एकेको वली एक सूक्ष्म अने बीजो बादर एवा बे बे भेदे छे.

हवे पल्यनुं प्रमाण कहे छे. उत्सेधांगुले एक योजननो कूवो वाटलो गोलाकारे जाणवो, ते लांबपणे तथा पहोलपणे अने उंडपणे सर्वत्र एक योजन प्रमाण कहेवो तेनो परिधि त्रण योजन अने एक योजनना छ भाग करीये, तेवो एक भाग ऊपर थाय.

ते कूवो देवकुरु उत्तरकुरु नामे जे युगलियानां क्षेत्र छे, तिहां जघन्य एक बे त्रण दिवसना उत्कृष्टथी सात दिवसना जन्मेला गाडराना रोम अंगुल प्रमाण लेवा, ते रोमना प्रथम आठ कटका करीये वली ते एकेका कटकाना आठ आठ कटका करतां ६४ कटका थाय. त्रीजी वार आठ खंड करतां ५१२ थाय. चोथी वार आठ खंड करतां ४०९६ थाय. पांचमी वार आठ खंड करतां ३२७६८ थाय. छठी वार आठ खंड करतां २६२१४४ थाय. सातमी वार आठ खंड करतां २०९७१५२ थाय.

ए वीश लाख सत्ताणुं हजार एकशो ने बावन खंड थया, ते सर्व बादर खंड थया तेणे करी पूर्वोक्त पालो संपूर्ण ठांशीने एवो भरवो के ते अग्निथी बले नही, वायराथी रोमखंड उडे नही, गंगानदीनो प्रवाह उपरथी चाल्यो जाय तो पण तेने ताणी शके नही, चक्रवर्त्तीनुं कटक उपर चाल्युं जाय, तो पण धसके नही. एवो ते कूवो भरीने पछी ते मांहेथी अकेक समये अकेक केश खंड काहाडतां थकां जेटले काले ते पालो खाली थाय, तेटलो बादर उद्धार पल्योपमनो संख्याता समय प्रमाण काल होय, जे भणी ते खंड संख्याताज होय, माटे संख्यातो काल कह्यो, ए बादर उद्धार पल्योपम जे कह्यो ते मात्र सूक्ष्म उद्धार पल्योपमनुं स्वरूप समजाववामांज उपयोगी होय. परंतु बीजा कशामां पण काम आवे नही.

हवे पूर्वे जे वालाग्रखंडे पल्य भर्यो छे, ते बादर एकेक खंडना असंख्याता सूक्ष्म खंड कल्पिये, ते एवा कल्पीये, के जे एक खंडनो वली बीजो खंड केवली केवलज्ञाने करी पण कल्पी न शके, सतेजवंत नेत्रनो धणी जे जालीमांहेथी सूक्ष्म पुद्गल सूर्यना तेजे करी देखे, तेनो असंख्यातमो भाग अथवा बादर पर्याप्त पृथिवी कायिया जीवनुं जेवुं सूक्ष्म शरीर होय, तेवडे खंडे करी पूर्वोक्त कूवो भरीये, ते एकेको खंड समय समय काहाडतां असंख्याता समय लागे, अर्थात् संख्याता वर्षनी कोटिये करी ते कूप खाली थाय तेने सूक्ष्म उद्धार पल्योपम कहीये. तेवा दश कोडाकोडी पल्योपमे एक सूक्ष्म उद्धार सागरोपम थाय. तेवा अढी सागरोपमना जेटला समय थाय तेटले प्रमाणे असंख्याता द्वीप समुद्र छे. ए सूक्ष्म उद्धार पल्योपम कह्यां.

तथा तेहीज योजन प्रमाण पल्य बादर वालाग्रें जर्स्यो, ते मध्येथी शो शो वर्षे एकेक केशखंड काढ़ाफतां, ते पल्य संख्याता वर्षेनी कोमी प्रमाण कालें निर्लेप थाय; तेवारे बादर अद्धा पल्योपम संख्याता वर्ष प्रमाण थाय.

वली तेहीज खंडना पूर्वोक्त रीतें असंख्याता खंड कल्पी ते कल्पना खंड शो शो वर्षे एकेक कहाडतां जेवारें ते पल्य निर्लेप थाय, तेवारें सूक्ष्म अद्धापल्योपम असंख्याता वर्षेनी कोमी प्रमाण थाय. तेवा दश कोमाकोडी सूक्ष्म अद्धापल्योपमें एक सूक्ष्म अद्धा सागरोपम थाय. तेवा वली दश कोमाकोमी सागरोपमें एक अवसर्प्पिणी काल थाय. वली तेवा दश कोमाकोमी सागरोपमें एक उत्सर्पिणी काल थाय. ए अवसर्प्पिणी तथा उत्सर्पिणीना बेहु काल मली वीश कोडाकोडी सागरोपमें एक कालचक्र थाय. ए सूक्ष्म अद्धापल्योपम अने सागरोपमें करी देवता, नारकी, मनुष्य अने तिर्यंचना आयुनुं मान तथा कर्मस्थितिमान तथा कायस्थितिमान तथा जवस्थितिनां कालमानादिक मवीयें,ए चोथुं सूक्ष्म अद्धापल्योपम कह्युं, एटले ए सूक्ष्म अद्धासागरोपमना अनंता पुजलपरावर्त्तें अतीत अद्धा तथा अनंता पुजलपरावर्त्तें अनागत अद्धा थाय. तिहां अनागत अद्धानी अनंतता ठे अने अतीत अद्धानुं आदि नथी, तेथी बेहुने समानपणुं ठे. अन्य आचार्य वली एम कहे ठे के, जो पण समयादिके करी अनागत अद्धा हीयमान ठे, तो पण अनागत अद्धानो क्षय नथी थतो, ते माटे अतीत अद्धा थकी अनागत अद्धा अनंतगुणी ठे.

सांप्रत बे प्रकारना क्षेत्र पल्योपमनुं निरूपण करीये ठैये. ते पूर्वोक्त बादर वालाग्र खंडे करी जर्स्यो जे पल्य ते मध्ये कल्पना करेला वालाग्रे स्पर्श्या जे आकाशप्रदेश ते मांहेथी एकेक आकाश प्रदेश समय समय काढ़ाफतां जेवारे सर्व वालाग्रें स्पष्ट थयेला एवा सर्व आकाश प्रदेश निर्लेप थाय, तेवारे असंख्याती उत्सर्पिणी अने असंख्याती अवसर्प्पिणी कालप्रमाण एक बादर क्षेत्रपल्योपम थाय.

हवे ते पल्यना सूक्ष्म एकेका वालाग्रने स्पर्श्या आकाश प्रदेश तथा अणस्पर्श्या एवा समस्त आकाशप्रदेशने समय समय काढ़ाडतां जेवारे ते पल्य निर्लेप थाय, तेवारे पूर्वोक्त बादरक्षेत्र पल्योपमना कालमानथकी असंख्यातगुणं असंख्याती उत्सर्प्पिणीअने अवसर्प्पिणी प्रमाण सूक्ष्म क्षेत्र पल्योपमनुं कालमान थाय.तेवा दश कोडाकोमी सूक्ष्म क्षेत्रपल्योपमें एक सूक्ष्म क्षेत्र सागरोपम थाय, एणे करी त्रसादिक जीवनुं परिमाण करवुं, एटले दृष्टिवादने विषे द्रव्य प्रमाण चिंतवीये तथा पृथिव्यादिक एकेंद्रिय त्रसांत जीवनुं परिमाण करीये, तेने विषे एनुं प्रयोजन ठे.

अही शिष्य पूछे छे के, जो स्पष्ट, अस्पष्ट, नन्नःप्रदेश सूक्ष्म क्षेत्र पल्योपमे करीने ग्रहण करीये छैये, तो वालाग्रोनुं शुं प्रयोजन छे ? यथोक्त पल्यांतरगत नन्नःप्रदेशाप हारमात्रथीज सामान्यपणे कहेवुं उचित छे ? तत्र गुरु कहे छे, के ए सत्य छे. किंतु सूक्ष्म क्षेत्र पल्योपमे करी दृष्टिवादने विषे ड्रव्य मवीये छैये, ने केटलाएक यथोक्त वालाग्र स्पष्ट नन्नःप्रदेशे करी मवियें छैये, माटे दृष्टिवादोक्त ड्रव्यमानोपयोगीपणा थकी वालाग्र प्ररूपण प्रयोजनवालुं छे.

एम सूक्ष्म पल्योपम शास्त्रने विषे उपयोगी होय अने त्रण वादर पल्योपम कह्यां, ते सूक्ष्मनुं स्वरूप समजाववा माटेज जाणवां. अहींयां घणुं तो सूक्ष्म अद्धापल्योप मनुं प्रयोजन छे, ते अद्धापल्योपमे करी वीश कोमाकोडी सागरोपमनुं कालचक्र थाय, तेवा अनंते कालचक्रें एक पुज्जलपरावर्त्त थाय, एवा अनंत पुज्जलपरावर्त्तें अतीत अद्धा अतिक्रम्या ते नणी एने विषे पुज्जलपरावर्त्त एवी संज्ञा करीये ॥ इति ॥

हवे पृथ्वीने विषे सो प्रकारनां जे रत्नो कहेवाय छे, तेना ज्ञेदो कहे छे.

१ तेमां प्रथम ज्जुवनना त्रण ज्ञेद छे,ते कहे छे. ?१ देवज्जुवन,२मनुष्यज्जुवन,३नागज्जुवन.

२ बीजा स्थानना त्रण ज्ञेद छे,ते कहे छे. १ मनुष्यस्थान, २ देवस्थान, ३ नारकीस्थान.

३ त्रीजा ज्रूमिना त्रण ज्ञेद छे,ते कहे छे. १ उत्तम, २ नीच, ३ सम.

४ चोथा पुरुषना त्रण ज्ञेद छे, ते कहे छे. १ उत्तम, २ मध्यम, ३ अधम.

५ पांचमा पदार्थना त्रण ज्ञेद छे, ते कहे छे, १ धातु, २ मूल, ३ जीव.

६ छठा पुरुषार्थना चार ज्ञेद छे, ते कहे छे. १ धर्म, २ अर्थ, ३ काम, ४ मोक्ष.

७ सातमा राजवंशीना छत्रीश ज्ञेद छे, ते कहे छे. १ सूर्य, २ सोमवंश, ३ यादव, ४ कदंब, ५ परमार, ६ इक्ष्वाकु, ७ चहुआण, ८ मोरी, ए शिलार, १० सिंधव, ११ छिंदक, १२ चाउडा, १३ प्रतिहार, १४ लुंड्रक, १५ राठोम, १६ शक, १७ करठपाल, १८ करंड, १ए चंचिल्ल, २० गोहिल, २१ मकुआणक, २२ पौलक, २३ राजपाल, २४ धान्य पाल, २५ अनंग, २६ निकुल, २७ दधिकर, २८ कोल, २ए तुर, ३० दधिपक, ३१ हूल, ३२ हरिय, ३३ सेल्हार, ३४ डोडीया. ३५ नाडिया. ३६ कुलठरकुल.

८ आठमा राज्यनां सात अंग छे, तेनां नाम कहे छे.१ स्वामी, २ अमात्य, ३जनपद, ४ नंमार, ५ डुर्ग एटले गढ, ६ बल, ७ मित्रांग.

ए नवमा राजगुणना छन्नु ज्ञेद छे, ते कहे छे. १ वंश, २ विनय, ३ विजय, ४ विवेक, ५ विद्या, ६ विचार ७ सदाचार, ८ विस्तार, ए परिछेद, १० अनुग्रह, ११ सदा

ग्रह, १२ यश, १३ सदोदित, १४ सर्वसह, १५ धर्मबल, १६ सत्य, १७ शौच, १८ सन्मान, १९ संस्थान, २० समाधान, २१ सौख्य, २२ सौजन्य, २३ सौनाग्य, २४ रूप, २५ स्वरूप, २६ सागत्य, २७ विनाग, २८ संयोग, २९ वियोग, ३० सत्त्व, ३१ संपूर्णत्व, ३२ सकलत्व, ३३ प्रसन्नत्व, ३४ सलज्जत्व, ३५ पालकत्व, ३६ पांमित्य, ३७ प्रणय, ३८ प्रसरण, ३९ प्रमाण, ४० प्रताप, ४१ प्रमोद, ४२ प्रारंन, ४३ प्रना वच्छेद, ४४ संग्रह, ४५ विग्रह, ४६ पुष्टि, ४७ तुष्टि, ४८ प्रीति, ४९ प्राप्ति, ५० प्रशंसा, ५१ प्रतिष्ठा, ५२ प्रतिज्ञा, ५३ स्थैर्य, ५४ धैर्य, ५५ शौर्य, ५६ गांनीर्य, ५७ चातुर्य, ५८ बुद्धि, ५९ बल, ६० अध्यक्ष, ६१ विबोध, ६२ वृद्धि, ६३ सिद्धि, ६४ कांति, ६५ कीर्त्ति, ६६ स्फूर्त्ति, ६७ व्युत्पत्ति, ६८ वात्सल्य, ६९ मांगल्य, ७० महोत्सव, ७१ मंत्र, ७२ रसिकत्व, ७३ नावुकत्व, ७४ समृद्धित्व, ७५ गुरुत्व, ७६ शक्ति, ७७ नुक्ति, ७८ युक्ति, ७९ अयुक्ति, ८० अशक्ति, ८१ अनुक्रम, ८२ अनिमान, ८३ वदान्य, ८४ कारुण्य, ८५ दाक्षिण्य, ८६ वर्त्तन, ८७ स्पर्शन, ८८ रसन, ८९ घ्राण, ९० श्रवण. ९१ मर्यादा, ९२ मंमन, ९३ उदय, ९४ उदात्त, ९५ उत्साह, ९६ उत्तमत्व गुण.

१० दशमा राजपात्रना बत्रीश नेद छे, ते कहे छे. १ धर्मपात्र, २ काम, ३ विनोद, ४ विद्या, ५ विलास, ६ विन्यास, ७ ज्ञान, ८ क्रीमा, ९ हास्य, १० शृंगार, ११ वीर, १२ स्नेह, १३ जगन्मान्य, १४ मंत्री, १५ संधि, १६ महत्तम, १७ अमात्य, १८ प्रधान, १९ अध्यक्ष, २० सेनापात्र, २१ नागर, २२ पुष्प, २३ मान्य, २४ पदस्थ, २५ देशी, २६ राज्ञी, २७ कुलपुत्रिका, २८ पुनर्नू, २९ वेश्या, ३० दासी, ३१ दास, ३२ आनिचारिक,

११ अगीयारमा राजविनोदना छत्रीश नेद छे, ते कहे छे. १ गीत, २ विनोद, ३ लिखित, ४ शिक्षा, ५ वक्तृत्व. ६ कवित्व, ७ शास्त्र, ८ शस्त्र, ९ युद्ध, १० नियुद्ध, ११ गणित, १२ गज, १३ तुरग, १४ पक्षी, १५ आखेटक, १६ द्यूत, १७ जलयंत्र, १८ मंत्र, १९ महोत्सव, २० फल, २१ पुष्प, २२ कला, २३ गुण, २४ प्रहेलिका, २५ चित्र, २६ क्षेत्र, २७ खेलन, २८ वित्तमूत्र, २९ नृत्य, ३० श्रवण, ३१ कर, ३२ बुद्धि, ३३ विद्या, ३४ रथ, ३५ कथा, ३६ कलत्र.

१२ बारमा आस्थानना अढार नेदो छे, ते कहे छे. १ मल्ल, २ आपूहित, ३ स्निग्ध, ४ मंत्री, ५ महत्तम, ६ अमात्य, ७ प्रधान, ८ बुद्धिमुख, ९ उनयमुख, १० आग्रायक, ११ सांग्रामिक, १२ देश्य, १३ पुरुषधर्म, १४ पुरुषविज्ञान, १५ पुरुषराज, १६ पुरुषकर्म, १७ पात्र, १८ विनोदपात्र. इति अष्टादशः नेदाः समाप्ताः ॥

१३ तेरमा राजविद्याना चार नेद छे, ते कहे छे. १ आन्विक्षिकी, २ चर्या, ३ वार्त्ता, ४ दंडनीति,

१४ चौदमा राजनीतिना चार भेद छे, ते कहे छे. १ साम, २ दाम, ३ भेद, ४ दंड,

१५ पन्नरमा आयुधना बत्रीश भेद छे, ते कहे छे. १ चक्र, २ धनु, ३ धनुष्य, ४ वज्र, ५ अंकुश, ६ छुरिका, ७ तोमर, ८ कुंत, ९ शूल, १० त्रिशूल, ११ शक्ति, १२ पाश, १३ मुद्गर, १४ गुलिका, १५ मुसटी, १६ लुंढी, १७ गदा, १८ शंकु, १९ पर्शु, २० पट्टीश, २१ रिष्ट, २२ करण, २३ यकपन, २४ हल, २५ मुशल, २६ मुद्गलिका, २७ कर्त्तरी, २८ करपत्र, २९ तरवार, ३० कोदाली ३१ डुफोट, ३२ गोफण, ३३ डाई, ३४ रुब्रस, ३५ हडश्च, अने ३६ शस्त्र.

१६ शोलमा शास्त्रना सत्त्यावीश भेद छे, ते कहे छे. १ शब्दशास्त्र, २ अलंकारशास्त्र, ३ तर्कशास्त्र, ४ आगम, ५ गणित शास्त्र, ६ कल्प, ७ कला, ८ शिक्षा, ९ विनोद, १० विज्ञान, ११ मंत्र, १२ सामुद्रिक, १३ शकुन, १४ चिकित्सा, १५ सत्काव्य, १६ मोक्ष, १७ धर्म, १८ अर्थ, १९ वास्तुशास्त्र, २० प्रवरतर, २१ महानामकोश, २२ सुविद्या, २३ छंद, २४ स्वप्नशास्त्र, २५ नवरसयुक्तकाव्य, २६ नाद्य, २७ धीनादिशास्त्र.

१७ सत्तरमा तत्त्वना बावन भेद छे, ते कहे छे. १ पृथ्वी, २ अप्, ३ तेज, ४ वायु, ५ आकाश, ६ शब्द, ७ रूप, ८ रस, ९ स्पर्श, १० गंध, ११ घ्राण, १२ चक्षु, १३ श्रोत्र, १४ त्वक्, १५ पाणि, १६ पाद, १७ गुद, १८ उपस्थान, १९ बुद्धि, २० अलंकार, २१ प्रकृति, २२ पुरुषरक्त, २३ मांस, २४ मेद, २५ मज्जा, २६ शुक्र, २७ अस्थि, २८ वातरस, २९ गंध; ३० स्पर्श, ३१ घ्राण, ३२ चक्षु, ३३ पित्त, ३४ कफ, ३५ मल, ३६ काम, ३७ क्रोध, ३८ लोभ, ३९ भय, ४० मोह, ४१ मात्सर्य, ४२ राग, ४३ नियति, ४४ काल, ४५ विद्या, ४६ युद्धविद्या, ४७ माया, ४८ शक्ति. ४९ नाद, ५० बिंदु, ५१ कला, ५२ ईश्वर शिवतत्त्व.

१८ अढारमी कलाना बहोंतेर भेद छे, ते कहे छे. १ वाद्य, २ नृत्य, ३ गणित, ४ पठित, ५ लिखित, ६ लेख्य, ७ वक्तृत्व, ८ कथा, ९ वंचन, १० नाटक, ११ छंद, १२ अलंकार, १३ दर्शन, १४ अभिधान, १५ धातुकर्म, १६ अर्थमान, १७ वाद, १८ वृद्धि, १९ शोच, २० मंत्र, २१ विनोद, २२ विचार, २३ नेपथ्य, २४ विलास, २५ शस्त्रकर्म, २६ नीति, २७ शकुन, २८ गीत, २९ चित्र, ३० संयोग, ३१ हस्तलाघव, ३२ सूत्र, ३३ कुसुम, ३४ इंद्रजाल, ३५ स्नेह, ३६ पान, ३७ आहार, ३८ विहार, ३९ सौभाग्य, ४० प्रयोग, ४१ गंधवाद, ४२ वस्तु, ४३ रत्न, ४४ पात्र, ४५ वैद्य, ४६ देशभाषित, ४७ विजय, ४८ वाणिज्य, ४९ आयुध, ५० युद्ध, ५१ नियुद्ध, ५२ वर्त्तन, ५३ हस्ती, ५४ तुरग, ५५ पक्षी, ५६ नारी, ५७ भूमिलेप, ५८ दंतकाष्ठ, ५९ इष्टिका, ६० पाषाण,

६१ हास्य, ६२ उत्तर, ६३ प्रत्युत्तर, ६४ शरीर, ६५ शास्त्र, ६६ ताल, ६७ ढोल, ६८ मृदंग, ६९ विणा, ७० वांसली, ७१ भेरी, ७२ पलितविनाश,

१९ ओगणीशमा विज्ञान हेतुना चोराशी भेद छे, ते कहे छे. १ तत्त्वज्ञान, २ चर्म विज्ञान, ३ कर्म विज्ञान, ४ लक्ष्मीयोग, ५ शंख, ६ दंत, ७ गुटिका, ८ रसायन, ९ वचन, १० कवित्व, ११ यंत्र, १२ मंत्र, १३ तंत्र, १४ मदन, १५ नेपथ्य, १६ स्यंतक, १७ इष्टिका, १८ लेख्य, १९ सूत्र, २० चित्र, २१ कर्मरंग, २२ शुचिकर्म, २३ शकुन, २४ ब्रह्मकर, २५ नैर्मल्य, २६ गंधयुक्ति, २७ आराम, २८ शिल्प, २९ काव्य, ३० कांस्य, ३१ काष्ठ, ३२ कुंभ, ३३ लोह, ३४ पत्र, ३५ वंश्य, ३६ नख, ३७ दशन, ३८ प्रासाद, ३९ धातु, ४० विभूषण, ४१ स्वरोदय, ४२ द्यूत, ४३ अध्यात्म, ४४ अग्नि, ४५ विदूषण, ४६ उच्चाटन, ४७ स्तंभन, ४८ मोहन, ४९ वशीकरण, ५० वस्तु, ५१ स्वयंभु, ५२ हस्तिशिक्षा, ५३ अश्वशिक्षा, ५४ पक्षी, ५५ स्त्री, ५६ काम, ५७ चक्र, ५८ वज्रीकरण, ५९ पशुपालन, ६० कृषी, ६१ वाणिज्य, ६२ लक्षण, ६३ कालमानविधि, ६४ आसनविधि, ६५ शास्त्रबंध, ६६ नियुद्धकरण, ६७ आखेटक, ६८ कुतुहल, ६९ केश, ७० पुष्प, ७१ इन्द्रजाल, ७२ विनोद, ७३ सौभाग्य, ७४ प्रयोग, ७५ शौच, ७६ ज्ञान, ७७ ज्ञेय, ७८ प्रीति, ७९ आयु, ८० चाटु, ८१ व्यापार, ८२ धारणा, ८३ हेय, ८४ उपादेय.

२० वीशमा देशसंख्या ते चारेदिशामां थइने चोराशीभेदे छे, ते कहे छे. तेमां पूर्व दिशामां १ गौड, २ कान्यकुब्ज, ३ कलिंग, ४ गोल, ५ अंग, ६ कुरंग, ७ बंगाल, ८ अराच्य, ९ वरेंद्र, १० वामन, ११ गंगापार, १२ अंतर्वेदी, १३ मागध, १४ मध्यकुरु, १५ डाहल, १६ कामरूप, १७ ऊड्र, १८ पुंड्र, १९ वोडास, २० अग्नि, २१ मालव, २२ पांचाल, २३ जालंधर, २४ शूरसेन, २५ लोहितपात. पश्चिमदिशामां. २६ काछेल, २७ वालंभ, २८ सौराष्ट्र, २९ कुंकुम, ३० लाडप्री, ३१ अर्बुद, ३२ मेवाड, ३३ अवंति, ३४ नागणित, ३५ किरात, ३६ शकट, ३७ सौवीर, ३८ कोंकण, उत्तर दिशिमां. ३९ गुर्जर, ४० सिंधु, ४१ केकाण, ४२ नेपाल, ४३ लाट, ४४ भोट, ४५ तुरक, ४६ तायक, ४७ बर्बर, ४८ वर्जुर, ४९ कीर, ५० काश्मीर, ५१ हिमालय, ५२ लोहपुर. ५३ श्रीकाष्ठ. दक्षिणदिशिमां. ५४ मलय, ५५ सिंहल, ५६ कोशल, ५७ पाडल, ५८ आंध्र, ५९ वंध्व, ६० कर्कट, ६१ द्रविड, ६२ श्रीपर्वत, ६३ वैदर्भ, ६४ धाराउराला, ६५ तापीतट, ६६ माहाराष्ट्र, ६७ आभीरदेश, ६८ नर्मदातट, ६९ द्वीपदेश.

२१ एकवीशमा स्थानना बत्रीश भेदो छे, ते कहे छे. १ स्वर्ग, २ मृत्यु, ३ पाताल, ४ तनु, ५ विद्या, ६ वास्तु, ७ विनोद, ८ वाद, ९ गीत, १० वाद्य, ११ नृत्य, १२

रूप, १३ धर्म, १४ अर्थ, १५ काम, १६ मोक्ष, १७ देश, १८ काल, १९ यात्रा, २० समय, २१ पुरुष, २२ स्त्री, २३ गज, २४ तुरंगम, २५ पक्षी, २६ रत्न, २७ पान, २८ आहार, २९ शय्या ३० व्यापार, ३१ वस्तु, ३२ विज्ञान लक्षण.

२२ बावीशमा गृहना चोवीश ज्ञेदो छे, ते कहे छे. १ प्रासाद, २ हर्म्य, ३ आयतन, ४ गृह, ५ कोश, ६ कोष्ठागार, ७ पानीयगृह, ८ शौचगृह, ९ शाला, १० माल्य, ११ मठ, १२ सत्रागार, १३ शृंगारस्थान, १४ धर्मस्थान, १५ विनोदस्थान, १६ मंदिर, १७ हस्तिशाला, १८ वीशमंडप, १९ माहानस, २० ज्ञोजनशाला, २१ गुप्तस्थान, २२ आदिस्थान, २३ अर्धस्थान, २४ राजांगण.

२३ त्रेवीशमा मंगल वस्तुना एक शो आठ ज्ञेदो छे, ते कहे छे. १ ब्रह्मा, २ विष्णु, ३ माहेश्वर, ४ वीतराग, ५ स्कंद, ६ आदित्य, ७ लोकपाल, ८ अग्नि, ९ अमर, १० सागर, ११ पर्वत, १२ गगन, १३ ग्रहण, १४ गांधर्व, १५ चंद्र, १६ विनायक, १७ ज्योतिक, १८ तीर्थ, १९ द्विज, २० धर्मशास्त्र, २१ वेदशास्त्र, २२ वेद, २३ पद्म, २४ पर्यंक, २५ कौस्तुज्ञ, २६ कांचन, २७ रौप्य, २८ ताम्र, २९ घृत, ३० मधु, ३१ सिद्धांत, ३२ चंदन, ३३ श्वेत, ३४ वस्त्र, ३५ वेश्या, ३६ गोरोचन, ३७ मृत्तिका, ३८ गोमय, ३९ शस्त्र, ४० अंजन, ४१ रत्न, ४२ मनसिल, ४३ मोदक, ४४ शंख, ४५ प्रियंगु, ४६ वचा, ४७ श्वेतपुष्प, ४८ सर्षव, ४९ दधि, ५० दूर्वा, ५१ अक्षत, ५२ उदंबर, ५३ आम्र, ५४ छत्र, ५५ वाजित्र, ५६ दर्ज्ञ, ५७ हस्ती, ५८ बीज, ५९ मुक्ताफल, ६० खंजरीट, ६१ वृषज्ञ, ६२ राजहंस, ६३ कन्या, ६४ दर्पण, ६५ दीप, ६६ अंकुश, ६७ तुरंगम, ६८ हीत, ६९ वेणु, ७० वीणाध्वनि, ७१ ज्ञूमि, ७२ सिंह, ७३ मय, ७४ स्वस्तिक, ७५ तोरण, ७६ कुंज्ञ, ७७ चामर, ७८ वत्स, ७९ गो, ८० आर्द्र, ८१ मांस, ८२ स्त्री, ८३ पुरुषयुग्म, ८४ वाहन, ८५ प्रधान, ८६ विद्या, ८७ विनय, ८८ तुष्टि, ८९ पुष्टि, ९० प्रसाद, ९१ उल्लोच, ९२ मदिरा, ९३ सत्य, ९४ पूर्णपात्र, ९५ आर्द्रशाक, ९६ पिष्फलपत्र, ९७ श्रीवृक्ष, ९८ तालवृक्ष, ९९ पूजा, १०० निधि, १०१ गौरी, १०२ गंगा, १०३ सरस्वती, १०४ नर्मदा, १०५ यमुना, १०६ सिद्धि, १०७ प्रीति, १०८ कीर्त्ति. ए सर्व मांगलिक वस्तु जाणवी.

२४ चोवीशमा दानना त्रण ज्ञेद छे. ते कहे छे. १ अज्ञय, २ द्रव्य, ३ परोपकार.

२५ पच्चीशमा यशना पांच ज्ञेद छे, ते कहे छे. १ जन्मकृत प्रताप यश, २ कीर्त्ति. ३ पराक्रमयश, ४ रूपयश, ५ सदाचारमां प्रवर्त्तन करवुं ते यश.

२६ छवीशमा कीर्त्तिना सात प्रकार छे, ते कहे छे. १ दानकीर्त्ति, २ पुण्यकीर्त्ति,

३ विद्वज्ञानकीर्त्ति, ४ नवकृतकाव्यकीर्त्ति,५ आवर्त्तनकीर्त्ति, ६ शौर्यकीर्त्ति,७ यशःकीर्त्ति.

२७ सत्यावीशमा रसना नवभेद छे, ते कहे छे. १ शृंगाररस, २ हास्यरस, ३ करुणा रस, ४ रौद्ररस. ५ वीररस, ६ भयानकरस, ७ बीभत्सरस, ८ अद्भुतरस, ९ शांतरस.

२८ अठयावीशमा भावना उंगणपच्चास भेदो छे, ते कहे छे. १ रति, २ हास्य, ३ शोक, ४ क्रोध, ५ उत्साह, ६ भय, ७ जुगुप्सा, ८ विस्मय, ९ स्तंभन, १० खेद, ११ स्वर, १२ भेद, १३ रोमांच, १४ वेपथु, १५ वैवर्ण्य, १६ अश्रु, १७ प्रलाप, १८ निर्वेद, १९ ग्लानि- २० शंका, २१ आश्रम, २२ आलस्य, २३ देशचिंता २४ मोह, २५ धृति, २६ स्मृति, २७ क्रीडा, २८ चपलता, २९ जरूत. ३० हर्ष, ३१ अवश, ३२ विषाद, ३३ असुख, ३४ वर्ग, ३५ अपस्मार, ३६ निद्रा, ३७ स्वप्न, ३८ विबोध, ३९ अमर्ष, ४० उग्रता, ४१ उन्माद, ४२ मति ४३ व्याधि, ४४ विरक्त, ४५ वितर्क, ४६ त्रास, ४७ सूमरण, ४८ माया, ४९ लोभ.

२९ उंगणत्रीशमा अभिनयना चार भेद कहे छे.१आंगिक,२वाचक, ३ सात्त्विक,४ अहार्य.

३० त्रीशमा वृत्तिना चार भेद कहे छे. १ भारती, २ सात्वती,३ कौशिकी, ४ अरभट्टी.

३१ एकत्रीशमा माहान्पुरुषना चार भेदो छे, ते कहे छे. १ धीरोद्धत, २ धीरोदात्त, ३ धीरललित, ४ धीरशांत.

३२ बत्रीशमा नायकना चार भेदो छे. ते कहे छे. १ दक्षिण, २ अनुकूल,३ शठ,४ धृष्ट.

३३ तेत्रीशमा नायकना गुण बत्रीश प्रकारना छे, ते कहे छे. १ कुलीन, २ शीलवान्, ३ नयस्थ, ४शौचवान्, ५ प्रियंवद, ६ प्रीतिमान्, ७ सुभग, ८ विनयवान्, ९ कीर्त्तिमान्, १० त्यागी, ११ विवेकी, १२ शृंगारवान्, १३ अभिमानी, १४ श्लाघ्यवान्, १५ समुज्ज्वलवेष, १६ सकलकला कुशल, १७ प्रिय, १८सत्यवान्, १९अवदान्य, २० स्वजन, २१ सुगंधप्रिय, २२ सुवृत्त, २३ मंत्रवान्, २४ क्लेशसह, २५ प्रस्तावप्रकाशक २६ पंडित, २७ उत्तम सत्त्व, २८ धार्मिक, २९ महोत्साही, ३० गुणग्राही, ३१ क्षमी, ३२ प्राभाविक.

३४ चोत्रीशमा माहानायिकाना त्रण भेद कहे छे. १ स्वकीया, २ परकीया, ३ पणांगना. वाग्भट्टालंकारमां नायिकाना चार भेद कह्या छे.१अनूढा,२स्वकीया,३परकीया,४पणांगना.

३५ पांत्रीशमा नायिकाना आठ भेद कहे छे. १ वासकसज्जा, २ विरहोत्कंठिता, ३खंडिता,४ विप्रलब्धा,५ प्रोषितभर्तृका,६ कलहांतरिता, ७ अभिसारिका, ८ स्वाधीनभर्तृका.

३६ छत्रीशमा वलीपण नायिकाना गुणो एकत्रीश प्रकारना छे, ते कहे छे. १ कुलजा, २ सुभगा, ३ सुरूपा, ४ सुसत्त्वा, ५ सुवेषा, ६ सुविनीता, ७ सुरतप्रवीणा, ८ सुखप्रिया,९ विभोगिनी,१० विचक्षणा,११ प्रियभाषिणी, १२ प्रसन्नमुखी, १३पीनस्तनी, १४ रसिका,

१५ लज्जान्विता, १६ लक्ष्णयुता, १७ पठितज्ञा, १८ गीतज्ञा, १ए विद्याज्ञा, २० नृत्यज्ञा, २१ सुकुमारशरीरा, २२ सुगंधप्रिया २३ चारुनेत्रा, २४ नातिमानिनी, २५ मधुरवाच्या,२६ स्नेहवती, २७ विमर्षवती, २८ सत्यवती, २ए शीलवती, ३० प्रज्ञावती, ३१ गुणान्विता.

३७ साडत्रीशमा सौख्यकरणना चार ज्नेद ठे, ते कहे ठे. १ अज्यासकरण, २ अज्निमान, ३ संप्रियकरण, ४ विषयकरण.

३८ आडत्रीशमा सौख्यना त्रण प्रकार ठे, ते कहे ठे. १ आंगिक, २ वाचक,३मानसिक.

३ए उंगणचालीशमा शौचना दश ज्नेदो ठे, ते कहे ठे. १ मुखशौच, २ स्नान, ३ मृत्तिका, ४ स्कंध, ५ कक्षा, ६ श्मश्रु, ७ जल, ८ नख, ए अनल, १० सत्यशौच.

४० चालीशमा कामना बे ज्नेद ठे, ते कहे ठे. १ स्वाज्नाविक, २ कृत्रिम.

४१ एकतालीशमा कामावस्थाना दश ज्नेदो ठे, ते कहे ठे. १ अज्निलापता,२स्मृति,३ गुणोत्कीर्त्तन, ४ उद्वेग, ५ प्रलाप, ६ उन्माद, ७ व्याधि, ८ जडता, ए मरण, १० चिंता.

वली कामना बाण, कोइ ठेकाणे पांच ज्नेदे कहेला ठे, ते कहे ठे. १ संगम, २ विगम, ३ हर्ष, ४ मोह, ५ मरणाधिक.

वली पण कामना पांच बाण कहेला ठे, ते कहे ठे. १ संमोहन, २ उत्पादन, ३ तापन, ४ शोषण, ५ मरण.

४२ बहेंतालीशमा मूर्खना आठ प्रकार ठे, ते कहे ठे. १ निर्लज्ज, २ शठ, ३ क्लीब, ४ निर्घृण, ५ व्यसनी, ६ अतिज्नोगी, ७ गर्वित, ८ निष्ठुर.

४३ त्रेंतालीशमा नागरिक जननां चोवीश करण ठे, ते कहे ठे. १ विषयसुखनो उंरडो जुदो राखे. २ कायचिंतानुं स्थानक राखे, ३ पाणीनुं स्थानक, ४ रसोइनुं स्थानक, ५ नेपथ्यनुं गृह राखे, ६ नेपथ्यनां उपकरण घणां राखे, ७ घरनां उपकरण घणां राखे, ८ शस्त्र घणां राखे, ए आसन घणा प्रकारनां राखे. १० रम्यपणुं, ११ माल्यादि ज्नोगतुं राखवुं, १२ बेसवा उठवानुं गुप्तस्थान राखे, १३ प्रज्नातमां विराम लेवा माटे स्थान राखे, १४ मध्यान्हने विषे ज्नोजन करवा स्थान राखे, १५ ठानुं ज्नंमारनुं स्थानक राखे, १६ निरंतर विद्यानो अज्यास करे, १७ कुलोचित मार्गवर्त्तन करे, १८ प्रदोषने विषे गीतविनोद करे, १ए सुरतोपचार करे, २० क्यारेक उद्यानमां गमन करे, २१ कदाचित् क्षेत्रनिरीक्षण करे, २२ निरंतर गृहकार्यमां रहे, २३ ज्नोगमां व्याप्त रहे २४विज्नक्तस्थान.

४४ चुम्मालीशमा रूपना त्रण ज्नेद ठे, ते कहे ठे. १ संपूर्ण लक्षणावयव, २ असंपूर्ण लक्षणावयव, ३ निर्लक्षणावयव.

४५ पीस्तालीशमा स्वज्नावना त्रण ज्नेद १ मुग्धस्वज्नाव, २मुग्धचतुरस्वज्नाव,३ चतुरस्वज्नाव.

४६ छहेंतालीशमा पार्थिवना दश प्रकारे प्रमोद छे, ते एक श्लोके करी कहे छे. ज्ञाने दाने बले राज्ये, विनोदे वैरिसंग्रहे ॥ शौर्ये धर्मे च सौख्ये च,प्रमोदा दशधा स्मृता ॥१॥

४७ सुडतालीशमो चार प्रकारनो बोध कहे छेः– १ बालसंस्कारप्रबोध, २ प्रज्ञाप्रबोध, ३ शास्त्रप्रबोध, ४ तत्त्वनिश्चयप्रबोध.

४८ अडतालीशमी चार प्रकारनी बुद्धि कहे छेः– १ उत्पातिकी, २ विनयकी, ३ कार्मिकी, ४ पारिणामिकी.

४ए ओगणपच्चाशमी बुद्धिना आठ प्रकारे गुण छे, ते कहे छे. १ शुश्रुषा, २ श्रवण, ३ ग्रहण, ४ धारणा, ५ ऊह, ६ आपोह, ७ अर्थ, ८ विज्ञान.

५० पच्चाशमा गांधर्वना चार प्रकार कहे छेः-१ स्वरगत,२ तालगत, ३ पदगत,४अवधानगत.
५१ एकावन्नमा त्रण प्रकारना महागीत कहे छेः– १ महागीति, २ उपगीत,३अनुगीति.

५२ बावन्नमा गीतना छत्रीश गुण छे, ते कहे छेः– १ सुखर, २ सुताल, ३ सुपद,४ शुद्ध, ५ ललित, ६ सुसंबंध,७ सुप्रमेय, ८ सुराग, ए सुरस, १० सुसंगित, ११ सुहर्ष, १२ सुग्रह, १३ श्लिष्य १४ क्रमष्य, १५ सुवर्ण, १६ सुगम, १७ सुरक्त, १८ संपूर्ण, १ए सालंकार, २० सुभाषाढ्य, २१ सुसंधिष्ठ, २२ सव्युत्पन्न, २३ मधुर, २४ स्फुट, २५ अग्राम्य, २६ प्रसन्न, २७ कुंचितकंपित, २८ समयोचित, २ए विद्या, ३० संगत, ३१ प्रथमस्थित, ३२ खस्थ, ३३ एक, ३४ अद्भुत, ३५ विलंबितमध्य, ३६ उक्त प्रमाण.

५३ हवे त्रेपन्नमा नृत्यना बे प्रकार छे, ते कहे छे. १ लास्य, २ तांडव,

५४ चोपन्नमा काव्यना शोल प्रकार कहे छे.१ समय, २ प्रतिज्ञा, ३ अभ्यासविद्या, ४ जाति, ५ गीति, ६ रीति, ७ वृत्ति, ८ वाच्य, ए वाचक, १० छंद, ११ अलंकार, १२ गुण, १३ दोष, १४ रस, १५ भाव, १६ अभिनय.

५५ पच्चावन्नमा वक्तृत्वना दश प्रकार कहे छे. १ परिज्ञावित, २ सत्य, ३ मधुर, ४ सार्थक, ५ परिस्फुट, ६ परिमित, ७ मनोहर, ८ चित्र, ए प्रसन्न, १० भावानुगत.

५६ छपन्नमा भाषाना छ प्रकरो छे, ते कहे छे. १ संस्कृत, २ प्राकृत, ३ अपभ्रंशी, ४ पैशाची, ५ मागधी, ६ शौरसेनी.

५७ सत्तावन्नमा पांडित्यना पांच भेदो छे, ते कहे छे. १ वक्तृत्व, २ वादित्व, ३ कवित्व, ४ आयामत्व, ५ गमत्व.

५८ अठावन्नमा वादना चोविश भेद कहे छे. १ उत्पत्ति, २ समा, ३ अयति, ४ सभा, ५ वाद, ६ पक्ष, ७ प्रतिपक्ष, ८ प्रमाण, ए प्रभेद, १० प्रसन्न, ११ प्रत्युत्तर, १२

दूषण, १३ भूषण, १४ उपन्यास, १५ अनुमोद, १६ आदेश, १७ निर्णय, १८ ग्रंथनिश्च य, १९ निश्चय, २० स्थान, २१ अर्थांतर, २२ समता, २३ जय, २४ पराजय.

५९ ओगणशाठमा दर्शनना ६ भेदो छे, ते कहे छे. १ माहेश्वरदर्शन, २ ब्राह्मद र्शन, ३ सांख्यदर्शन, ४ बौधदर्शन, ५ जैनदर्शन, ६ चार्वाकदर्शन.

६० साठमा माहेश्वर दर्शनना पांच भेद छे, ते कहे छे. १ विशेष, २ शिवधर्म, ३ पाशुपत्त, ४ कालमुख, ५ महाव्रतिक पर्यंत,

हवे तेनाज बीजी रीते पांच भेदे कहे छे. अयोविशेषशिवधर्म, १ शैव, २ पाशुप त, ३ फलमुख, ४ महाव्रत, ५ ब्रह्मचर्य.

६१ एकसठमा ब्राह्मणना लक्षण दश प्रकारे कहे छे. १ प्रमाण, २ संस्कार, ३ क र्म, ४ वर्त्तन, ५ ब्रह्मचारी, ६ गृहस्थ, ७ वान, ८ प्रस्थ, ९ यति, १० ब्रह्मपर्यंत.

६२ बासठमा सांख्य शास्त्रना चार भेद कहे छे. १ तत्त्व, २ प्रमाण, ३ प्रकार, ४ सर्वात्मा.

६३ त्रेसठमा बौधमतना दश भेद छे, ते कहे छे. १ सौगत, २ सर्वद, ३ परिगत, ४ वि हार, ५ प्रमाण, ६ प्रभेद, ७ प्रमोद, ८ शौर्य, ९ त्रिकयोगाचार, १० आध्यात्मिकमोक्षपर्यंत.

६४ चोसठमा जैनमतना सात प्रकार छे, ते कहे छे. १ सर्वज्ञ, २ धर्म, ३ तत्त्वार्थ, ४ प्रमाण, ५ प्रतिज्ञा, ६ भेद, ७ सिद्धपर्यंत.

६५ पांसठमा चार्वाकना चार भेद छे, ते कहे छे. १ तत्त्वार्थ, २ प्रमाण, ३ प्रभेद, ४ प्रमोद.

६६ छासठमा विचारना चोवीश भेद छे, ते कहे छे. १ विद्या, २ विज्ञान, ३ विनोद, ४ कला, ५ कवित्व, ६ वक्तृत्व, ७ गीत, ८ नृत्य, ९ वाद्य, १० देश, ११ काल, १२ पा त्र, १३ प्रमेय, १४ पर्याय, १५ जय, १६ रस, १७ वाद, १८ अभिनय, १९ धर्म, २० अर्थ, २१ काम, २२ मोक्ष, २३ प्रमाण, २४ लोकवादपर्यंत.

६७ सडसठमा गुरुत्वना दश भेद छे, ते कहे छे १ वंश, २ ज्ञान, ३ पद, ४ शौर्य, ५ सत्त्व, ६ दान, ७ बल, ८ जय, ९ संतान, १० स्वगुण.

६८ अडसठमा चरितना चार भेद कहे छे. १ मानवचरित, २ दानवचरित, ३ वी रविलासचरित, ४ गुणप्रख्यापन चरित.

६९ ओगणयोतेरमा राज्यपालनना पांच भेदो छे, ते कहे छे. १ धर्मपालन, २ राज्य पालन, ३ भूमिपालन, ४ प्रजापालन, ५ नीतिपालन.

७० सित्तेरमा उत्तमपणाना सात भेदो छे, ते कहे छे. १ वय, २ कुल, ३ शील, ४ रूप, ५ पद, ६ ज्ञान, ७ प्रयोग.

७१ एकोतेरमा शक्तिना नव भेद छे, ते कहे छे. १ ज्ञानशक्ति, २ धर्मशक्ति, ३ दान

शक्ति, ४मंत्रशक्ति, ५ कामशक्ति, ६ अर्थशक्ति, ७ युद्धशक्ति, ८ व्यायामशक्ति, ९देशशक्ति.

७२ बहोंतेरमा अहंकारना आठ प्रकार छे, ते कहे छे. १ ज्ञान अहंकार, २ दान अहंकार, ३ बल अहंकार, ४धर्म अहंकार, ५ काम अहंकार, ६ द्रव्य अहंकार, ७ शत्रु मारण अहंकार, ८ समारंभ अहंकार.

७३ त्रहोंतेरमा वात्सल्यना चार भेद छे, ते कहे छे. १ देववात्सल्य, २ सद्गुरुवात्सल्य, ३ मित्रवात्सल्य, ४ वल्लभ पुरुष वा पदार्थनुं स्नेहनेलीधे वात्सल्य.

७४ चम्मोतेरमा प्राप्तिना आठ भेदो छे, ते कहे छे. १ ज्ञानप्राप्ति, २ धर्मप्राप्ति. ३ बलप्राप्ति, ४ कामप्राप्ति, ५ विज्ञानप्राप्ति, ६ पात्रसंग्रहप्राप्ति, ७ सर्वार्थ, ८ राज्यप्राप्ति.

७५ पंचोतेरमा शौर्यना चोवीश भेद छे, ते कहे छे. १ स्नानशौर्य, २ मनःशौर्य, ३ शब्दशौर्य, ४ प्रताप, ५ उदय, ६ प्रतिज्ञा, ७ तेज, ८ ज्ञान, ९ संग्राम, १० जय, ११ साहस, १२ प्रतिपन्न, १३ शरणागत, १४ प्रमोद, १५ प्रबोध, १६ आज्ञा, १७ उद्यम, १८ अर्थ, १९ आचार, २० बल, २१ कीर्त्ति, २२ लक्षण, २३ व्रत, २४ आपदाशौर्य.

७६ छोंतेरमा बलना दश प्रकार कहे छे. १ वाग्बल, २ कायबल, ३बुद्धिबल, ४ स्थानबल, ५ सुहृद्बल, ६ शकुनबल, ७ देवताबल, ८ धनबल, ९ मंत्रबल, १० सैन्यबल.

७७ सत्योतेरमा आज्ञाना दश भेद छे. ते कहे छे. १ ज्ञान. २ आगम. ३ प्रताप. ४ ऐश्वर्य, ५ वाक, ६ परिश्रम, ७ निद्रा, ८ रति.

७८ अठोतेरमा संग्रहना नव भेद छे, ते कहे छे. १ ज्ञानसंग्रह, २ पात्रसंग्रह, ३मित्रसंग्रह. ४ पलियोगसंग्रह, ५ बलसंग्रह, ६ जयसंग्रह, ७ धर्मसंग्रह, ८ श्रुतसंग्रह, ९ गुणसंग्रह.

७९ उगणएयाएंशीमा परिछेदना पांचभेद छे, ते कहे छे. १ अलक्षित, २ लक्षित, ३ मानसिक, ४ वाचक, ५ कार्मण.

८० एंशीमा प्रभुत्वना पांच भेद छे, ते कहे छे. १ ज्ञानप्रभुत्व, २ अक्षयप्रभुत्व, ३ शौर्यप्रभुत्व, ४ स्थापनाप्रभुत्व, ५ प्रदानप्रभुत्व.

८१ एक्याशीमा लब्धिना आठ भेद छे ते कहे छे. १ अणिमा, २ महिमा, ३ गरिमा, ४ लघिमा, ५ ईशित्व, ६ वशित्व, ७ प्राप्ति, ८ प्राकाम्य.

८२ ब्यासीमा दिव्यना दश भेद छे, ते कहे छे. १ जल, २ अग्नि, ३ घट, ४ कोश, ५ विष, ६ माष, ७ तांडुल, ८ फल, ९ तुल, १० सुतस्पर्श.

८३ त्र्याशीमा अपराधना दश भेद छे, ते कहे छे. १ अक्षभंग, २नृपवध, ३स्त्रीवध ४ वर्णसंकर, ५परस्त्रीगमन, ६ चौर्य, ७ पतिविनानो गर्भ, ८ दंडपारुष्य, ९ वाक्य, १० गर्भपातन,

८४ चोराशीमा उत्तमकारिगरना छ भेद छे,ते कहे छे. १ आरामिक, २ मणिकार, ३ स्वर्णकार, ४ कांस्यघाटक, ५ दारुकृत; ६ कुंभकार.

८५ पंचाशीमा मध्यम कारिगर पुरुषोना छ भेद छे, ते कहे छे. १ लूहरा, २ सलाट, ३ कडिया, ४ यंत्रवाहकशोल्मिक, ५ तंतुवायी, ६ हजाम.

८६ छाशीमा अधम कारिगर पुरुषोना छ भेद छे, ते कहे छे. १ धोबी, २ चमार, ३ नट, ४ चरट, ५ खारवा, ६ कैवर्त्तक ते भिल्ल.

८७ सत्याशीमा उत्तम प्रकृतिवाला कारिगरना छ भेदो छे ते कहे छे. १ हजाम, २ सोनी, ३ खत्री, ४ कांस्यघडनार, ५ सुतार, ६ कुंभार.

८८ अठ्याशीमा मध्यम प्रकृतिवाला कारिगरना छ भेद छे, ते कहे छे. १ आरामिक एटले माली, २ मणियार, ३ दरजी, ४ कूक, ५ चितारो, ६ पालखी उपाडनार भोई.

८९ नेवाशीमा अधमप्रकृतिवाला कारिगरना छ भेद छे, ते कहे छे. १ चमार २ मधपाडनार, ३ नट, ४ भिल्ल, ५ लुहार, ६ पारधि.

९० नेवुंमा नारुना नव भेद छे, ते कहे छे. १ घांची, २ मोची, ३ घांछा, ४ धोबी, ५ लुहार, ६ दरजी, ७ माछी, ८ भिल्ल, ९ गोवाल. ए नव नारुकना नाम जाणवा.

९१ एकाणुमा कारुना नव भेद छे, ते कहे छे. १ कांदविक, २ कौटुंबिक, ३ कुंभार ४ सोनी, ५ माली, ६ तंबोली, ७ हजाम, ८ काछिक, ९ गांधर्व घायक.

९२ बाणुमा शब्दना पांच भेदो छे, ते कहे छे. १ वीणानो शब्द, २ सतारनो शब्द, ३ वंशशब्द, ४ मादलनोशब्द, ५ करतालनो शब्द.

९३ त्र्याणुमा धान्यना त्रण भेद छे. ते कहे. १ शीर्शक, २ शंबा, ३ घंटक.

९४चोराणुमा शाकना चार भेद छे, ते कहे छे. १ कंद शाखा, २ पत्र, ३ पुष्प,४ फल.

९५पंचाणुमा मांसना त्रण भेद छे, ते कहे छे. १ जलचरमांस २थलचरमांस,३खेचरमांस.

९६ छन्नुमा रसना छ भेद, छे ते कहे छे.१आम्ल, २ मधुर, ३ तीक्ष्ण, ४ कषाय, ५ कटु.

गाथा प्रास्ताविक छे. आहारनिमित्तेषणं,वेसाए घर मागउ ॥ धम्मालाभंतु जा जाण ई, दव्वलाभं विमग्गियउ ॥ १ ॥ माणगएणं मुणिणा, पडिया तिणउ तहिं ॥ हिरणाणं तु कोडीउ, वेसाए अग्गे तया ॥ इति माहानिशीथे ॥ साकादिवेसणासत्ती, नंदीसेणे मुणीसरे ॥ जीविए सागिहे आसी, दसणं पडिबोहिउं. इति शतरत्नसंग्रहः समाप्तः ॥

हवे वासुदेव, तीर्थंकर अने चक्रवर्त्ती तथा बलदेव ए चार पदवीवाला जीवो देवता तथा नारकीथी आव्या उपजे पण मनुष्यमांथी आवे नही.

१ चक्रवर्त्ती तथा बलदेव, ए बेहु चारे निकायना देवोमांथी आवी उपजे.

२ तीर्थंकर तथा वासुदेव, ए बेहु वैमानिक देवोमांथी आवी उपजे.
३ चक्रवर्तीना जे पांच मनुष्य रत्न छे, ते सातमी नरक, तेउकाय, वायुकाय, तिर्यंच अने मनुष्य तथा अनुत्तर विमान, एटला स्थानकथी आव्या न होय, शेषस्थानकथी आव्या होय.
४ तथा हाथी अने अश्व, ए बे तिर्यंचपंचेंद्रिय रत्न छे, अने सात एकेंद्रिय रत्न छे एमनी उत्पत्ति यथासंभवपणे जाणवी.

कया जीव नरकें जाय?	कयो जीव कयी नरकें जाय?	बाहुल्य आश्रयी विशेष कहे छे.
संज्ञिपंचेंद्रिय पर्याप्ता संख्याता वर्षायुवाला एवा मनुष्य अने तिर्यंच मरी नरकें जाय तेना आचरण कहे छे.	१ असंज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यंच पहेली नरक सुधी जाय.	१ व्याल सर्प प्रमुख.
१ मिथ्यात्वी जीव.	२ गर्भजभुजपरिसर्प, गोह, नोलीयादि बीजीसुधीजाय.	२ दाढाल सिंह वाघ प्रमुख.
२ महा आरंभ करनार.	३ गर्भजपंखीत्रीजीनरकेंजाय	३ गृध्र पक्षी प्रमुख.
३ घणा परिग्रहमां आसक्त.	४ सिंह प्रमुख चोपद जीव चोथी नरक सुधी जाय.	४ जलचर मत्स्य प्रमुख.
४ घणो लोभी होय	५ गर्भजउरःपरिसर्प पांचमी नरक सुधी जाय.	एटला जातिना जीव प्राय घणुं करी नरकथी आवे अने पाछा पण मरीने नरकेंज जाय, परंतु तेनो नियम नही. केम के कोइ कोइ जीव नरकथी आव्या पछी जातिस्मरणादिसामग्रीयें समकित पामीने शुभगतिमां पण जायछे.
५ शुभक्रिया रहित होय.	६ स्त्रीरत्न छठी नरकें जाय.	
६ पापरुचि जीव होय.	७ गर्भजमनुष्य, गर्भजमत्स्य उत्कृष्ट सातमी नरकें जाय.	
७ रौद्रपरिणामी होय.		
८ कृतघ्नदुष्टपरिणाम वालो.		

संख्याता आयु वाला मनुष्य मरीने चारे गतिमां जाय, परंतु वज्रऋषभनाराच संघयणवाला कोइ कोइ मनुष्य पांचमी सिद्धगतिमां पण जाय छे, ते कहे छे.

१ मनुष्यजाति सामान्यथी जघन्य एक बे अने उत्कृष्टां १०८ एक समयमां सीजे. अने विशेषथी वेद आश्रयी आ प्रमाणे सीजे.
२ स्त्रीलिंगे वीश सीजे.
३ नपुंसलिंगे दस सीजे.
४ पुरुषलिंगे १०८ सीजे.

हवे ग्रहस्थादिक लिंग आश्रयी एक समयमां केटला सीजे ते? कहे छे.

१ ग्रहस्थलिंगें एक समये. ४
२ तापसादिलिंगे एक समये. १०
३ साधुलिंगे एकसमये. १०८

हवे जघन्य मध्यम अने उत्कृष्ट अवगाहना आश्रयी मोक्ष जवानुं कहे छे.

१ लघु बे हाथनी अवगाहनाये. ४
२ मध्यम अवगाहनाये. १०८
३ उत्कृष्ट पांचशे धनुष्यनी अवगाहनाये २
१ ऊर्ध्वलोक मेरुचूलिका नंदनवन प्रमु० ४
२ अधोलोक ते अधोग्रामादिकथी. २२

३ तिर्यक् लोकथी एक समये. १०८
१ समुद्रजलमांथी एक समये. २
२ शेष द्रह नदी प्रमुखमांथी. ३
हवे कइ गतिमांथी आवेला मनुष्य एक समये केटला मोक्षे जाय? ते कहे छे.
१ नरकगतिथी आव्या. १०
२ तिर्यंच गतिथी आव्या. १०
३ मनुष्यगतिथी आव्या. २०
४ देवगतिथी आव्या. १०८
५ रत्नप्रभाथी आव्या. १०
६ शर्करप्रभाथी आव्या. १०
७ वालुकाप्रभाथी आव्या. १०
८ पंकप्रभाथी आव्या. ४
९ पृथ्वीकायथी आव्या. ४
१० अप्कायथी आव्या. ४
११ वनस्पतिथी आव्या. ६
१२ तिर्यंचपंचेंद्रिय पुरुषथी आव्या. १०
१३ तिर्यंच स्त्रीथी आव्या. १०
१४ मनुष्य पुरुषथी आव्या. १०
१५ मनुष्य स्त्रीथी आव्या. १०
१६ भुवनपतिनी प्रत्येक निकायथी. १५
१७ भुवनपतिनी देवीथी आव्या. ०
१८ व्यंतर देवोथी आव्या. १०
१९ व्यंतर देवीथी आव्या. ५
२० ज्योतिषी देवोथी आव्या. १०
२१ ज्योतिषी देवीथी आव्या. २०
२२ वैमानिक देवोथी आव्या. १०८
२३ वैमानिक देवीथी आव्या. २०

चक्रवर्त्तीना चौद रत्नां नाम तथा लंबाइ आदिक प्रमाण तथा तेनाथी थतां काम.

एकेंद्रिय.	प्रमाण.	जे कार्य करे ते कहे छे.	पंचेंद्रिय	शुं कार्य करे.	वासुदेव.	देहमान.
चक्ररत्न.	वामप्रमाण.	वैरीनुंमस्तक छेदे.	पुरोहित.	शांतिकर्मकरे	चक्ररत्न.	साते जे
छत्ररत्न.	वामप्रमाण.	म्लेच्छनामेघनो निरोध.	अश्वरत्न.	महापराक्रमी	धनुष्यर०	काले उ
दंडरत्न.	वामप्रमाण.	वांकीभूमिने समीकरे,	गजरत्न.	महापराक्रमी	खड्गरत्न.	त्पन्न थ
चर्मरत्न.	बे हाथप्रमा०	शाली प्रमुखने उत्पन्न	सेनापति	चारखंडजिते	कौस्तुभ.	या होय,
खड्गरत्न.	बत्रीशअंगुल	संग्राममांशक्तिवंतहो	गृहपति०	घरयोग्यकाम	गदारत्न.	ते काल
कांगिणी.	चारअं.लांबुं.	वैताढ्यनी भींतेमांडला	वार्त्तिक.	नदीना पुल.	वनमाल	ना पुरुष
मणिरत्न.	चारअं.लांबुं.	बारयोजन उद्योत करे.	स्त्रीरत्न.	महारूपवंत.	शंखरत्न.	प्रमाण.

ए एकेकुं रत्न एक हजार यक्षदेवोयें अधिष्ठित होय, अने बे हजार देवो चक्रवर्त्तीनी बे बाहुये अधिष्ठित होय सर्व मली शोल हजार देवो चक्रवर्तीनी सेवा करे. एमां चक्ररत्न, खड्गरत्न, छत्ररत्न अने दंडरत्न. ए चार आयुधशालामां उपजे. तथा मणिरत्न, सुवर्णकांगिणीरत्न अने चर्मरत्न, ए त्रण भंडारमां उपजे. अने हस्ती तथा अश्व ए बे वैताढ्य पर्वतमां उपजे, जंबूद्वीपमां जघन्यथी चार चक्रवर्त्ती होय, तेवारें छपन्न रत्न

होय अने उत्कृष्टथी अठावीश विजयना तथा एक भरतनो अने एक ऐरवतनो मली त्रीश चक्रवर्त्ती होय, तेवारे ४२० रत्न होय.

हवे सिद्धशिलानुं स्वरूप कहे छे.

१ सर्वार्थसिद्ध विमानथी बार योजन उंची.
२ कोइक आचार्य कहे छे, के सर्वार्थसिद्ध विमानथी बार योजन लोकनो छेहडो.
३ पीस्तालीश लाख योजन लांबी पहोलीछे.
४ अढीद्वीपमां पिस्तालीश लाख योजन प्रमाण मनुष्यनी वस्ति छे अने जे मोक्ष जाय छे, ते पण मनुष्यज जाय छे, ते सर्व समश्रेणीये जाय छे, माटे जे स्थलथी जाय तेज स्थले जइ तिहां सिद्धशिलामां रहे.
५ वच्चमां आठ योजन जाडी छे.
६ छेहडे माखीनी पांख सरखी पातली छे.
७ वर्णे अर्जुन सोना सरखी छे.
८ स्फटिक रत्ननी पेरे निर्मल उज्ज्वल छे.
९ उत्तान छत्राकारे छे. अथवा घृतथी भरेली जेवी कचोली होय, तेवे आकारे छे.
१० सिद्धशिलानी ऊपर एक योजन छेहडे लोकनो अंत छे. तिहां एक कोशनो छठो भाग ३३३ धनुष्यनी ऊपर बत्रीश अंगुलमां सर्व सिद्धना अनंताजीव रह्या छे.

हवे पूर्वनुं प्रमाण कहे छे.

चोराशी लाखने चोराशी लाखे गुणतां ७०५६०००००००००० एटलो आंक आवे तेटला वर्षनी एक पूर्वमां संख्या जाणवी.

निगोदनुं स्वरूप कहे छे.

१ जे गोलाकारे निगोदनो समुदाय, तेने गोलो कहीये. तेवा असंख्याता गोला चौद राजलोकमां छे.
२ एकेक गोलामां असंख्याती निगोद छे.
३ एकेका निगोदमां अनंता जीव जाणवा.

हवे वनस्पतिने विषे अनंतकायनो संभव कहे छे.

१ सर्व जातिनी वनस्पतिनो प्रथम ऊगतो अंकूरो अनंतकाय होय.
२ पछी ते अंकूरो वधतो वधतो प्रत्येक रूपे अथवा साधारण रूपे थाय.

हवे एकेंद्रियपणुं कोण जीव पामे? ते कहे छे.

१ जेने मैथुननी इच्छा घणी होय.
२ जेमां अज्ञानपणुं होय.
३ जे घणो बीकण होय.
४ अशाता आवे थके घणो कायर होय.

अथ त्रेवीश पदवीनां नाम.

१ चक्ररत्न.	५ खड्गरत्न.	९ गाथापतिरत्न.	१३ गजरत्न.
२ छत्ररत्न.	६ मणिरत्न.	१० वार्द्धिकरत्न.	१४ स्त्रीरत्न.
३ दंडरत्न.	७ कांगणीरत्न.	११ पुरोहितरत्न.	१५ तीर्थंकरपदवी.
४ चर्मरत्न.	८ सेनापतिरत्न.	१२ अश्वरत्न.	१६ चक्रवर्त्ती पदवी.

१७ वासुदेव पदवी. १ए केवली पदवी. २१ श्रावक पदवी. २३ मंडलीक पदवी.
१० बलदेव पदवी. २० साधु पदवी. २२ समकित पदवी.

हवे कयीगतिथी निकळ्या जीवो, ए त्रेवीश मांहेली कयी पदवी पामे? ते कहे छे.

१ पहेली नरकना निकळ्या जीव, एकेंद्री रत्नी सात पदवी न पामे वाकी शोल पामे.
२ बीजा नरकना निकळ्या जीव, एक चक्रवर्त्ति पदवी वर्जिने वाकी पन्नर पदवी पामे.
३ त्रीजा नरकना निकळ्या जीव, वासुदेव बलदेव ए वे टाली वाकी तेर पदवी पामे.
४ चोथा नरकना निकळ्या जीव, एक तीर्थंकर वर्जी वाकी वार पदवी पामे.
५ पांचमा नरकना निकळ्या जीव, केवली वर्जी वाकी अगीयार पदवी पामे.
६ छठा नरकना निकळ्या जीव एक साधु टाली वाकी दश पदवी पामे.
७ सातमा नरकना निकळ्या जीव. हस्तिरत्न, अश्वरत्न. समकेत ए त्रण पदवी पामे.
० नवनपति, वाणव्यंतर अने ज्योतिषी ए त्रण निकायमांथी निकलेला जीव, एक वासुदेव बीजो तीर्थंकर ए बे पदवी न पामे शेष एकवीश पदवी पामे.
ए पृथिवी, अप्, वनस्पति, पंचेंद्रियतिर्यंच अने मनुष्य ए पांचमांथी निकळ्या जीवो, चक्रवर्त्ती, वासुदेव, बलदेव अने तीर्थंकर ए चार वर्जी शेष उंगणीश पदवी पामे.
१० बेंद्री, तेंद्री अने चौरिंद्री ए त्रण विकलेंद्री मांहेथी निकळ्या जीवो चार उत्तम पुरुष अने पांचमी केवलीनी पदवी टाली शेष अढार पदवी पामे.
११ अग्नि अने वायुकायमांथी निकळ्या जीवो सात एकेंद्रीरत्न आठमो हस्तिरत्न अने नवमो अश्वरत्न ए नव पदवी पामे.
१२ सौधर्म तथा ईशान देवलोकना निकळ्या जीव सर्व त्रेवीश पदवी पामें.
१३ त्रीजाथी आठमा देवलोकना निकळ्या जीव,सात एकेंद्री टाली शेष शोल पदवी पामे.
१४ नवमा देवलोकथी मांडी नवग्रैवेयक पर्यंतना निकळ्या जीवो, सात एकेंद्रीरत्न आठमुं हस्तिरत्न अने नवमुं अश्वरत्न वर्जी शेष चौद पदवी पामे.
१५ पांच अनुत्तरथी आवेला जीवो चौदरत्न तथा वासुदेव टाली शेष आठ पदवी पामे.

हवे विमान प्रमुख पदार्थ जे आंगुले करी मवीये, ते कहे छे.

१ घर, कूवा, तलाव प्रमुख जे वस्तु छे तें सर्व आत्मांगुले करी मापीये.
२ पृथ्वी, पर्वत विमान प्रमुख जे छे ते सर्व पदार्थो प्रमाणांगुले करी मापीये.
३ शरीरने उत्सेधांगुले करी मापीये.

हवे ए आंगुलना प्रमाण कहे छे.

१ सर्वथी पहेलां सूक्ष्म परमाणुं कहीये.
२ एवा अनंता सूक्ष्म परमाणुये एक बादर परमाणु कहीये.
३ आठ बादर परमाणुये जे सूर्यना तापे

जाली प्रमुखमां नजरे देखाय, एवा कणी याने ऊर्ध्वरेणु अथवा रथरेणु कहीये.

४ आठ ऊर्ध्वरेणुये एक त्रसरेणु थाय.

५ आठ त्रसरेणुये देवकुरु क्षेत्रना युगलीया मनुष्य संबंधी एक मोवालानी अणी थाय, तेने वालाग्र कहीये.

६ आठ वालाग्रे एक लीख थाय.

७ आठ लीखे एक यूका थाय.

८ आठ यूकाये एक यव थाय.

९ आठ यवे एक उत्सेधांगुल थाय.

१० छ उत्सेधांगुले एक पग थाय.

११ बे पगे एक विलस एटले वेत थाय.

१२ बे विलसे एक हाथ थाय.

१३ चार हाथे एक धनुष्य थाय.

१४ बे हजार धनुष्ये एक कोश थाय.

१५ चार कोशे एक योजन थाय.

हवे प्रमाणादि अंगुल कहे छे.

१ चारशे उत्सेधांगुले एक प्रमाणांगुल थाय.

२ बे उत्सेधांगुले श्रीमहावीर नगवाननुं एक आत्मांगुल कहेवाय.

३श्रीऋषनदेवजीअनेनरतचक्रवर्त्तीनुंशरीर. १२० प्रमाणांगुल प्रमाण जाणवुं.

हवे सर्व जीवोने उपजवानी योनि चोराशी लाखछे, ते सर्व प्रथम पांत्रीश द्वारमांकहेली छे, अहीं तेनुं स्वरूप लखीये छैये.

१ जे जीवोनी उपजती वखते वर्ण, गंध, रस, स्पर्श एक बीजाना परस्पर सरखा होय, तेवा सर्व जीवोनी एकज योनिछे.

२ उपजवाना स्थानकने पण योनि कहिये.

३ गोबरना छाणामां जेटली जातिना जीव आवी उपजे, ते सर्व एक योनिना जाणवा हवे पांत्रीश द्वारमां प्रत्येक दंडके जीवोना कुलनी संख्या कही छे, तेनो शरवालो करीये, तेवारे १९७५०००००० थाय. यद्यपि उपजवानी योनि एकज छे पण तेमां कमी क्रीडा प्रमुख घणां कुल आवी उपजे छे.

हवे जूदी जूदी योनिनां स्वरूप कहे छे.

१ देवता एकेंद्रिय, नारकीने संवृत योनिछे.

२ विकलेंद्रिय, संमूर्छिमपंचेंद्रियतिर्यंच अने मनुष्यने विवृत योनि होय.

३ गर्नज पंचेंद्रिय तिर्यंच तथा मनुष्यने मिश्र ते संवृत, निवृत, बेहु योनि होय.

४ देवता, नारकीने अचित्त योनि होय.

५गर्नज तिर्यंच तथा मनुष्यने मिश्रयोनिछे

६बाकी सर्व जीवने सचित्तादि त्रण योनिछे.

७ नारकीने शीत ऊष्ण ए बे योनि छे.

८ देवता अने गर्नज तिर्यंच पंचेंद्रीय तथा मनुष्यने मिश्र योनि होय.

९ पृथ्वी, अप्, वायु, वनस्पति तथा संमूर्छिम तिर्यंच अने मनुष्यने त्रण योनिछे.

१० तेउकायने एकज ऊष्ण योनि होय.

हवे मनुष्यने योनि विशेष कहेछे.

१ शंखावर्त्ता योनिमां पुत्र मरण पामे.

२ शंखावर्त्ता योनि स्त्रीरत्नेज होय.

३ कूर्मोन्नत योनि ते काचबाना पुंठनी पेठे उंची होय पेट वधे नहीं, ए योनिमां अरिहंत, चक्रवर्त्ती, वासुदेव, बलदेव उपजे.

४ वंशना पान बे नेलां करीये एवे आकारे

जे योनि होय ते त्रीजी वंसीपत्ता योनि कहीये. एमां शेष सामान्य मनुष्य उपजे.

हवे आयुसंबंधि विशेष कहे छे.

१ बांधवानी वेलाये बंधकाल आयु कहीये.
२ आयु बांध्या पछी जेटलो काल वचमां उदय न आवे, तेने अबाधाकाल कहीये.
३ आयु पूर्ण थाय ते अंतसमयायु कहीये.
४ घणो काल भोगववा योग्य आयुने सर्व प्रदेशे उदेरी स्वल्पकाल भोगववा योग्य करे समकाले भोगवे तेनेअपवर्त्तनकहीये
५ जेटला कालनुं बांध्युं तेटलोज भोगवे तेने अनपवर्त्तन आयु कहीये.

६जे कारणे करी आयु घटे,तेउपक्रमआयुछे.
७ कोइ कारणे आयु न घटे ते निरुपक्रमायु.
हवे बंधकाल जे जीवने जेटलो होय, तेकहेछे
१ देवता, नारकी, असंख्याता वर्षायुवाला युगलीया मनुष्य तिर्यंच ए सर्व छ मास आयु रहे, तेवारे परभवनुं आउखुं बांधे.
२ संख्याता वर्षायु वाला एवा तिर्यंच मनुष्य निरुपक्रमायु वाला ते त्रीजो भाग आयु बाकीरहे तेवारे परभवनुं आयुबांधे.
३ सोपक्रम आयु वाला मनुष्य तिर्यंच त्रीजा भागथी ठेहुं शेषायु रहे थके अथवा नवमो भाग, अथवा सत्तावीशमो भाग अथवा अंतर्मुहूर्त्त आयु शेष रहे, तेवारे परभवनुं आयु बांधे.

४ आउखानो जेटलो भाग बाकी रहे थके नवा आउखानो बंध पडे, पछी जेटले काले उदय आवे, तेनी वचमांनो काल ते अबाधाकाल कहेवाय.
५ अंतसमये आयु पूर्ण थये जीव एक समय प्रमाण रुजुगति करे अथवा चार पांच समय प्रमाणनी वक्रगति करे.

हवे ए बेहु गतिमां निश्चय व्यवहारनये करी परभवनुं आउखुं उदय आवे अने परभवनो आहार होय ते कहे छे.

१ रुजुगतिमां पहेले समये परभवनुं आउखुं अने परभवनो आहार उदय आवे.
२ वक्रगतिमां बीजे समये परभवनुं आउखुं उदय आवे, अने एक समयनी वक्रगतिमां बीजे समये आहार करे.

३ बे समयनी वक्रगतिमां त्रीजे समये आहार करे. एक समय अणाहारी होय.
४ त्रण समयनी वक्रगतिमां चोथे समये आहार करे. बे समय अनाहारी होय.
५ चार समयनी वक्रगतिमां पांचमे समये आहार करे.त्रण समय अनाहारी होय.
६ एक समयनी वक्रगतिमां बेहु समय आहार लीये.

हवे आयु आश्रयी कहे छे.

७ जे आयु बांधवा समये यथायोग्य ढीलुं बांध्यु, ते देशकाल अध्यवसाय आश्रयी घटे, तेने अपवर्त्तनायु कहीये.
८ जे आउखुं पहेलुं घणुं निकाचितबंधे करी बांध्युं, ते अवश्य भोगववुंज जोइये तेने अनपवर्त्तन आयु कहीये.
९ जे उत्तम पुरुष जेवा के चक्रवर्त्ती च

मेशरीरी तेज नवे मोक्ष जावा वाला एवा मनुष्य, तेमज देवता तथा नारकी अने युगलीया मनुष्य तथा तिर्यंच ए सर्वेनुं निरुपक्रम आउखुं होय.

१० जे अध्यवसाये अथवा विष प्रमुखे करी आउखुं घटे, ते अध्यवसाय प्रमुख उपक्रम कहीये, अने ए उपक्रमथी विपरीत ते अनुपक्रम कहीये.

हवे सात प्रकारे आयु घटे, ते कारण कहे छे.

१ राग द्वेषथी तथा स्त्रीना स्नेहथी मरे ते अध्यवसाय मरण कहीये.

२ ताजणा प्रमुख शस्त्रथी मरे.अथवा फांसी खाई मरे ते निमित्त मरण कहीये

३ भुख तृषाथी मरे, अथवा घणो आहार करवाथी मरे ते आहार मरण कहीये.

४ शूलीथी, विषमवेदनाथी, पेट दुःखवाथी मरे ते वेदना मरण कहीये.

५ पेटमां कटारीमारी मरे पाणीमांहे पडी मरे, ते पराघात मरण कहीये.

६ विषकन्या फरसथी मरे, सर्प्प विछी प्रमुखना फसवाथीमरे तेफरस मरणकहीये.

७ घणा श्वासोछ्वास आव्याथी मरे थोडा श्वासोछ्वास आव्याथी मरे, ते आणपाण मरण कहीये.

हवे कुबेरदत्ता साधवीये बालकनी आगल अढार नात्रां पोतानां गायां, तेनां नाम कहे छे.

प्रथम बालकनी साथे छ सगपण कहे छे.

१ पोतानी माताना उदरमांथी ए बालकनो जन्म थयो छे माटे भाइ थयो.

२ भाइनो दीकरो थाय माटे भत्रीजो थयो

३ धणीनो न्हानो भाइ थाय माटे देवरथयो.

४ शोकनो जण्यो छे माटे दीकरो थयो.

५ बापनो भाइ थाय, माटे काको थयो.

६शोकना दीकरानो दीकरो माटे पौत्रो थयो

हवे कुबेरदत्त भाईनीसाथेछ नात्रांथयांतेकहे

१ बेहु जण एकज माताना उदरथी उपना छैये ते माटे महारो भाइ कहेवाय.

२ फरी महारी मातानो ए धणी थयो छे ते माटे महारो बाप कहेवाय.

३ एनी साथे हुं परणी माटे भर्त्तार थाय.

४ ए पालणांमां पोढेलो छोकरो महारा धणीनो भाइ थाय छे तेथी ते छोकरो महारो काको थयो ते महारा काकानो वली ए बाप थाय माटे महारो दादो थयो.

५ वली पहेला महारी शोक्यनो ए दोकरो हतो माटे महारो दिकरो पण थाय.

६ महारी सासुनो धणी थाय छे ते माटे महारो ससरो पण थाय.

हवे कुबेरदत्ता गणिकानी साथे छ नातरां केवी रीते थाय ? ते लखीये छैये.

१ एनी कुखे जन्मी छुं माटे माता थाय.

२ महारा धणीनी माता थाय माटे सासूछे.

३ महारा भाइनी स्त्री थाय माटे भोजाइछे.

४ महारा भर्त्तारनी स्त्री थाय ते शोक्य कही.

५ महारा काकानीमाताथायतेदादी कहीये

६ महारी शोक्यनो दीकरो ते महरो पण दीकरो थयो, तेनी ए स्त्री छे. ए सगपण गणतां महारी वहू पण थाय,

ए अढार नात्रां कुबेरदत्ता साधवीये एकला पोता आश्री पालणमां पोढोडेला ग कराना आगल गाइ संजलाव्यां एवा कुबेरसेना वेश्या तथा ते साधवीनो जाइ जेने पोते परणी हती, ते तथा तेना वीर्यथी जे बालक उत्पन्न थयो ढे जेनी पासे साधवी पोते उजी रहीने हालरमा गाय ढे, ते मली चारे जणना प्रत्येके एकेकना अढार अढार नात्रां परस्पर एक बीजानी साथे संबंधे थाय, तेवारे सर्व मली बहोंतेर नात्रां थाय.

॥ अथ अशुजध्यानना त्रेशठ स्थानक, दृष्टांत सहित कहे ढे. ॥

१ अज्ञान ध्याननी ऊपर, मासतुषनो दृष्टांत जाणवो.
२ अनाचार ध्याननी ऊपर, पुत्रने अर्थे चिंताना करनार कोंकण साधुनो दृष्टांत.
३ कुदर्शन ध्याननी ऊपर, नंदमणियार श्रेष्ठीनो तथा सोमिलब्राह्मणनो दृष्टांत.
४ क्रोधध्याननी ऊपर, कुलवालक, मंखलीपुत्र, पालक तथा नमुचिनो दृष्टांत.
५ मान ध्याने बाहुबलीनो दृष्टांत. ६ मायाध्याने मल्लिनाथनो दृष्टांत.
७ लोजध्याननी उपर केसरीया लाकु वहोरनार, साधुनो दृष्टांत.
८ राग ध्याननी ऊपर त्रण दृष्टांत कहे ढे. तेमां कामरागनी ऊपर मणिरथराजा जे मयणरेहा सतीनी ऊपर मोहित थयो तेनो दृष्टांत. तथा स्नेहरागनी ऊपर जातु मंत्री अने सरस्वतीनो दृष्टांत अने दृष्टिरागनी उपर गोष्टामाहिलनो दृष्टांत.
ए द्वेषध्याननी ऊपर धर्मरुचि नंदनावकनो दृष्टांत.
१० मोहध्याननी ऊपर बलदेव, विष्णु, तथा सक्संजवसूरिनो दृष्टांत.
११ इछाध्याने कपिलकेवलीनो दृष्टांत. १२ मिथ्यात्वध्याने जमालीनो दृष्टांत.
१३ मूर्बाध्याने कनककेतुनो दृष्टांत. १४ शंकाध्याने आषाढाचार्यनो दृष्टांत.
१५ कांक्षा ध्याननी ऊपर मरीचि तथा कपिलादिकनो दृष्टांत.
१६ गृहिध्याननी ऊपर महूरामंगू अने कंडरिकनो दृष्टांत.
१७ आशाध्याननी ऊपर मूलदेव अने निर्धूणशर्म ब्राह्मणना संबलनो दृष्टांत.
१८ तृष्णाध्याननी ऊपर अंगारदाहकनो दृष्टांत.
१ए क्षुधाध्याननी उपर संप्रतिराजानो जीव कुमकनो दृष्टांत.
२० पंथध्याननी ऊपर पोतनपुर मार्गगवेषक वल्कचीरीनो दृष्टांत.
२१ पंथे चालवाना ध्याननी ऊपर वरधणु तथा ब्रह्मदत्तनो दृष्टांत.
२२ निद्रा ध्याने चौदपूर्वधर दृष्टांत. २३ नियाणाध्याने संजूतिरुषि द्रौपदी दृष्टांत.
२४ स्नेह ध्याननी ऊपर मरुदेवीमाता तथा अर्हन्नकजीनी मातानो दृष्टांत.
२५ कामध्याननी ऊपर हासा, प्रहासा, लोजित कुमारनंदीनो दृष्टांत.

२६ कलुषध्याननी ऊपर उदायिनराजा प्रति अन्निची कुमारनो दृष्टांत.
२७ कलहध्याननी ऊपर महाशतक श्रावक तथा रेवती श्राविकानो दृष्टांत.
२८ युद्धध्यान उपर कूणिक अने चेटकना दृष्टांत.२९नियुद्धध्याने जरत बाहुबलीनो दृष्टांत
३० संगध्याने जवदेव नागिलानो दृष्टांत. ३१ संग्रहध्यान उपर मम्मण दृष्टांत.
३२ व्यवहारध्याननी ऊपर राज कुलिपुत्रने अर्थे बेहु शोक्योनो दृष्टांत.
३३ क्रयविक्रयध्याननी ऊपर लोजनंदनो दृष्टांत.
३४ अनर्थ दंड ध्याननी ऊपर द्वैपायनऋषि प्रति साम्ब प्रद्युम्नादिकनो दृष्टांत.
३५ आजोग ध्याननी ऊपर प्रसन्नचंदनो दृष्टांत जेने जाणतां व्रत वीसर्यां.
३६ आणाईल ध्याने सणाविल साधुनी बहेने वधतुं तेल लीधुं ते शण थयानो दृष्टांत.
३७ वैरध्यानी ऊपर फरशुराम तथा सुजूमादिकनो दृष्टांत.
३८ वियक्कध्याननी ऊपर नंदराजानुं राज्यलेवा वांछनार चाणाक्यनो दृष्टांत जाणवो.
३९ हिंसाध्याननी ऊपर कूपनिक्षिप्त कालसूरियानो दृष्टांत जाणवो.
४० हास्यध्याननी ऊपर चंडरौद्राचार्यें शिष्यने दीक्षा दीधी, तेनो दृष्टांत जाणवो.
४१ प्रहास्याध्याने चंडप्रद्योतने वारतऋषीश्वरने निमित्त कहीने वांद्यो, ते दृष्टांत.
४२ पउसध्यानी ऊपर मरुजूति प्रत्ये कमठनी पेरें दृष्टांत जाणवो.
४३ फरुसध्याननी ऊपर ब्रह्मदत्त प्रते चुल्लणीनो अथवा युगबाहु प्रत्ये मणिरथनो दृष्टांत.
४४ जयध्याने गजसुकुमालनो विनाश करनार सोमिलने जय उपनो ए दृष्टांतजाणवो.
४५ अप्रशंसाध्याने सकडालना मुखथकी वररुचिये पोतानी अप्रशंसानुं ध्यान कीधुं ते दृष्टांत अथवा रथिके पोतानुं विज्ञान कोश्याने देखाड्युं ते दृष्टांत.
४६ परनिंदाना ध्यान ऊपर कुरंगडु मुनि निंदाना करनारा चार क्षपकनो दृष्टांत.
४७ परग्रह ध्यान ऊपर सजासमक्ष गोष्टामाहिल्ल डुर्बलिकापुष्पग्रें रह्यो, ए दृष्टांत.
४८ परिग्रह ध्याननी ऊपर मुनिपति प्रत्ये कुंचिक श्रावकनो दृष्टांत
४९ परपरिवादध्याननी ऊपर सुजद्रा सती प्रत्ये तेनी सासु नणंदनो दृष्टांत.
५० परदूषणध्याननी ऊपर दमयंतीने डाकिणीना कलंक चढाव्यानो दृष्टांत.
५१ आरंजध्याननी ऊपर ढंढणा कुमार पूर्वजव राजाधिकारीनो दृष्टांत.
५२ समारंजध्याने मनमांहे कीईक शोक्यना दीकरानुं मरण चिंतवनारा सुसढनो दृष्टांत.
५३ पापानुमोदनध्याननी ऊपर तंडुलमत्स्य अंतरमुहूर्त्त अनुमोदन करे ते दृष्टांत.
५४ अरिजाणध्यान ऊपर वापीनो उद्यान नंदमणियारे चिंतव्यो तेनो दृष्टांत.
५५ असमाधिमरणध्याननी ऊपर स्कंदसूरिनो दृष्टांत.

५६ कर्मोदय पच्चयं ध्यानननी ऊपर मरणवेलाये विष्णु श्रेणिकादिकनी पेरे दृष्टांत.
५७ ऋद्धिगारवध्यानननी ऊपर दशार्णभद्र राजानो दृष्टांत.
५८ रसगारवध्यानननी ऊपर सुबुधि प्रधान प्रत्ये जितशत्रु राजानी पेठे दृष्टांत.
५९ शातागारव ध्यानननी ऊपर शशीराजानी पेठे दृष्टांत.
६० अविरमणध्यानननी ऊपर भृगुपुरोहितना बेहुकुमर आश्रयी दृष्टांत जाणवो.
६१ अमुक्तिमरण ध्यानननी ऊपर ब्रह्मदत्तनो पूर्वभव संभूत यतिनो दृष्टांत.
६२ रूपध्यानननी ऊपर चंदप्रद्योते पटलित अंगारवतीना रूपनो दृष्टांत.

॥ उपदेश रत्नकोश प्रारंभः ॥

१ सर्वदा जीवदया पालवी.
२ इंद्रियोने कुमार्गे प्रवर्त्ताववी नही.
३ इंद्रियोने धर्ममार्गे प्रवर्त्ताववी.
४ निरंतर धर्मपूर्वक सत्यवचन बोलवुं.
५ शील खंडन करवुं नही.
६ कुशीलीयानो संसर्ग करवो नही केमके जेवी संगति होय तेवी बुद्धि पण थाय.
७ गुरुनुं वचन लोपवुं नही.
८ जेम गुरु कहे, तेमज प्रवर्त्तवुं.
९ मार्गमां चपलपणे चालवुं नही.
१० नीची दृष्टिराखी जीवयत्नकरतां चालवुं.
११पोतानेकुलयोग्यद्रव्यानुसारेवेशपहेरवो.
१२ वांकीदृष्टिये कोइनी साहामुं जोवुं नही.
१३ पोतानी जिव्हा संवरी राखवी.
१४ आलपंपाल एटले यद्वत् यद्वतूनबोलवुं.
१५ अविचारित कार्य न करवुंविचारीकरवुं
१६पोतानाकुलनोरुडो आचारलोपवो नही.
१७ पारका मर्म बोलवा नही केमके ते रोष्यो थको पोते मरे अथवा आपणने मारे.
१८ कोइने कूडुं आल देवुं नही.
१९ कोइने आक्रोश वचन कही शाप नदेवो
२० गुणवंत पुरुषनो उपकार करवो.
२१ उपकारकरीबीजाआगलप्रकाशवोनही.
२२ दुःखमांरूडा माणसनेआलंबन आपवुं.
२३ महोटुं संकट आवी पडे तो पण कोइ नी आगल हाथ मांडवो नही.
२४ कोइ आपणने प्रार्थना करे तो छति शक्तिये प्रार्थनानो भंग न करवो.
२५ पोतामां घणा गुण होय तो पण पोता नी प्रशंसा स्वमुखे करवी नही.
२६ दुर्जन माणसनी निंदा करवी नही.
२७ जेनो जेवो स्वभाव होय ते मूके नही.
२८ पोताना धर्ममार्गे चालीये.
२९ घणी हास्य मस्करी न करवी.
३० हास्य न करवाथी गुरुता पामीये.
३१ वैरीनो विश्वास करवो नही.
३२ जे आपणा उपर विश्वास राखे, तेनी साथे कोइरीते विश्वासघात न करवो.
३३ कोइनो करेलो उपकार वीसारवो नही.
३४ गुणवंत उपर राचीये प्रशंसा करीये.
३५ निःस्नेही ऊपर स्नेह न करवो. परंतु मध्यस्थ पणे रहेवुं.
३६ पात्रनि परीक्षा करी सुपात्रने दान देवुं.

सन्मान करवुं, केम के सत्पुरुषनो आ कलिकालमां त्रोटो छे.

३७ लोक निंदा करे तेवुं काम न करवुं केम के जुठुं बोलवुं,चोरी करवी, परदारा सेववी, एथी लोकमां कलंक चढे अने परनवे नरके जवुं पडे. माटे ते न करवुं.

३८ पोतानुं साहस सत्त्व छोडवुं नही. जो पोतामां सत्त्व होय तो सर्व कारज थाय.

३९ व्यसननी उपर मोहित न थावुं.

४० लक्ष्मीक्षय थाय तो पण थोडामांथी यथा योग्य दान आपवुं ए धीरपुरुषनुं खड्ग धारा समान व्रत जाणवुं.

४१ कोइनीसाथे घणो स्नेह न करवो जेटलो स्नेह करीये तेटलो दुःखदायी थाय.

४२ अनीष्ट उपर प्रति दिवस रोष न करवो.

४३ कोइ साथे क्लेश न करवो.

४४ अन्यायथी लक्ष्मी उपार्जवी नही.

४५ कुवास कुठाकुर वास न करवो.

४६ बालकने प्रियवचने बोलाववुं.

४७ वैरीने मधुरवचने बोलाववो जेथी ते सुख पामे तो आपणी साथे कलह न करे.

४८ घणी लक्ष्मी होय तो पण ते बपोरनी छाया सरखी जाणी अहंकार न करवो.

४९ लक्ष्मी न होय तो विषवाद न करवो. सर्वदा समनावे रहेवाथी संताप न थाय.

५० सेवकनां वखाण तेनां मुख आगल करवां.

५१ पुत्रनां वखाण तेनी पाछल करवां पण तेनां मुख आगल न करवां.

५२ सर्वकोइ प्रत्ये सरस सकोमल अने थोडुं धर्मसंयुक्त वचन बोलवुं.

५३ पोताना शत्रु अनेमित्रनोविनय करवो.

५४ पोतानी संपत्ति माफक दान देवुं.

५५ पारका गुण शील होय ते बोलवा. पण अवगुण न बोलवा. ए मंत्रविना पण महोटुं वशीकरण छे एम जाणवुं.

५६ प्रस्तावे बोलवुं पण अप्रस्तावे न बोलवुं केमके प्रस्तावे बोलवुं सर्वने गमे.

५७ घणा माणसमांहे जे दुर्जन होय तेनुं बहुमान करवुं.

५८ पोताना प्रियनुं विशेष उपकार करवो.

५९ गुणवंतनी पूजा करवी.

६० बीजानी पासे मंत्र आलोच न करवो.

६१ पारके घेर एकला न जवुं.

६२ स्त्रीये पतिव्रता धर्म पालवो.

६३ जेनी साथे अत्यंत प्रीति करवा वांछीये तो तेने घेर जमवुं.

६४ ते मित्रने आपणे घेर जमाडवो.

६५ मित्रने वस्त्रादिकनुं दान आपवुं.

६६ मित्र जे वस्तु आपे, ते लेवी.

६७ पोतानी वात मित्र आगल कहेवी.

६८ मित्रनी वात पोते पण पूछवी, एम करवाथी तेनी साथे प्रीति दृढ थाय.

६९ कोइनुं अपमान करवुं नही.

७० पोताना गुणनो गर्व न करवो.

७१ गर्व करवाथी गुणहीन थइये.

७२ बहुरत्ना वसुंधरा छे माटे पृथ्वीमां विचित्र आश्चर्य देखी विस्मय पामवुं नही.

७३ महोटुं कार्य आरंभीने पछी न्हानुं करीये तो लोकमां हांसी थाय.

७४ न्हानुं कार्य आरंभीने पछी तेने महोटुं करीये तो लोकमांहे प्रशंसा थाय.

७५ सर्वजीवने पोता सरखा जाणी कोइने डुहवीये नही राग रोष आणीये नही.

७६ ए प्रमाणे वर्त्तनारो पुरुष क्यारे दुःखी न थाय छेवटे कर्म छेदी मोक्ष जाय इति ॥

॥ अथ अष्टभंगी प्रारंभः ॥

१ सुदेव, सुगुरु अने सुधर्म, ए त्रण तत्त्वनुं स्वरूप न जाणे अने साधुधर्म तथा श्रावक धर्म ए बे मांहेलो कोइ धर्म न आदरे अने पच्चरकाण जिनमत अनुष्ठान न पाले ए प्रथम भांगो जाणवो एनो स्वामी सकल लोकवासी मिथ्यात्वी जाणवो.

२ जिनतत्त्व न जाणे अने साधु धर्म तथा श्रावक धर्म आदरे अने अज्ञानकष्ट मास क्षमणादिक पच्चरकाण पाले ए बीजो भांगो बाल तपस्वी तापसादिकनो जाणवो.

३ ज्ञानतत्त्व न जाणे अने बेहु धर्ममांहेलो एक धर्म आदरे पण यथास्थित साधुधर्म मार्ग न पाले प्रतीत न आणे ए न जाणे, न आदरे अने न पाले, एवो त्रीजो भांगो सर्व पासत्था, कुशीलीया, संशक्त इत्यादिक भव्य तथा अभव्यादिकनो जाणवो.

४ जिनमत स्वरूप न जाणे तथा वली साधु धर्म आदरे वली यथाछंद पणे साधु मार्गने पाले ए न जाणे, आदरे अने पाले एवो चोथो भांगो उत्सूत्र प्ररूपक अगीतार्थनो छे.

५ धर्मना स्वरूपने जाणे, पण नियमना भयने लीधे बेहु धर्म मांहेलो एके धर्म न आदरे अने व्रत पच्चरकाण पण पाले नही ए जाणे, न आदरे, अने न पाले एवो पांचमो भांगो श्रेणिक, सात्यकी अने श्रीकृष्ण प्रमुख सम्यक्दृष्टियोनो जाणवो

६ धर्मना स्वरूपने जाणे पण बेहुमांहेलो एके धर्म आदरे नही, परंतु नववाड सहित शील प्रमुख पाले ए छठो भांगो अनुत्तर विमानवासी देवादिकनो जाणवो.

७ जिनधर्मना स्वरूपने विशद रीते जाणे अने बेहु धर्ममांहेला एक धर्मने आदरे परंतु निद्रावरणीय कर्मोदये करी पाली शके नही सातमो भांगो संविज्ञपक्षीनो जाणवो.

८ जिनधर्ममां अत्यंत कुशल थको धर्मस्वरूपने जाणे अने आदरे तेमज जिनोक्तधर्म यथास्थित पणे पाले ए जाणे, आदरे अने पाले एवो आठमो भांगो साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविका रूप चतुर्विध श्रीसंघनो जाणवो.

ए आठभांगामां प्रथमना चार भांगा मिथ्यादृष्टीना जाणवा अने पाछला चार भांगा सम्यक्दृष्टिनां छे तेमांपांचमो छठो भांगो अविरति सम्यक्दृष्टीनो अने सातमो भांगो देश विरतिनो जाणवो तथा आठमो भांगो देशविरति अने सर्वविरति बेहुनो जाणवो ॥इति॥